श्री श्रीगणेश महिमा

राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित
महाश्वेता देवी की अन्य कृतियां :

1084वें की माँ
चोट्टि मुंडा और उसका तीर
जंगल के दावेदार
घहराती घटाएँ
अक्लांत कौरव
अग्निगर्भ
भटकाव
भारत में बंधुआ मजदूर

श्री श्रीगणेश महिमा

महाश्वेता देवी

हिन्दी रूपान्तर
रीनादास

समर्पण

सोमा और अशोक
शारी और अमर
दीदी

एक

आज से चालीस वर्ष पहले मुँह में एक दाँत लिये त्रितीर्थ नारायण ने जन्म लिया था। बेशक, यह एक असाधारण घटना थी, पर इसका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। वह बरसात की एक शाम थी और आसमान काले बादलों से भरा था। लगभग अँधेरे कमरे मे प्रसूता ने अपनी क्षीण आवाज़ मे जानना चाहा था कि उसे लडका पैदा हुआ है या लडकी ?

उसकी यह उत्सुकता बड़ी स्वाभाविक थी। पति मेदिनी नारायण ज़री के फूलों से सुशोभित नागरा पहनकर आँगन मे बेचैनी के साथ टहल रहे थे। जूते से चर्र-चर्र की आवाज़ आ रही थी। "अगर फिर लड़की जनी तो भगा दूँगा।" वह अत्यंत भयभीत थी। भगा देने पर कहाँ जायेगी ? वह फ़र्श पर चटाई के ऊपर एक गुदडी बिछाकर लेटी थी। दोनों सौतें गिद्ध की तरह दरवाजे पर बैठी थी। वे भी बेटियो की माँ थी, सोच रही थी कि अगर छोटी को लड़का पैदा हो गया तो उनकी हालत और भी संगीन हो जायेगी। प्रसूता अपने को काफ़ी बेसहारा महसूस कर रही थी।

"लडका या लड़की ?" दाई से उसने उत्कंठापूर्वक पूछा।

"लडका।"

"देखूँ," काफी कष्ट से प्रसूता ने करवट बदली। रोते बच्चे के खुले मुँह में एक नुकीला दाँत देखकर प्रसूता के गले से आतंक-भरा स्वर फूटा और वह बेहोश हो गयी। फिर उसे होश नही आया। अगर जीवित रहती तो लडके मे और भी असाधारण बातें देख सकती थी। गाल और कान के बीच मस्सो का गुच्छा, पैर का अँगूठा बेहद लम्बा। फिर भी बच्चा हृष्ट-पुष्ट था।

जब माँ बेहोश हुई तब आसमान मे बड़ी तेज बिजली चमकी थी तथा गाज भी गिरी थी। फलस्वरूप एक क्षण में ख़बर फैल गयी है कि सती की

देह-ज्योति बिजली की चमक मे विलीन हो गयी। बेटा ही पैदा हो, इसके लिए इतना जप-तप किया, तीन तीर्थों का पानी पिया और इसके बाद एक असाधारण पुत्र को जन्म देकर माँ स्वर्ग सिधार गयी। बाढ़ा-नवागढ मे ऐसी कहानियाँ बहुत जल्द फैल जाती हैं। सुबह आँगन में भीड़ उमड़ पडी। मेदिनी नारायण सर मुँडाकर शव के साथ गये।

दाह-संस्कार के बाद मेदिनी नारायण ने दाई को बुलवाया। दाई का काम करती है गुलाल। नाम काफ़ी रंगीन होने के बावजूद वह एक हद तक पुरुषों जैसे स्वभाव वाली कर्मठ महिला है। एक के बाद एक मेदिनी नारायण की शादियो की विफलता पर उसके दिल मे मेदिनी के लिए सहानुभूति भी है और इसी कारण उसने मेदिनी नारायण के लिए गदराये बदन वाली अपनी समर्थ नतिनी का जुगाड किया था।

मेदिनी ने उससे कहा, "लडके को पालना होगा। बड़की और मझली पर मुझे भरोसा नही है।"

"नही, नही, वे उसे मार डालेंगी।"

"छोटकी मे ताकत नही थी।"

"कहाँ ताकत! तीन हमल में ही खलास।"

"लछिमा को ले आ। तू भी आ जा। यही रह और लड़के को पाल-पोसकर बडा कर दे।"

"आदमी तरह-तरह की बातें करेंगे।"

मेदिनी आनंदित नही हो पाता है, बस हँसता है।

"आदमी! आदमी तो मैं हूँ, ये सब जानवर है। थू! इन्होंने ही अफवाह फैलायी थी कि मेरे ऊपर महावीर जी का शाप है। लड़का नही होगा। मेरा वश नही चलेगा। किसलिए कहा था? बिसुन अहीर के साथ झगडा-फसाद हुआ था, इसीलिए न? कितना हरामीपन किया था उसने।"

"यह सब मै नही जानती क्या?"

"उसमे तू भी तो शामिल थी। बाढा गाँव में कोई भी हरामीपन ऐसा नही, जिसमें तू शामिल न हो।"

"तो क्या जात-बिरादरी के खिलाफ जाती?"

"लेकिन तब भी लछिमा मेरी रखैल थी। मैंने उसे हँसुली, बाजूबंद, झुमका बनवाकर दिया था।"

"चाँदी का।"

"तुझ जैसों के लिए यही काफी है।"

"अब काम की बात करो, मालिक!"

"तुम लोगों को तीन बीघा जमीन दूँगा और दस रुपया महीना। जाते समय गाय भी दूँगा।" यह बात मेदिनी ने लम्बी साँस भरते हुए कही, क्योंकि जमीन और गाय में मेदिनी के प्राण बसते थे।

गुलाल अच्छी तरह समझ रही थी कि मेदिनी इस समय काफी मुसीबत में है, नहीं तो इतना सब देने का वायदा वह नहीं करता। कुछ क्षण आँखें मूँदे वह चुपचाप बैठी रही। फिर बोली, "काम की बात पहले कर लें—अभी लड़का मेरे पास ही रहे, जब तक अशौच रहे बकरी का दूध पिला रही हूँ, पिलाती रहूँगी। इसके बाद नामकरण और पूजा करा लो। कुछेक दिन में सभी बवाल कट जायेंगे, फिर लछिमा आ जायेगी।"

लड़का गुलाल की गोद में ही था। उसने कहा, "तखत दो। जमीन में सोने से लड़के को सर्दी लग जायेगी। और सवा रुपया भी देना। सरसतिया का पता लगाओ, काम है?"

"क्यों? क्या काम है?"

"पूजा करानी होगी।"

"किसलिए?"

"माँ लड़के के आस-पास चक्कर लगा रही है। उसकी नजर से इसे बचाना है।"

"अच्छा।"

"और मालिक, छोटी बहू की लड़कियों को कोई तकलीफ न हो, नहीं तो माँ की आत्मा दुखी होगी। सभी को छोटी उमर में छोड़कर चली गयी।" गुलाल ने उसाँस भरी। लड़के का दाँत देखकर डर गयी।

"ऐसा?"

"हाँ मालिक, तुम गया जी में जब तक करमकाज नहीं करा देते, तब

तक उसे शांति नहीं मिलेगी और वह किसी को चैन से नही रहने देगी। देखो क्या होता है !"

"तू पूजा करा दे।"

"सरसतिया करेगी।"

लडके के मुंह मे दाँत देखकर डर गयी छोटकी ! मेदिनी नारायण के मन मे *लगातार एक अशुभ चिंता घुमडती रहती है। क्या यह लड़का मनहूस*, अभागा जन्मा है ?

गुलाल उसके मन की बात समझती है। बोली, "तुम्ही अब इसके माँ-बाप हो, मालिक ! शेर-दिल मरद हो। डरने से काम कैसे चलेगा ? तसल, आग, तसला — सब भेज दो। एक तो बिन माँ का बच्चा, ऊपर मे बरसात का मौसम। सेंक-ताप कर इसको बचाना होगा।"

मेदिनी नारायण जरूरी बदोबस्त करने के लिए चले जाते हैं। जाते-जाते बडी और मझली से कहते जाते है, "लड़के के कमरे में अगर तुम लोगों की परछाईं भी पड गयी तो काटकर फेंक दूंगा। सरजू और सीता को कोई तकलीफ नही होनी चाहिए। अगर कुछ हुआ तो तुम्हारी खैर नही।"

दोनो तरह के अशौच कट जाते है—जन्म-अशौच और माँ के कारण मृत्यु-अशौच। इससे पहले ही सरसतिया काले कुत्ते की पूँछ के बाल, श्मशान की मिट्टी, तिमुहानी के बेल के पेड़ की छाल आदि जरूरी सामान जुटाकर माँ की कोप-दृष्टि से छुटकारा दिलाने के लिए गुप्त पूजा करती है। ये सब हो जाने के बाद पुरोहित जी आये। उन्होंने कल्याण-होम आदि किया। हवन की भस्म को मकान के चारों कोनो मे गाड़ दिया और फिर वे मेदिनी नारायण की ओर मुडे, "मेदिनी नारायण, तुम बहुत भाग्यशाली हो। इस लडके को तुम्हारे घर मे जन्म नही लेना था। इसे तो किसी राजा के घर मे पैदा होकर सोने की कटोरी मे मट्ठा-मक्खन खाना-पीना था। तभी ठीक होता।"

"हम खिलायेंगे।"

"जन्म से पहले की सारी पूजा भी मैंने ही की थी। इसका नाम त्रितीर्थ नारायण रखना ही होगा, नही तो माँ ने जो तीनो तीर्थों का पानी पिया वह बेकार जायेगा। किन्तु कौन जन्मा है, जानते हो क्या ?"

"कौन जन्मा है, देवता ?"

पंडित जी जानते हैं कि कुछ समय तक के लिए मंच पर उन्हीं का अधिकार है। एकत्रित पड़ोसियों की ओर देखकर वे बोले, "मेदिनी सिंह का घर अब परमतीर्थ हो गया। यही गया, यही वाराणसी। किसने जन्म लिया है, आप लोग नहीं जान सके। इससे मेरे मन को बहुत चोट पहुँची है। धरम तो कलयुग में रहा ही नहीं। गाँव के लोगों तक मे गियान की कमी देखकर मन को और ज्यादा ठेस लगती है। सदजन है आप लोग, अब सोच देखें।"

"का सोचें, देवता ?"

"देवी पार्वती ने कौन-से देवता का सृजन अपने अंगों से किया था और कौन लड़ा था शिव और विष्णु के साथ ? वेदव्यास बनकर महाभारत किसने लिखा था ? किसकी पूजा सबसे पहले की जाती है ? किसने केवल मात्र अपने माता-पिता का चक्कर काटकर प्रमाणित किया था कि माता-पिता ही विश्व और ब्रह्माड है ? वे कौन-से देवता हैं ?"

"हाय राम ! गणेश जी महाराज !"

"मेदिनी सिंह, गणेश महाराज की भी इच्छा होती है कि धरती पर जन्म लें और मनुष्यों को अज्ञान से उबारें। इस लड़के मे भी गणेश जी का अंश है, नहीं तो एक दाँत वाला शिशु कहीं होता है ?"

इस तरह पंडित जी अपने वाक्चातुर्य से सभी को आश्चर्यचकित करते है।

"यह बालक बनेगा अक्षय कीर्तिवान। देवता और बाम्हनों का मान बढ़ायेगा, कुल का नाम रोशन करेगा। कान के ऊपर मास, लम्बा अँगूठा—ये सभी देवता के लक्षण है। इस लड़के की जो सेवा करेगा, उसका भला होगा। उसके लिए जो बुराई सोचेगा, उसका बुरा होगा।"

मेदनी कह बैठता है, "बड़की और मझली ने लड़के को कुछ किया तो उन्हें काटकर फेंक दूँगा।"

इस तरह त्रितीर्थ नारायण का चालू नाम गणेश बन जाता है और गाँव के सभी लोग भर-पेट दही-चिउड़ा, गुड़, केला-पेड़ा खाकर खुश हो जाते हैं। अब गणेश के नाम पर सभी अस्वाभाविक हरकतों को समाज

की तरफ़ से स्वीकृति मिल जाती हैं। इसीलिए गुलाल नाइन और उसकी नतिनी लछिमा देवता की सेविकाओं की हैसियत से मकान के एक अच्छे कमरे में ठौर पाती हैं। बडकी और मझली बहुएँ घर-गृहस्थी का अपना हक खो बैठती है। खाने-पीने की तकलीफ़ नही देता है मेदिनी, लेकिन पत्नियों को सहवास का सुख नही देता, कहता है कि 'रखा क्या है तुम लोगों में? खा-पहनकर भी चेहरा देखो! लछिमा को देखा है? हाँ, उसे कहा जाता है औरत।'

पाँचो लडकियों को देखते ही मेदिनी का पारा चढ़ जाता है। वे भी उनके सामने नही फटकती। मेदिनी सिंह लड़के को लछिमा और गुलाल के ज़िम्मे छोड़कर अपने काम पर जाता है।

नवागढ़ के ज़मीदार का अगरक्षक है वह। आजकल के मस्तान लीडरों को जो सर्विस देते हैं, वैसी ही मेदिनी सिंह ज़मीदार को देता था। ज़मीदारी को बनाये रखने के लिए, बंदूक चलाकर औरों का विनाश करने मे वह बड़ा ही तत्पर था। जमींदारी मे लडाई-दगा तो लगा ही रहता था। इनाम-स्वरूप उसे तीस बीघा उपजाऊ ज़मीन मिली। फ़ौजदारी के एक लम्बे मुकदमे का फैसला हो जाने पर बाढा गाँव मे नयी प्रजा लाकर वही बसाता है। वहाँ भी उसे दस बीघा ज़मीन और मिलती है। मेदिनी सिंह शुरू में नवागढ के सिपाहियों को, बाद में बाढा और दूसरी जगह के लोगो को ब्याज पर रुपये उधार दे-देकर एक छोटी-मोटी महाजनी जमींदारी स्वयं चलाता है।

प्रभावशाली, सम्पन्न व्यक्ति है मेदिनी सिंह। कच्चा दूध लोटा-भर पी जाता है। पूरी खस्सी (बकरी) का गोश्त खाकर दस मील तक दौडता है। लेकिन खुदा जिसको देता है, कभी-कभी छप्पर फाडकर नही भी देता है। मेदिनी सिंह के भाग मे बेटे वाली बीवी नही थी। अपने देस-गाँव की रीत से उसकी दो शादियाँ हुई। दोनों ही बेटियाँ पैदा करने वाली निकली। छोटकी के हाथ में पुत्र की रेखा होने के कारण ब्याह कर लाया। फिर भी एक अच्छा काम कर गयी। दो लड़कियों को जनने के बाद, मेदिनी के दिल को चोट पहुँचाकर गणेश-जननी बनकर वह स्वर्ग सिधार गयी।

नवागढ के सभी लोग मेदिनी के पुत्र वाली बात जान गये। जमीदार

को कुछ दिन हुए 'राजा' का खिताब मिला है। उसने कहा, "क्यों मेदिनी, एक बार अपने लड़के को नही दिखाओगे ? ले आओ उसे एक बार ।"

"ले आऊँगा हुजूर, पर पाँच साल से पहले नहीं ला सकता, पंडित जी ने मना किया है।"

"वह तो बहुत ही सौभाग्य की बात है कि तुम्हारे घर पर देवता की कृपा हुई है ।"

कुछ भी हो, आखिर मेदिनी सिह है तो नौकर, उनका हैड-सिपाही। इसलिए राजा जी को उस पर देवता की कृपा-दृष्टि कुछ नही लगी। खबर पाते ही उनके सारे सिपाही गये थे और रुपया चढाकर उन्होने लड़के के दर्शन किये थे। रानी साहिबा ने भी उसी पडित को बुलवाया था। कहा था, "देवता, आप ही के जागजग के कारण, उसके घर गणेश जी की कृपा हुई ? तो महाराज, मेरे ऊपर भी कृपा करवा दीजिये।"

पडित जी ज्ञान के भक्त है, अज्ञान के नही। उन्होंने रानीमाँ को सारी बातें समझा दी, युक्ति से। "संतानहीन या बेटी पैदा करने वाली औरतें लडके की आशा में हमेशा भगवान की चौखट पकडती हैं। देवता की कृपा होगी, देवता जन्म लेंगे, ऐसा होता है हजारों बरसों मे एक बार। देवता का मन होगा, तभी तो ?

"गणेश के अश ने मेदिनी के घर जन्म लिया, अच्छी बात है। लेकिन फिर से पूजा-जाग करके गणेश जी को सिर्फ सूंड तथा चौडे-चौडे दोनों कान पृथ्वी पर भेजने के लिए कहना ठीक नही होगा। गणेश क्रोधी देवता है। रानी माँ अगर चाहें तो वे जागजग कर सकती हैं। लेकिन 'देवता चाहिए' जैसी नाजायज माँग मन मे रखकर पूजा-पाठ करना अच्छी बात नही। देवता लोग मतलबी व्यक्ति पसद नही करते। और फिर रानीमाँ क्या पुत्रहीन है ?"

"नही देवता, दो लडके हैं।"

पडितजी व्यथित-से दिखते है। कहते हैं, "माँ, उसी की मनोकामना पूर्ण होती है जो बेटे की माँ नही है। देवता के अश वाले लडके की चाह लेकर अगर पुत्रवती नारी व्रत करती है तो उसे पुत्र-वियोग होता है। महाभारत में कुंती और कर्ण की बात को जरा याद करें।"

इस प्रसग का अत यही होता है। फिर भी रानीमाँ का कौतूहल कम नही होता। आखिर मे बाढ़ा गाँव के पास के शिव-मदिर के कुंड में शिवरात्रि के अवसर पर जब वे नहाने गयी तो पालकी का रास्ता बदलकर मेदिनी के लड़के को भी देख आयीं। आज तक बाढ़ा गाँव में ऐसी उत्तेजक घटना कभी घटित नही हुई थी। मेदिनी का आँगन लोगों से भर जाता है। रानी देखना चाहते है सभी, लेकिन रानी साहिबा को देखकर सभी का उत्साह ठडा पड जाता है। जितनी काली उतनी ही मोटी। तम्बाकू खाने से होंठ भी एकदम काले। बदन पर लगभग आठ-दस सेर सोने के गहने। रानी माँ उदासीन चेहरा लिये उतरकर एक चौकी पर बैठती हैं। लड़के को प्रणाम कर गोदी मे लेती है और उसके हाथ में एक सोने की अशर्फी देकर वापस पालकी में जा बैठती है।

बाद में अपनी नौकरानी से पूछती है, "लड़के की माँ तो जीवित नही है, किसकी गोद मे था? कौन है वह लड़की?"

"मेदिनी की रखैल।"

"लडका काफी स्वस्थ है।"

"क्यों न होगा हजूराइन, देवांशी लडका है।"

नौकरानी चुप हो जाती है। नौकरानी तथा और लोग भी जानते हैं कि रानी माँ जादू-टोना करती हैं। बाद में नौकरानी मेदिनी सिंह को भी सावधान कर देती है। कहती है, "मोहर को अलग रखना। छप्परगढ की लड़की है हजूराइन। वहाँ जादू-टोना काफी चलता है।"

इस चिंता के कारण मेदिनी सिंह समय से पहले ही अपने घर वापस आ जाता है। लडके की उम्र दो साल होगी, उसकी अपनी लगभग पचास है।

लड़के को स्वस्थ और तगडा बनाना है। फिर शादी। और उसके बाद लड़के के घर मे लड़का होगा। वश मे दीपक जलता रहेगा। कुछ कम नहीं छोड जायेगा वह लडके के लिए। लछिमा और गुलाल की जरूरत उसे उतने ही दिन तक है, जब तक लड़का बड़ा नही हो जाता। लड़के की सेहत देखकर वह समझ लेता है कि लड़के की देखभाल अच्छी तरह से हो रही है। जिस कारण वह सबसे ज्यादा खुश होता है, वह यह है कि

लछिमा लडके के प्रति नौकरानी की हैसियत से ही बरताव करती है।

एक दिन अचानक वापस लौटने पर मेदिनी सिंह दरवाजा वद पाता है। खटखटाने पर गुलाल दरवाजा खोलती है और उसका चेहरा देखते ही मेदिनी समझ जाता है कि कुछ गड़बड़ है। लछिमा की गोद मे सोया है लडका।

"क्या बात है ?"

बिना कुछ बोले गुलाल मिट्टी-भरे एक तसले की तरफ इशारा करती है। आलता (महावर) मे डुबोया एक आटे का गुड्डा तथा उस पर एक लाल धागा।

"यह क्या है ?"

गुलाल कहती है, "बडकी और मझली की करतूत है।"

"क्या कर रही थीं ?"

"देख नही रहे हो ? जाने कब लड़के के कपडे मे का धागा निकाल लिया ? मारने के लिए टोना कर रही थी। न, छूना मत मालिक ! मैंने उस पर पिशाब कर दिया। सारा असर ही ख़त्म हो गया है। मैंने उन्हे पूजा भी नही करने दी। उठा लायी। मालिक, तुम घर हरदम रहते नही हो, हमारे लिए तो बडी मुसीबत हो गयी है।"

मेदिनी गुस्से से आगबबूला हो उठता है। वह बेसहारा है, सहारा चाहता है, इस जनम में ही नहीं, अगले जनम मे भी। जमीन एक सहारा है। जिसके पास जमीन है, उसके पास बहुत-कुछ है। लेकिन जिसके पास पुत्र है उसके पास सब-कुछ है। इतनी आशा-आकाक्षा, अर्चना-पूजा, हवन-यज्ञ का फल यह लड़का है। उसे मारने के लिए जादू-टोना ! पीतल की मूंठ वाली लाठी लेकर दौड़ पड़ता है और पागल भैंस की तरह धक्का मारकर दरवाजा तोड़ देता है। औरतों की 'मार डाला' की चीख़ें सुनकर लोग इकट्ठे हो जाते हैं। मेदिनी तसला दिखाकर कहता है, "डायन हैं, डायन ! लड़के को मारने के लिए टोना किया था।" गांव की जनता घटना की गम्भीरता समझती है। वे एक-दूसरे के चेहरे देखने लगते है। आख़िर मे इस गांव के राजपूत तबके का प्रधान बरकदाज सिंह बोल उठता है, "अभी छोड़ दो भैया, तुम्हारे लड़के के लिए बुरा सोचना भी महापाप है।

भगवान खुद उनको सजा देंगे । ठंडे दिमाग से इसका फैसला करो ।"

मेदिनी सिंह कहता है, "इसी डर से इनको मैंने अपना लड़का नहीं सौंपा। इनको क्या नही दिया ? रोटी कपड़ा-लत्ता, गहना—किसी भी चीज की कमी हो तो पूछो ? एक सौ एक रुपया नगद भी देता हूँ । गाँव में अगर सूद का धंधा चलाना चाहती हो तो वह भी चला सकती हैं।"

"आज शांत हो जाओ, भैया ! कल कुछ बंदोबस्त कर लेना ।"

जनता का झुंड धीरे-धीरे इधर-उधर बिखर जाता है।

मेदिनी सिंह अपने कमरे मे चला आता है। गम्भीर होकर बैठ जाता है। फिर खुद से ही बातें करने लगता है, 'जिन्दगी भर जिसकी चाहत थी, वह मैंने अब पायी है। अब मैं किसी को अपने गरम दूध में गाय का पिशाब नही मिलाने दूँगा । अब कोई मेरे घी मे जहर नहीं मिला सकता ।'

लछिमा मौका देखकर कह उठती है, "मैं इसे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार से रखती हूँ । नानी की गोद में डालकर नहाने जाती हूँ ।"

"जानता हूँ, मैं सब समझता हूँ।"

"चाँद देखना चाहता है, लेकिन मैं बाहर नही लाती, रात की हवा लग जाने के डर से । कितनी निर्दयी है वे...माँ की ममता नहीं है !"

मेदिनी इस बारे मे सोचता है और फिर अगले दिन दो किसानों को साथ मे भेजकर अपनी दोनो बीवियों को उनके गाँव भिजवा देता है। सरयू और सीना यही रह जाती हैं । हाथ के हाथ फल मिलता है। बड़की का बडा भाई और मझली का चाचा आ पहुँचते हैं । दोनो के सिरो पर पगडी, कानो मे पीतल की बालियाँ, पैर मे तिल्लेदार नागरा और हाथ में पीतल की मूँठ वाली छडी है। दोनों ही बड़े ध्यान से मेदिनी की बातों को सुनते है । उनकी सभी शिकायतों को सही मानते हैं । वे खुद भी आखिर मर्द है । मेदिनी सिंह ने जो कुछ भी किया, वे उसे न्यायसगत मानते हैं।

बडकी का भाई बोला, "मेदिनी सिंह, तुम हमारे समाज के न्यायप्रिय आदमी हो। तुम ही कहो, मेरी बहन की ओर से इस तरह हाथ धो लेना क्या ठीक होगा ? तुम जो भी कहोगे, मैं मानने को तैयार हूँ ।"

मेदिनी सिंह गहरी साँस छोड़ते हुए बोला, "भैया, अपनी बहन के तन पर गहने देखे हैं । सूद के धंधे के लिए कितना पैसा दिया है उसे ! क्या-क्या

वे अपने साथ ले गयी हैं—मैंने उन्हें कुछ भी ले जाने से नहीं रोका। मेरा फैसला सही है या नहीं, अब तुम्हीं बताओ? आप लोग ही समझाओ कि आपकी बहन और आपकी भतीजी ने मेरे साथ क्या सलूक किया है?"

"भारी गलती की उन्होंने।"

"ऐसों को लेके घर करूँ? क्या तुम लोग ऐसा कर सकते थे?"

मामला काफ़ी नाज़ुक है। ऐसी घटना से काफ़ी कम गुरुतापूर्ण घटनाओं को लेकर विवाद और विरोध पीढ़ी-दर-पीढी चलता रहता है। कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने पड़ते हैं। कभी-कभी तो खूनी इतिहास रचा जाता है।

मझली के चाचा ठंडे दिमाग़ के बुज़ुर्ग आदमी हैं। कहते हैं, "हम तीनों ही मर्द आदमी हैं। दुनिया के हाल-चाल समझते हैं। एक-न-एक फैसला तो करना ही होगा।"

"मुझे माफ करें, चाचा! उन्हें साथ रखने से मेरा कुल नहीं बच पायेगा। देवांशी लड़का है मेरा। ऐसे लड़के को मारने पर उतारू हैं वे। नहीं, कतई नहीं। मैं अगर बुरा आदमी होता तो उन्हें गहने-रुपये छीनकर भेजता। क्या इज्जत के साथ खर्चा देकर अपने आदमियों के साथ गाड़ी में भेजता?"

चाचा ने कहा, "मेदिनी, मेरी और रूपलाल, दोनों की हालत ऐसी है कि उन्हें रखने में कोई दिक्कत नहीं। भगवान की दया से जमीन है ढोर-डगर है। लेकिन बड़े शरम की बात हो गयी!"

"लेकिन यह लज्जाजनक स्थिति किसने पैदा की है, बताओ?"

"यह भी सच है।"

"वे अगर वैसी होतीं तो क्या गुलाल को लड़का सौंपना पड़ता? कहीं ऐसा होता है क्या? मेरे पिता की भी दो शादियाँ थीं। मैं छोटी माँ का लड़का हूँ। लेकिन क्या आप जानते हैं कि जवान होने तक मुझे पता नहीं चला था कि मेरी अपनी माँ कौन है। मेरा ही दुर्भाग्य है!"

"ठीक है, उनको नहीं रखना तो मत रखो। अपनी छोटी लड़की से लगन करवा दूँ? बड़ी शांत और सुशील लड़की है। अपनी ही जाति के हाथों लड़का पले तो ठीक है।"

मेदिनी दुख-भरी हँसी हँसता है। "नही चाचाजी, भगवान ने मेरे भाग्य मे पत्नी-सुख लिखा ही नही है। नफरत हो गयी है मुझे। बड़ा घर देखकर पिताजी बड़की और मझली को लाये थे और यह भी सच है कि आज तक मुझे इन दोनो ने कोई तकलीफ नही दी। छोटकी तो नौकरानी की तरह रहती थी। सारा घर इन्ही के हाथों मे था, मैं तो नवागढ़ में रहता था। मेरा ही नसीब खराब है। अच्छी बीवियाँ भी बिगड़ गयी।"

दोनो आदमी बुरी तरह फँस गये थे। मेदिनी की बातों से दुख तथा निराशा झलक रही थी। इन बातो को लेकर कोई झगडा-फ़िसाद नही किया जा सकता था। वैसे भी इन बातों मे सच्चाई भी थी। बडकी और मझली ने घोर अन्याय किया है, इसमें कोई सदेह नही। और कोई मामला होता तो वे लड़की वाले होने के नाते माफी माँग लेते और वापस बुलाने के लिए कहते। लेकिन इकलौते लड़के की हत्या करने जा रही थीं वे दोनों। टोना-टोटका करना तो हत्या के बराबर ही है। अब किस मुँह से कहें यह सब ?

मेदिनी सिंह ने कहा, "मुझे आप लोग माफ कर दें। लड़कियों का रिश्ता पक्का होने पर खबर करियेगा। सारा खर्चा मैं करूँगा और दोनों को दस-दस बीघा जमीन भी दूँगा। जिन्दगी कट जायेगी।"

"तुम्हारी उम्र के आदमी फिर से शादी कर सकते हैं।"

"भैया, मेरा नसीब ही खराब है। नही तो लड़का जन के माँ मरती है कहीं ? लडका जन के वह अगर जिंदा रही होती तो यह झमेला क्यों होता ? तुम लोगो को भी भागकर आना पड़ा...।"

मेदिनी बातें बनाने मे उस्ताद था। उसकी सूझबूझ से दोनो ही अत्यंत प्रभावित थे। नौकर दूध और मिठाई ले आया था। न खाने का कोई कारण नहीं दिख रहा था उन्हे। लडकी के भाई ने कहा, "क्या जमाना आ गया है! अरे भई, लडकियो की माँ हो तुम...फिर भी किसी तरह की तकलीफ मे नहीं रखा। गहना, कपडा, बरतन, रुपया...और खाना-पीना तो मैंने अपनी आँखो से देखा है। आपने भी देखा ही होगा। नही, इस मामले में मेदिनी की कोई गलती नही है।"

उसके बाद दोनों ही राम-राम कर विदा लेते है। मेदिनी कहता है,

"लड़कियों के लिए वर खोजिए । छोटकी की लड़कियों की शादी करूँगा। इसके बाद लड़के को बड़ा करने पर मेरा काम खत्म।"

दोनों ही लोग चाँदी का सिक्का देकर लड़के का मुँह देखते हैं और मेदिनी से कहते हैं कि "कोई काम पड़े तो हमे याद करना, वर्ना हम सोचेंगे कि हममे भी आप नाराज हैं।"

"आप मेरे चाचा लगते है और ये बड़े भाई, किससे नाराज होऊंगा ? यह नाराज होना तो अपने दोनों हाथों पर नाराज होना हुआ। ऐसा काम कौन मूर्ख करता है ?"

यह कहकर मेदिनी ने दोनो का ही मन मोह लिया। दोनों ने शपथ ली कि जीते जी वे इस महान वाक्य की मर्यादा को बनाए रखेंगे। और अगर नही रख पाये तो वे चदेला और गहलोत राजपूत नही।

लड़कियों की शादी के लिए मेदिनीसिंह ने उनसे जोर देकर कहा कि भगवान ने अगर चाहा तो वह पाँचों लड़कियों की शादी एक साथ करेगा।

इसके बाद मेदिनी नवागढ़ वापस जाता है। राजा को अपनी दुख-भरी कहानी विस्तार से सुनाता है, कहता है, "तीस साल तक आपकी सेवा की, हजूर ! अब मुझे छुट्टी दीजिये। नही तो मेरा लड़का बेबाक मर जायेगा। हुजूर, लड़का जिन्दा रहेगा तो सब-कुछ रहेगा। इस पार की लाठी, उस पार की नाव। मुझे छुट्टी दे दें, मालिक !"

राजा उसकी यह बात सुनकर अभिभूत हो उठे। अभी कितने सारे कुकर्म कराने बाकी है। हाथियों से कितने ही प्रजा का घर तुड़वाना है। हाकिम के शिकार खेलने आने पर जंगल के गाँव से कितने ही आदिवासियों को खदेड़ना बाकी रहा। बाघानिया के जंगल से अहीरों को उजड़वाने का काम भी बाकी है। मेदिनी तो उनका दाहिना हाथ है। हकीमी गोली भाँग के शरबत के साथ मिलाकर उन्हे पिलाता था, उनका पौरुष ठीक रखने के लिए। लेकिन अब वह जैसा कह रहा है, उन्हे वह भी मानना पड़ेगा।

राजा ने कहा, "यहाँ आ सकते हो ?"

"नहीं हुजूर, वहाँ जमीन है।"

"फिर से शादी करोगे ?"

"नहीं हुजूर, लेकिन अगर मर गया तो देखियेगा, लड़के को हुजूर सरकार के यहाँ नौकरी पर रखा जाये।"

"यह भी कोई कहने की बात है !"

एक बंदूक, एक सौ एक रुपया और नये वस्त्रों की भेंट लेकर मेदिनी सिंह वापस आ जाता है; दुख से उसका मन भारी हो उठता है। लड़के को अगर जिन्दा रखना है तो नौकरी पर रहना ठीक नहीं, नौकरी पर रहा तो लड़का मर जायेगा। दूसरे सिपाही उसे काफ़ी दूर तक छोड़ने आते हैं। वे उसके बर्तन-भांडे, बक्सा-चौकी—सभी घर तक पहुँचा देना चाहते हैं।

सामान घर तक पहुँचाने आये तीन सिपाही काफी देर तक बातचीत करते है, पूरी और पेड़े खाते हैं। कुछ देर बाद कुछ संकोच के साथ युगल सिंह कहता है, "भैया, हम लोग और भी पक्के बंधन में बँध सकते हैं। मेरे बड़े भाई के दो लड़के हैं, तुम्हारी छोटी बहू की दो लड़कियाँ ..।"

"भैया, बड़की और मझली की लड़कियाँ बड़ी हैं। इनकी उम्र कम है। मैं उनके लिए लड़कों की बात कर रहा हूँ। वैसी तुम्हारी बात तो ठीक है, लेकिन ये लड़कियाँ ? उनके लिए भी अगर लड़का ढूँढ दो तो मैं जिन्दगी भर एहसानमंद रहूँगा।"

मेदिनी सिंह कह रहा है, एहसानमंद रहेगा। जिसके घर रानी जी कुछ दिन पहले पधारी थीं, वह मेदिनी सिंह ऐसी बातें कह रहा है। सिपाही लोग निहाल हो गये।

वे वचन देते है कि वे मेदिनी की लड़कियों के लिए जी-जान से लड़का तलाश करेंगे।

बाद में बातचीत चली तो बरकंदाज सिंह ने भी कहा, "जैसा भी लड़का मिलता है, शादी कर दो। तुम्हारी तीनों लड़कियों की माँ के बारे में गलत बातें फैल जाने पर लड़का मिलना मुश्किल हो जायेगा। सीता और सरयू के लिए चिंता की कोई बात नहीं। जानते हो, वे किसकी बहनें हैं ?"

मेदिनी 'जैसा भी लड़का मिले' वाली बात पर पहले तो कुछ नाराज होता है, 'ये भी कोई बात हुई।' लेकिन सोचता है, इस बात में काफी दम है। ज़रूर कहीं कोई बात हुई होगी। ग्राम-समाज में ऐसी कुटनीपने से

रिश्ता टूटता है । मेदिनी ने खुद गुरबचनसिंह की लड़की के बारे में ऐसा ही घोटाला किया था।

वह कहता है, "शादी मैं करूँगा। हुजूर सरकार से कहकर देखो, तुम सभी के लिए मैंने कितना कुछ किया। अब तुम्ही लोगों को देखना-सुनना है, मैं अकेला आदमी हूँ। मेरा लड़का अगर शुभ शकुन का है तो उससे तुम्हें ही फायदा होगा। क्यों, होगा न?"

"जरूर-जरूर।"

यह कहकर मन में ताज्जुब लिये वह घर लौटा और अपने लड़के से कहने लगा "ताज्जुब की बात है! पता नही मेदिनी सिंह को कैसे पता चल गया है कि मैं ही कुछ गड़बड़-घोटाला करने जा रहा था। हुजूर सरकार के पास हैड-सिपाही था, दिमाग भी ठंडा रखना सीखा है उसने। लड़कियों के लिए रिश्ते ढूँढ़ने का काम मुझको ही सौंप दिया!"

लड़के ने कहा, "आप ढूँढ़ेंगे?"

"जरूर।"

"बड़की और मझली की लड़कियों के लिए?"

"क्यों नहीं? क्या गलती है उनकी?"

"क्या कह रहे हैं आप, पिताजी?"

'यही न कि सौत के लड़के को मारने के लिए टोना किया था।' बरकदाज सिंह भौंह चढ़ाकर सोचता है। फिर कहता है, "मेरी बुआ ने तो सौत के लड़के को काट डाला था, परब के दिन। औरतों के दिल में कब क्या होता है?"

"फिर भी?"

'फिर भी क्या? तेरे दोनों सालों को राजा जी के साले का सिपाही बनाया है कि नही? उसी के कहने पर जाति-समाज के कितने ही लड़कों को नौकरी मिली। राजा को भाँग घोटकर पिलाता था। नहीं, कतई नहीं, कुटुम्ब-कुनबे में झगड़ा, मन-मुटाव क्यों नही चले? जरूर चलेगा और कुटुम्ब-कुनबे का काम भी उठाना होगा। यह मत भूलो कि उसका लड़का देवांशी लड़का है।"

"देखने से ही डर लगता है।"

बरकदाज सिंह हँसता है और कहता है, "क्यों ? मुझे तो डर नहीं लगता। क्रोधी देवता है। पंडित जी का कहना है कि शिवजी को भी इन्होंने ही भरोसा दिया था।"

मेदिनी सिंह की लड़कियों का रिश्ता ढूँढने के लिए बरकदाज सिंह पगड़ी बाँधकर आगे आता है, फलस्वरूप इस कार्य को यथोचित सम्मान और मर्यादा मिलती है। बरकदाज ने ही सलाह दी कि "एक ही घर में दोनों बहनों का रिश्ता ठीक नहीं। दोनों के लिए थोड़ा दूर-दूर लड़का देखते हैं। जाने कब क्या झगड़ा उठ खड़ा हो, कब कौन-सी बात सामने आ जाये ?"

मेदिनी ने गुलाल से कहा, "सरयू और सीता को जरा अच्छी तरह खिलाओ-पहनाओ। क्या देखकर शादी होगी उनकी ?"

गुलाल को जब से मेदिनी ने वचन दिया है, तब से वह मेदिनी के लिए कुछ भी कर सकती है। लछिमा से कहती है, "जितने दिन हूँ, इनकी भी देखभाल कर जाती हूँ। लड़का बड़ा होते ही लात मारेगा।"

लछिमा कहती है, "मैं बाहर नहीं निकल सकती, तू जमीन में अरहर बुवा दे। जमीन रही तो सब-कुछ रहेगा।"

"वैसे वह गाय भी देगा।"

"रुपया एक भी मत खर्च करना।"

"पागल हूँ क्या ? तेरी शादी नहीं करनी ..?"

गुलाल ने काफी दूर की सोच रखी है। मालिक जिस दिन छोड़ देगा, उस समय भी लछिमा बुढ़िया नहीं होगी। उसे बाकी जिन्दगी भी बितानी है। बाल-विधवा है वह। बीच में वह मालिक की रखैल रही, और फिर मालिक के लड़के की आया। उसके बाद ? गुलाल ने मोहरकरण को वचन दे रखा है। मोहर की बीबी गुजर गयी है। वह दो-चार साल और इंतजार कर सकता है। इसलिए मोहर उनकी जमीन जोत रहा है। लछिमा भी इस बन्दोबस्त से खुश है। वह शान्त, सहिष्णु लड़की है। गोल-मटोल चेहरे पर छोटी-छोटी आँखें। मेदिनी के घर में वह जिन्दगी-भर नहीं रह सकती, यह उसे अच्छी तरह पता है और इसमें उसे कोई बुराई भी नहीं दिखती। नानी पर उसे पूरा भरोसा है। आखिर उसकी स्थायी जगह मोहरकरण

का घर हीं होगी। मेदिनी के साथ रहने मे उसकी कीमत कम नहीं होगी क्योंकि मेदिनी ने उसे जमीन दी है।

लछिमा और गुलाल इस मकान मे आश्रितो की तरह रहने लगी सरयू और सीता को वे खूब सम्मान देती। लछिमा कहती, "लडके के साथ-साथ इनकी देखभाल मुझसे नही होती। इन्हें तू ही संभाल।"

खाना पकाने का काम मेदिनी सिंह की बिरादरी की एक गूँगी और प्रौढ लड़की करती थी। यह बदोवस्त भी बरकदाज सिंह का ही बदोवस्त है। गूँगी दो वक्त खाना पकाती, चौका लगाती, खाना परोसती, अपना खाना ले जाती।

सरयू और सीता चौके से आगे आँगन में गुडिया से खेल रही थी। गुलाल थोड़ी देर उन्हे देखती रही। फिर बोली, "उठो दीदी जी, गुडियों का खाना पकाने की जरूरत नही है। अब अपनी गृहस्थी शुरू होगी। चलो, तेल मल दें।"

बालों मे तेल लगाना, बदन में दूध की मलाई की मालिश करना और इसी तरह से लड़कियों की देखभाल करते-करते एक दिन उनका रिश्ता पक्का हो गया। इससे पहले ऐसी घटना किसी ने न तो देखी थी और न सुनी थी। बाड़ा ग्राम मे यह बात कहानी बनकर रह गयी। बरकदाज सिंह के उद्यम से एक साथ पाँच लडके जुट गये। बैशाख मे एक दिन शादी हो गयी पाँचों की। काफ़ी बाजे-गाजे के साथ शादी सम्पन्न हुई। नवागढ के राजमहल से आया घी, चावल, चीनी और पाँचों लड़कियों के लिए नाक-नथनी। सिपाही लोगो ने चार घोडियों के पैरों मे घुंघरू पहनाकर उन्हें नचाया। इस शादी मे नवागढ के लोगों ने पहली बार जगमग-जगमग 'एसिटिलिन' गैस बत्ती देखी। काफी लोगों को छिककर जिमाया गया। शादी के दूसरे दिन भी बरातियों को भोजन दिया गया।

फिर डोली चली। बरकदाज़ सिंह ने पहले ही कह रखा था कि इनका गौना भी एक साथ किया जायेगा। लडकियाँ बडी होने तक पीहर में नही रह सकती, क्योंकि कोई भी बुजुर्ग औरत घर में नही है। सभी कुछ सम्पन्न हो जाने के बाद बरकंदाज सिंह ने कहा, "भैया! मैंने वचन दिया था, वचन निभाया। अब एक बात है।"

उसे कुछ ज्यादा दी गयी है। गुलाल ने महसूस किया कि सरयू जितना सीता-सीता कहकर तड़पती है, सीता के मन में वैसा कुछ भी नहीं होता। परिवार में उसका मन रमा हुआ है। सीता के गाँव में मेले की शान भी कुछ ज्यादा है। सीता ने गुलाल को दो रुपये दिये और एक साड़ी। छूट न रहती तो न दे पाती। सीता की सास कानी है। दोनों बहुएँ जो कुछ कहती हैं, वही होता है। फलस्वरूप सीता अच्छी तरह में है। दो विधवा बुआ-सास इन्हीं लोगों के पास रहती है। अन्न का उधार चुकाने के लिए ज्यादातर काम वही करती है। सीता को खटना नहीं पड़ता। गुलाल यह सब देखकर खुश होती है।

तीरथ करने गये थे मेदिनी सिंह। वापस आकर गुलाल को भेजा था सीता-सरयू के पास। दोनों जगह होकर वापस लौट आयी गुलाल। मिशिर जी भी गये थे मेदिनी के साथ। मिशिर जी इसी गाँव के सरकारी विद्यालय के मास्टर हैं। आजकल वे मेदिनी के घर में ही रहते हैं। आँगन की दूसरी तरफ उनका अलग कमरा-दलान है। वहीं उनके लक्ष्मी-जनार्दन भी हैं। खाना पकाने में हाथ अच्छा है। क्योंकि मेदिनी के ख़र्चे से ही खाते हैं इसीलिए बाप-बेटे का खाना वही पका देते हैं। फ़िलहाल वे मेदिनी का ध्यान धरम-करम की तरफ़ ज्यादा खींचने की कोशिश कर रहे हैं। हमेशा कान के पास जपते हैं—"लड़के का ब्याह कर दो, लेकिन इससे पहले मकान से कूड़ा बाहर फेंको।"

मेदिनी अपनी निजी ज़िन्दगी में किसी का भी दख़ल पसंद नहीं करता। ...र करे भी क्यों! लछिमा लड़का सभाल रही है। गुलाल गिद्ध नज़र से मकई, ज्वार, गेहूँ-धान, गुड़, दूध-मट्ठा के साम्राज्य पर निगाह रख रही है। मेदिनी की उम्र साठ के करीब है। लेकिन वह दो सेर गोश्त, एक कटोरी घी, बीस रोटी खाता है और पचाता है। गोश्त और घी काम को बढ़ाता है। इसलिए लछिमा मेदिनी के बिस्तर पर सोती है। लेकिन सभी जानते है कि यह कार्नवालिसी व्यवस्था नहीं है। जब गणेश की दुल्हन 'केला बहू' आयेगी, तब लछिमा को घर से निकलना होगा और तभी मोहरकरण उसका पति होगा। मेदिनी बड़ा समझदार आदमी है। इसीलिए उसने ऐसा बंदोबस्त किया है। मेदिनी की जीवन-पद्धति काफ़ी तर्कसंगत है। दो बीवी

हैं, लेकिन होकर भी नही है। छोटकी परलोक सिधार गयी। वह बेचारा क्या करे? क्या सिर्फ़ माला जपे?

मेदिनी ने इसलिए मिशिर से कहा, "देवता! तुम कुछ नही समझते। लड़के की शादी होने पर दुल्हन आयेगी। छोटी उम्र में क्या वह सारा काम सभाल सकेगी? लड़का जवान होगा, बहू का गौना करेंगे। तभी इन्हें भगाएँगे।"

मिशिर के सिर पर गाज गिरी। गणेश का ब्याह होने पर लछिमा को छोड़ दिया जाये, यह अर्ज़ी लछिमा की तरफ़ से ही थी। साफ़-साफ़ कहने का साहस न जुटा पाने के कारण ही घुमा-फिरा कर अर्जी पेश करनी चाही थी मिशिर ने। मोहरकरण ने लछिमा से कहा है, "काफी दिन बीत गये है इंतजार करते हुए।" लछिमा भी कुछ नही तो तीस की तो होगी। मोहरकरण की उम्र चालीस साल है। मेदिनी की गृहस्थी सभालना और लड़के को बड़ा कर देना निहायत जरूरी काम सही, लेकिन मोहर भी तो कुछ लछिमा के शरीर और परिवार का सुख भोगना चाहता है। इसीलिए लछिमा ने मिशिर से विनती की थी कि वह मेदिनी के सामने यह प्रस्ताव रखे। लेकिन मेदिनी का जवाब सुनकर अपने को मुसीबत में महसूस कर रहा था वह। लछिमा से बोला, "गणेश की शादी होने से क्या होता है? गौना न होने तक तुझे छोडने वाला नही।"

लछिमा ने सुनकर केवल इतना ही कहा, "मोहरकरण और आठ साल इंतजार नहीं कर सकता। मेरी गृहस्थी कभी नहीं बनेगी। तुम बाह्मन देवता हो। तुम्हारी जाति को सात खून भी माफ है। तुमने जरा जोर देकर अपनी बात क्यों नही मनवायी?"

"क्या करूँ? मेरा अन्नदाता भी तो वही है। वही मेरा भी मालिक है।" लछिमा अपने आपसे कहती है, "जब मैं आयी तो सौतिया डाह के कारण कोई भी काम तरीके से नही हो पाता था। घर की हालत क्या ऐसी थी? लीप-पोत कर मैंने मकान का चेहरा ही बदल दिया। बड़े-बड़े डोलों को गोबर-मिट्टी से लीपकर रखनी। मकई का दाना भी चिड़ियों को नही चुगने दिया।"

"अब भिन-भिन मत कर।"

"दो साल की उम्र तक मैंने उसे जमीन पर नहीं उतारा। लड़के के कपडे सूखने को डाले तो बैठकर पहरा दिया, ताकि कपड़ों को काग-चील की हवा न लगे। बरसात के मौसम मे तसले मे आग जलाकर कपड़े सुखाती रही। आज इतना बड़ा हो गया। उसे कभी सर्दी-जुकाम नही लगा। माँ की गोद मे पलने वाले लडके को भी ठंड लग जाती है, बुखार आ जाता है।"

यह कहकर लछिमा जल्दी-जल्दी चली जाती है। सीने में जलन लिये। बड़ी आशा थी कि अब मेदिनी उसे मुक्ति देगा। क्या मोहर उसका इंतजार करेगा ? गणेश को खोजने चल पड़ी। बाहर एक पेड के नीचे मेदिनी बैठा हुआ किसानों को उनके काम बता रहा था। उसकी तरफ बिना देखे वह बोली, "छोटे मालिक को बुलाने जा रही हूँ।"

"कहाँ गया है ?"

"मुझसे कहा कि...।"

"क्या ?"

"मैदान की तरफ जायेगा। हरोआ को साथ ले जाऊँ क्या ?"

"क्यों ?"

"धूप निकल आयी है। क्या वह पैदल आयेगा ? छतरी लिये हूँ।" मेदिनी की आँखों मे लछिमा का पद दूसरे किसानों से कुछ ऊँचा है। मेदिनी ने इसीलिए कहा, "तू उसे बहुत लाड़-प्यार करती है। हरोआ, तू साथ चला जा।"

हरोआ काफ़ी ताकतवर प्रौढ़ आदमी है। उसे छोड़ और कोई भी गणेश को कधे पर बिठाकर नही ला सकता। लछिमा को वह बहुत मानता है। क्योंकि उसे बहुत भूख लगती है। उसकी भूख कभी नही मिटती। लछिमा उसे भर-पेट रोटी और सत्तू खिलाती है। हरोआ किस जाति का है, कोई नही जानता। वह तीन साल पहले बाढा गाँव में आया था। उसके यह कहने पर कि खाने के बदले काम करूँगा, मेदिनी ने अपने घर मे रख लिया था। मेदिनी ही इतने हट्टे-कट्टे जवान से काम ले सकता है, उसे डरा-धमका सकता है।

हरोआ मदबुद्धि का सीधा-सादा आदमी है। उसने एक दिन कहा था,

"मोहर के बदले अगर लछिमा की शादी उसके साथ होती तो वह अकेले ही सारी जमीन जोत सकता है। उसके बाद मालिक की जमीन जोतकर अपनी रोटी कमाता।" गुलाल ने उसकी बातों को कोई महत्व नही दिया था और कहा था कि अगर मालिक के कानों में भनक पड गयी तो तेरी जान ले लेंगे।

हरोआ तब चुप कर गया था, लेकिन बाद मे कहा था, "मैंने किसी बुरे इरादे से नही कहा। मेहनत के लिए भी तो आदमी चाहिए, क्यो ?"

इस समय हरोआ, लछिमा से थोड़ी दूरी बनाये हुए, पीछे-पीछे चल रहा है। ऐसी औरत को मालिक क्यो छोड़ देगा ? यह वह नही समझ पाता और फिर अगर छोड़ना ही है तो औरत की जवानी रहते-रहते उसे क्यों नही छोड़ती ? उन लोगों मे मेदिनी, लछिमा और मोहर को लेकर काफ़ी बातें चलती है।

हरोआ ने बड़ी इज्जत के साथ पूछा, "हम भगी टोले की तरफ क्यों जा रहे है ?"

हरोआ ने गुलाल के सामने जो प्रस्ताव रखा था, वह जानती थी। वह उसकी बातो से परेशान होने लगती है। और परेशानी को छुपाने के लिए बेरुखी दिखाती है। इस समय वैसे ही पारा गरम है।

लछिमा गुस्से से बोली, "उधर मेरी ससुराल था ! भगी सूअर मार रहे है, यह बात छोटे मालिक को आकर बताने की क्या जरूरत थी ?"

"न बताता तो भी उसे बाद मे पता चल ही जाता। फिर वह मुझे मारता।"

"भंगी लोग ! कौन लोग जाते है उनकी बस्ती में ?"

"सूअर का गोश्त खाने में बडा स्वादिष्ट होता है, तुमने कभी खाया है ?"

"तुम्हारे साथ बक-बक करने का मेरे पास समय नहीं है।"

तभी मिली-जुली आवाजें सुनायी देती है। कोलाहल धीरे-धीरे नजदीक आता जाता है। चारों तरफ बबूल के पेड़ों से घिरे एक मैदान मे वे लोग पहुँच जाते हैं। ट्रेन की सीटी की तरह तीखी चीख। सूअर के शरीर को गरम सलाखो से बीधा जा रहा है, सलाखें निकालकर और तपाकर फिर

से बीधा जा रहा है। सबसे आगे गणेश खड़ा है। उसके चेहरे पर अमानवीय खुशी और तृप्ति झलक रही है।

लछिमा खड़ी हो जाती है। उसे पता है कि जानवर जब तक मर नही जाता, वह वहाँ से हिलने वाला नही। सूअर के मर जाने पर लछिमा उसे बुलाती है, "छोटे मालिक !"

गणेश चौककर वास्तविक दुनिया में वापस आता है। हरोआ झुकता है, वह उसके कधे पर चढता है। लछिमा छतरी उठाकर उसके सिर पर तान देती है।

गणेश छोटा मालिक है, इसका खयाल रखते हुए लछिमा कहती है, "इतनी धूप मे कौन आता है भगी टोला मे? फिर यह काम देखना भी अच्छी बात नही।"

"क्यों ?"

"यह बड़ा निर्दयी काम है।"

"क्यो? मुझे तो अच्छा लगता है।"

"अब तुम पढाई-लिखाई सीख रहे हो। यह देखना अच्छा नही।"

उस समय तो लछिमा चुप हो जाती है, लेकिन रात को मेदिनी के पैर दबाते हुए कहती है, "छोटे मालिक का यह काम अच्छा नही। इतना-सा लड़का, सूअर मारते देखकर इतना खुश क्यों होता है?"

"किसका अंश है वह ? वे क्रोधी देवता हैं।"

मेदिनी कुछ देर चुप रहता है, पैर दबवाने के सुख को भोगता हुआ। फिर कहता है, "छोटे मालिक की शादी होने पर कैसा रहेगा? सोचता हूँ, दस साल का होते ही शादी कर दूं।"

"अच्छा रहेगा," लछिमा का स्वर मंद और अस्पष्ट है।

"जब वह 18 साल का होगा, दुल्हन घर करने आयेगी। फिर तेरी छुट्टी।"

लछिमा इस बात का कोई जवाब न देकर पैर दबाती रहती है। लेकिन उसका सिर और भी झुक जाता है। फिर मेदिनी के पैरो मे मुँह छिपाये आकुल हो रो उठती है। "मालिक, मुझे भगाना तो है ही ! मुझे अभी छोड़ दें, मालिक ! मेरी जिन्दगी का भी कुछ सहारा हो, नही तो चालीस

साल की उम्र में मैं कहाँ जाऊँगी ? पहले तुम्हारा सेवा की, फिर छोटे मालिक की सेवा की। अब आठ साल और करूँ ? इसमें नौकरानी भी तो रख लेता है।"

"तू रो रही है?"

"तुम इतने समझदार हो। वे तुम्हारे लड़के को मारना चाहती थी। भगवान जानता है, कोई भी मर्द ऐसी बात माफ नहीं कर सकता। लेकिन तुमने कितनी समझदारी और सहनशीलता से काम लिया। मुझ पर भी रहम करो, मालिक !"

मेदिनी सिंह पैर खींच लेता है और एक लात मारकर लछिमा को परे हटा, उठ बैठता है। कहता है, "छोटी जात को बिस्तर पर बिठाने से वे अपना आपा भूल जाते हैं। किनकी बात कर रही है तू? वे मेरी धर्म-पत्नियाँ हैं। *नमकहराम और किसे कहा जाता है? तुझे जमीन लिखकर नहीं दी क्या?"*

लछिमा सिर थामे बैठी रहती है। मेदिनी सिंह कहता है, "लड़के की खातिर तुम लोगों को पाल रहा हूँ, यह तू भी जानती है और मैं भी। गणेश की शादी होते ही दुल्हन नहीं आने वाली। जब वह आयेगी तो तेरी छुट्टी। मोहर क्या तब तक इंतजार नहीं करेगा?"

लछिमा नाक सुड़ककर, आँखें पोंछकर, सँभलकर कहती है, "भूल जाओ, मालिक ! मुझसे गलती हो गयी थी। माफ कर दो।"

मेदिनी की लात लगने से उसके कान की बाली टूट गयी थी। कान से खून बहने लगा था। मेदिनी कहता है "कान धोकर दीये से गरम तेल लगा ले।"

सुबह होने पर मेदिनी ने सारी बातें मिशिर से कहीं। मिशिर गंभीर होकर कहता है, "यह बात कुछ अच्छी नहीं हुई, मालिक !"

"कैसे?"

"जिसके हाथों में तुम्हारे लड़के के पालने की सारी जिम्मेदारी है, उसी का अगर मन उचट जाये तो क्या उसे छोड़ देना ठीक नहीं रहेगा? छोटी जात की बात है, पता नहीं गुस्से में क्या कर गुजरे ! तुम्हारे लड़के की भलाई के लिए ही कह रहा हूँ।"

मेदिनी के मन में वहम पैदा हो जाता है। सुबह से वह कमरे में बैठ जाता है और लछिमा पर निगाह रखता है। वह यहाँ से जाना चाहती है, इस गृहस्थी से उसका मन उचट गया है। इस नयी बात की रोशनी में वह पहली बार लछिमा को काम करते हुए देखता है। लछिमा बड़े कुंड मे कुएँ से पानी भरती है। गणेश उससे नहायेगा। फिर कुंड पर पतला कपड़ा ढँकती है ताकि धूल से पानी गदा न हो। लछिमा गणेश के कपड़ों की तह लगाकर रखती है। बिस्तरे, चादर, तकिये का गिलाफ धोती है। मलाई का लड्डू और परांठा बनाकर जाली से ढँककर रखती है। गणेश कहीं से दौड़कर आता है। लछिमा पहले बैठकर उसे पंखा झलती है, फिर उसे खाना देती है। गणेश पतंग माँगता है। लछिमा कहती है, "मैं काम कर लूँ, फिर चरखी थामूँगी। तुम पतंग उड़ाना। शक्करपारे बनाये हैं माँ ने, तुझे दूँगी।"

शक्करपारा लेकर गणेश कूदता हुआ चला जाता है और लछिमा तिल कूटने बैठ जाती है। फिर जैसे हवा से बात कर रही हो। कहती है, "मेरे ऊपर नजर रखने की जरूरत नहीं। मैं उसका कोई नुकसान नहीं कर सकती। मेरी देह मे जब तक जान है किसी को नुकसान पहुँचाने भी नही दूँगी।"

मेदिनी के घर में लछिमा ठीक उसी तरह रहने लगती है, जैसे पहले रहती थी, लेकिन कहीं कुछ परिवर्तन अवश्य आ जाता है। प्राणहीन गुड़िया की तरह लछिमा निभाती है दिन का कार्यक्रम और रात की भूमिका। तिस पर भी मेदिनी क्रोधित होता है। आठ साल इंतजार करने के लिए कह-कर क्या कोई भारी गलत बात कही है उसने? क्या आठ-दस साल और इन्तजार नही कर सकता मोहर? वह इन्तजार न भी करे तो भी लछिमा की शादी, घर-गृहस्थी बनना बड़ी बात है कि मेदिनी की सुविधा, सुख-आराम? मेदिनी कहता है, "अगर वह इतने दिन तक इन्तजार न भी करे तो भी कोई बात नहीं। तीन बीघा जमीन दे चुका हूँ। दो बीघा जमीन और दे दूँगा। गणेश के मालिक बनने पर उसके पैर पकड़कर रहने से क्या दो जून की रोटी नहीं मिलेगी तुझे?"

लछिमा सिहर उठती है, "नहीं-नहीं, और जमीन मत देना, मालिक!

और जमीन नही चाहिए।"

देर तक मेदिनी के पैरों को सहलाती रहती है फिर कहती है, "छोटे मालिक की शादी से पहले मकान में पुताई, रंग-रोगन करवाओ। बड़े कमरे की मरम्मत करवाओ। लोग-बाग आयेंगे।"

"यह तुमने ठीक कहा।"

"मैं चाहती हूँ, नानी का कमरा ठीक करवा लूँ।"

"क्यों?"

"मालिक, आप इज्जतदार आदमी हो। तुम्हारे लड़के की शादी है। कितने नाते-रिश्तेदार आयेंगे। यहाँ रहकर हम क्या तुम्हारी हँसी करायेंगे? दस दिन हम लोग वहीं रहेंगे।"

"यहाँ का क्या होगा?"

"देवता को सब-कुछ समझा दूँगी। तुम ही कहते थे कि नवागढ़ के मिथिला सिंह भी इस तरह का बदोबस्त अच्छी तरह करते है। उसे ही बुलवा लो।"

"गुलाल का कमरा क्या ढह गया है? हरोआ को वहाँ सोने के लिए कहा था, क्या वह वहाँ नहीं सोता?"

"पुराना तो है ही। हाँ, वह सोता है।"

"अभी मरम्मत करायेगी? पता है, कितना खर्चा आयेगा?"

"तुम जो रुपया देते हो उसी मे करवाऊँगी।"

"जैसा तू ठीक समझे।"

लछिमा ने यह सोचा तक न था कि मेदिनी ऐसी बात कहेगा। वह सोचती थी कि उसके ऐसा कहने पर मेदिनी कहेगा, 'नही लछिमा, ऐसा मत कह। तेरे बिना गणेश की शादी कैसे होगी? तुझ जैसा अपना और कौन है?'

लेकिन मेदिनी ने ऐसा नही कहा। यह सुनकर वह तो और आश्वस्त महसूस करता है।

दूसरे दिन मिशिर कहता है, "इसे तुम छोटी जात कह रहे थे, देवता? देखा, उसकी समझ कितनी ऊँची है। शादी का जितना भी भारी काम है, वह खुद करेगी, लेकिन सामने नहीं पड़ेगी।"

गाँव के राजपूत तबके ने उनकी काफ़ी प्रशंसा की। उच्च वर्ण के राजपूतों का खून काफ़ी गरम होता है, इसलिए घरवालों के होते हुए भी गाँव में, *छोटी जाति की रखैल रखकर वे इस समस्या का समाधान करते* है। लेकिन मेदिनी जैसा भाग्यवान मर्द किसने देखा है! एक बीवी मर गयी, दो को भगाना पड़ा। गृहस्थी बरबाद हो जाने की बात थी। सभी सोच रहे थे कि अब मेदिनी गुड़-गोबर करेगा। किन्तु 'भाग्यवान की बीवी मरती है' वाला मुहावरा मेदिनी के संबंध में सही साबित हुआ है। तीन सौतों की गृहस्थी मे न तो सुख था, न ही कोई श्री। गुलाल और लछिमा ने अपना खून-पसीना बहाकर उसकी गृहस्थी को संभाला।

सभी ने अपनी-अपनी रखैल से कहा, "देखा!"

"मालिक ने उन्हें जमीन दी है।"

"ज़मीन देने से ही सब जान नहीं दे देते।"

इसका जवाब किसी भी रखैल से देते नहीं बना। वे अपनी भूमिका अपने-आप नहीं चुनती। इस इलाके मे राजपूत ही ऊँची जाति के हैं। संख्या भी इन्हीं की ज्यादा है। नीच जाति के नारी-पुरुष की भूमिका कब भूमिदास की, कब मजदूर की, कब उजड़े किसान की और कब रखैल की होगी—वही लोग यह तय करते है।

वे कहते हैं, ये सुनते है। इस बात को भी औरतों ने चुपचाप सुन लिया। जमीन न मिलने पर भी वे सेवा और अधीनता स्वीकार करते हैं, अब भी किया।

आश्वस्त होने के कारण मेदिनी ने उदारता से छप्पर के लिए बाँस और खपरैलें देनी चाही थीं, लेकिन लछिमा ने नहीं ली। कहा, "नहीं मालिक, आप जो रुपया देते है, उसी से बना लेंगे।"

गुलाल ने कहा, "यह कौन-सी अकल की बात की तू ने?"

"नहीं, नहीं लूंगी।"

"क्यों?"

"नहीं लूंगी, बस।"

हरोआ मरम्मत करने के लिए आया। लछिमा ने कहा, "मुझे एक दिन की छुट्टी चाहिए।"

"क्या करेगी ?"

"एक बार मौसी के पास जाऊँगी। वहाँ के गैबीनाथ के मंदिर मे पूजा चढ़ाऊँगी। मनौती मान रखी है।"

"कैसी पूजा ?"

"गणेश की शादी पक्की हो जाने पर पूजा की मनौती की थी।"

मेदिनी अभिभूत हो उठा। कहने लगा, "गाड़ी मे बैल जोतने के लिए कहता हूँ। रास्ता काफी लम्बा है।"

"नहीं, नहीं, इससे पुण्य नहीं होगा।"

"गुलाल साथ मे जायेगी ?"

"बुड्ढी वहाँ जाकर क्या करेगी ?"

"साथ में नौकर ले जा।"

"क्यों ?"

लछिमा अकेली ही जाती है। गुलाल से मोहरकरण को कहलवा रखा था। गाँव के बाहर से वह लछिमा के साथ हो लिया। जाते समय लछिमा ने कोई ख़ास बात नहीं की। सिर्फ़ कहा, "मन ठीक नहीं। जिस काम से जा रही हूँ, पहले वह कर आऊँ। वापस आते समय बात करूँगी।"

कभी गैबीनाथ की बहुत ही मानता थी। एक बार पुरोहित ने गुस्से से गाय की रस्सी को अचानक ऐसे खींचा कि एक बूढ़ी गाय मर गयी। भक्तगण काफ़ी नाराज हो उठे। मौके का फ़ायदा उठाकर एक अन्य ब्राह्मण ने गड्ढे में पहले चना डालकर और ऊपर शिवलिंग रखकर पानी छिड़का और फिर गड्ढा पाट दिया। बाम्हन को स्वप्न मे 'भुँईफोड़' शिव मिलता है। नये शिवजी में अभी काफी गर्मी है। दूध से नहाना। चाँदी की नाग-लपेट, ताँबे की गौरी-पट—सभी कुछ मिल चुका है। लेकिन अभी भी लोग मनौती मानते हैं।

पूजा हो जाने पर लछिमा दुकान से चिउड़ा और तिलकुट ख़रीदती है। उसके बाद दोनों दुकान मे बैठकर खाते है और पानी पीते है पेट भर। फिर लछिमा कहती है, "आओ चलें।"

"अभी से, आज तो तेरी छुट्टी है।"

"रास्ते में कहीं बैठेंगे।"

एक आम के पेड़ के नीचे दोनो बैठते है। प्रत्याशा से मोहरकरण उसे निहारता है। लछिमा सिर झुकाकर जमीन मे कुछ लकीरें खीचती है। फिर अचानक धीरे से कहती है, "तुम शादी कर लो। धनपतिया अच्छी बीवी साबित होगी। मानी बात तय कर देंगी।"

"मालिक ने तेरी बात नही मानी?"

"नही।"

लछिमा नकेल से बँधी गाय की तरह सिर हिलाती है और कहती है, "मालिक ने तीन बीघा जमीन देकर मुझे खरीद रखा है। जैसे बैल और भैंस बाँध रखे हैं वैसे ही मुझे भी बाँध रखा है। लडके की शादी हो जाने पर भी मुझे छुट्टी नही देगा। उसके बाद भी आठ साल मुझे वहाँ रहना होगा। फिर कही मेरी छुट्टी होगी। यही कहा है उन्होंने।"

"भाग चलें, लछिमा?"

"कहाँ जायेंगे? वह पकड़ लेगा।"

"यदि जबरदस्ती शादी करूँ तो?"

"तो वह पूरा टोला जला देगा। तुम्हें मार डालेगा।"

मोहरकरण चुप हो जाता है। फिर कहता है, "तब क्या करें? और आठ साल इंतजार। तेरा क्या होगा? मेरा क्या होगा?"

लछिमा ने कहा, "इसी बात के लिए तुम्हें बुलाया है।"

"क्या कहती है फिर तू?"

"तुम शादी कर लो।"

"और तू?"

"मेरा जो होना है, होगा। आठ साल बाद मैं होऊँगी चालीस की। तब कैसी शादी और कैसी गृहस्थी? धनपतिया की बात मैंने इसीलिए कही है। छोटी उमर मे ब्याही थी। आदमी ने घर में नही रखा। अब मर भी चुका है, उसके भाई बरकन्दाज सिंह की जमीन जोतते है। तुम भी जोतोगे और...।"

एक थैली उसकी ओर बढ़ाती है और कहती है, "बीस रुपये हैं।"

"क्यों दे रही है?"

लछिमा मुसकराने की कोशिश करती है लेकिन सफल नही होती।

गला रुँध जाता है। फिर कहती है, "दो बकरियाँ खरीद लेना। काफी मुनाफा है इस काम में। मान लो, रुपया तुम्हारी शादी पर दिया है। मेरा इंतजार करने के कारण ही तुम्हारे इतने साल बरबाद हुए। शादी तुम पहले भी कर सकते थे।"

"नही लछिमा, मैंने क्या तेरा रुपया चाहा था ?"

"मैने ऐसा कुछ नही कहा है। मैं तो जानती हूँ तुम मेरे सिवाय... खैर, होता तो अच्छा होता, लेकिन नही हुआ।" लछिमा की आवाज फिर रुँध जाती है।

वह फिर कहती है, "तुम्हारे पास है भी क्या ? मुझसे सौ रुपया उधार ही ले लेना। कुछ जमीन अगर जमा लेकर जोत सको...।"

मोहर रूखी हँसी हँसता है। कहता है, "ये सब बातें रहने दे।"

"मना मत करो।"

लछिमा कुछ देर तक सोचती रहती है। फिर कहती है, "मैं भी आस लगाये थी...।" फिर आक्रोश के साथ कहती है, "बुड्ढा मुर्दा कहीं का ! उसकी गृहस्थी, उसका लड़का, उसकी पत्नी ! वह ठीक तो सब ठीक। भगवान जानते हैं, कोई बेईमानी नही की और न ही करूँगी। लेकिन दिल चाहता है कि सब-कुछ जलाकर यहाँ से चली जाऊँ।"

"ऐसा मत सोच लछिमा, दुख बढ जाता है।"

"वह लड़का कहाँ से देवता का अंश है ! सूअर मरता देखकर हँसता है। गाभिन भैंस को साँप ने काटा। भैंस जितना छटपटायी, वह उतना ही जोर-जोर से हँसा। मालिक जब हरोआ का मारता है, देखकर खुश होता है। बरकदाज सिंह की पोती बड़ी भोली-भाली है। वह जरूर उसे तकलीफ देगा।"

"ऐसा मत बोल, लछिमा ! चिंता बढ़ जाती है।"

"चलो, अब चलें।"

"चलो।"

"और हम नही मिलेंगे। मिलने से होगा भी क्या ?"

इस तरह लछिमा और मोहरकरण का संबंध ख़त्म हो जाता है। गैबीनाथ की पूजा से वापस आती है पत्थर की मूर्ति बनी। गुलाल से भी

नही बोलती। मेदिनी से भी कुछ नही कहती।

मेदिनी सिंह कहता है, "दूसरे घर मे सोयेगी कहाँ? तखत भिजवा दूं? जमीन पर सोने से तबीयत खराब हो गयी तो असुविधा किसे होगी... मुझे ही न?" मेदिनी हँसता है। लछिमा कहती है, "हरोआ से कहा है कि बाँस का मचान बना देना।"

उसके बाद सारे रिश्ते-नातेदार आ धमकते हैं। मेदिनी की एक बीवी का चाचा, एक का बड़ा भैया पहले से दिये हुए वचन निभाने के लिए सपरिवार आ धमकते है। लछिमा और गुलाल मेदिनी को सब-कुछ समझाकर दूसरे घर मे चली जाती है। ढोलक पर थाप पड़ती है। औरतों के गीत गूँजते हैं। लछिमा अपने बिस्तर पर लेटी रहती है। गुलाल इस मौके पर बाहर निकलती है और खबरें इकट्ठा करके वपास लौटती है और नतिनी से कहती है, "यह क्या सुनकर आ रही हूँ मैं!"

"क्या सुनकर आयी हो? क्यों आँखें तरेर रही है?"

"सुना, मोहर को तूने शादी करने के लिए कहा?"

"कहा है।"

"तूने मेरे बारे मे कुछ नही सोचा?"

"तू मेरे बारे मे जितना सोचती है, उससे ज्यादा सोचती हूँ। अपने मन मे झाँककर देख।"

"क्या बोल रही है, लछिमा?"

"मत पूछो।"

"क्यों?"

"मुझे अच्छा नही लग रहा है।"

"क्या हुआ? मुझसे भी नही कहेगी?"

"क्या कहूँ?"

"मोहर के साथ तेरी शादी कराऊँगी, यह आस लेकर...।"

लछिमा अपने स्वभाव के विपरीत कड़वाहट और जलन से कहती है, "अय! दिल ही टूट गया। ऐसा दिखा रही है कि जैसे मोहरकरण नही, मालिक मेदिनी सिंह ही छूट गया।"

"हाय राम! मैंने क्या कहा और तूने क्या समझा!"

"सब समझती हूँ। अब मेरी भी सुन ले। तूने मुझे बचपन से पाल-पोस कर बड़ा किया। उसी अधिकार से तूने यह तय किया कि मैं मालिक के लड़के को पालूंगी, मालिक की सेवा करूँगी।"

"झूठ मत बोल, लछिमा ! मालिक का तेरे साथ पहले से ही सम्पर्क था। नहीं था क्या ?"

"हाँ-हाँ, था। रात में ऐसा संबंध हर मालिक का होता है, लेकिन फिर भी उन लड़कियों की शादी होती है, गृहस्थी भी करती है वे। सब-कुछ गिरवी नहीं रखता कोई।"

"मैंने क्या वैसा ही किया है ?"

"चुप रह तू ! जमीन, गाय और रुपये के लालच मे तूने ही तो मुझे गिरवी रखा है। तेरा खयाल न होता तो अब तक मोहर को लेकर कहीं और चली गयी होती। तुझ पर चोट आयेगी, यही सोचकर मैंने कुछ नहीं किया। अभी भी आठ-दस साल के लिए मैं गिरवी हूँ, समझी ?" लछिमा भयानक आक्रोश से गुलाल के चेहरे के सामने हाथ नचाकर कहती है, "गिरवी हूँ मैं ! बूढ़ी गाय की तरह जब पूरी तरह से नाकारा हो जाऊँगी, तब छोड़ेगा वह मुझे। क्यों बैठा रहेगा तब तक मोहर ? तब मुझे लेकर क्या करेगा वह ? तेरा क्या ? जमीन भी मिली, गाय भी मिलेगी। रुपया तो है ही। चिंता किस बात की ? छुटपन मे पाला-पोसा था, इसलिए बड़ी होकर भी तेरे बारे में ही सोचा मैंने।"

बाहर खड़ा हरोआ सारी बातें सुन रहा था। वह स्तंभित हो जाता है। फिर खँखारते हुए कहता है, "सीधा लाया हूँ। ले लो, बर्तन वापस ले जाऊँगा।"

"ले रही हूँ।"

गुलाल मुँह बिगाड़कर चावल-दाल-तेल-नमक से सजी परात लेते हुए कहती है, "घूम आ, फिर ले जाना...।"

फिर लछिमा से कहती है, "मैं जरा मुहल्ले में चक्कर लगाकर आती हूँ।"

क्षण-भर में सुनसान हो जाता है लछिमा का नया घर-आँगन। बिन फलने वाले आम के पेड़ से झर-झर पत्ता झड़ता है। पैर फैलाकर लछिमा

बैठी रहती है। क्या सोचा होगा हरोआ ने, पता नहीं? रात को यही तो सोता है। पता नहीं कब आंगन के चारों तरफ घेरा लगाया है मनसा के पेड़ से! हट्टा-कट्टा जवान मरद। बाँस का मचान बनाया है मजबूती से। सारा बदोबस्त इस तरह किया है, जैसे अभी-अभी ही कोई यहाँ रहने के लिए आ रहा हो।

लछिमा ने जम्हाई ली। "मैया री! बेवक्त जोरों से नीद आ रही है।" उसने सुना है कि जिस जगह पर कोई लगातार रहता है, वहाँ उसका अधिकार हो जाता है। हरोआ, तू मेरे घर-बार की खूब देखभाल करना। रात को सोता है, सोता रह। पहले मेरी नानी मरेगी। फिर मैं मरूँगी। तू यही रहना, पहरा देना। यह घर एक दिन तेरा होगा।

गुलाल की हँसी और बातचीत की आवाज़ से नीद टूटी तो शाम होने वाली थी। हड़बड़ा के उठ बैठी लछिमा। गुलाल दाल चढ़ाकर हरोआ के साथ किस्सा जोड़े बैठी थी। बुड्ढी का शौक देखो! दाल की महक से सारा आंगन महक रहा था। गुलाल चौंककर कहती है, "सोयी थी, इसलिए जगाया नहीं।"

"पानी कहाँ से मिला? खाना पकाने का पानी?"

"हरोआ ले आया था।"

"हूं!"

"अभी खायेगी।"

"तू खा ले, उसे भी दे दे।" लछिमा जम्हाई लेकर कहती है, "मैं नहाकर खाऊँगी।"

"कहाँ जायेगी?"

"पहले हम लोग कहाँ जाते रहे है?"

"धनपतिया के तलाब पर।"

"और कहाँ जाऊँगी?"

"क्या ले रही है?"

"बेसन। मैल छुड़ाऊँगी बदन से।"

लछिमा को इस समय कुछ भी खराब नही लग रहा है। कुछ दिनों की छुट्टी-मुक्ति, चाहे पल के लिए ही सही। वैसे हरोआ के साथ वह

ज्यादा बातें नहीं करती, लेकिन जैसे इस समय वह यह भी भूल गयी।

"क्या तुम्हारे सातों कुल मे कोई नहीं है तुम्हारा ? यहाँ मरने के लिए आये ?"

"लम्बी बात है।"

"यहाँ क्यों आये ?"

"मालिक को पता है।"

"घर कहाँ है, घर ?"

"नही बताऊँगा।"

"दगाबाजी किये हो ?"

"नही, कतई नही।"

"क्या देता है यह तुम्हें ?"

"कुछ नहीं, पेट-भर खुराकी।"

"बस ?"

लछिमा पहली बार महसूस करती है कि हरोआ के साथ उसकी कहीं पर समानता है। जैसे मालिक ने उसे अपने क़ब्जे में कर रखा है, ठीक उसी तरह हरोआ भी उसके कब्जे में है। किसी गोपनीय बात या कोई कमजोर नस का पता चल गया होगा उसे। इसलिए इस तरह से गुलाम बना रखा है इसे।

अचानक लछिमा के मन में एक भयानक संदेह उत्पन्न होता है।

"क्यों हरोआ, कोई खत तो नही लिख दिया था तुमने ?"

"कैसा खत ?"

"कैसे बुद्धू हो तुम ! ये भी नही जानते कि खत लिखकर आदमी अपने आपको बेच देता है। तुम जितने भी इस तरह के नौकर हो, सभी के पुरखों ने कभी कर्ज लिया था, खत लिखकर। चुका न पाने के कारण, अभी भी मजूरी करते हैं। एवज में कुछ फसल मिल जाती है। ऐसा ही बंदोबस्त है क्या तुम्हारे साथ भी ?"

"हुजराइन !"

"जा !"

"क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं। बता, मैं हुजूराइन हूँ क्या ?"

"फिर क्या कहूँ ?"

"नाम लेकर बोल, गिदड़ ! पीछे से क्या बोलता है ?"

"किसी बुरे नाम से तो नहीं बुलाता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि सभी को पता है।"

"क्या पता है ?"

"मालिक ने जो किया, वह ठीक नहीं है।"

"तुम्हारे ऊपर उसका क्या अधिकार है ?"

"मैंने कोई खत नहीं लिखा। लेकिन मैं उनसे भी ज्यादा बँधुआ गुलाम हूँ। यही समझो और ज्यादा मत पूछो।"

लछिमा गहरा साँस छोड़ती है। दग्ध वंचित दिल को जैसे क्षणिक संतोष का ठंडा लेप मिला हो। कोई बुरे तरीक़े से उसका नाम नहीं लेता। हरोआ जैसे लोग भी सोचते है कि मालिक ने जो किया, वह सही नहीं है।

लछिमा ने कहा, "हरोआ, घर की खूब देखभाल करना। मालिक के मकान में मेरे साथ बात मत करना, क्योंकि यह मालिक को अच्छा नहीं लगेगा, छोटे मालिक के सामने भी नहीं।"

"नहीं, मैं नहीं बोलूंगा। कभी बोला हूँ क्या ?"

दोनों चुप हो जाते हैं। थोड़ी देर बाद हरोआ कहने लगा, "एक बात कहूँ। यह जो तुम्हारी जगह है, कहो तो यहाँ दो-चार नीबू के पेड़ लगा दूँ। बरसात के शुरू में लगाने से जल्दी-जल्दी बढ़ते हैं।"

"क्या होगा उनसे ? कौन देखभाल करेगा उनकी ?"

"मैं करूँगा।"

उत्साह के साथ हाथ हिलाकर कहता है, "क्या होगा, कहती हो। जानती हो, शरबती नीबू कितना अच्छा होता है ? एक-एक नीबू में कितना रस होगा। मैं वह नीबू बेच दूंगा। बुढिया को पैसा मिल जायेगा। यहाँ दिन में कोई रहता नहीं। नहीं तो मिर्च, प्याज भी लगाता। फल का पेड ही अच्छा है। नीबू, अमरूद—यह सब खूब फलेंगे। काँटे वाली बाड़ का घेरा

बना दूँगा, खूब अच्छी तरह से।"

यह कहकर वह अपने मन को और उजागर कर रहा है। लछिमा समझती है, इस मकान को लेकर उसका सपना रचित हो रहा है।

"खैर, लगा लेना। मैं रोज-रोज आ नहीं सकती, पिंजरे का पंछी बन जाऊँगी फिर से। ऐसा-वैसा पेड़ मत लगाना कि मालिक के मन में खटके और वह नाखुश हों।"

"नहीं, नहीं। मैं ऐसा कभी कर सकता हूँ ?"

शादी का उत्सव खत्म हो जाता है। रिश्तेदार विदाई लेते हैं। एक-एक करके। मेदिनी का चचिया ससुर कहता है, "शादी का पानी बदन पर गिरा। चौदह साल में ही लड़की गृहस्थी संभालने लायक हो जायेगी। तभी गौना करा लेना। लड़का भी तब सोलह साल का हो जायेगा। भगवान ने चाहा तो साल-भर में पोते का मुँह देखोगे।"

मेदिनी खड़ा रहता है, चेहरे पर हँसी लिये। बरकंदाज कहता है, "भैया, मेरी उम्र तुम्हारी उम्र से काफी ज्यादा है। दामाद को बुलाऊँगा कभी-कभी। अब मैं और कितने दिन का हूँ ?"

रिश्तेदारों के विदा होने के साथ ही लछिमा और गुलाल वापस आ जाती है और अपनी भूमिकाएँ सम्हाल लेती है। रात को मेदिनी सिंह लछिमा से कहता है, "पुराने जूतों में ही पैर को ज्यादा आराम मिलता है। वे मुझे बड़े जतन से रखते थे, पर तेरी तरह से नहीं।"

"मालिक की किरपा !" लछिमा बोली।

"यह धोती ले लो। एक गुलाल को भी दी है।"

छापे की एक धोती निकालता है और कहता है, "चाहता था कि इस मौके पर तुझे और भी कुछ दूँ, लेकिन हो नहीं सका। उन लोगों ने जैसा दहेज दिया, वैसी खातिर भी करनी पड़ी।"

"और भी कुछ, क्यों ?"

"लड़के को पालकर बड़ा किया...।"

"कपड़ा तो दिया।"

"हरोआ, गेबिन, देतारो को भी कपड़ा दिया। तुम लोगों को भी। मिशिर को चाँदी की जनेऊ दी।"

लछिमा ने मशीनी आवाज मे कहा, "सभी कपड़े एक कीमत के?"

"उन्नीस, बीस होंगे।"

"चलो, अच्छा रहा। लड़के को पाला, इसलिए तुमने जमीन दी। रुपया देते हो। नानी को एक गाय भी दोगे।"

"दूंगा, जरूर दूंगा।"

मेदिनी ने सोचा, 'बेकार ही वह लछिमा के स्वभाव के बारे मे तरह-तरह की बातें सोचता रहता है। लछिमा जरूर निहाल हो गयी होगी।' अपनी चाहत मिट जाने पर कहता है, "अहा! अभी भी मुझ मे घोड़े जैसी ताकत है। अच्छा ही हुआ कि मोहरकरण छूट गया। नाई का बच्चा क्या मेरा मुकाबला करता?"

लछिमा कुछ नही कहती।

मेदिनी फिर कहता है, "तेरी शादी-वादी नही होगी। बहू घर आने पर बल्कि मैं वही जाया करूँगा। जिन्दा न रहा तो तू गणेश का पैर पकड़ कर यही पर रहना। खाना-कपड़ा जरूर मिलेगा।"

"तुम नही मरोगे।"

"अयं! तू नही चाहती कि मैं मरूँ?" मेदिनी उठकर हँसने लगता है। फिर कहता है, "बरकंदाज सिंह ने पटना से जाने तसवीरों की कैसी किताब मँगवायी है। कहता है, तसवीरें विलायती हैं, देखने से ही मरद में काफी गरमी आ जाती है।"

लछिमा को डर लगने लगता है। 'मेदिनी सोता क्यों नही? उसने अपना दैनिक हिसाब तो चुकता कर लिया है।'

आखिर मेदिनी सो जाता है।

अंधकार लछिमा को कुछ आश्वस्त करता है। रोशनी में होती है वह निरावरण, नग्न, मेदिनी की रखैल, गणेश की दाई, नानी की गिरवी रखी सम्पत्ति। अंधकार ही उसकी लज्जा ढाँपता है, काफी रात गये। प्रौढ़ मेदिनी के गले से थक्के से निकली इन अश्लील बातों ने अंधकार को और अधिक मासल और दँतुला कर दिया है आज।

लछिमा चुप हो रहती है।

तीन

बाढ़ा गांव के नक़्शे में, हरिजनों का अस्तित्व एक तरफ तो गौण है, क्योंकि यहाँ पर राजपूत समाज ही मुख्य है। दूसरी ओर, उनका होना आवश्यक भी है, क्योंकि मुख्य जीवों के विविध प्रयोजनों को वे ही पूरा करते हैं। क्योंकि यह गांव मेदिनी सिंह जैसे राजपूतों द्वारा बसाया गया है, इसीलिए नौ हिस्सा जमीन उनके कब्ज़े में है। बाकी लोग यानी कि बहुसंख्यक तबका अल्पसंख्यकों की ज़मीन जोतते हैं।

यहाँ जमीन जोतने और खेतीबाड़ी करने की शर्त और बंदोबस्त कई तरह से है। लेकिन मुख्य रूप से वे इसी नियम से ज़मीन जोतते हैं—वे हैं मालिकों की ख़रीदी प्रजा।

सभी मालिक कभी-न-कभी इलाक़ों की फ़ौजों में सिपाही थे। आंचलिक राजा भी इन पिछड़े इलाकों में एक दिन के लिए खरीदी गयी प्रजा से खेतीबाड़ी करवाते थे। ये सब राजा इतने छोटे हैं कि सरकारी कागजों में इनका नाम नहीं, लेकिन अपने-अपने साम्राज्य में सभी हैं सम्राट!

बंदा या दास प्रथा है या नहीं, इस बारे में इन मजदूरों को किसी ने कभी भी बताया नहीं। इनके वंशधरों के समय मालिकों को और अधिक सुविधा मिल जाती है। जमीन जोतते हैं अधिक कर देकर। अधिक उपजाऊ साल में खुराकी अनाज भी नहीं बचता। सूखा, अजन्मा और बाढ़-पानी में उधार चुकाने का नियम है खाते पर अँगूठा-छाप। फ़सल का सबसे बड़ा हिस्सा तो देंगे ही और वक़्त-बेवक़्त बेगार भी खटेंगे। इसी तरह कचहरी के सर्वशक्तिमान लाल-बही में बँधुआ हैं ये लोग।

ये ही हैं ख़रीदी बंदों की प्रजा।

"ख़रीदी क्यों?"

"एक दिन के लिए ख़रीदे गये बंदों के वंशधर हैं, इसीलिए।"

इन सभी राजाओं के बीच आपस में मुकदमा चल सकता है, लेकिन एक विषय में इनमें काफ़ी समझौता है। इस सब प्रजा के इस लोक और परलोक के मालिक ये खुद हैं और इस नियम को सभी मानकर चलते हैं। इसीलिए एक की प्रजा, दूसरे के यहाँ जाने पर पकड़कर लौटा देते हैं उसके

असली मालिक को। आजादी के बाद, सभी राजा हैं जोतदार, लेकिन ख़रीदी प्रजा वाला नियम उसी तरह बरक़रार है। ये क़ानून वैध नहीं हैं। इससे क्या ?

बेगारी प्रथा कानून-सम्मत है क्या ? इन सब इलाक़ों मे जो प्रथा है, जो मालिकों को सुविधाप्रद है—वही क़ानून है।

वाढा गाँव मे भी यही नियम चलता है। यहाँ के मुखिया भी कभी राजा की फ़ौज मे सिपाही रहे हैं। उसी ज़माने के मालिक का बनाया क़ानून यहाँ अभी भी चलता है—ख़रीदी प्रजा। गाँव एक है, मालिक नौ। सारी प्रजा खरीदी हुई। भगी, हज्जाम, धोबी वग़ैरह अपना-अपना पैतृक काम तो करते ही हैं, इसके अलावा कोई-कोई बटाई पर खेती भी करता है। बटाई पर ज़मीन देने मे मालिक को कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि बटाई की जमीन पर काम करके भी इनके पास खाने लायक कुछ नहीं बचता। तब यह लोग कर्ज लेते हैं। कर्ज लेकर ये बँध जाते हैं। कर्ज़ का ब्याज चुकाने मे इनकी अपनी ज़मीन का छोटा-मोटा टुकड़ा चला जाता है। वैसे अब ये लोग भी समझ गये हैं कि कर्ज़ से बचने के लिए बटाई पर जमीन लेने से नौकर बनना ही अच्छा है। मालिक के रूप मे इन्हे बरकदाज सिंह जैसा मालिक पसन्द है। वह दयावान नहीं है, बल्कि उधार-कर्ज़ के मामले मे कई गुना ज्यादा शातिर है। लेकिन प्रजा के साथ सम्पर्क अच्छा बनाकर चलता है। पोती की शादी में उसने अपनी समूची प्रजा को भरपेट खाना खिलाया था।

वही इस समाज का प्रधान है। धनपतिया का बाप भी एक दिन उस के पास गया। कहा, "मालिक, कुछ कहना है।"

"क्या बात है ? बड़ी भैंस का जख्म तो तू अभी तक ठीक नहीं कर पाया।"

"क्यों ? देखिये कितना सूख गया है। वह बार-बार कुंड में उतर जाती है। कीचड़ और कीड़ों से घाव फिर बढ़ जाता है।"

"कुछ दिन बाँधकर रख।"

"रखूँगा।"

"क्या कहना है ?"

"मोहर को बटाई पर जमीन देनी होगी।"

"कौन मोहर ?"

"मोहरकरण।"

"काहे को ? उसे तो जमीन मिली हुई है और वह खेती भी करता है।"

"न मालिक, बात यह है कि वह शादी अब नहीं हो रही है।" अपने बचाव के लिए मेदिनी का नाम नहीं लेता वह, लेकिन कहता है, "लछिमा अभी शादी नहीं करेगी। मोहर मेरी लड़की से शादी करना चाहता है। उसके पास तो खाली एक झोंपड़ी है, वह भी टूटी-फूटी। कहता है कि मालिक की कृपा हुई तो सब-कुछ बना लेगा धीरे-धीरे। मालिक, आप किरपा करें।"

"हूं ! मोहर किसी की खरीदी प्रजा तो नहीं ?"

"नहीं, हुजूर !"

"जा, हो जायेगा। फिलहाल अपने साथ ही ले ले उसे।"

"तो ठीक है, मालिक !"

"हाँ, हाँ। मेदिनी को तो पता है न ? वह नाराज़ तो नहीं होगा !"

"लछिमा उससे शादी नहीं करेगी।"

शाम को बरकंदाज सिंह थोड़ा-सा नशा करते हैं। पुरानी आदत है। नशा अपने घर में नहीं, रखैल मोरी के घर मे करते हैं। बदोबस्त अच्छा है। मोरी, बरकंदाज सिंह की प्रजा बिगुलाल की औरत है। दो लड़कों की माँ है। बरकंदाज सिंह के आने से पहले ही बिगुलाल लड़कों को लेकर आँगन के पार दूसरे कमरे में चला जाता है।

बरकंदाज ने पुकारा, "मोरी !"

"क्या, मालिक ?"

"मोहर धनपतिया से कैसे शादी कर रहा है ?

"शादी तो करनी ही पड़ेगी। नहीं तो क्या उसे सारी जिन्दगी दुखी रहना है। इसीलिए वह शादी कर रहा है।" मोरी साफ़-साफ़ कहती है। उन सबको मोहर और लछिमा से हमदर्दी है।

"लछिमा से शादी नहीं करेगा ?"

"नहीं।"

"आहा ! मैंने तो सुना है कि लछिमा ही शादी नही करेगी उससे।"

"वात एक ही है।"

"सुना है, लछिमा और आठ साल शादी नही करेगी।"

"कौन जाने, मालिक ? छोड़िये यह बात।"

बरकदाज सिंह को लगा कि जैसा उसने सुना है, मामला वही तक नहीं है। मामला कुछ गडवड है, सारी बातों का पता नही चल रहा है। गाँव के जीवन मे तरह-तरह के किस्से, कच्चे चिट्ठे या निंदा-बुराई काफी महत्व रखते हैं। इन्ही से जिन्दगी का स्वाद बदलता है। घर में वैठे-वैठे मोहर की शादी के रहस्य को फैलने से नही रोका जा सकेगा।

ऐसे विषयों पर अकसर भगी लोग गाना बना लेते है। इस तरह की अभिव्यक्ति की स्वतत्रता गांव की जीवन-पद्धति मे स्वीकृत है। यह लोग अकसर किसी भी विशेष घटना को लेकर गाना-वजाना करते हैं। चेहरे पर रंग मल कर बाजार में घटना को गाकर पैसा लेते हैं। इस पर रोक लगाने पर वे काम नही करेंगे और उनके काम न करने से गाँव नरक बन जायेगा। इसके पीछे कई कारण हैं। बाढ़ा गाँव से सटा एक गो-भागाड़ (जहाँ मरी हुई गाय रखी जाती है सड़ने के लिए) है। तोहरी के बाजुलाल ठेकेदार यहाँ हड्डियाँ इकट्ठा करते है। सरकारी फ़ार्म में इन हड्डियों की खाद डलती है। इसलिए इस भागाड़ की देखभाल इन भंगी लोगों के हाथ मे है। सड़-गलकर, कीड़े-मकौड़ों से खाये जाकर जब पशुओं की लाशें कंकाल बन जाती है तो डडे से पीट-पीटकर हड्डियों को तोड़ा जाता है और वोरियाँ भरकर भेज दिया जाता है। सड़ी हुई लाशों को सरकारी चूने वाली मिट्टी से ढँका जाता है।

गाने-बजाने पर रोक लगाने पर बदमाशी पर उतारू ये लोग अगर जानवरों पर चूना-मिट्टी न डालें तो सारे गाँव पर गिद्ध मँडराने लगेंगे और बदबू के कारण रहना मुश्किल हो जाये। भागाड़ यहाँ से नही हटाया जा सकता। बाजुलाल ने रुपया लगाकर अच्छी जगह जमीन ली है।

एक बार बरकंदाज सिंह ने कहा भी था कि भागाड़ हटाना होगा।

"क्यों ?"

"गदी चीज है। घर मे वैठकर देसी घी में पका खाना खा रहे हों तो

उसमे भी बदबू आने लगती है।"

"मैं क्या करूँ ? भागाड़ तो यहाँ पहले से था।"

"अरे वे लोग आजकल कुत्ता-बिल्ली जो भी मर रहा है, सब को यहीं डाल जाते है, इसलिए ऐसी बदबू...।"

"चूना-मिट्टी भी डालते है।"

"भागाड़ हटाना होगा।"

"मुझे सालाना फ़ायदा कितने रुपये का है, पता है आपको ? सब हिसाब लगाकर, नवागढ़ की कचहरी से लिखा-पढ़ी करके ठेका लिया है। फ़ायदे की चीज को कोई छोड़ता भी है ?"

"मरे जानवर से फायदा ?"

"तुम्हें क्या पता ? क्या केवल ज़मीन, भैंस और ख़रीदी प्रजा ही फ़ायदे की चीज़ है ?"

बरकंदाज सिंह को बड़ी हैरानी हुई, लेकिन वह बेवकूफ़ नहीं बनना चाहता था इसीलिए कहता है, "यह सब-कुछ पहले नही था। आजादी मिलने पर ही यह सब-कुछ हो रहा है।"

भंगी लोगों को बाजूलाल कभी-कभी रुपया भी देता है। तब यह लोग सूअर मारते है और शराब पीकर गीत गाते हैं।

बाढा गाँव में भंगियों की औकात बढने का मुख्य कारण है बरकदाज सिंह के भतीजे चन्द्रभान का पत्नी-प्रेम। असल में बरकदाज के भतीजे की बीवी अनुपम सुन्दरी या गुणवती नही है, पर है बड़े ख़ानदान की। अच्छे लक्षणों की ऐंचकतानी लड़की है, और बाढा गाँव के सभी लोगों के लिए गर्व का कारण भी है, क्योंकि वही एकमात्र ऐसी स्त्री है जो शहर मे दस साल रहकर आयी है, चाहे वह छपरा ही क्यो न हो। उसके जैसे तुरुप का इक्का किसी के पास नही है। न किसी मर्द के पास, न किसी औरत के पास। फलस्वरूप उसके हजारो नखरे है। उसे लालटेन नही, बड़ा नक्काशीदार लैम्प चाहिए। नहाने के लिए बेसन नहीं, खुशबूदार साबुन चाहिए। गर्मी मे छापे की पतली धोती भी चाहिए।

बाद में वह सास से बड़ी गोपनीय, दुख की बात कहती है, लेकिन अनेक पूछताछ के बाद। वह शहर की लड़की है। उसकी आदत है, घर के

अन्दर बनी टट्टी में जाने की। सास, ननद और जेठानी के साथ लोटा लेकर, मकई के खेत में जाकर प्रातः-क्रिया निपटाने और बतियाने में वह असमर्थ है।

सास इस बहू का पक्ष हमेशा लेती है। लेकिन यह बात उसकी भी समझ से बाहर है।

"क्या कह रही है, बहू?"

बहू फिर वही बात दोहराती है।

सास पहले तो हँसती है, फिर अपनी राजपूतानी आन और तेज के गर्व से गभीर होकर कहती है, "ऐसी बात मत कर। हम हमेशा मैदान में जाते रहे है और अभी भी जाते हैं। शहर की सारी आदतें अच्छी नही।"

लेकिन बहू की तकलीफ और परेशानी भी ठीक है। समझ आती है।

चन्द्रभान की दुल्हन मकान के अहाते मे टट्टी चाहती है। वह काफी परेशानी में है। पहले तो इसे बेशर्मी, नाजायज माँग, फैशन और सिनेमा देखने का बुरा नतीजा माना जाता है। इसी दौरान बरकदाज किसी एस० डी० ओ० को अपने घर में पोते के लगन-टीका के अवसर पर बुलाता है। हाकिम कहता है, "नही-नही, मैं नही आ सकूँगा।"

"क्यों सरकार?"

क्लर्क कहता है, "आप लोगों के यहाँ न तो गुसलखाना होता है, न संडास। इसलिए अफ़सर लोग वहाँ नही जाना चाहते।"

तो यह बात है!

दुनिया मे इतना कुछ होते हुए भी शौचालय को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है? बात उसे समझ में नही आती, लेकिन दो और दो जोड़कर वह चार कर लेता है। अब ज़माना बदल गया है। धीरे-धीरे हाकिम, अफसर और मन्त्रियो के साथ सबंध बढाना होगा।

उत्साह के साथ कहता है, "संडास बनवा दूँ?"

"बनवा दीजिये।"

बरकंदाज सिंह मजदूर और मिस्त्री लेकर वापस आता है। संडास बनाना ही है तो एक ही क्यों, एक से ज्यादा बनवाने में ही शान है, कम में नही। कई शौचालय एक ही पक्ति मे बनवाये जाते है। कुएँ के क़रीब

गुसलख़ाना भी बनवाया जाता है, मिस्त्री के सुझाव से।

शुरू मे तो कोई इनका इस्तेमाल नही करता। लेकिन सबसे पहले चन्द्रभान की दुल्हन उनमे जाने लगती है। अब कोई इस काम में उससे पीछे न रह जाये, इसलिए घर की सारी औरतें उनमें जाने लगती है।

संडास की महिमा से एक बार एक डिप्टी-मजिस्ट्रेट, एक रात ठहरकर होली का न्योता खा जाते हैं।

फलस्वरूप गाँव में बरकदाज सिंह की इज्जत बढ़ जाती है। दूसरे मालिक लोग भी केवल बेवकूफ़ महाजन बने नहीं रहना चाहते। इसलिए वे भी अपने-अपने अहातों मे वैसा ही दड़बा बनवाते हैं।

शौचालय साफ़ करना और उनमें से मलाधार को बाहर फेंकने का काम भंगियों के लिए नियत हो जाता है। इस काम मे बेगार चलने से रही, इसलिए भंगी लोग तनख़्वाह पाने लगे। भंगियो की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण होती गयी। क्योंकि अगर वे टट्टी साफ़ न करें तो मकान मे रहना ही मुश्किल हो जाये।

लेकिन मेदिनी सिंह ने यह काम नही किया।

लछिमा मोहर से शादी क्यों नही करेगी, इसका रहस्य मोरी ने किसी तरह से भी नहीं बताया। इस पर बरकंदाज़ सिंह का सदेह और भी बढ़ गया है। क्या इस मामले में मेदिनी सिंह का हाथ है?

"मुझे कुछ नही मालूम, मालिक!"

उत्सुकता के कारण बरकंदाज सिंह का बुरा हाल था। मेदिनी सिंह के लड़के के साथ उसकी पोती की शादी हुई है। वह मेदिनी सिंह के लड़के का सम्बन्धी है। मेदिनी की रखैल लछिमा मोहर से शादी नही करेगी, इससे उसे कुछ नही लेना-देना। लेकिन मोहर अब उसकी ख़रीदी प्रजा बिगुलाल का दामाद होने जा रहा है, इसलिए वह जान लेना चाहता है कि कही मामला कुछ गड़बड़ तो नही।

अगर कुछ गड़बड़ हो तो? मेदिनी नाराज़ हो जाये तो? बिगुलाल को 'हाँ' कहकर कहीं उसने ग़लती तो नही की?

बरकदाज़ अपने सुयोग्य पुत्र नाथू से पूछता है। नाथूसिंह अपने बाप से ज़ुबान नहीं लड़ाता है। गणेश को दामाद बनाने की उसकी क़तई इच्छा

नही थी। लेकिन लड़का देवांशी है और तिस पर पिता का आदेश, इसीलिए राजी हो गया। मेदिनी के रहन-सहन का तरीका उसे पसंद नही। उसकी हवेली में लछिमा के रहते वह अपनी लड़की नही भेजेगा। रखैल रहती हैं घर से बाहर। घर मे कौन ले आता है उन्हें?

पिता की बात सुनकर थोडी देर तक सोचता है। धनपतिया की वहन लखपतिया उसकी कृपापात्री है। धनपतिया की शादी मोहर से करायी जायेगी। वह अपने पिता से कहने लगा, "छोटी जात की बात है। मोहर किस से शादी करता है या किससे नही—इससे आपको क्या लेना-देना? आप समाज के प्रधान हैं, उनके बारे में आप क्यों सोचेंगे? छोटे लोग आपको मानते हैं, आपकी जुबान के कारण। विगुलाल आपकी प्रजा है। उसे आपने जो जुबान दी है, उसे पूरा करें।"

"मेदिनी से न कहूँ?"

"वह भी माने हुए आदमी है। क्या करेंगे यह बात जानकर? वैसे भी गाँव की सारी बातों का पता चल ही जाता है। उन्हें भी चल जायेगा।"

"जैसा ठीक समझो। तुम समझदार हो, ठीक ही कह रहे हो।"

नाथूसिह समझदार लड़का है, लेकिन मोहर समझदार नही। यह बात विगुलाल समझता है और समझकर घबराने लगता है।

मोहर उससे कहता है, "रुपया देकर जमीन बटाई पर लूंगा।"

"रुपया मिलेगा कहाँ से?"

"कर्जा लूंगा।"

"ब्याज नही देना पड़ेगा?"

सूखी हँस हँसकर कहता है, "नही।"

मालिक की इच्छा पर उनका जीना-मरना टिका होता है। इसलिए बचाव की कूटनीति इन्हे भी सीखनी-जाननी पड़ती है।

इसी कूटनीति से काम लेते हुए बिगुलाल समझ जाता है सारी बातें। भावी दामाद से कहता है, "लछिमा-गुलाल से लोगे?"

"हाँ!"

"चलो, दूकान पर चलें।"

दूकान के नजदीक एक पेड़ के नीचे मोहर के साथ बिगुलाल बैठता है। अँगोछे से हवा करते हुए कहता है, "मोहरकरण, तुम मेरे लड़के की उम्र के हो। लड़के की जगह पर ही होगे तुम। मैं सोचता हूँ कि मेरे तीन नहीं, चार लड़के हैं। पच भी हमसे खुश है।"

"जी हाँ!"

"तुमने मुझसे जो कहा, और किसी से मत कहना। क्यों, यह मैं समझाता हूँ।"

"जी, मैंने कुछ गलत कहा है?"

"नहीं, कतई नहीं! पर अब मैं तुम्हें समझाऊँ कैसे?"

उद्वेग में बिगुलाल बीड़ी सुलगाता है और फिर कहता है, "लछिमा के साथ शादी हुई या नहीं हुई, फिर भी बरकंदाज सिंह तुम्हें जमीन दे रहा है। मैं उनकी प्रजा हूँ। तुम इस गाँव के नहीं हो। बाहर से आये हो, यहाँ के सारे रीति-रिवाज तुम्हें मालूम नहीं।"

"आप बता दीजिए।"

मोहर की दृष्टि अनुभव, नम्रता, गहरी चोट खाने से उत्पन्न उदासीनता और ठहराव लिये है। जैसे वह अभी भी अपने ही जख्मों के घेरे में बंद है। उस शीशे के घेरे को तोड़कर दूसरे लोगों से सम्पर्क कर पाने में वह असमर्थ है।

बिगुलाल ने कहा, "चिंता मत करो। हाँ, मैं कह रहा था...।"

"कहिये।"

"यहाँ पर कोई नियम, कानून, अदालत, अफसर, कचहरी नहीं है। यह मालिक लोग ही यहाँ के राजा-महाराजा हैं। करज लेकर तुम बटाई पर जमीन लेते हो। फसल पर लगान देते हो, जरूरत पर मालिक से उधार लेते हो। मालिक ही इसका हिसाब रखते हैं। मालिक मोहर जैसे लोगों पर नाराज नहीं होते हैं।"

"करज तो नहीं मिटता?"

"नहीं। इसीलिए हम लोग खरीदी प्रजा कहलाते हैं।"

"और आगे कहिए।"

"लेकिन जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि तुम रुपया देकर जमीन लेना

चाहते हो, वैसे ही उनकी आँखें लाल हो जायेंगी और वे कहने लगेंगे, इतनी हिम्मत ? रुपया देकर जमीन लोगे ? हम पता करेंगे कि रुपया तुम्हारे पास आया कहाँ से ? तब तुम फँस जाओगे । मैं भी फसूंगा । और फिर लछिमा को क्या मेदिनी सिंह छोड़ देगा ?"

लछिमा से शादी न हो पाने के कारण वह अभी गहरे दुख मे है। कहता है, "यह तो जुलुम है । क्या कोई उपाय नही है ?"

"उपाय ? तुम पागल हो, गये हो मोहर ? अभी तीन महीने भी नही हुए, मेदिनी सिंह को खबर मिली थी कि नवागढ़ की आदिवासी प्रजा रुपया देकर चीज खरीद रही है। फसल बेचकर चीजें ले रहे है। बस उसके इशारे पर उसके सिपाहियों ने पूरी आदिवासी बस्ती को जला दिया । नही, नही मोहर, ये सब बड़े भयंकर लोग है । ऐसी बात कभी मत सोचना ।"

"ठीक है, नही सोचूंगा ।"

लेकिन फिर भी मोहर की शादी के मामले में मेदिनी सिंह फँस जाता है । परिणाम मोहर के लिए अच्छा नही हुआ । रुपया देकर जमीन नहीं लेगा, बिगुलाल की सिफ़ारिश से लेगा । इसलिए लछिमा से उधार भी नही लेता, लेकिन लछिमा के दिये हुए बीस रुपये से बकरी जरूर ख़रीदेगा । अच्छी तरह देखभाल करने पर बकरी बच्चे भी जल्दी-जल्दी देती है, जिन्हे बेचा जा सकता है। नयी दुल्हन के लिए बकरियाँ अच्छा उपहार रहेगी ।

सब-कुछ पर अच्छी तरह सोच-विचार कर लेने के बाद अपने भावी सालों की मदद से वह अपनी झोपड़ी ठीक करता है। बकरी की खोमड़ी बनाता है । मिट्टी की दीवारों की लिपाई-पुताई करवाता है । इसके बाद पारशर के घर जाता है और एक बकरी ख़रीद लाता है ।

बाजार से लाल-पीले रग की एक धोती और जस्ते की चूड़ियाँ भी लाता है। बिगुलाल उससे कहता है, "बकरी अभी हमारे पास ही रहने दो । तुम्हारे घर मे देख-भाल कौन करेगा ?"

लखपतिया अपनी बकरियों के साथ उसे भी चराने ले जाती है । एक दिन घोडे पर सवार मेदिनी सिंह की नज़र बकरी पर पड़ती है। एकदम

सफ़ेद नाचती हुई उस बकरी को देखते हुए कहता है, "सुन्दर है। तुम्ही लोगों की है?"

लखपतिया शरमाकर हँसके कहती है, "हाँ।" [illegible]

लगाम खींचकर घोड़ी को खड़ा करता है। और पूछता है, "[illegible] है न धनपतिया ? मोहर उसे खिलायेगा क्या ?"

"मालिक बटाई पर जमीन देगा।"

"अच्छा !"

मेदिनी वापस लौटता है। उसे यह बात अच्छी नहीं लगती। क्यों, पता नहीं। शाम को बहू को देखने के बहाने बरकदाज सिंह के घर जाता है और कहता है, "क्या तुमने यह काम ठीक किया ?"

"कौन-सा ?"

"मोहर को बटाई पर जमीन देना ?"

"भैया, वह बिगुलाल की लड़की से शादी करेगा और बिगुलाल तीन पीढ़ी से मेरा खेत जोत रहा है।"

"आदमी अच्छा नहीं है। इसलिए लछिमा ने उससे शादी नहीं की। वैसे अभी शादी हो भी नहीं सकती। मेरा लड़का बड़ा हो जाये और तुम्हारी पोती भी। आठ-दस साल का मामला है। इतना बेईमान है कि इंतजार भी नहीं कर सकता।"

"भैया, उनकी समझ उनके पास। औरत चालीस की और मरद पैंतालीस होने पर शादी कैसे करेगा? तब तो साधु बनेंगे, साधु !" बरकंदाज सिंह अपने मजाक पर आप ही हँसने लगे।

मेदिनी सिंह को याद आया कि ठीक यही बात कहकर लछिमा ने उससे छुट्टी माँगी थी। वह गहरी साँस छोड़कर बोला, "खेत-खलार, गाय-भैंस, ज्वार-मक्का, बर्तन-बिस्तर, किसान-मजदूर, बाग-बगीचा, गृहस्थी बहुत ज्यादा फैल गयी है। बच्चा बैल क्या खेत जोत सकता है ? छोटी-सी बहू क्या घर सभाल सकेगी ? बहू को भेज दो। सारा काम समझ ले। लछिमा को निकाल दूँगा। हाँ, अगर वह बहू का पैर पकड़कर रहना चाहे तो रह सकती है। काम करेगी तो खाना भी मिलेगा। सोच-विचार कर ही मैंने ऐसा बंदोबस्त किया था।"

"नही, तब नही। घर के काम के लिए नौकरानी रख दूँगा।"

"उसे बटाई पर जमीन मत देना।"

"जब तुम मना कर रहे हो तो...।"

"नहीं, आदमी अच्छा नही है।"

मेदिनी सिंह के चले जाने पर नाथूसिंह ने कहा, "और लीजिये एक ही गाँव मे रिश्तेदारी का फल। साला बदजात ! अपनी हवस मे लछिमा को घर में रखा। बीवियो को भगाया, अब हम लोगो की प्रजा के साथ भी...। आपने वचन दिया है न बिगुलाल को? नीच जाति को हाथ में भी रखना होता है, नही तो काम कैसे चलेगा? यह आदमी कैसा है? मोहर-करण क्या उसकी बराबरी का आदमी है? उसकी शादी में टाँग अड़ा रहा है?"

"अब क्या करें?"

"मुझे नही पता। अब अगर आप मोहर की शादो मे दस रुपया भी देंगे तो वह नाराज हो जायेगा और बहू को नही ले जायेगा। ले गया तो पीहर नही भेजेगा।"

अत मे बरकंदाज सिंह ने बिगुलाल को बुलाया और साफ़-साफ़ सब-कुछ कह दिया। दुख की बात है, लेकिन वह समधी को नाराज भी नही कर सकता। बरकदाज समझते हैं कि यह काम अच्छा नही हो रहा है। बिगुलाल जैसे लोग जरूर तरह-तरह की बातें बनायेंगे। उसने मेदिनी सिंह के सामने बहाना क्यों बनाया? क्यों बाद में हाथ खेंच लिया? क्या वह अब मेदिनी सिंह के अधीन हो गया है?

बरकंदाज ने काफी सोच-विचार करके कहा, "जमीन नही दे सकता, पर धनपतिया को चार साल के लिए एक भैंस दे रहा हूँ। उसे चरायेगी। अगले साल बच्चा होगा, बच्चा रख लेगी। आधा दूध देगी, आधा बेचेगी। तीसरे साल भी यही बदोबस्त रहेगा। चौथे साल बच्चा हुआ तो ठीक, नही तो साल गये भैंस लौटा देगी।"

पुराना मालिक, पुरानी प्रजा। बिगुलाल ने कहा, "मालिक भैंस को खिलाऊँगा क्या?"

"बिगुलाल, तू बडा हरामी है। खूब जानता है, वह मेरी भैंसों के साथ

चरेगी। शाम को एक बार तो चारा डालना पड़ेगा। घास खोदकर दोनों जने वेचें। भैंस को भी घास मिल जायेगी। चल, पाँच रुपये भी दूंगा।"

विगुलाल फिर भी नही मानता। बकर-बकर करता है। कहता है, "कुछ रुपया उधार दे दो, मालिक!"

"अभी तो तू जा। हिसाब देखकर बताऊँगा।"

"मेहनत करके चुका दूंगा, मालिक!"

"अब तू भाग जा।"

जमीन नही मिलेगी, सुनकर मोहर फीकी-सी हँसी हँसता है।

धनपतिया कडा पाथती हुई अपनी माँ से कहती है, "जमीन नही मिली तो क्या हुआ! बकरी पालेंगे, उसके बच्चे बेचेंगे। भैंस मिल रही है, उसका दूध बेचेंगे। कुछ भी हो, मालिक तो हमें दुत्कार नही रहे है?"

धनपतिया की माँ अपने होने वाले दामाद को भी यही बातें कहकर धीरज बँधाती है। मोहर समझ नही पाता कि मेदिनी सिंह उससे किस बात का बदला ले रहा है? जमीन पाने का उसके मन मे बहुत शौक था। कहने लगा, "जैसा तुम लोग ठीक समझो, वही करो।"

इसी तरह शादी का दिन आ जाता है। हल्दी से रँगी धोती पहनकर मोहर हरोआ और एक किसान को न्यौता दे आता है।

गुलाल कहती है, "मैं नही आऊँगी?"

"किस मुँह से तुम्हें बुलाऊँ? आओगी तो मेरा सौभाग्य।"

गुलाल उम्र बढ़ने के कारण सठिया गयी होगी। उसकी अपनी कुल सम्पत्ति है—ढक्कन वाली एक पीतल की हाँड़ी। अपने खर्च से वह गुड के गुलगुले तल कर हाँडी भर लेती है। लछिमा कुछ नहीं कहती। जाते समय सिर्फ इतना कहती है, "देर मत करना, मालिक को पता चला तो वह नाराज होगा।"

कहती है, "छुट्टी तो लूंगी।"

मेदिनी सिंह को इत्तला नही दी गयी। बरकंदाज सिंह के घर से वापस आकर कहता है, "वह हरामी और कुछ दिन इंतजार नहीं कर सका। धनपतिया से शादी कर रहा है। शादी मे गुलाल क्यों जा रही है?"

"मुझे क्या पता ?"

"फिर किसे पता होगा ?"

"मुझे नही पता, मालिक ! बुढिया मेरी तरह से तुम्हारी नौकरानी है । वापस आने पर डाँट देना । गलती हो गयी उमसे ।"

गणेश कहता है, "पिताजी वह हँडिया-भर गुलगुले भी ले गयी है ।"

"हँडिया ? घर का बर्तन ?"

लछिमा बिना किसी प्रतिक्रिया के कहती है, "हँडिया की मालकिन बुढ़िया ही है । उसी का बर्तन-भांडा है ।"

' इसका पता कैसे चलेगा ?"

"मैं हाथ जोडती हूँ । आप सारे बर्तनो का हिसाब लगाकर देख लें । छोटे मालिक को पता है कि मैं किस तरह हिसाब रखती हूँ ।"

"हाँ पिताजी, लछिमा को लिखना नही आता, पर वह दीवार पर निशान लगाकर हिसाब रखती है, रोज हिसाब मिलाती है ।"

मेदिनी सिंह चुप हो जाता है । अगले दिन गुलाल को देखकर भी नही देखता । तोहरी चला जाता है ।

नोहरी क्यों गया है ? उसके दिल मे क्या है ? मेदिनी बहुत ही वहमी और तिकडमी आदमी है । मोहर की तरह साधारण आदमी कैसे उसके क्रोध का निशाना बना, किसी को पता नही चला ।

मोहर हल्दी-रँगी धोती पहन कर औरतो का गाना सुन रहा था और बारात का इतजार कर रहा था ।

वही से थाने के सिपाही उसे पकड़ कर ले जाते हैं । मुद्दई स्वयं मेदिनी सिंह है। जुर्म है, मेदिनी सिंह के बर्तनो की चोरी का। तोहरी पहुँचकर मोहर और भी इलजाम सुनता है । मेदिनी की नौकरानी लछिमा को शादी का लालच दिखाकर वह बर्तन वगैरा चोरी कर लाया है और शादी तोडकर भाग गया है।

विरोध करने पर बुरी तरह पीटा जाता है और हवालात में बद कर दिया जाता है ।

अत मे उस पर कोई केस नही बनता । लेकिन छूटकर मोहर गाँव वापस नही आता । तोहरी से कही और चला जाता है । कहाँ चला गया

है, किसी को भी पता नहीं लग पाता है।

बिगुलाल के कारण बरकदाज सिंह को भी तोहरी की हवालात और मेदिनी सिंह के बीच दौड़ना पडा है। आखिर में धनपतिया को पता चलता है कि मोहर छिपाडोर चला गया है। सिर पर हाथ मारकर वह रोने लगती है। लखपतिया उसके मुँह पर हाथ धर देती है और डाँटने लगती है, "अब रो मत। तेरी ही बदनामी होगी। तेरी किस्मत ही खराब है, नही तो ऐसा क्यों होता ?"

बाप बिगुलाल कहता है, "अच्छा ही हुआ, शादी नही हुई। मेदिनी का गुस्सा तो रहता ही और मालिक भी समधी से बिगाडकर मेरी भलाई नही सोच पाता। समधी के साथ कभी भी नही झगडते वे।"

इस घटना से प्रजा में असतोष फैल जाता है। कोई भी शादी न होने पर धनपतिया को कुछ नहीं कहता। कोई भी इस बात को नही मानता कि मोहर ने चोरी की है। मोहर सीधा-सादा आदमी था। छप्पर डालने मे, बेड़ा लगाने मे, मेढ़ बाँधने में, वह सभी के लिए जी-जान से जुटता था। बिगुलाल साँस छोड़कर मोहनप्रसाद से कहता है, "मालिक लोग अगर हमारे शादी-ब्याह मे भी टाँग अडाने लगे तो जीना ही मुश्किल हो जायेगा।"

मोहन दुसाध जमीन पर थूककर कहता है, "सभी गडबड की जड है वह शैतान, मेदिनी का लड़का।"

"वह भला कैसे ?"

"अरे महाहरामी है।"

"क्या किया उसने ?"

"उसी ने यह बात कही थी कि गुलाल बर्तन लेकर मोहर के घर गयी है। मेदिनी तो बहाना ढूँढ ही रहा था, उसे बहाना मिल गया।"

"राम, राम ! देवताओ का अंश है यह लडका !"

"वह अगर देवता है तो मैं गैबीनाथ हूँ, समझे ?"

मोहन दुसाध इतनी बडी बात कह जाता है। इस गाँव के दुसाधो की बातचीत का ढँग काफ़ी दिनों मे बिगडा हुआ है। कर्जे के कारण सभी अपनी-अपनी जमीन से हाथ धो बैठे हैं। अब वे लोग वन विभाग से पर-

मिट लेकर लकड़ी बटोरते हैं और बेचते हैं। वन विभाग की जमीन पर ही वे कच्ची झोंपड़ी बनाकर रहते हैं। शाल के पौधों की कलम लगते समय वहाँ से हट जाते है। जब इनके सिर पर कर्ज था तो ये भी मालिक से डरते थे। अब नही डरते। नगे और कगाल डाकू से नही डरते। दुसाध लोग आजादी के साथ अपनी जड़हीन जिन्दगी मे तरक्की किये जा रहे हैं।

गुलाल शरम से गड जाती है। अपने-आपको पापिन समझने लगती है। लछिमा भी उससे बात नही करती। आख़िर मे हरोआ से ही पूछती है, "मैंने क्या गलती की है ?"

"मुझे क्या पता ?"

"मेरे साथ वह बात क्यो नही करती ?"

"दिल मे गम बैठ गया होगा।"

"वह तो बैठेगा ही।"

"जो बीता सो बीता।"

हरोआ अत्यत दुखी और अचभित होकर सिर हिलाता है। लछिमा पत्थर बन जाती है। उसका दिल जलता रहता है। सब-कुछ छोड़-छाड़कर एक आदमी चला गया ! मेदिनी सिंह ने उसे भगा दिया !

लछिमा को पता है कि मेदिनी की ज़रूरत पूरी होने तक उसकी मुक्ति नही। उड़ती बातो से पता चलता है कि मेदिनी सिंह के जीवित रहते नाथू सिंह अपनी लड़की नही भेजेगा। अगर मेदिनी और चालीस साल ज़िन्दा रहा तो ?

धनपतिया की हालत के बारे मे सोच-सोचकर मर जाने को दिल करता है। उस बेचारी की क्या गलती थी !

अपने दिल की बेचैनी और दुख के कारण वह मेदिनी से कहती है, "अपने घर जाऊँगी। बीच-बीच में अपना घर देखने का दिल करता है।"

"चली जा !"

अपने घर मे आकर भी उसे अच्छा नही लगता है। हरोआ का काम देखकर उसे हँसी आती है। नीबू, पपीते के पेड़ लगाकर उसने घेरा बनाया है। औरतों की तरह निपुण हाथो से आँगन को लीपा है। सूखी लकडी का गट्ठर ! कौन खाना बनाता है यहाँ ? खाली कमरे में पत्तों की मर्मर

ध्वनि। उसकी आँखें लग जाती है। अचानक किसी की तेज सांस से वह चौंक उठती है।

"धनपतिया !"

"लछिमा, तूने मेरा ऐसा सर्वनाश क्यों किया ?"

"मैंने किया ?"

"तूने ही उसके साथ शादी तय की, तूने ही मालिक को शिकायत लगायी। तूने उसे चोरी का इलजाम लगाकर पकड़वाया !"

"नहीं धनपतिया, मैंने नहीं किया कुछ भी।"

"तूने ऐसा काम क्यों किया ?"

"चिल्ला मत, मेरी बात सुन।"

उसने धनपतिया का हाथ पकड़कर उसे अपने करीब करने की कोशिश की।

"मुझे मत छू, डायन ! तेरी सांस मे भी जहर है।" यह कहकर रोती हुई धनपतिया चली जाती है। दुख और अपमान से लछिमा का सारा बदन काँपने लगता है। लेकिन उसी पल महसूस होता है कि धनपतिया को उसे कोसने का हक़ है। ठीक ही किया है धनपतिया ने। लछिमा महान बनने गयी थी। भलाई तो कर नही सकी, लेकिन उसने उसकी किस्मत बिगाड़ दी। मोहर को देश-निकाला करा कर ही छोड़ा।

डरकर हवेली लौट आती है लछिमा। वह फिर कभी अपने घर जाने का नाम नहीं लेती। अचानक एक दिन बाजा बजता है। शादी के गीत सुनायी देने लगते हैं। उन्ही की जाति का कामता गाय चुराने के कारण एक साल की सजा काटकर बाहर आया है। नाथू सिंह ने उससे बात की।

"जेल जाने पर जो प्रायश्चित करना पडता है, उसका खर्चा मेरा। धनपतिया से तेरी शादी है। बीवी के मर जाने पर तेरी आदत बिगड़ गयी है। मेरी खरीदी प्रजा होकर तूने चन्द्रभान की गाय चुरायी।"

"शादी करूँगा, मालिक ?"

"हाँ, हाँ। सुना नही तूने ?"

ऐसे ही अचानक अधेड गाय-चोर कामता का धनपतिया से ब्याह हो

जाता है। गाय की चोरी महापाप है, इसलिए कामता को गाँव में सभी जगह हीन नजर से देखते थे कभी, और वह प्रायश्चित करने के डर से मरा जा रहा था। अब उस बात को किसी ने नहीं उठाया। धनपतिया मोहर की दी हुई साड़ी और जस्ते की चूड़ियाँ पहनकर, बकरी की रस्सी थामे कामता के घर में आ गयी।

सभी कहते हैं, गाँव में अगर कोई इंसान है तो नाथू सिंह। प्रजा की लड़की की शादी के लिए इतनी कोशिश कौन मालिक करता है!

रिश्ते में नाथू सिंह मेदिनी का समधी है, पर उम्र में उससे छोटा है। बरकदाज़ सिंह ही मेदिनी की उम्र का है। मेदिनी नाथू सिंह से कहता है, "भैया! मालिक लोग कब से खरीदी प्रजा की शादी का रिश्ता कराने लगे? यह क्या कोई नया फैशन चला है? मैं तो गँवार राजपूत हूँ, मुझे कुछ पता नहीं है।"

नाथू ने हाथ जोड़कर सम्मान के साथ कहा, "शादी का पानी पड़ा और शादी नहीं हुई, इससे औरत बिगड़ जाती है। खरीदी प्रजा अपनी सन्तान के बराबर होती है। है कि नहीं, कहिए?"

यही पर सारा मामला खत्म हो जाना चाहिए था, लेकिन ख़त्म नहीं हुआ। इसी घटना को केन्द्र बनाकर बिलकुल दूसरी तरह की घटनाएँ घटित होने लगीं। परिणाम यह हुआ कि बरकदाज़ सिंह मर गये और मेदिनी के दिमाग की नस फट जाने के कारण उसे लकवा मार गया। सर्व-सम्मति से बाढा गाँव में राजपूत-समाज के प्रधान नाथू सिंह बन जाते हैं।

होली का त्यौहार आ गया था।

होली का त्यौहार हरेक जाति अपने-अपने तरीके से मनाती है। होली की पहली रात को, होली जलायी जाती है। त्यौहार के दिन शिकार करने के लिए आदिवासी जंगल में जाते हैं। राजपूत मालिक इस दिन रंग खेलते हैं, शराब पीकर घोड़ी नचाते हैं और अफ़सरों को खाने पर बुलाते हैं। चन्द्रभान के घर, कुल-मर्यादा के अनुसार तलवार की पूजा की जाती है। इतर जाति के लोग रंग खेलते हैं, शराब पीते हैं, और गाना गाते हैं। पन्द्रह दिन तक सभी फाग खेलते हैं।

भंगी लोग शराब पीते हैं। गुलाल और कीचड़ से भूत बनते हैं। स्वाँग

सजाते है, स्वांग निकालते हैं। गीत बनाते है—नये कानून को लेकर, खून खराबे को लेकर, हवालात के अत्याचार को लेकर, मालिको के गुप्त किस्सो को लेकर। वास्तव में मालिकों से शासित बाढा गाँव में, प्रजा के शोषण और अत्याचार का इतिहास इन्ही भगियो के माध्यम से प्रकाश मे आता है। गीत गाकर, स्वांग दिखाकर मालिकों के घर मे जाकर पैसा लेते हैं। भगियों की होली का त्योहार एक या दो सूअर मारकर खत्म होता है। शराब पीकर, मांस खाकर सारी रात नाचते हैं और हल्ला मचाते है।

यहां के दुसाध लोग उखड़े हुए है अभी। अपने प्राचीन मूल्यो और सस्कारो मे दूर हो गये हैं वे। आजकल वे तिकडमे जुटाने के साधनो मे लगे है। फलस्वरूप दो-एक साल से होली पर वे भी भगियों के साथ हो-हल्ला करते है। दूसरे गाँवों के दुसाधो को यह गवारा नही है। "दुसाध ने भगियों का त्योहार कब से मनाना शुरू किया?" पूछने पर मेतरि दुसाध बेवकूफ बन जाता है।

मोहन दुसाध जवाब देता है, "जब से खेती का काम छूटा।"

"छूटने पर मालिक के पैर पकड कर रह जाते है दुसाध लोग।"

"किमलिए?"

"नागरा जूते की धूल भी मिल जाये तो उसमे भी फायदा है।"

"हाय रे मेतरी चाचा! हमारे बाढ़ा गाँव मे जितने मालिक, उतने ही नागरा जूते। धूल भी उतनी ही ज्यादा। धूल लेने वाले आदमी भी ज्यादा।"

"फिर भी क्या यह काम दुसाधों का है?"

"हम परमिट लेकर लकडी बटोरते हैं। हाट मे बेचते है, घास छील-कर बेचते है। अब भी क्या हम दुसाध रह गये हैं?"

"अपना घर क्यों छोड़ा?"

"घर छुडाया मालिको ने, केवल जमीन ही नहीं, झोंपड़ी तक ले ली। जब घर गया तो क्या करें? 'फारेस' की जमीन पर है।"

"हूं! इस तरह क्या जगली बन जाओगे?"

"कैसे?"

"आदिवासियो की तरह।"

"नही। उनके समाज मे भी गये थे। उन्होंने शामिल नहीं किया। समझाकर कहने लगे, 'मोहन! आदिवासी क्या कोई धर्म है? मिशन में जाकर 'क्रिस्चन' बन सकते हो। सुना है, मुसलमान भी बना जा सकता है। जागपूजा कर हिंदु भी बना जा सकता है, लेकिन ओरॉव, मुंडा किस तरह बनोगे? बगैर उनके कबीले मे जन्म लिये? दिल मे गम लेकर जब आये हो तो लो, शराब-ठो पी लो।'"

इस तरीके से मोहन अपने जैसे दो-चार दुसाधो के घरो की समस्या के बारे मे समझाता है। कहता है, "'फारेस' की जमीन पर से उठा देने पर और भी 'फारेस' हैं, वही चले जायेंगे।"

मेतरि दुसाध अपने गाँव टाहाड़ वापस जाकर समाज से कहता है, "मन उनके लिए बहुत दुख मानता है, वे सभी जगली बन जायेंगे।"

मोहर-लछिमा-धनपतिया! इनकी जिन्दगी के बेहद जायज अधिकारों को, इनके साधारण सुखो को, मेदिनी सिंह ने अपनी सत्ता के घमड में चूर होकर जिस तरह नष्ट किया है—यह घटना नीच जाति वालों के मध्य बातचीत का विषय बन गयी है, इसका पता मेदिनी को चल नहीं पाता है। वह अपने लडके से कहता है, "छोटे आदमियों को इस तरह जूती से दबाकर रखना। रख सकेगा न?"

"जरूर रख सकूँगा, पिताजी!"

"अब मै तुझे बदूक चलाना सिखाऊँगा।"

"जी, ठीक है।"

इस बार होली के दिनों में क्या-क्या स्वाँग बनेंगे? किसे लेकर गाने-गीत बनाये जायेंगे? इसकी चिंता मे राजपूत समाज भीतर-ही-भीतर उत्तेजित महसूस करता है। यह स्वाँग और गीत राजपूत समाज के लिए कम आनन्द का विषय नही। सर्वशक्तिमान, बडे-बड़े राजपूत राज्यों में, करोडों रुपयो के मालिक राजा-रजवाडे भी जब गुप्त हत्याओं, उप-पत्नियो के खून, जमीनो के लिए कत्ल जैसे अच्छे-अच्छे काम करते है, चारणकवि नही भगी लोग इन्ही विषयो को लेकर राजधानी मे गाना गाते हुए घूमते है। किसी को नही मालूम, वर्ण-शासित भारत मे, इसान की तरह जीने के सारे हक छीनकर इन भंगियों को इस तरह के गीत बनाने और

गाने का अधिकार किसने दिया ? महात्मा गांधी को गाली देने से कोई फ़ायदा नहीं । उनसे भी बहुत पहले से, यह समय-सम्मानित ऐतिहासिक अधिकार उनके पास है।

होली की शाम मेदिनी सिंह और गणेश बरकंदाज के घर निमंत्रित थे। शरबत मे भाँग छन रही थी। मौज मे ये सभी ! मेदिनी सिंह नवरतनगढ़ के राजाओ का होली के त्यौहार का किस्सा सुना रहे थे । चन्द्रभान, गजमोती सिंह, आदि मालिक लोग भी मौजूद थे।

भगी मशाल जलाकर ढोलक बजाते हुए चले आते है। उनसे दूर रह कर गाँव के दूसरे लोग भी उनका तमाशा देख रहे थे । हर साल ऐसा ही होता है। लेकिन शराबी-कबाबी भगी लोग जब सामने आते है, तभी बात समझ मे आती है।

स्वाँग रचने से क्या हुआ ! स्वाँग मे मेदिनी और गणेश साफ़ पहचान मे आ जाते है। मेदिनी और लछिमा, लछिमा और मोहर, मोहर और धनपतिया, *मोहर और थाने का दरोगा । हर घटना को छद मे बाँधकर* रस से भरपूर भाषा में गाया जाता है। हँसी का फ़व्वारा छूटता है।

स्वाँग को समझकर मेदिनी सिंह उन्मत्त हो उठते है। वे गर्जन के साथ भगियों के बीच कूद पडते हैं और बिजली की तेज़ी से उन्हे मारने लगते है। ख़ास दूरी पर जाकर भंगी लोग फिर मेदिनी को चिढ़ाते हुए नाचते है, गाना गाते हैं । इस समय बाक़ी राजपूत हँसी से फट पडते है। नाथू सिंह चिल्लाते है, "चले आइये। अब ये अछूत आपको छू देंगे।"

बरकंदाज सिंह हँसी रोकते हुए चिल्लाते है, "चले आओ मेदिनी, मैं इन्हे देख लूँगा।" वे और भी कुछ कहना चाहते है, लेकिन छाती पर हाथ रखकर चीख़ उठते है। साथ ही उन्हे उल्टी हो जाती है। मेदिनी उल्टी की आवाज़ को भीषण-हँसी समझते है और उनके सिर के भीतर कुछ फट जाता है। 'गणेश !' कहकर वे अपनी विशाल देह लेकर धाड़ से गिर पडते है। यह देखकर भगी और गाँव के दूसरे लोग दो गुटों मे भाग खडे होते है।

राजपूत कूदकर उतर पड़ते है बरामदे से। नौकर दौड़ आते हैं। दो-दो वज्रपात होते हैं एक *साथ* ।

हार्ट फेल होने से वरकदाज सिंह मर जाता है। मेदिनी के दिमाग़ की नस फट जाती है, सेरिब्रल थ्रम्बोसिस से। आख़िर में चन्द्रभान की सलाह से नाथू सिंह तोहरी से डॉक्टर बुलाते हैं। फिर चन्द्रभान से कहता है, "मेदिनी को तुम देखो । अब मुझे अपना कर्त्तव्य देखना है। वह अकेला आदमी था। दामाद अभी बच्चा ही है।" इस तरह पट-परिवर्तन होता है।

गाज गिरना ही समझो। वरकदाज सिंह अपने गुण-अवगुणों के बावजूद थे एक ग्रामीण व्यक्ति ही। वह अपने गाँव में ही रमे रहते थे। नाथू सिंह अब गाँव के प्रधान बन जाते हैं। शुरू में प्रधान बनने से नाथू मना करते है और कहते है, "बाद में देखा जायेगा। वैसे गजमोती जी बुजुर्ग आदमी हैं।"

चन्द्रभान कहता है, "भैया, तुम सिसोदिया राजपूत हो। तुम तैयार नहीं होंगे तो खून की नदियाँ बह जायेंगी। गजमोती जी में मुसलमानी दोष है। हम उनका शासन स्वीकार नहीं करेंगे। वे मुसलमानों के घर का खाते है और प्रायश्चित भी नहीं करते।"

मेदिनी सिंह बिस्तर पर पड जाते हैं। उनके बायें हिस्से को लकवा मार जाता है। साफ़-साफ नहीं बोल पाते हैं।

भंगियों को किसी ने कुछ नहीं कहा। इस तरह बाड़ा गाँव में लछिमा के जीवन के एक अध्याय का अंत होता है।

चार

मेदिनी के अस्वस्थ होने पर शुरू में गाँव के सभी लोग आते हैं उनका हाल-चाल पूछने। नाथू सिंह रोजाना नियमित रूप से आते हैं। नाथू की बीवी और माँ कहती हैं, "अब तो लछिमा और गुलाल सारा सामान गायब कर देंगी। उन्हें हटाकर अपने घर से कोई ईमानदार नौकरानी भेज देना अच्छा रहेगा।"

नाथू जैसा कुटिल और कुचक्री आदमी भी यह कहने पर मजबूर होता

है, "नहीं, मेदिनी होश में है। बातचीत भी करता है, लेकिन साफ-साफ नहीं। लछिमा जिस तरह उसकी सेवा कर रही है, वैसी सेवा कोई और नहीं कर सकता।"

"गणेश?"

"वह बाप से दूर भागता है।"

"क्या मेदिनी बिस्तर से नहीं उठ सकता?"

"नहीं, एकदम नहीं। हरोआ उसे पिशाब कराता है, टट्टी फिराता है।"

"उसकी दोनों बीवियाँ अगर लौट आयें तो?"

"मैं जो हूँ।"

समाचार पाकर एक पत्नी के चाचा और दूसरी के बड़े भाई आ पहुँचते हैं। नाथू की मौजूदगी में मेदिनी अटक-अटककर कहता है, "नहीं, कतई नहीं। वे मेरी सेवा करेंगी? आते ही जहर पिलायेंगी, जहर!"

चचिया ससुर कहने लगा, "लड़कियों को खबर कर दें?"

"नहीं, कतई नहीं।"

चचिया ससुर और साला बाहर निकलकर आपस में बातचीत करते हैं। "मेदिनी के ऊपर भरोसा नहीं करना चाहिए। लछिमा ने जरूर कोई जादू-टोना कर दिया है उस पर। अरे ब्याह कर लायी बीवी जहर देगी, इसी बात को लेकर डर रहा है! ऐसी बीमारी लगी ही क्यों? हाथी जैसा डीलडौल, ढाई सेर दूध पीकर पानी पीता है। सेर-भर गोश्त और आधा सेर घी रोज खाता है। रात को कटोरा भर मलाई, पेड़ा, पूरी-कचौरी, हलुवा...। जहर दिया है कि जादू किया है, कौन जाने?"

साले ने कहा, "जी, धर्मपत्नी को बिना वजह त्याग देने में कभी किसी का भला हुआ है क्या? सौत के लड़के को कौन सहन कर सकता है?"

"यह बात तो है। अब तो नाथू सिंह ही मालिक बनकर रहेगा। शुक्र है कि दोनों लड़कियों ने अपने दिमाग से काम लिया और अपने जेवर-वेवर साथ ले गयीं। इतना ही मिल सका उन्हें। लड़कियों के साथ तो शादियों के बाद से ही रिश्ता खत्म।"

"यह लड़का गणेश जी का अंश? देखने से तो राक्षस लगता है।

अगर वह देव-देवता ही है तो बाप की बीमारी ठीक क्यों नहीं हो रही है ?"

"हाँ, बात तो सही कहते हो।"

दोनों कहने लगे, "इतना खाना-पीना, फिर भी ऐसी बीमारी क्यों हुई ? बहुओं को नही भेजेंगे। नाथू के हाथों अपमानित होगी।"

डॉक्टर देख-सुनकर, हैरान होते हुए कहता है, "क्या इस हाथी जैसे शरीर पर इतना ज्यादा खाना ?"

लछिमा ने धीरे से कहा, "ताकत बहुत थी।"

"उम्र कितनी है ?"

"लगभग साठ।"

"नही, यह अच्छी बात नही। ब्लडप्रेशर बढ़ने के कारण ही...। बाल-बाल बच गये है। हार्ट फेल हो सकता था।"

मेदिनी अटक-अटककर बोलता है, "अंग्रेजी बीमारी मुझे क्यों होगी ? जिन्दा देवता मेरे घर में है।"

लछिमा ने कहा, "थोड़ा अच्छा कर दीजिये। ऐसी दवा दीजिए कि मालिक उठकर बैठ सकें, अपना काम-काज संभाल सकें। घर में केवल छोटा लड़का है।"

"वह तो बाद की बात है। अभी तो काफी दिन तक लेटे रहना होगा। किसी भी तरह की उत्तेजना इनके लिए ठीक नही। ऐसा कोई भी खाना मत देना, जिससे चर्बी या ताक़त बढ़ती हो। दवाई ठीक समय पर देना।"

"मालिश करने से कुछ फर्क पड़ेगा ?"

"नहीं, नही, वैसी बीमारी नही है।"

लछिमा भारी उलझन मे पड़ जाती है। मेदिनी बीमारी में भी मेदिनी ०। है। प्रजा के साथ अलग-अलग बंदोबस्त। किसको क्या देना है, हिसाब रखना होगा।

नाथू सिंह कहता है, "चिंता मत करो, भैया ! आपकी जमीन की जिम्मेदारी मुझ पर है।"

नाथू के हाथों मे अपने हिसाब की बही देखकर मेदिनी सिंह इतना उत्तेजित हो उठता है कि उसे दोबारा दौरा पड़ जाता है।

मेदिनी पूरी तरह से अपग हो जाता है। बातचीत बद हो जाती है

और लछिमा नाथू सिंह से कहती है, "सब देखभाल आप कीजिए, मालिक! मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं दस रुपया लेती थी महीने में, बस। मैं और नानी खाना-कपड़ा लेती है। खाना मिशिर जी पकाते हैं। आप सब काम की देखभाल कीजिए।"

"मुझे पता है। मेदिनी ने भी मुझसे कहा है।"

"मैं केवल मालिक की सेवा करूँगी। अब तो इनका बचपन जैसे फिर आ गया है। हे भगवान, मैं फिर बँध गयी!"

"तुम चली मत जाना, लछिमा!"

"नहीं।"

लेकिन अब की बार डॉक्टर बुलाने की गरज नहीं रही नाथू को। दवाई भी कौन लाये तोहरी से?

आखिर में लछिमा ने गणेश से कहा, "छोटे मालिक, तुम अपने ससुर से कहो कि डाक्टर ले आयें। पिता तुम्हारे है, उनके नहीं। तुम्हारे लिए अपने मन में कितनी आशा सँजोये हुए थे!"

बारह साल की उम्र में ही सोलह साल का लगता है गणेश। कुत्सित हँसी हँसता हुआ कहता है, "ससुर जी कहते हैं, पिताजी अब ज्यादा दिन नहीं बचेंगे।"

"राम, राम!"

"बहू आयेगी, तब देखना तुम लोगों को कैसे भगाता हूँ।"

"तब मैं खुद ही चली जाऊँगी।"

"मैं क्या करूँगा?"

"इस समय तुम ससुर के पास जाओ। उन्हें बुला लाओ। सुनो छोटे मालिक, अभी भी तुम्हारे पिता जिन्दा है और अच्छी तरह से इलाज करवाने से अच्छे भी हो जायेंगे।"

नाथू सिंह के आने पर लछिमा अस्त-व्यस्त कपड़ों में उसके पैर पकड़ लेती है, कहती है, "आप गणेश के ससुर है, समाज के प्रधान। हमारे मालिक के बारे में नवागढ़ खबर भिजवाइये। वहाँ जरूर अच्छे वैद्य होंगे। मालिक कहते थे राजा का इलाज भी वैद्य करते थे। यहाँ कोई ईमानदार जाना-चीन्हा आदमी फसल की देखभाल के लिए लगा दीजिए। नहीं

तो सब-कुछ चौपट हो जायेगा मालिक ! यह घर अब आपकी बिटिया का ही घर है।"

"बात तो तुम ठीक ही कह रही हो, लछिमा ! गणेश इतनी बार हमारे यहाँ आता-जाता है, लेकिन उसने एक बार भी नही कहा कि बाप की तबीयत इतनी खराब है।"

"आपको तो सब पता ही है।"

"तो फिर डाक्टर को ही बुलवाता हूँ।"

"ऐसा ही करिये। इलाज का कुछ बदोबस्त करिये।"

नाथू के चले जाने पर लछिमा गणेश को भीतर बुलाकर दरवाज़ा बद कर देती है। मेदिनी से कहती है, "तुम कुछ मत सोचो, मालिक ! तुमने लछिमा को कुछ नही दिया, लेकिन अब लछिमा ही तुम्हारी देखभाल करेगी। क्या किया जाये, मालिक !"

फिर गणेश को डाँटकर कहती है, "आज से तुम पिताजी के पास से नही हिलोगे। तुम्हारे सिर विपत्ति है। मैं तुम्हारी जात-पाँत की नहीं हूँ, लेकिन बाप की तबीयत खराब होने पर तुम घर का काम सम्हालोगे। इलाज मैं करवाऊँगी तुम अब बडे हो गये हो। तुम्हारे ससुर तिजौरी में से रुपया क्यों निकालें ? पिताजी के सिरहाने चाभी रखी हुई है। चाभी लेकर रुपया तुम निकालो। तिजौरी तुम खोलो, समझे ? गिनकर रुपया दोगे, हिसाब लोगे। फसल बेचने का रुपया गिनकर उसमे रखोगे।"

"मैं ?"

"तुम्हारा ही सब-कुछ है। क्या मैं हाथ लगाऊँ तिजौरी को ? सब-कुछ तुम्हारा है, तुम्हारा। अब मरद के बच्चे की तरह काम सम्हालो।"

गणेश ने लछिमा के मुँह से ऐसी बातें पहले कभी नही सुनी थी। लछिमा ने उससे फिर कहा, "हक-नाहक ससुराल नही जाओगे, घर पर रहोगे। चारों ओर दुश्मन हैं।"

"समझा।"

"ये सारी बातें किसी और से मत कहना। जाओ, हरोआ को बुलाओ। मालिक को पेशाब करवायेगा।"

मेदिनी अटक-अटककर कुछ कहता है। लछिमा झुककर सुनती है

और कहती है, "तुम्हें बताने की जरूरत नहीं। अब तुम जल्दी से अच्छे हो जाओ।"

कुसमय में इस तरह लछिमा मेदिनी की नाव का हाल-चक्का थामती है। उसी कमरे में गेहूँ, मंडुवा मकई और रबी की फ़सल तुलवाती है। गणेश से लिया हिसाब पूछकर किसानों को पैसे देती है, मेदिनी के सामने। सभी कामों में नाथू से कहती है, "आप आशीर्वाद दीजिए। अगर कभी गलती हो जाये तो समझा दीजिये।"

नाथू पूछता है, "बीमार आदमी को इससे तकलीफ नहीं होती?"

"नहीं। इसी में मालिक की जान है।"

धीरे-धीरे मेदिनी के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। अब वह साफ़-साफ़ उच्चारण भी कर लेता है। थोड़ा दुबला हो गया है, लेकिन शरीर में स्फूर्ति का अनुभव करता है। हरोआ उसके हर काम में उसका साथी और सेवक है।

एक दिन मेदिनी हिसाब लगाता है कि वह छह साल से बिस्तर पर पड़ा है। मिशिर कहता है, "भैया, छै साल लछिमा ने तुम्हारी सावित्री की तरह सेवा की है और गणेश को भी तैयार कर दिया है।"

"हाँ, मुझे पता है।"

"गणेश सोलह साल का हुआ या सत्रह का?"

"सत्रह का," थोड़ा अटककर मेदिनी कहता है।

मिशिर पैर का अँगूठा जमीन में रगड़ते हुए कहता है, "परमेश्वर चाहते हैं कि तुम अपना काम करके ही जाओ। इसलिए तुम्हें थोड़ा-सा स्वस्थ कर दिया है।"

मेदिनी प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ देखता है।

"अब बहू को घर में ले आओ। वह आकर अपनी गृहस्थी सभाले।"

"और लछिमा?"

"भैया! तुम ज्ञानी आदमी हो। अब मैं तुम्हें समझाऊँ? लछिमा और गुलाल ने, खासतौर पर लछिमा ने, जो किया वैसा कर्त्तव्य आज तक किसी ने किसी औरत को करते नहीं देखा। अपनी जिन्दगी और जवानी गवाँ दी तुम्हारी सेवा में। हरोआ ने भी तुम्हारी बहुत टट्टी साफ़ की है

और वह आगे भी करेगा।"

"हाँ।"

"लेकिन एक-न-एक दिन सभी का काम खत्म होता है। लछिमा को अगर नही छोड़ोगे तो वह घर मे कैसे आयेगी ? इज्ज़तदार बाप की बेटी और इज्ज़तदार बाप के बेटे की बहू ससुर की रखैल के साथ कैसे घर करेगी ?"

मेदिनी अटक-अटककर कहता है, "और मेरी देखभाल ?"

"बहू करेगी, गणेश करवायेगा।"

"लछिमा को...," मेदिनी की आँखों से आँसू निकल आते हैं। वह रुंधी आवाज़ मे कहता है, "गणेश ! गणेश कहाँ है ?"

गणेश सामने आकर खड़ा हो जाता है।

"गणेश !"

"जी ?"

"लछिमा को...।" गणेश बाहर से पहले ही सब-कुछ सुन चुका होता है। कहता है, "क्या दूँ ?"

"जो माँगे।"

"जी !"

इसी तरह सब कुछ सम्पन्न हो गया। नाथू के घर भी खबर पहुँची। लेकिन जिस मेदिनी ने लछिमा का जीवन बरबाद कर दिया, उसे ही छोड़कर जाने मे लछिमा को सबसे ज्यादा दुख हुआ।

"क्या करे मालिक ? अब हम बहू की जिम्मेदारी में आ रहे हैं।"

हरोआ ने कहा, "मुझे भी ले चल।"

"यह क्या कहता है ? मालिक का क्या होगा ?"

"तुम्हारा क्या होगा ?"

"मेरा ? मेरी जिन्दगी कट जायेगी।"

"तुम्हारे बिना मैं इस घर में किसे देखकर जिन्दा रहूँगा ?"

"ऐसी बात मत बोल, हरोआ !"

"क्यों न बोलूँ ? यह सच्चाई है।"

गुलाल ने कहा, "हरोआ जैसा कहता है, वही कर।"

"कैसे करूँ? पहले तूने मुझे गिरवी रखा मालिक के पास। मालिक ने अट्ठारह साल अपने कब्जे में रखा। सोना नहीं, चाँदी नहीं। महीने में दस रुपया और तीन बीघा जमीन। मोहर से शादी नहीं करने दी, उसे भगा दिया। खुद बीमार पड़ा। चिड़िया जैसे घोसला संभालती है, वैसे मैंने सारी गृहस्थी सभाली। अब मैं बूढ़ी हो गयी हूँ। दो साल बाद मैं चालीस की हो जाऊँगी। हरोआ अभी भी जवान है। वह किसी से भी शादी कर सकता है। मैं गणेश से कह दूँगी।"

"वह तुझे चाहता है।"

"मैं मुर्दा, महकती लाश हूँ, समझी?"

"लेकिन...!"

"तू इतनी परेशान क्यों है? तू बुढ़िया गिद्धनी मरेगी नहीं क्या? लछिमा को मालिक के पास इतने साल गिरवी रखकर जीती रही। अब सोच रही है कि हरोआ जमीन जोतेगा और तू कंधे पर चढ़कर खाती रहेगी? इस घर से मैं निकलूँगी, लेकिन पहले तुझे भगाऊँगी या खुद कहीं चली जाऊँगी। मुझसे अब नहीं होता।"

बुझा हुआ चेहरा लिये लौट गयी गुलाल। लछिमा ने मेदिनी के सामने ही गणेश को बुलाया। कहा, "एक दिन बैठकर रुपये-पैसे का हिसाब मिला लो, छोटे मालिक! कपड़ा, लत्ता, रजाई, कम्बल—सब का हिसाब कर लो। मेरे रहते-रहते सारा हिसाब हो जाना चाहिए।"

गणेश पहले तो कुछ देर गुम खड़ा रहा और फिर बोला, "क्यों?"

"क्यों, तुम नहीं समझते?"

"नहीं, तुम्हारे साथ कोई हिसाब नहीं है।"

"चले जाने के बाद अगर हिसाब माँगा तो?"

"कहाँ जाओगी?"

"अपने घर।"

"खाओगी क्या?"

"तीन बीघा जमीन में जो होगा, वही खायेंगे।"

"पिताजी की देखभाल कौन करेगा?"

"तुम्हारी दुल्हन और तुम।"

"पिताजी मर जायेंगे।"

"मेरे रहने पर वहू नही आयेगी।" लछिमा ने जल्दी-जल्दी साँस ली। उसकी आँखें लाल हो गयी। "किस तरह मैंने तुम्हें पालकर बड़ा किया, तुम्हारे पिता की सेवा की—धरम जानता है! छोटे मालिक, आज मेरे रहने पर बदनामी होगी। वहू नही आयेगी तो मुझे जाना ही पड़ेगा।"

"पिताजी जब तक जीवित हैं...।"

"क्या मालिक नही देखेंगे कि घर में दुल्हन आ गयी है?"

"महीने में दस रुपये के अलावा तुम...तुम और जो लेना चाहती हो, ले लो। पिताजी ने कहा है कि तुम जो कुछ भी माँगो देने के लिए तैयार हैं।"

"मुझे कुछ भी नही चाहिए।"

लछिमा जोर-जोर से सिर हिलाते हुए कहती है, "देखो, मालिक के लिए मैंने जवानी और जिन्दगी खत्म कर दी। मालिक ने आज तक कोई कोई अच्छा कपड़ा, रुपया, सोना-चाँदी, सामान-बर्तन नही दिया। कोई बात नही। छोटे मालिक, तुमको मैंने पाल-पोसकर बड़ा किया, तुमने मुँह से कहा, यही काफी है।"

मेदिनी उत्तेजित होकर कहता है, "रुपया! रुपया!"

लछिमा समझी कि मेदिनी चाहता है कि वह रुपया ले ले। गणेश से कहती है, "इस वक्त ऐसी बातें मत उठाओ, छोटे मालिक! मालिक सोचेंगे, बोलेंगे तो उनकी तबीयत खराब होगी।"

गणेश बाहर निकल जाता है।

मेदिनी फिर कहता है, "रुपया! सोने की हँसली!"

लछिमा अक्षम्य जलन-भरी धीमी आवाज में कहती है, "रुपया! हँसली! तुमने मुझे जिस तरह बरबाद किया है, उसके एवज में कितना सोना दोगे, कितना रुपया दोगे? नही, मैं कुछ भी नही लूँगी! जो कुछ सहना था, मैंने सह लिया। तुम और भी काफी दिनों तक जीवित रहो, मालिक! बहुत सुख भोगा है, अब रोग भी भोगो। लो, दवाई पियो। हरोआ, इधर आओ। मालिक पेशाब करेंगे।"

मिशिर, गुलाल, यहाँ तक कि नाथ सिंह ने भी कहा, "मालिक जब

देना चाहते हैं तो ले लो, लछिमा ! तुम्हारी जीवन-मृत्यु, सुख-दुख के मालिक हैं यह। तुम्हें ले लेना चाहिए। नहीं तो मालिक दुखी होंगे।"

लछिमा ने कहा, "इस उमर में अब मेरी कोई इच्छा नहीं है। मालिक के घर मुझे नानी ने भेजा था। हम छोटी जात के आदमी हैं। दस रुपये महीने मिले, तीन बीघा जमीन मिली। कपड़ा-लत्ता, खाना-पीना मिला। गणेश को सब-कुछ पता है। कभी मकई का एक दाना, एक पैसा या एक एक बर्तन भी इधर से उधर नहीं होने दिया।"

नाथू ने कहा, "तुमने इतनी सेवा की, उसका भी तो कुछ प्रतिदान लेना चाहिए।"

"नहीं मालिक, माफ कीजियेगा।"

इस तरह लछिमा सबको स्तंभित कर देती है—गणेश को भी। वह कहता है, "गुलाल को जाने दो। तुम यहीं रह जाओ।"

"यह कैसे हो सकता है, छोटे मालिक !"

मिशिर मुहूर्त निकालकर लछिमा के जाने का बंदोबस्त करते हैं। शुभ मुहूर्त में नाथू की लड़की इस घर में आयेगी।

लछिमा कहती है, "वहू आयेगी, मालिक के लिए खुशी के दिन हैं। देवता हो तुम, गैबीनाथ में पूजा-बूजा चढ़ाने का बंदोबस्त करो। हाय राम ! इन सब बातों का खयाल तो तुम्हें भी होना चाहिए। मैं तो जा रही हूँ, तुम तो यहीं हो !"

मिशिर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहता है, "घर में औरत रहने से जैसे उसके दिमाग में हमेशा परिवार के कल्याण की चिंता रहती है, उसी तरह तू भी हमेशा इस परिवार की फिक्र में पड़ी रहती है। मैं तो सोच भी नहीं पा रहा हूँ कि तू अब नहीं रहेगी।"

"बस, बस देवता ! अब आप पूजा की चिंता करें।"

"क्या करूँ ?"

"घर में कौन-सा सामान मौजूद नहीं है ? नयी तकड़ी में घी, तेल, चावल, गुड़, दाल तुलवाओ। डलिया सजाओ। ब्राह्मण को देना होगा।"

"हम भी ब्राह्मण ?"

"छिः देवता ! गैबीनाथ के पुजारी जी को मिलेगा यह चढ़ावा।"

"और ?"

"मिठाई, फल और नया कपड़ा भी भिजवाओ।"

"कौन ले जायेगा ?"

"हरोआ को लेकर तुम खुद जाओ, पूरा मकान मैंने लीप-पोत दिया है। पुताई तो अभी हाल ही में हुई है। और क्या ?"

"हिसाब ?"

"क्या हिसाब तुम्हे देना पड़ेगा, देवता ? अभी तो मालिक जिन्दा हैं। उनके लड़के से सारी बातचीत हो गयी है।"

लछिमा फीकी हँसी हँसकर कहती है, "जाऊँगी अपना कपड़ा-लत्ता और नानी के बर्तन लेकर। गणेश देख लेगा। और हाँ, बहू के आने पर उसके हाथ से भी पूजा चढवा देना। मालिक ऐसा ही चाहते थे।"

सभी कुछ, शुभ कार्य की तैयारी ठीक-ठाक होती है। लछिमा और गुलाल मेदिनी के कमरे मे आ खड़ी होती हैं। लछिमा कहती है, "मालिक, अपने घर जा रही हूँ। बीस साल तक तुम्हारी सेवा की। कोई गलती हुई हो तो माफ करना। हम छोटे लोग बड़े घर के रीति-रिवाज अच्छी तरह नही जानते थे। यही से आपको प्रणाम करती हूँ।"

गणेश को भडार की चाभी देती है और कहती है, "मेरे लिए यही गर्व का विषय है कि मैंने तुम्हें बचाया, बडा किया, छोटे मालिक ! पिताजी का खयाल रखना। तेज आदमी थे। अब तो बच्चे जैसे हो गये हैं।"

"चलो, मैं भी चलता हूँ।"

"नही, छोटे मालिक ! मालिक को अकेले मत छोड़ना, डर जायेंगे।"

माहौल उदास और एकाकी हो जाता है। गणेश की दुल्हन आती है। कुछ सामान और दो दासियों को लेकर। नाथू सिंह साथ में आता है।

घर में मन नही लगता लछिमा का। गुलाल को मर्जी का खाना पकाने को कहकर नहाने गयी थी तालाब पर दूसरे दिन और वहीं पर हरोआ उसे बुलाने आता है और कहता है, "जल्दी करो !"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"मालिक ने तुम्हारा नाम पुकारा और फौरन पलट गये। बस फिर होश नही, आँखें भी पलट गयी है।"

"तुझे किसने भेजा है ? गणेश ने ?"

"और कौन भेजता ?"

"मालिक हैं या नही ?"

"कैसे बतायें ?"

"चलो, मैं आती हूँ। गणेश के ससुर ?"

"सभी हैं।"

"फिर मै कैसे आऊँ ?"

"नही चलोगी ?"

"चलो, चलती हूँ।"

उसे हवेली तक नही जाना पड़ा। रोने की आवाज। बहू रो रही है। ऐसे मे सभी रोते है। एक के बाद एक सभी राजपूत मालिक उधर जा रहे हैं। लछिमा हरोआ से कहती है, "गणेश कहाँ है ? उसे बुलाओ।"

गणेश नहीं आया। बाप के पास बैठा है। लछिमा को बुलाता है, लेकिन लछिमा वहीं से लौट आती है।

मेदिनी सिंह का दाह-संस्कार और क्रिया-कर्म काफ़ी शान-शौकत से हुआ। गुलाल उन दिनों वही रहती है। श्राद्ध की पूरी मिठाई खाकर भी उसका जी नही भरता, घर भी ले आती है। कई दिनो तक खाती रहती है। परिणामस्वरूप उसे उल्टी और टट्टी लग जाती है और वह मर जाती है।

उन्ही दिनो बिगुलाल की गाय अचानक एक दिन गजमोती सिंह के बगीचे में घुसकर, खाद के गड्ढे में मुह के बल गिरकर गरदन टूटने से मर जाती है।

दुसाध लोग फ़ारेस्ट कर्मचारियों की बहुत दिनों की लापरवाही का फ़ायदा उठाकर अपनी झोंपड़ियों के चारो ओर नागफनी की बाढ का घेरा डाल लेते हैं।

गणेश एक नये रूप में उजागर होता है। उसके घर गजमोती सिंह आते है, मिशिर से अपने बाग में गाय मरने के प्रायश्चित का विधान जानने के लिए।

गणेश कहता है, "चाचा जी, इस गाँव में रहते हुए, यह अनाचार नहीं

होने दूंगा। आप इस उम्र में भी पाप किये जा रहे हैं। उन्हें रोकने के लिए ही भगवती आपके बगीचे मे आकर मरी है। प्रायश्चित करिये और प्रायश्चित के साथ सभी पाप-कार्य छोड़ दें। नही तो आपका सर्वनाश हो जायेगा। पाप का फल क्या अच्छा हो सकता है?"

गजमोती सिंह को याद आता है कि गणेश साधारण लड़का नहीं है। गणेश फिर कहता है, "मुसलमानी दोष के कारण समाज में आपकी इज्जत नही। यह सब-कुछ छोड़ दीजिये। अपनी इज्जत बढाइये। जमाना बहुत खराब है।"

गणेश बड़ा ज़बरदस्त मालिक सिद्ध होता है।

मिशिर से कहता है, "देवता हैं आप, पिताजी के बंदोबस्त के अनुसार आप यही रहेंगे, लेकिन हक-नाहक अन्दर नही आयेंगे। आप बुजुर्ग आदमी हैं। आपको हम सीधा दे दिया करेंगे। अपना खाना खुद बना लीजियेगा। बुरा मत मानियेगा, देवता! अभी आप अपने पूजा-पाठ में रमिये। रोज रामायण पढ़िये। पिताजी को तो आप सुनाते रहे हैं। घर में धरम-ग्रंथ का पाठ होते रहने पर परिवार का ही मंगल होगा। मुझसे कोई गलती हो तो बताइयेगा।"

नाथू मिशिर से पूछता है, "घर का हाल कैसा है?"

गणेश सब-कुछ को बदल रहा है।

बहू के लिए हुक्म जारी होता है, "पीहर से आयी नौकरानियों के साथ लछिमा को लेकर कोई बात न करे बहू। पिताजी ने जो भी किया, अच्छा किया। इस घर में लक्ष्मी की कृपा बनी रहने का कारण लछिमा और गुलाल का कठोर परिश्रम है।"

कोई गप्प-बाज़ी नही, अड्डे-बाज़ी नही। केवल काम देखना चाहता है गणेश। उसका सबसे ज़रूरी आदेश यह है कि बिना आज्ञा के पीहर नहीं जाओगी।

हरोआ भंडार में नौकर बन जाता है। हवेली के भीतर पुरुष किसानों का जाना भी बंद हो गया।

एक दिन मिशिर ने गणेश से कहा, "गणेश! लछिमा तुमसे कुछ कहना चाहती है। सामने मैदान में खड़ी है।"

गणेश गया। लछिमा पेड़ के नीचे खड़ी थी। कुछ दुबली हो गयी थी। गालों पर कालिख। गणेश के दिल में एक अजीब-सी अनुभूति होती है। इसी एक शख्स के सामने वह जितना सहज महसूस करता है, उतना ही अधिक असहज भी।

"बहुत धूप है, छोटे मालिक ! मेरे घर चलो।"

"चल।"

अपने कमरे में गणेश को बिठाती है। पखा झलते हुए कहती है, "गुड़ का शरवत बना दूँ ? और क्या दूँ तुम्हे ? घर मे तो कुछ भी नही।"

"गुलाल मर गयी। तुम अकेली यहाँ किस तरह रहती हो ?"

"क्या किया जाये !"

"पहले हरोआ यहाँ सोने आता था।"

"अब यह कैसे हो सकता है, छोटे मालिक ?"

बहुत-कुछ पूछती है लछिमा उससे। बहू उसकी देखभाल भी करती है या नही ? मालिक की बरसी पर क्रिया-कर्म, मान-दान से होनी चाहिए। लछिमा ने एक बार सुना था कि गणेश गयाजी जाने को कह रहा था। अगर वह वहाँ जाये तो पिता के साथ माँ की क्रिया भी कर आये। इस लड़के को उसने बड़ा किया है—कहानी की तरह लगती है सारी बातें।

"कुछ कहना चाहती हो ? कहो।"

लछिमा अचानक हाथ जोड़कर हाथ पसारती है और कहती है, "छोटे मालिक, मालिक के कहने पर भी मैंने कुछ नही लिया। मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ। फिर भी तुम मेरे बेटे के समान हो। तुमसे भी मैंने कभी कुछ नही लिया। आज माँग रही हूँ।"

"क्या माँगती हो, कहो ? तुम तो कुछ भी नही लेती हो।"

"रुपया नही, सोना नही। शरम की बात है।"

"क्या है ? बोलो ना।"

"अकेले नही रह सकती, मालिक ! बहुत डर लगता है। तुम लोगों का खयाल आ जाता है। वह हरोआ मुझसे शादी करना चाहता है। डर के मारे तुमसे कह नही पा रहा। मैं वही कहना चाह रही थी।"

गणेश बहुत आहत होता है। लछिमा समझ जाती है।

सूखी आवाज मे कहती है, "अगर तुम मेरी जिम्मेवारी उठा लेते तो मैं यह बात नहीं कहती। अगर मैं नानी की तरह बूढ़ी होती तो भी नहीं कहती। तुम मेरी देखभाल करते तो कोई बात ही नही थी। मुझे अपने में वे चैन से नही रहने देते, मालिक ! नही-नही, चौंको मत, मालिक ! वे किसी अन्य जाति के नही, करण या दुसाध नही, बल्कि वे सभी राजपूत-मालिक हैं। सोचते हैं, मेदिनी सिंह जब जिन्दा नही...।"

लछिमा रोने लगती है।

"तुम उनका नाम बताओ। नाम क्यो नही बताती ?"

"नही, नहीं। दुश्मनी हो जायेगी सबसे। मेरे लिए तुम दुश्मनी क्यों मोल लोगे जात के लोगों से ? हाँ, मेदिनी सिंह ने जरूर कहा था कि बहू आने पर तू चली जायेगी। पर वे मुझे भेजना नहीं चाहते थे। तुम यह सब-कुछ जानते ही हो !"

"जानता हूँ, लेकिन क्या किया जाये, लछिमा ?"

"तुम अपनी घरवाली को लेकर रहो। बहू मेरा वहाँ रहना पसद नहीं करेगी। वैसे यह ठीक भी नही है।"

"मैं मिशिर से बात करके बताऊँगा।"

"अपनी जमीन वापस ले लो, मैं भिखारिन ही ठीक।"

मिशिर कहता है, "यह धरम की बात होगी, गणेश ! उसी के लिए तुम्हारे पिताजी...तुम तो सब-कुछ जानते हो। मोहर वाली घटना तुम्हें याद होगी ?"

सब-कुछ समझाता है मिशिर। लछिमा से कहता है, "तुम्हें नाम क्या बताऊँ ! बताने से फायदा भी क्या है ? तुझे उठा ले जायेगा।"

लछिमा कहती है, "उठा ले जाने पर मुझे बचायेगा कौन ? और वही जिन्दगी ! फिर एक बार मालिक के साथ रहना करम मे लिखा था। जो हुआ सो हुआ, लेकिन अब नही। पर बचूँ कैसे ? शादी कर लेना ही ठीक रहेगा ! हरोआ जैसे वहाँ काम करता है, करता रहे। छोटे मालिक उसे थोड़ा समय दे दें। मेरी जमीन की देखभाल कर देगा। रात को मेरे पास रहेगा। हरोआ मालिक का आदमी है, इसीलिए मेरी तरफ कोई आँख भी नही उठा सकेगा। मुझे तो और कोई राह नहीं सूझती।"

फिर कहती है, "देवता, तुम लोग कहते हो, मैंने छोटे मालिक की माँ का काम संभाला। खून का रिश्ता है ? नहीं तो आज मुझे ऐसी बात करने की जरूरत पड़ती ? बुढ़िया भी मर गयी। वह रहती तो कोई बात ही नहीं थी।"

"यही सही रास्ता है।" गणेश कुछ-कुछ राजी होता है।

नाथू सिंह भी इस सुझाव को उत्साह से सहमति प्रदान करता है। तभी गणेश को संदेह होता है कि शायद रामरूप लछिमा पर निगाह रखने वालों में से एक है। रामरूप की उम्र ज्यादा नहीं है। पता नहीं क्यों, नीची जाति की जरा ज्यादा उम्र की औरतों की तरफ उसका आकर्षण ज्यादा है। मिशिर कहता है, "खराब राशि-नक्षत्र मे पुत्र धारण करने से ऐसा पुत्र पैदा होता है।"

इस तरह हरोआ और लछिमा की शादी हो जाती है। गजमोती सिंह कहता है, "यह बड़ा अच्छा काम किया, गणेश !" मेदिनी तो लछिमा की शादी करवाना चाहता नही था, इसलिए गणेश ने अपनी धाय माँ की शादी करा दी।

यह काम अच्छा हुआ या बुरा, जानने के लिए होली तक इंतजार करना पड़ेगा। भंगी लोग स्वाँग रचाते हैं और गणेश की महिमा बखानते हैं। गणेश गजमोती सिंह को राह पर लाया, लछिमा की गृहस्थी बसायी। भंगी लोग गणेश के सामने गाना गा-गाकर चावल और रुपया वसूल करते हैं। गणेश खुशी के साथ चावल देता है, जेब से रुपया निकालकर देता है। उसके बाद कहता है, "चलो-चलो, आगे बढ़ो !"

उम्र मे काफ़ी छोटा है वह बहुतों से। लेकिन चेहरा भीमकाय है। तकिये का सहारा लिये बैठा अतिथियों से कहता है, "उस बार पिताजी को गालियाँ दी थीं, अब की बार मुझे ऊपर उठा दिया। गजमोती चाचा को नीचे उतारा। इतनी हिम्मत उनमे कहाँ से आती है ?"

रामरूप कहता है, "भैया, यह उनका जन्म का हक है।"

"यह हक दिया किसने ?"

गजमोती सिंह को शरम-हया थोड़ी कम है। कहता है, "हमेशा से छोटी जात को सही बात कहने का हक रहा है। अयोध्यापति रघु राम ने

तो धोबी के कहने पर सीता को वन में भेज दिया था ।"

"कहाँ राम ? कहाँ अयोध्या ? यह तो याढ़ा गाँव है।"

"क्या कहता है तू, बेटा ?"

"भगियों को भगा देंगे गाँव से ।"

"सडास साफ़ कौन करेगा ?"

"संडास तोड़ दीजिये सभी लोग ।"

"लेकिन बेटा, अन्दर वाले थोड़े मानेंगे।"

"सडास नहीं था तो क्या कोई टट्टी नहीं फिरता था ? भगवान ने इतने खेत-मैदान किसके लिए दिये हैं ?"

चन्द्रभान ने कहा, "फिर गाँव में अफसर लोग नहीं आयेंगे।"

गणेश ने कहा, "मैं कोशिश करूँगा, उन्हें दबाकर रखने की। गाना बनाओ, स्वाँग रचाओ। लेकिन, मालिकों को छोड़कर। मालिक मालिक हैं।"

"बेटा, ऐसा काम अगर कर सको तो तुम्हें राजपूत समाज का सिरमौर बना देंगे। तुम दामाद हो, उस पर देवता का अंश। मेदिनी भैया अगर बीमार न पड़ते तो वही सिरमौर होते। तुमको मैं अपना पद दे दूँगा।" नाथू सिंह ने भंग की मौज में आकर कहा।

चन्द्रभान बोला, "लेकिन गणेश, इस समय आजादी की सरकार है और गांधी मिशन के कर्मचारी तोहरी में अड्डा जमाये बैठे हैं। वे भंगियों को मदद भी देते है।"

"ये तो कानून की बात है। आज की अवस्था है। कानून और सरकारी हुकूमत याढा से कोसों दूर है। दूर ही रहेगी। जब पास लाने की जरूरत महसूस करेंगे, ले आयेंगे। हममें एका होना चाहिए—बस। और कुछ नहीं चाहिए। जमीन हमारी है, रुपया हमारा है। लाठी संभालने के लिए नौकर भी मौजूद हैं।"

चन्द्रभान बोला, "देखो !" उसकी आवाज़ में झिझक थी।

नाथू बोला, "जो कुछ भी करो बेटा, रामरूप को साथ रखकर करना। अच्छी तरह समझ लो, वह भी तुम्हारे भाई जैसा ही है और उसके बारे में कहें क्या ? नामर्द, बेवकूफ है एक ही। तुम्हारे साथ रहने से

अगर मर्दो की-सी रीतकरण, सोसे:...मेरे पिताजी ने तो लाड-प्यार देकर उसका सत्यानाश कर ही दिया है।"

पाँच

काफ़ी दक्षता से आगे बढ़ता है गणेश। होली आने पर रबी उठाने के बाद पहली बार गाँव के राजपूत-समाज के लोग एक साथ मिलकर काली की पूजा करते हैं। कहते हैं, काली की पूजा कभी भी की जा सकती है। वैसे भी रिआया मालिकों को उत्सव के लिए चंदा और बेगार देती है। इस बार भी देती है। यह घटना नयी है। इसलिए वे बातें भी बनाते है कि क्या हर बार ही ऐसा होगा? यह पूजा, यह बली, यह धूमधाम?

कालो-पूजा के उपलक्ष में, बाढ़ा में, तोहरी से स्टेशन मास्टर, दरोगा जी, सरकारी डॉक्टर, लकडी के ठेकेदार—सभी आते है। यहाँ तक कि बी० डी० ओ० साहब भी। काली की मूर्ति राँची से आती है।

"काली-पूजा बंगाली लोग ज्यादा करते है," यह कहने पर सरकारी डॉक्टर झाड खाते है।

दरोगा जी कहते हैं, "यह कैसी बात कहते हैं आप! इसमे प्रादेशिकता मत लाइये। काली शक्ति का रूप है, विश्व की माँ है। क्या केवल बंगाल मे उनकी पूजा होती है? क्या और जगहों पर नही होती?"

खूब आव-भगत, आदर-सत्कार, भेंट-उपहार। एक मासल खस्सी साथ लेकर जाते हुए बी०डी०ओ० कहते है, "सभी कुछ समझ आया, लेकिन यह बात समझ नही आयी कि ये लोग किस किस्म की मदद माँगने वाले हैं। इधर किसी तरह की गड़बड़ के बारे मे तो नही सुना।"

"कैसी गड़बड़?" दरोगा ने इस बात को कोई महत्व नही दिया।

"अजीब इलाक़ा है!"

"क्यों?"

"ये स्कूल नही चाहते, हेल्थ सेंटर नही चाहते।"

"खेती के काम में लिखाई-पढ़ाई कहाँ लगेगी? शायद यहाँ लोग

बीमार भी नही पड़ते। शांतिपूर्ण इलाक़ा है ।"

"शातिपूर्ण ही रहे तो अच्छा है।"

"स्कूल या हेल्थ सेंटर की माँग ये तभी करेंगे, जब आसपास के इलाके में स्कूल-हेल्थ सेंटर देखेंगे। तब जरूर कहेगे—कुल भूमिहारो, बनियों-कायस्थो के इलाकों मे ये सब हुआ है । हमे भी अवश्य चाहिए। कही कुछ मत कीजिए। शाति से रहिये। आप लोग ब्लॉक-ब्लॉक मे जाकर विकास के बहाने ये सब गड़बड़ियाँ पैदा करते हैं।"

"बात तो सही है।"

"क्या जरूरत है इतने कुएँ खुदवाने की, नहरें और सड़क बनाने की ! मुझे तो समझ में नही आता। देखिये चौधरी जी, जो इलाका जितना पिछडा रहेगा, वहाँ के गाँव वाले भी उतने ही नरम और सरल रहेगे। थाने से डरेंगे। विकास होने से वे सब विगड़ जायेंगे। मालिक भी बिफर जायेंगे। उस सूरत में हमें मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है। भारत के गाँवो की उन्नति करना ठीक नहीं है।"

"वह गणेश सिंह कौन है?"

"बाप रे बाप ! एक दाँत लेकर जन्मा था। देवांशी लड़का है। उनका समाज उसके नेतृत्व मे आ रहा है। दूसरे राजपूतों को भी तो उसके बाप ने ही लाकर वाढा गाँव में बसाया था। बडा जबरदस्त आदमी था।"

"उसे सभी लोग काफी मानते हैं।"

"हाँ, काफ़ी मानते हैं।"

बहुत जल्द गणेश अपने-आपको भगियों और दुसाधों का शुभकांक्षी प्रमाणित करता है।

हैज़े के मौसम में कहता है, "सरकारी गाड़ी आने पर तुम सभी लोग टीका लगवा लेना। तुम्ही लोगो को हैजा होने का ज्यादा डर होता है। हैज़ा होता भी है।"

"आप लोग मालिक हैं?"

"हम लोग? जिस घर मे पूजा-बूजा होती है, उस घर मे हैजा घुस सकता है? भगवान का परसाद है न?"

"हम लोग भी पूजा चढ़ायें देवता को?"

"जैसा ठीक समझो।"

नया कुआँ खुदवाने के लिए मिस्त्री की खोज में गणेश लोहरी आया था। बी० डी० ओ० से कहता है, "इन लोगों की भलाई कौन करेगा? हैजे का सरकारी टीका लगवाने को कहा तो कहने लगे—हम देवता पूजेंगे, हमें बीमारी नही होगी।"

"अपनी भलाई की बात खुद नहीं समझते।"

बी० डी० ओ० को विश्वास हो जाता है कि गणेश बुरा आदमी नहीं है।

अपनी गौशाला से गणेश एक बूढ़ी गाय चुनता है। और उसे भंगी टोले के पास छोड़ देता है। सभी के ढोर चरने की जगह रस्सी के सिरे पर एक भारी पत्थर बाँध देता है। पत्थर खींचती हुई गाय ज्यादा दूर तक नही जा सकेगी।

हरोआ अभी भी उसके पास काम करता है। हरोआ कहता है, "मालिक सफेद गाय को क्या छोड़ दिया आपने?"

"क्या करूँ, हरोआ? बूढी हो गयी है, दूध देती नही। चर-वर के खा ले तो ठीक है। इसीलिए छोड़ दिया है।"

"भंगियों को तो जानते हो मालिक, वह मंगालाल बहुत ही हरामी है। छोड़ी हुई गाय मिल जाये तो जहर देकर मार डालते है। उसका चमड़ा बेचता है और बाकी भगाड़ में डाल देता है।"

गणेश चाहता भी यही है। कहता है, "ऐसा कर सकते हैं क्या? हिम्मत है उनमें? मेरी सभी गायें दगी हुई है। उनके बदन पर निशान लगे हैं।"

हरोआ बात को आगे नही बढ़ाता। लछिमा से घर जाकर कहता है, "गाय-भैंस के बूढ़े होने पर मालिक लोग उन्हें छोड़ देते है हमेशा ही। अब की बार सफेद गाय को पत्थर बाँधकर भंगी टोले के पास क्यों छोड़ा है? ऐसा तो नही करते हैं।"

लछिमा बोली, "बेचारी प्यास से मर जायेगी।"

"राम-राम! गौ-माता भगवती समान होती है।"

"तुम चुप रहो। फालतू बात मत करो। अभी तुम गणेश के नौकर

हो। वह क्या अच्छा करता है, क्या बुरा—कुछ मत कहो।"

"नही, मैं कुछ नही कहूँगा।"

"तुम्हे जरूरत ही क्या है?"

"नही, कोई जरूरत नही।"

गणेश के यहाँ हरोआ का काम करना लछिमा को अच्छा नही लगता। हरोआ उसके यहाँ केवल खुराकी पर काम करता है। लछिमा को यह नही पता है कि हरोआ पर गणेश के अधिकार की वजह क्या है। बेशक हरोआ की खुराक काफ़ी ज्यादा है। यह बात माननी पड़ेगी कि मेदिनी सिंह और गजमोती सिंह के यहाँ खुराकी पर काम करने वाले किसानो को खाना अच्छा दिया जाता है। मेदिनी सिंह कहा करता था कि दूध देने वाली गाय-भैंसों, गाड़ी और हल के बैलों और, किसान-मजदूरो को जो अच्छी तरह खाना नही देता, वह यह नही जानता कि उसकी भलाई किसमे है। इसलिए उसके यहाँ हरोआ को अच्छी तरह खाना मिलता है।

लछिमा उससे पूछ-पूछकर सभी बातें जान लेती है। गणेश की दुल्हन का गृहस्थी पर कोई जोर नही है। हरोआ को अनपका सीधा मिलता है। मिशिर को भी सीधा मिलता है। गणेश की दुल्हन केवल अपने, गणेश और दो नौकरानियो के लिए खाना पकाती है। दुल्हन को रोज़ गणेश के पैर दबाने पड़ते है। यह बात हरोआ को नौकरानी ने बतायी है।

खाना खाते-खाते हरोआ कहता है, "मिर्च से काफी फायदा है। अब की मिर्च लगाऊँगा। मालिक भी मिर्च लगायेगा।"

"लगा सकते हैं, इतनी जमीन है। हमें इतने फायदे की जरूरत ही क्या है? दो जने हैं। दुख-सुख में जीवन बीत ही जायेगा।"

"दिल चाहता है, लछिमा...!"

"अब तक सुनती रही हूँ कि तुम्हारा दिल मुझे चाहता है। लेकिन अब सुन रही हूँ, दिल मिर्च चाहता है। कैसा है तुम्हारा मन?"

"अब की बरसात से पहले अपने घर की मरम्मत करेंगे। तभी पपीते का पेड़ लगायेंगे।"

"लगा लेना। सुनो, मगी लोग हर रोज तोहरी जाते रहते हैं। उनसे कह देना कि फल वाले की दुकान से पेड़ के पके पपीते का बीज ले आयें।"

"अमरूद और शरीफे का पेड़ भी लगायेंगे।"

"चलो छोड़ो। अब सो जाओ।"

हरोआ की चाह है—सजी हुई साफ़-सुथरी गृहस्थी में रहे। यद्यपि ज़िन्दगी में उसने कभी कुछ नहीं पाया जिसे अपना कह सके। वह पेड़ों की देखभाल करना जानता है, झोंपड़ी बाँधना जानता है, गाय-भैंस का इलाज जानता है। भैंस के बच्चे को कंधे पर उठाकर चल सकता है वह। हट्टा-कट्टा जवान आदमी। चाहता तो गणेश की नौकरी छोड़ सकता था। रबी की फ़सल के बदले मिर्च लगाना चाहता है। नगद पैसा मिलेगा। कर्ज़े की बही से न बँधे होने पर भी वह जन्म-दास है।

लछिमा सो जाती है।

मंगालाल को गाय मारनी नहीं पड़ी। प्यास से उसकी गरदन लम्बी हो गयी और वह मर गयी। मंगालाल केवल उसे खींच ले गया।

यह काम उसने पहले भी बहुत बार किया है, इसलिए भिखारी गजु की सहायता के बिना ही वह उसकी चमड़ी उतार लेता है। चमड़े पर राख और नमक लगाकर सुखाने को डाल देता है।

शव को भगाड़ में फेंक देता है।

फलस्वरूप थाने से कांस्टेबल आता है और मंगालाल को पकड़कर गणेश की हवेली में ले आता है। दरोगा भी मौजूद थे वहाँ। चमड़ा मंगालाल को ही ढोकर ले जाना पड़ता है।

गाय के मरने के बारे में मंगालाल जो भी बातें कहता है, दरोगा उसकी एक भी बात नहीं सुनते। मंगालाल को पेशी में देखने के लिए अन्य भंगी लोग भी आते हैं। वे भी कुछ कहने की कोशिश करते हैं।

दरोगा बार-बार सिर हिलाते हैं। गणेश जैसा व्यक्ति जब यह कह रहा है कि यह आदमी उसकी गाय चुरा कर ले गया है, उसने उसे चमड़े और हड्डियों के लालच में मार डाला है तो बात झूठी नहीं हो सकती।

"हुजूर, मालिक लोगों को पसंद नहीं कि हम भगाड़ का काम करें। इसलिए ऐसा कहकर हमारी बदनामी कर रहे हैं।"

दरोगा परेशान होकर कहता है, "भगाड़ का काम तो तुम लोग करते हो, बाप मेरे! कभी किसी मालिक ने तुम्हारी शिकायत की है? हैज़े का

टीका लगवाने का इंतज़ाम करने, मालिक भागा-भागा तोहरी गया था, क्या इसीलिए ?"

"लेकिन हुजूर...!"

दरोगा मंगालाल को पकड़कर ले जाने की धमकी देता है। भंगी लोग घबरा जाते हैं। मंगालाल ने इससे पहले भी कई बार बेकार गायें-भैंसों को इस तरह खत्म किया है, तब तो कुछ नहीं हुआ था लेकिन इस बार क्या से क्या हो गया ! वे लोग टट्टी उठाना बंद करके मालिक लोगों को तंग कर सकते हैं। यह तरकीब भंगियों के दिमाग़ में नहीं आती। थाना-पुलिस इनके लिए सर्वशक्तिमान होते हैं।

गणेश दरोगा से कुछ कहता है। दरोगा को आने-जाने का मानदेय मिल जाता है और वह खुश हो सिर हिलाते हुए मंगालाल को लेकर चला जाता है। दरोगा गणेश के पक्ष मे कहते जाते हैं, "गाय को मारने के लिए जेल काटनी पड़ेगी। गाय के बदले तुझसे जेल में तेल का कोल्हू चलवाऊँगा।"

सुनकर मंगालाल रो पड़ता है। रोते-रोते ही वह चला जाता है। भंगी लोग उस वक़्त तो चुपचाप चले जाते हैं, लेकिन शाम को मंगालाल का बड़ा भाई, बीवी और लड़का आते हैं।

आँगन मे खड़े होकर कहते हैं, "माफ कर दो, मालिक ! फिर कभी ऐसी गलती न होगी।"

गणेश कहता है, "माफ तो करना ही चाहता हूँ।"

"कर दो, मालिक !"

"लेकिन इसके लिए पुलिस को कितना रुपया देना होगा, पता है ?"

"मालिक हमसे जो भी बनेगा, देंगे।"

"सिपाहियों की भूख मिटाना तुम लोगों के बस की बात है ?"

"फिर क्या होगा ?"

"सजा होगी।"

"सजा होने पर वह मर जायेगा, मालिक ! उसे पिशाब की तकलीफ है। वे मारेंगे मालिक, और मार-पीट से वह मर जायेगा।"

"देखते हैं, क्या कर सकते है !"

दूसरे रोज़ गणेश तोहरी जाता है। मंगालाल को अदालत तक पहुँचाने की उसकी क़तई इच्छा नहीं थी। दरोगा कहता है कि केस होने पर इसे जेल जरूर होगी। गणेश दरोगा को पान खिलाने के रुपये देकर मगालाल को छुड़ा लाता है। फलस्वरूप मगालाल और दूसरे भगी गणेश के प्रताप से परिचित होते है और उसके अहसान के लिए कृतज्ञता जताने आते है।

गणेश कहता है, "मारने को भी हम और बचाने को भी हम, यह बात तुम लोग क्यों भूल जाते हो ?"

"फिर कभी नही भूलेंगे, मालिक ?"

"हम लोगों को लेकर गीत बनाते हो ?"

भगी लोग चुप हो जाते हैं।

"मैं उस तरह के गीत दोबारा नही सुनना चाहता। हमारे चाहने पर हम क्या कर सकते है, थोडा-बहुत तो मैने तुम्हें दिखा दिया है। मालिको को लेकर फिर कभी कोई गीत मैंने सुना तो सारे भगी टोले को जला दूँगा। कोई सरकार, कोई गाधी मिशन, भागाड़ का कोई ठेकेदार नही बचा सकेगा तुम्हें।"

भगी लोग वापस चले जाते है।

इस तरह बाढ़ा गाँव मे गणेश मध्य-युग का फिर से सूत्रपात करने में पथ-प्रदर्शक होता है। उसकी काफ़ी प्रशसा की जाती है। भगियों को सबक सिखाने की खुशी में वह काफी उल्लसित है। सहसा उसमें शरीर की भूख बड़ी तीव्रता से जागती है। आज रात वह नाथू सिंह की लड़की को भोगने पर भी तृप्त नही होता। बनैले चीत्कार-भरे स्वर मे 'मिट्टी का लौंदा' कहते हुए पत्नी को एक लात मारकर बिस्तर से गिरा देता है वह। चिल्लाकर कहता है, "निकल जा...!"

अब गणेश की समझ में आता है कि मेदिनी सिंह के लिए लछिमा क्यों अपरिहार्य थी। घृणा से कहता है, "खाना नही मिलता क्या ? ऐसी औरत से किस मर्द की चाह पूरी होगी ?"

नाथू की बेटी को उसके इस व्यवहार मे कही कुछ *अन्यायपूर्ण* नजर नही आता। जो पत्नी अपने उष्ण रक्त और भूखी मांसलता वाली देह से पति को सेज का सुख नही दे सकती, उसका जीवन अर्थहीन है। उनके परिवार

के पुरुष लोग भी जानते हैं कि लडकियाँ, विशेषकर विवाहित लड़कियाँ अपने पतियों के लिए व्यर्थ रहेगी ही। दादा बरकदाज सिंह जाते थे मोरी के पास। बाप नाथू जाते हैं, लखपतिया के पास। मालिक लोगों के घर-घर में रखैल रखने का नियम है। इन्ही बातो को ध्यान मे रखकर माँ ने दो नौकरानियाँ उसके साथ कर दी थी। नाथू की लड़की ने नौकरानी से पूछा, "कुछ दवाई वगैरह जानती हो।"

"किसलिए ?"

"उनसे डर लगता है।"

"और क्या लगता है ?"

"और...और अच्छा नही लगता।"

"छिः-छिः, मालकिन ! औरतों को ऐसी बातें नही करनी चाहिए। अगर वे ऐसी बातें करती तो क्या धरती पर इतनी आबादी बढती ?"

"दवाई लाकर दे।"

"नही, नही, दवा-ववा की बात जानते ही भगा देंगे। उन दोनो सौतेली माँओं को दवाई वगैरा करने के कारण ही उनके पिता ने भगा दिया था।"

नाथू की लडकी करुण हँसी हँसती है और कहती है, "फिर तो वह मुझे पीट-मीटकर मार ही डालेगा। ऐसी लात जमायी है कि अभी तक मैं सीधी नही हो पा रही हूँ। इस तरह मारता रहा तो मैं मर ही जाऊँगी। शरीर मे इतनी ताकत कहाँ ?"

"क्या किया जाये, मालकिन ? घर में और कोई तो है नही। इतना सारा दूध उबालती हो, खाना पकाती हो; पूरी-कचौरी, गोश्त, मलाई बनाती हो। मेहनत के कारण चेहरे पर रौनक नही रही, शरीर कमजोर पड़ गया।"

इसके बाद भी नाथू सिंह की लड़की को ऐसे ही अनुभवों से गुजरना पड़ता है, फिर से। नाथू सिंह के कानों में नौकरानियों की काना-फूसी पडती है। वह अपनी पत्नी को वहाँ से भेज देता है और फिर गणेश से खुद बात करता है।

"पुतली की माँ बता रही थी। बड़ी खुशी की बात है। मेदिनी भैया

के घर मे शायद कुलदीपक आने वाला है। ऐसे समय तुम्हारे घर में तो कोई औरत है नहीं। दो-चार दिन वह हमारे यहाँ रह जाये तो अच्छा नहीं रहेगा क्या ?"

"यह कैसे हो सकता है ? हमारे वंश मे इस तरह का कोई रिवाज है ही नहीं। किसी के घर नहीं है। शादी के बाद घर मे आयी लड़की घर से बाहर एक ही बार निकलेगी—मैं यह नियम कैसे तोड़ सकता हूँ ?"

नाथू सिंह हड़बड़ाकर उठता है, "ठीक है बेटा, ठीक है। उसने पहले कभी काम नहीं किया। शायद जल्दी थक जाती है।"

गणेश मुँह फुलाकर कहता है, "मैं बहुत ही भाग्यहीन हूँ, समझे ? आप लोगों को पता था कि हमारे घर मे जो बहू आयेगी, उसे अकेले ही सब-कुछ संभालना होगा। जब लछिमा घर मे थी तो हमारे घर की सभी तरह से बढ़ोतरी हुई। अब सब तरफ़ घाटा-ही-घाटा हो रहा है। आप लोगों ने शर्त लगायी, उसी की वजह से यह सब-कुछ हुआ है। अब आप कह रहे हैं, 'अकेली रहती है घर ले जाऊँ ?' ले जायेंगे तो ले जाइये। लेकिन वापस मत भेजियेगा।"

"यह कैसी बात हुई, बेटा ? मैंने तो तुम्हारी ही बात मानी है।"

"अकेले घर मे जो लड़की जा रही थी, उसे कामकाज क्यों नहीं सिखाया था ? किस बात की तकलीफ़ है उसे यहाँ ? उसके आते ही मेरे पिताजी गुजर गये। तब भी मैंने कुछ नहीं कहा। क्या यह अच्छा लक्षण है ? कामकाज का जहाँ तक सवाल है वह केवल मेरा और अपना खाना पकाती है। मिसिर जी को सीधा देता हूँ। किसान-मजदूर को सीधा। नौकरानियाँ अपना खाना आप पकाती हैं। पानी वे ले आती हैं। सारा इंतजाम वे ही करती है। आपकी लड़की कौन-सा भारी काम करती है ?"

"ठीक कहते हो तुम।"

नाथू सिंह सारी बातें अपनी पत्नी को बताता है और आदेश देता है, "अगर लड़की का सुख चाहती हो तो चुप रहो। हमारे ज़िद करने पर लछिमा को वहाँ से भगाया गया। यह बात भी सही है कि उसके रहते हुए मेदिनी की गृहस्थी में वाकई लछमी थी। दो जनों का खाना पकाने में तुम्हारी लड़की मरी जा रही है ! गणेश से लड़ाई मोल लेने मे क्या लाभ ?

बेटी की ज्यादा तरफ़दारी की तो वह उसे भगा देगा। गणेश के साथ झगड़ा कर अपनी जगहँसाई कराऊँ? भगियों की दुष्टता पर किस खूबी से रोक लगायी है उसने!"

मालिक लोगो को विषय बनाकर गीत बनाने पर लगी रोक पर भंगी टोला जल रहा है। गणेश मे अपनी पत्नी को तंग करने का उत्साह खत्म होता जा रहा है। उसका पौरुष आहत है। इसके पीछे है गांधी मिशन के कार्यों मे लगन से लगी उद्धत यौवना पल्लवी शाह।

पल्लवी शाह मात्र तेईस वर्ष की है। बम्बई के किसी तेजलाल शाह की अत्यत लाड मे पली लडकी। बेइंतहा धन होने के कारण डर-वर नाम की चीज उसमे नही है। जो मरजी आये, वही करने की आदी है। उसकी माँ किसी धर्माश्रम मे रहती है। पिता निर्यात के व्यापार मे अत्यंत व्यस्त रहते हैं। शौक में आकर पल्लवी अपने एक मित्र की एक साप्ताहिक अखबार निकालने मे सहायता करती है। फलस्वरूप उसकी सवाददाता भी बन जाती है। उसका वह मित्र असल मे ग़रीबों के बारे मे बड़े-बड़े भाषण देकर पल्लवी को मक्खन लगाता है और एक दिन उसका रुपया-पैसा लेकर भाग जाता है।

धरती को ही त्यागने के विचार से वह नीद की गोली खाती है; लेकिन तेजलाल शाह के ग्रह इस समय अच्छे थे और पुत्री द्वारा आत्महत्या करने पर उसकी काफी बदनामी होती; इसीलिए उसे बचाया जाता है। बेहोशी की हालत मे पल्लवी देखती है एक ज्योतिर्मय श्वेताग संन्यासी को। उसे लगा कि वे कह रहे हों, 'डॉटर, डॉटर, मैं तुम्हें बचाऊँगा।'

एडविन कृष्णात्मा उसका परिचय गांधी मिशन के कार्यकर्ताओं से करा देते है और कहते हैं कि गरीब-से-गरीब लोगो के बीच जाओ। समाज की सेवा करो।

पल्लवी ट्रेनिंग लेती है। गरीब से भी गरीब है भगी लोग। पल्लवी अत में उनकी सेवा करने के लिए, उनके काम आने के लिए बाढा चली आती है। एस० डी० ओ० से लेकर थाने का दरोगा तक, कोई भी उसकी चरम आत्मत्यागी प्रवृत्ति पसद नही करता। लेकिन पल्लवी के सबध इतनी ऊँची जगहों से है कि वे उसका कुछ भी नही बिगाड सकते। मिशन

के कार्यकर्ता भी उसे नहीं रोक पाते। पल्लवी से भिड़ना उनके वश की बात नहीं थी।

पल्लवी की हिन्दी अच्छी नहीं है और उसकी अंग्रेज़ी इन लोगों की समझ से बाहर है। एस० डी० ओ० बार-बार कहते हैं, "आप वहाँ जाकर मुसीबत में फंस सकती है। हमारी नौकरी पर इससे आँच आ सकती है।"

पल्लवी दुरुस्त अंग्रेज़ी मे कहती है, "आप मुझे डरा रहे हैं। मैंने ठान लिया है कि एक साल गरीब और पीडितों के लिए उत्सर्ग करूंगी। यहाँ पर कुछेक भंगी परिवार अमानवीय स्थितियो में जिन्दगी गुजार रहे है। मैं उन्हीं की सेवा करूँगी।"

"यहाँ के मालिक राजपूत है।"

"वे सभी अशिक्षित जानवर है।"

"आप क्या करेंगी ?"

"उनकी जरूरतों को देखूंगी। मैं अनुमान लगा सकती हूँ कि उनके पास अच्छा मकान, स्वास्थ्य-केन्द्र, स्कूल, पीने के पानी की व्यवस्था—कुछ भी नही है। वे लोग बेहद गरीब है।"

किसी का कहना नही मानती पल्लवी। एस० डी० ओ० कहते हैं, "अगर कोई गड़बड हो गयी तो ?"

"मैं पापा को खबर कर दूंगी।"

एस० डी० ओ० मन-ही-मन उसे हजारों गालियाँ देते है। फिर कहते है, "किसी मिशन वाले ने वहाँ जाकर उनके साथ रहने की बात कभी नही सोची। आपको वहाँ बहुत तकलीफ़ होगी।"

मिशन की महिला प्रधान एस० डी०ओ० को अलग ले जाकर धीरे से कहती है, "इसका शौक दो दिन मे ही खत्म हो जायेगा। बाढा हो क्यो, वह यहाँ से भी चली जायेगी। हमे भी छुटकारा मिलेगा। क्यो रोकते हैं उसे, वह बहुत ही अमीर घर की लड़की है। किसी प्रकार की रोक-टोक की वह अभ्यस्त नही है।"

"क्या अकेली जायेंगी ?"

"क्या किया जाये ?"

हरिजन कल्याण संघ के अभय महतो से बात करता है एस० डी० ओ०।

अभय हट्टा-कट्टा जवान लड़का है। इधर के सारे गाँव उसके जाने-पहचाने है। लेकिन बाढ़ा गाँव जाने से कभी जिन्दा नही लौटेगा, इसी डर से वह कभी बाढ़ा गाँव नही गया था। उसके संघ का संगठन काफ़ी कमज़ोर है। अभय पल्लवी के पास आकर कहता है, "मेरी बहुत दिनो की इच्छा है। आप जा रही है, दीदी! अगर मुझे साथ ले चलें तो मैं भी घूम आऊँ?"

पल्लवी सहमत नही होती। आखिर मे तय होता है कि अभय उसे वहाँ पहुँचाकर वापस लौट आयेगा। पल्लवी कहती है, "रुपयों की कोई बात नही। सिर्फ़ एक जीप, कुछ साड़ियाँ, धोती और बेबी फूड चाहिए।"

"दीदी तो सब-कुछ जानती हैं।"

"पटना के स्लम एरिया मे एक महीना काम किया है मैंने।"

पल्लवी जीप से जाती है। उसे मगालाल के जिम्मे सौंपकर अभय वापस आ जाता है। सारा भगी टोला पल्लवी को देखने के लिए टूट पड़ता है। पल्लवी कहती है, "तुम जीप लेकर चले जाओ। इनसे कह दो कि मैं अब यही रहूँगी।"

भंगी टोला बेहद बदबूदार और गदी जगह है। भगी लोग इतने ग़रीब हैं कि पल्लवी को उनके साथ रहने मे आनन्द का अनुभव होता है। बम्बई वाला दोस्त उसे धोखा देकर जैसे अशुद्ध कर गया था—मनुष्य जाति को मुँह-चिढाते इन लोगो का साथ ही उसे फिर से शुद्ध और पवित्र कर सकता था। आवेग मे वह मंगालाल से कहती है, "हाँ ओल्ड मैन! मैं तुम्हारे घर मे ही रहूँगी।"

मंगालाल और अन्य भंगियों को विश्वास होने लगता है कि पल्लवी जरूर पागल है। अभय का चेहरा उनका जाना-पहचाना है। अभय उनको अभयदान देता है। द्रुत देहाती बोली में कहता है, "दीदी सरकार की तरफ़ से हैं। तुम लोगो की जरूरतें क्या है, अपनी आँखों से देखने आयी है। इसीलिए यहाँ रहना चाहती हैं।"

"यहाँ रहेंगी कहाँ? खायेंगी क्या?"

"तुम लोग जो खाओगे।"

"हुज़ूर, हम लोग तो समझो खाते ही नहीं हैं।"

"दीदी भी नही खायेंगी।"

पल्लवी को सभी कुछ असामान्य लगता है। गदे पताले मे लबला हुआ भुट्टा ही खाती हैं वह। मचान पर सोती हैं। सुबह पैन और कागज लेकर स्त्री-पुरुषों की उम्र के आधार पर सारणी बनाती है। फिर उनकी जीविका के बारे में जानना चाहती हैं। मगालाल की पत्नी अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसे भागाड़ और सडास की सफ़ाई आदि के बारे में समझाने की कोशिश करती है। अतएव पल्लवी मंगालाल की पत्नी के साथ उजाड़ मैदान में पानी की जगह देखने जाती है।

"गर्मियो में यह सूख नही जाता ?"

"सूख जाता है।"

"तब क्या करते हो ?"

बिगुलाल के टोले की तरफ इशारा करती है और कहती है, "उनके कुएँ से पानी लेते हैं। वह भी लेने थोड़े ही देते हैं ..।"

"क्यों ?"

"हम लोग छोटी जात है, इसलिए।"

"ओह ! जात ?"

"हम लोगों को ढेरों तकलीफें है।"

"बडे-बड़े मकान किन लोगो के है ?"

"मालिक लोगों के।"

पल्लवी असीम आंतरिक विश्वास के साथ मगालाल की पत्नी को समझाती है—संविधान। कोई मालिक नहीं है। आज के आजाद भारत मे मंगालाल और मालिक दोनों बराबर है।

"अगर ऐसी ही बात है तो गणेश सिंह ने ललोबा के बापू को बिना वजह क्यों परेशान किया था ?"

ललोबा के बापू की परेशानी के बारे में पूरा विवरण सुनकर भी पल्लवी समझ नही पाती है कि वह अपने पति के बारे मे बता रही है। पल्लवी समझाने की कोशिश करती है कि अपने को छोटी जाति का समझना ही नही चाहिए।

पल्लवी पर गणेश की निगाह पड़ती है। गाँवों में कोई भी बात छुपी

नहीं रहती है। पल्लवी के बारे में भी सभी को पता चल गया था। गांधी मिशन, हरिजन संघ की यह लोग क़तई परवाह नहीं करते। इनकी भलाई की वे चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करें, कोई फ़ायदा नहीं होने वाला। ताकत गणेश जैसे लोगों के हाथ में ही हमेशा रहती है। गांधी मिशन जैसी संस्थाओं में जो लड़कियाँ काम करती हैं, उन्हें गणेश जैसे लोग बड़ी नफरत से देखते हैं। उनके विचार से समाज की जूठी की हुई औरतें ही ऐसे काम करने आती है। वैसे गणेश जैसे लोगों के तईं सभी औरतें उपभोग की वस्तु हैं। आजादी के शुरू-शुरू में, अकाल पड़ने पर राहत कार्यों के लिए मिशन की तरफ़ से एक यूनिट यहाँ आयी थी। उनमें से एक लड़की को गजमोती सिंह उठा ले गया था और बलात्कार करके उसे छोड़ गया था। उस अभागिन लड़की की रिपोर्ट थाने तक में दर्ज नहीं हुई थी।

पल्लवी को देखते ही गणेश के उष्ण रक्त में एक अजीब-सी चाहत तीव्रता से दौड़ने लगती है। यह वही चाहत है जो उसे उत्तेजित करती है, भूखा बनाती है और जिसे बुझाने में नाथू सिंह की लड़की असमर्थ है। गर्भवती होने के बाद से वह और ठसक गयी है। गणेश को देखते ही डर जाती है। छोटी जाति की किसी लड़की को रखैल रखना पड़ेगा, यह सोचकर उसका जी खराब होने लगता है। पल्लवी के नैन-नक्श काफी तीखे हैं और सेहत भी अच्छी है। गणेश पल्लवी को अनदेखा कर मंगालाल को बुलाता है। पूछता है, "मंगालाल, यह कौन-सा हरामीपन है?"

"क्या, मालिक?"

"इतनी अच्छी और साफ-सुथरी औरत को तुमने अपनी झोंपड़ी में रख रखा है। हम लोग क्या मर गये हैं?"

"जी मालिक!" मंगालाल की जीभ सूख जाती है। डर से होंठ चिपक जाते हैं। होंठों पर जीभ फेरते हुए कहता है, "हम कैसे रख सकते हैं, मालिक? वह अपने-आप ही आयी है, गांधी मिशन से।"

"कौन पहुँचाकर गया है?"

"हरिजन संघ का अभय महतो।"

"ठीक है। उसे मेरे घर ले चलो।"

तभी पल्लवी आगे आ जाती है और दोनों कूल्हों पर हाथ रखकर कहती है, "कौन हो तुम ? किसलिए धमका रहे हो इसे ?"

"मैं गणेश सिंह हूँ। वाड़ा गाँव में, मैं जो चाहता हूँ वही होता है।"

"अच्छा तो तुम्ही वह आदमी हो, जिसने मगालाल को बिला वजह तंग किया था ? चले जाओ यहाँ से, अभी, इसी पल !"

गणेश वहाँ से जाने का नाम नही लेता। भद्दी-सी हँसी हँसकर कहता है, "तुम्हारे जैसे बहुत-से लोग इनकी भलाई के लिए आते है, लेकिन होता बुरा है। इन्हें यहाँ रहना है, समझीं ? सुना नही तुमने—उसने 'मालिक' कहा ? हम राजपूत लोग इनके जैसे नीच जाति के लोगों के मालिक है। इनके घर तुम नही रह सकती।"

"इनको कुछ पता नहीं है, इसलिए डरा रहे हो इन्हे। मैंने इन्हें सब-कुछ बता दिया है। अब कोई किसी का मालिक नहीं। अब भारत आजाद है।"

"आज साँझ को तुम मेरे घर आओगी। यही मगालाल तुम्हें वहाँ पहुँचायेगा। नही तो हम लोग आकर तुम्हे उठा ले जायेंगे।"

पल्लवी चिल्लाकर अंग्रेजी में गाली बकती है। गणेश कहता है, "मगा-लाल तुम्हे यह भी बता देगा कि बाहर से जवान औरत आने पर गजमोती सिंह ने उसके साथ क्या किया था। तुम्हारे कारण सभी का खून गरम हो रहा है।"

पल्लवी पैर पटककर कहती है, "कभी नही जाऊँगी। पशु-शक्ति के सामने हार मानूँगी ? कभी नहीं।"

भगी लोग डर जाते हैं। बुरी तरह से डर जाते है। डर से उनके चेहरे सफेद पड़ जाते है। कहते है, "नही जाओगी तो वे तुम्हें उठा ले जायेंगे। वे जानवर है। छोटी जाति की औरतों की इज्जत उनके हाथ में है।"

"थाना है, सिपाही है।"

"हाय राम !" मंगालाल की पत्नी सिर ठोकती है। "थाने में मालिक लोग नियम से रुपया भेजते हैं। उस दिन मेरे आदमी को खूनमखून कर

दिया था। दरोगा ने कुछ नही कहा।"

सभी कहते है, "पल्लवी का यहाँ आना उचित नही हुआ। इस दूर-दराज गाँव में आना ठीक नही था। तोहरी यहाँ से काफी दूर है। हरएक मालिक के पास बंदूक है। वे बंदूक लेकर आयेंगे और पल्लवी को उठा ले जायेंगे। साथ मे भगी टोले को भी जलायेंगे।"

खाना नही पकता, किसी को भूख ही नही है। शाम को सूरज ढलने लगता है। आखिर अपनी जान के डर से मगालाल पल्लवी को डांटकर कहता है, "तुम चाहती हो कि तुम्हारे लिए हम सभी के घर जला दिये जायें और हमारे बाल-बच्चे साथ जल मरें? क्या यही चाहती हो तुम?"

पल्लवी भी डर जाती है। युगो से मन मे बैठे डर के सामने उसकी हिम्मत भी जवाब दे जाती है और वह कहती है, "मैं चली जाऊँगी।"

"कहाँ?"

"तोहरी।"

मगालाल की पत्नी अपने पति से कुछ कहती है। मगालाल सिर हिलाता है। फिर मगालाल की बीवी पल्लवी का हाथ पकड़कर कहती है, "इस समय तुम्हें न पाने पर वे हमे जिन्दा जला देंगे। थाना कुछ नही करेगा। रोशनी रहते-रहते चलो, हम भाग चलें।"

"कहाँ?"

"फारेस मे। *मोहन दुसाध रास्ता बतायेगा।*"

"दुसाध? वे भी तो हरिजन हैं।"

"मालिकों ने उन्हें जमीन से भगा दिया था। चलो, चलें, शाम होने से पहले ही भाग चलें, नही तो बचना मुश्किल है।"

सुअर, बकरी मुर्गी, इंसान—डर के मारे भागते हैं। यह जुलूस पहले दुसाध टोली मे पहुँचता है। जानवरों को उनके जिम्मे करके वे लोग जगल की ओर चल पडते हैं। मोहन दुसाध आगे नहीं आता। उसका लड़का राका दुसाध आता है। सारी घटना सुनने के बाद सिर हिलाता है और फिर जगली गुस्से मे कहता है, "तुम लोगो का घर आज जरूर जलेगा। सौप देते लड़की को उन्हें। क्या भलाई करेगी यह तुम्हारी? भंगियों की

भलाई करेगी ? मालिकों के पास ज़मीन है, रुपया है। सरकार भी मालिकों की है। यह क्या भलाई करेगी ? क्यों आयी थी यह यहाँ ?"

ललोबा दुखी होकर कहता है, "अभी मरम्मत करायी थी घर की।"

मगालाल पूछता है, "जंगल में किस जगह ले आये हो ? झरना तो है यहाँ ? पानी तो मिल सकेगा ? आग मत जलाना। बातचीत मत करना। जंगल में काफी अन्दर आ गये हैं हम। वे हमें खोजते-खोजते यहाँ तक पहुँच सकते हैं।"

पल्लवी कहती है, "गणेश को सज़ा कराऊँगी।"

रांका कहता है, "यह एक खास बात कही तुमने।"

रांका चला जाता है। वे जंगल में से लकड़ी बटोरते हैं परमिट पर। जंगल उनका जाना-पहचाना है। भंगी लोग अचानक आयी इस मुसीबत से भयभीत होकर बैठे हैं। पल्लवी की तरफ़ घृणा से ताक रहे हैं। अँधेरे में भी पल्लवी को सब-कुछ दीख रहा है। भंगियों के बदन से आ रही जिस महक से उसे प्रेरणा मिल रही थी, अब वही महक बदबू बन गयी है। सोचती है, समाज-सेवा करने के लिए शायद बम्बई में भी काफी गरीब लोग हैं। वहीं जाकर काम करेगी वह। ऐसे विचित्र सामाजिक ढाँचे में काम करना संभव नहीं है। इन भंगियों को स्वास्थ्य संबंधी नियम सिखाना क्या संभव है ? पल्लवी पेड़ से टेक लगा लेती है।

अचानक दूर से हो-हुल्लड़ की आवाज़ आती है। मगालाल ललोबा से कहता है, "पेड़ पर चढ़कर देख, कुछ नज़र आता है ?" ललोबा चुपचाप पेड़ पर चढ़ता है और फिर नीचे उतर आता है।

"क्या देखा ?"

"आग लगा दी है।"

"तू चुपचाप सो जा।"

"अगर वे यहाँ आ गये तो ?"

न बीतने वाली रात कट जाती है। सुबह की रोशनी फूटने से पहले रांका और पीछे-पीछे मोहन दुसाध आते हैं। कहते हैं, "इसे तोहरी की राह पर छोड़ आते हैं। तुम लोग साथ जाकर क्या करोगे ?"

"क्या करेंगे ?"

मोहन जमीन पर थूकता है। फिर कहता है, "हम लोगों को भगाया था तो तुम लोग भी तीन दिन अपने घरों से बाहर रहे थे। यही सोचकर हमने आपका साथ दिया। अब क्या फिर से झोपडी खड़ी करोगे?"

पल्लवी कहती है, "रुपया मैं दूंगी।"

उसकी बात पर ध्यान दिये बिना मोहन कहता है, "जमीन नहीं, जायदाद नही। झोंपड़ी खडी करने पर एक न एक दिन फिर आग लगेगी। तुम कितने परिवार हो?"

मगालाल आँसू पोछते हुए कहता है, "ग्यारह घर है। बाल-बच्चे मिलाकर बियालिस लोग। दो जनों के पाँव भारी हैं।"

"तो तुम जाओ। अपने ठेकेदार से कहो। भागाड़ मत छोड़ना।"

"वहाँ पानी नही है।"

"तो हम लोगों की तरह तुम भी फारेस की जमीन पर गैरकानूनी तौर पर रहो। जब हटायेंगे तो कही और चले चलेंगे।"

रांका कहता है, "संडास की सफाई नही चलेगी।"

मोहन भी जोडता है, "कई सालो से तो यह काम कर रहे हो, अब मत करो। बस सुअर पालो, और बेचो, भागाड़ का काम तो है ही।"

"वहाँ फिर से घर न बनायें?"

"मैंने जो कहना था कह दिया। आगे तुम्हें जो ठीक लगे, करो।"

राका और मोहन पल्लवी को ऊबड़-खाबड रास्ते से ले जाते हैं। जिस रास्ते से बाढ़ा गाँव तक जीप आती है, कुछ समय बाद उसी कच्चे रास्ते पर आ पहुँचते है। जाती हुई एक बैलगाड़ी मिलती है। पल्लवी उसमें बैठ जाती है।

तोहरी पहुँचकर वह एस० डी० ओ० को सारी बातें बताती है, लेकिन फिर भी गणेश के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करवा पाती।

एस० डी० ओ० देर तक चुप रहने के बाद कहता है, "ठीक है, आप कानून नहीं जानती। मैं आपकी हर बात पर यकीन करता हूँ, लेकिन उस पर केस करूँ? पुलिस केस? किसके खिलाफ़? गणेश ने भगी टोली में आग लगायी? किसने देखा? आपको उठा ले जाने की धमकी दी थी। अदालत में गवाही के लिए खड़ा करते ही डर के मारे यही भगी लोग कहेंगे, 'नहीं,

गणेश ने ऐसा नहीं कहा था।"

"क़ानून क्या केवल अमीरों का है ?"

"मिस शाह ! आपकी दृष्टि में वह देहाती जोतदार अमीर है ? यह सापेक्षिक सिद्धान्त है—भंगियों के लिए वही देहाती जोतदार टाटा-बिड़ला है। आपको एक बहुत ही भयावह अनुभव से गुज़रना पड़ा है। चलिये मेरे साथ। कुछ देर आराम करिये।"

"प्लेन कहाँ से मिलेगा ?"

"पटना से।"

"वहाँ तक कैसे जाऊँ ? पापा को फ़ोन करूँ ?"

फ़ोन पर ही सारा इंतज़ाम होता है। पटना से ड्राइवर गाड़ी लाता है। किसी ठेकेदार ने भेजी है।

पल्लवी को बीच का समय एस० डी० ओ० के बँगले में गुज़ारना पड़ता है। अंत में उनसे कहती है, "भंगियों को कोई तकलीफ़ न हो, खयाल रखियेगा।"

"रखूँगा, ज़रूर रखूँगा।"

अभय उससे मिलने आता है। अभय के सामने पल्लवी रो देती है। कहती है, "भंगी लोग डर गये थे। पता है, डर के मारे उनके चेहरे सफ़ेद हो गये थे। मेरे लिए उन्हें सारी मुसीबत झेलनी पड़ी। मैं अपने-आपको इतनी छोटी, इतना व्यर्थ और अपमानित महसूस कर रही हूँ !"

अभय प्रसन्न मुख से हँसते हुए कहता है, "भूल जाइयेगा दीदी, इस घटना को।"

"मुझे इस एस० डी० ओ० पर विश्वास नहीं। मेरे पास काफ़ी रुपया है। रुपया तुम उन्हें दे सकोगे घर बनाने के लिए ? दे दोगे ना तुम ?"

"दीदी, आप सब-कुछ देखकर आ रही हैं। हाथ में पैसा आते ही शराब पियेंगे वे लोग। मालिकों को पता चलने पर फिर से घर जलेंगे उनके।"

"ओह !"

अभय हँसते हुए कहता है, "सुनिये दीदी, हरिजन संघ पर विश्वास करके कुछ रुपया दे दीजिये। हम लोग उन्हें अपने संघ की ओर से दे देंगे।

उन्हें झोंपड़ी बनाने का सामान दिला देंगे।"

"ऐसा ही करो।"

"बम्बई पहुँचकर चिट्ठी लिखना।"

पल्लवी चिट्ठी नहीं लिख सकी, क्योंकि घर पहुँचने पर उसे घर में अपने खिलाफ़ माहौल मिलता है। पापा जी और भाई साहब, दोनों डाँटते है उसे। समाज में बहती गंदगी के साथ मिलकर बहने की बदनामी उठाने पर उसे कोसते है। उसे पता लगता है कि पापा कांग्रेस की तरफ़ से एम० पी० बनने की कोशिश में है। फ़ौजी जनरल की तरह पापा उसका जीवन-पथ निर्दिष्ट करते हैं। कहते हैं, "विदेश जाओ, पढ़ाई-लिखाई करो। इस देश में रहोगी तो और कोई नया झमेला करोगी। तुम्हारी माँ धर्माश्रम मे रहती है, इसी पर लोग काफ़ी बातें बनाते हैं।"

पल्लवी के पास पापा के सामने 'हाँ' कहने के अलावा कोई चारा नही। लेकिन विदेश जाने से पहले ही उसका नर्वस ब्रेक-डाउन हो जाता है। अंत मे वह मानसिक बीमारी के इलाज के लिए एक नर्सिंग होम में चली जाती है।

अभय भंगी लोगों का उपकार चाहकर भी नही कर पाता। क्योंकि बाढा गाँव मे भंगी टोला अब केवल जली हुई भीत-भर है। भंगी लोग आखिरकार सरकारी फ़ारेस्ट की ज़मीन पर काँस की झोपडी बनाने में लगे है। अभय कहता है, "यहाँ से भी तुम लोगों को एक दिन भगा दिया जायेगा।"

"तब कहीं और चले जायेंगे।"

"बाकूलाल से बात करके भागाड के नज़दीक की ज़मीन क्यों नहीं ले लेते ?"

"वहाँ पानी नही है।"

"वहाँ अगर जाना चाहो, और मैं कुँआ खुदवा दूँ तो ?"

मोहन दुसाध सत की तरह आँखें चढाकर कहता है, "वहाँ की ज़मीन के नीचे पानी नही है, और फिलहाल सरकार भी कोई नया फारेस्ट नही लगा रही। अभी क्यों उठायेंगे ? हम तो पेड़ भी नही काटते, फारेस्ट को कोई नुकसान नही पहुँचाते।"

"मैदान के उस किनारे से वह जो नदी गयी है, वहाँ का मैदान किस का है ? तुम लोग वहाँ भी जा सकते हो।"

"क्यों ?"

"पानी मिल जाता।"

मोहन कड़वी हँसी हँसता हुआ कहता है, "मैदान किसी का है, ऐसा तो मालूम नही। गायें चरती हैं, मेला लगता है, लगान कभी कोई वसूलता नहीं। हो सकता है, सरकारी जगह हो। लेकिन हमारे जाते ही उठा नही दिये जायेंगे, क्या मालूम ?...तब पता चलेगा कि किस की दखल में है। और हमें पता नहीं। मंगालाल वगैरह जाना चाहें तो चले जायें।"

मंगालाल भयभीत होकर कहता है, "नही-नही, हम इन्ही के पास रहेंगे।"

आखिर में अभय चला जाता है। जाते समय बाजार वाले दिन तोहरी में मिलने को कहता है।

पल्लवी के रुपयों से कुछेक बोरी मक्का और दो बोरी खेसारी दाल खरीद कर देता है अभय और कहता है, "दुसाधों और भंगियों के लिए है।"

राका कहता है, "उस लड़की ने रुपया दिया था। है न ?"

"तुम्हे इससे क्या मतलब ?"

"बाबू, तुम समझते हो कि हम घास खाते है। तुम्हारे पाँवों मे थेगली लगी हुई जूती है, टूटी कुरसी पर बैठते हो। जिदगी मे पहली मरतबा तुमने हमारी सहायता की ! बस, इसी से समझ लिया। चलो, भई मंगालाल।"

दुसाधों की तरह भंगी भी गणेश जैसो के हाथों से निकल जाते है। चन्द्रभान कहता है, "ओ गणेश, अब सडास की सफाई का क्या होगा ?"

"भंगियों को जाकर बुलवा लाओ।"

"यह कैसे हो सकता है ?"

"तब बिना संडास के काम चलाओ।"

"सालों की इतनी हिम्मत ? चले गये ?"

"पाप निकल गया, समझो।"

"नालियाँ निकालते थे, कूड़ा-करकट साफ़ करते थे।"

"गजू आदि हैं या नही ? सब लोगों की खरीद्री प्रजा..."

"वहाँ पर किस अधिकार से रह रहे हैं वे ?" यह पूछने पर एस० डी० ओ० साहब ने दस बातें सुनायी।

"वह जो रंडी लड़की आयी थी न, उसका बाप दिल्ली में सभी को जानता है। फ़ारेस्ट की जमीन अभी पड़ी रहेगी। बाद में वहाँ पेड़ लगेंगे। इस समय इस बात को लेकर कोई हगामा नही होना चाहिए।"

"खैर, जो हुआ सो हुआ।"

"उन्हें लाकर फिर से बसाया गया तो वे फिर से जला देंगे टोला।"

लड़की के हाथ से निकल जाने पर गणेश का पौरुष आहत हुआ है। यह बात सभी समझते हैं, लेकिन कोई यह नही समझ पाता कि ऐसी लड़की मंगालाल के घर मे थी कैसे ?

लछिमा के कानों मे भी यह खबर जाती है। वह हरोआ से कहती है, "अच्छा ही हुआ। हम लोग भी शायद हरिजन ही है। अगर घर छोड़ना पड़ा तो फारेस मे जाकर रहेंगे।"

हरोआ खूब हँसता है। मजाक की ऐसी बात उसने कभी नही सुनी थी। कहता है, "ऐसा कभी हो सकता है क्या ?"

"हो सकता है," लछिमा भी मजाक करती है।

"तुमने उसे पाल कर बड़ा किया।"

"तुम क्या जानो ? गजमोती सिंह ने अपनी माँ को भूखा मारा था, जायदाद के लालच में। उसके नाना ने माँ को सम्पत्ति दे दी थी और माँ के मरते ही वह उसे मिलती, इतना इंतजार भी वह नही कर सका।"

"लेकिन यह ऐसा नही करेगा !"

"क्या पता, कारनामे सुनकर तो मुझे डर लगता है। क्या काम किया है ! छि:-छि: ! सारे मालिकों को साथ लेकर भगी टोले को जलाया ? उस दिन अगर वे लोग पहले से जंगल मे नही भाग गये होते तो ? हाय माँ ! शायद जिंदा ही जला देते उनको।"

हरोआ भीषण बेचैनी दबाकर कहता है, "चुप रह, लछिमा ! मत बोल, मुझे डर लगता है।"

छह

समय पर गणेश की वहू एक लड़की प्रसव करती है और लड़की जनने के अपराध-बोध से बेहद दुखी भी होती है। गणेश से विनती करती है, "अभी मैं चलने-फिरने काबिल नहीं। देह मे जोर नही रहा। पिताजी से कहो कि गंगा को भेज दें।"

"गगा कौन है ?"

वहू धीरे-धीरे कहती है, "जिसने मुझे पाला-पोसा है।"

"तेरे बाप की रखैल है क्या ?"

वहू चुप रहती है।

गणेश ने निर्लिप्त स्वर मे पूछा, "उसकी एक लडकी है न ?"

वहू की आँखें भय से चौक उठी। बोली, "रुक्मिणी नही रहेगी। यानी कि हमारे घर मे भी नही रहेगी।"

"क्यों ? वह तो तुम्हारी वहन लगती है। रामरूप क्या उस पर नजर डाल रहा है ?"

वहू का चेहरा लाल हो जाता है कहती है, "रुक्मिणी की शादी तय है, उसने खुद ही तय की है, नाहारा के एक अहीर से। गगा सौ रुपये माँगती है। रुपया जुगाड़ होते ही वह रुक्मिणी से शादी कर लेगा।"

"अच्छा, कहूँगा तेरे बाप से।"

नाथू की बेटी मे अब उसकी कोई रुचि नही रही। वैसे भी अब जरूरत भी क्या है उसकी ? वह मिसिर के पास जाकर बैठ गया। भूमिका बाँधे बिना कहने लगा, "मेरे पिता देवता थे, लेकिन मेरी शादी उन्होने देख-भाल के नही की। न इससे घर का काम-काज होता है, न परिवार की देखभाल। अरे तौलने पर तो लछिमा ही भारी निकलेगी इससे। ऐसी दस औरतें मिलकर भी उसके नाखून बराबर नहीं।"

"सो तो ठीक बात है।"

"अब क्या किया जाये ? वहू तो लडकी बियाए बैठी है।"

"इस लडकी को तुम्हारे सिर लादा है बरकदाज ने।"

"हुँह ! जिन्दगी बरबाद कर दी।"

"तुम खुद ही इसका इंतजाम कर सकते हो।"

"वही करूँगा। और देवता...?"

"क्या?"

"यह बताओ कि मारपीट, आगजनी की वारदात करने पर पागलपन-सा क्यों छा जाता है? क्या ऐसा दूसरों को भी होता है?"

"तुम में तो देवता का अंश है। तुम्हारे लिए नियम कुछ दूसरे ही हैं।"

विक्षुब्ध होकर गणेश ने कहा, "घर की बहू का मान रखने के लिए लछिमा को दूर हटाना पड़ा। उसने मेरे ही नौकर से शादी कर ली। लेकिन बहू ने मुझे कुछ नहीं दिया, यहाँ तक कि एक लड़का भी नहीं।"

"आगे तो हो सकता है।"

"भगाकर शादी कर लूँ क्या, फिर से?"

"गणेश! अगली बार तो लड़का हो सकता है न। तुम्हारी माँ के भी तो पहले लड़की हुई थी। बाद में लड़का हुआ।"

यही सोचते-सोचते उखड़े मन से गणेश नाथू सिंह के घर पहुँचता है। वहाँ उसे मिलता है अभूतपूर्व सम्मान। जैसे नाथू सिंह भी स्वीकार कर रहा हो कि गणेश को उसकी लड़की पर गुस्सा होने का पूरा अधिकार है। गणेश ने अपनी स्त्री का प्रस्ताव सामने रखा। नाथू बोला, "गंगा क्या करेगी? गठिया से मर रही है, चल-फिर भी नहीं सकती। रुक्मिणी को भेज देता हूँ। वैसे उसके वहाँ जाने पर नौकर लोग बिगड़ सकते हैं। तुम्हारे यहाँ अनुशासन बड़ा कड़ा चलता है। वही रहे तो अच्छा है। बड़ी बेशर्म लड़की है। कमू अहीर के साथ भाग रही थी। मैंने कहा, 'पहले कमू दहेज का रुपया लाये, और फिर शादी करके ले जाये।' तुम उसी को ले जाओ।"

"भेज दीजिए।"

"उसके साथ बात-बात मत करना। छोकरी बकती बहुत है।"

गणेश ने कड़वी हँसी हँसकर कहा, "नौकरों के साथ क्या सुलूक करना चाहिए, हमें अच्छी तरह मालूम है। लछिमा ने कभी मुझे 'छोटे मालिक' के अलावा किसी और नाम से नहीं पुकारा।"

"सो तो ठीक है। ठीक ही कह रहे हो तुम। बेटा, मैंने तुमसे गलत

नज़रिए से कुछ नहीं कहा। प्यार से ही कहा है।"

"आप कह सकते हैं। मैं आपकी बात मानता हूँ। आपकी बात मानकर ही मैंने लछिमा को हटा दिया था। आज घर का क्या हाल है, चलकर देखिए। दोनों दासियाँ पता नहीं क्या करती हैं! चावल-गेहूँ और दालों की बोरियों को चूहे कुतर रहे हैं। गुड़ पर फफूंद लग रही है। घर की लिपाई-पुताई तक नहीं। जैसे चारों तरफ उदासी छायी हो। सीधा तक मैं ही निकालकर देता हूँ।"

"बड़ी शरम आती है, गणेश। मेरी लड़की के लिए...।"

"मेरा नसीब ही ऐसा है।"

नाथू सिंह ने अपनी स्त्री से कहा, "गणेश की बातें झूठी नहीं है। दो नौकरानियों के साथ मिलकर भी घर का काम नहीं चला सकती तुम्हारी बेटी। कोई और मर्द होता तो कभी की दूसरी शादी कर लेता या रखैल रख लेता।"

"वहाँ रुक्मिणी को क्यो भेज रहे हो?"

"तुम्हारी बेटी के सुख के लिए।"

"हाय राम! उसकी शादी नहीं होगी क्या?"

"वहाँ वह नौकरानी बनकर जा रही है। गणेश कोई शादी करके नही ले जा रहा है। भेज दो छोकरी को। रामरूप उसे बहन जैसा तो मानता नहीं है। घर मे फ़ालतू में छीछालेदर होगी।"

"और वहाँ कुछ हो गया तो?"

"उससे मुझे क्या लेना-देना? कमू अहीर को क्या एतराज होगा? लड़की तो उन्हें मालिक की जूठी ही मिलती है। शादी से पहले हो या बाद में।"

"अगर लछिमा की तरह उसने रुक्मिणी को घर मे ही रख लिया तो?"

"रख ले तो रख ले। मर्द का बच्चा सब-कुछ कर सकता है।"

नाथू की स्त्री चुप हो गयी। हाँ, उनके समाज में पुरुष सब-कुछ कर सकते हैं। उसने देखा तो नहीं, मगर सुना जरूर है कि उसके पिता की दादी-नानी के जमाने मे राजपूताने के गाँव-गाँव मे लड़की का पैदा होना

इतना अवांछित माना जाता था कि नवजात पुत्री को हँडिया में रखकर जिन्दा धरती में गाड़ दिया जाता था। हाय अम्मा! जैसे लड़की की डरी-डरी, भयभीत दृष्टि उसकी आँखों के आगे नाच जाती है। लड़की पैदा हो तो इसमें माँ का क्या दोष? गहरी साँस लेकर उसने रुक्मिणी को बुलाया और जरूरी हिदायतें दीं। मालिक के ही वीर्य से रुक्मिणी पैदा हुई है। इस तरह रुक्मिणियाँ पैदा होती ही रहती हैं। बदनसीब रामरूप अपनी लगभग हमउम्र गोलमटोल स्त्री के बजाय अब रुक्मिणी पर डोरे डाल रहा है।

रुक्मिणी चौंक पड़ती है और नाथू की स्त्री के पैर पकड़ लेती है। कहती है, "मालकिन, ऐसा मत करो, पैर पड़ती हूँ। दीदी के मालिक से मुझे डर लगता है। अगर कोई बदनामी फैल गयी तो फिर कमू शादी नहीं करेगा। तब मेरा क्या होगा? मैं तुम्हारे पैरों में यहीं पड़ी रहूँगी।"

नाथू की स्त्री अक्षम थी। व्यर्थता और अनुकंपा से भरकर वह सिर्फ हथेली-भर सीधा कर पायी और बोली, "क्या करूँ, रुक्मिणी? रामरूप के बाप ने ही यह व्यवस्था की है। तुझे यहाँ न रखकर और कहाँ भेजें?"

"मेरी माँ भी एक ही शैतान है...। एक सौ रुपया, कपड़े, बर्तन भला वह कितने दिनों में जुटा पायेगा? अपनी गाय-वाय नहीं, दूसरे की गाय क्यों चराती है?"

गंगा बोली, "भला क्यों न माँगू? जगमोती का नाता रख लेता तो कम-से-कम लछिमा की तरह हर महीने रुपया मिलता, जमीन मिलती, लेकिन तूने मेरी बात कहाँ मानी? मैं क्या खाऊँगी? ये भगा देंगे तो कहाँ जाऊँगी?"

रुक्मिणी ने कहा, "मैं भाग जाती तो अच्छा रहता?"

नाथू सिंह की स्त्री ने कहा, "इतना मत डर। उस घर के भीतर कोई दूसरा मर्द नहीं जाता। गणेश तो लड़की पैदा होने की वजह से अपनी स्त्री का मुँह तक नहीं देखता।"

"कमू आये तो उससे भी मुलाकात नहीं होगी।"

गंगा ने ढाँढस देकर कहा, "कमू आयेगा तो मैं उसे तरजीह दूँगी।"

एकांत में ले जाकर गंगा ने लड़की से कहा, "वहाँ जाने पर तुझे

रामरूप परेशान नहीं कर सकेगा। वह अभागा पहले बूढ़ियों की तलाश करता था, अब छोकरियों की खोज मे रहता है...। याद रखता है कि तू उसकी बहन है ?"

नाथू सिंह बोला, "किस बात का डर ? गणेश देवता का अंश है। वह नीची जात पर नजर नहीं डालता। उस लड़की की बात दूसरी है, वह ऊँची जाति की थी और भंगियों ने उसे अपने घर में रखकर अधर्म किया था। तू वहाँ नहीं गयी तो गगा तुझे गजमोती के नाती के पास भेज देगी।"

"नही, कभी नही जाऊँगी।"

"वह तेरी माँ नही है क्या ?"

'तुम भी तो मेरे बाप हो,' यह कहने की रुक्मिणी की इच्छा हुई, पर बोली नही। रोती-पीटती गणेश के घर चली गयी।

उसे देखते ही पुतली ने गहरी साँस ली, "बोली, आ बैठ। रो मत।"

रुक्मिणी खाना पकायेगी। वह नाथू की बेटी है, रसोई मे घुस सकती है। दरअसल रुक्मिणियों की माताओं के हाथ का पानी नहीं पिया जाता। रुक्मिणियों के हाथ का पानी चलता है। मालिकों को इसी मे फायदा है। मालकिनो के प्रसूति-गृह मे चले जाने पर चौका कौन सभाले ? फिर रुक्मिणियों के इधर-उधर भटकने पर अनाचार फैल सकता है। फिर किया भी क्या जा सकता है ? घी-दूध पर पली मालकिनो का स्वास्थ्य फिर नही लौटता, लेकिन दाल-रोटी, जूठन, भुनी मकई के दानों पर पली रुक्मिणियों की पिटी-पिटाई देह पचास पूरे होने पर भी ढीली नही होती। इसीलिए मालिकों को अछूत लडकियों की खास जरूरत नहीं पड़ती।

रुक्मिणी खाना पकायेगी। गणेश का खाना सजाकर रख देगी। रुक्मिणी रसोई मे रहेगी, लेकिन सोयेगी दासियो के साथ। दासियाँ घर की लीपा-पोती करेंगी, बर्तन मलेंगी, धूप में बिस्तर सुखायेंगी। भडार-घर की सफाई करेंगी। गणेश तो खाना खाकर चला जाता है। बग़ल के कमरे में वह कपड़े उतारकर कचहरी का कामकाज करता है, रात में सोता है।

रुक्मिणी वहाँ भी रम गयी। सरल आश्चर्य से एक दिन उसने पूछा,

"दीदी, मालिक तुम्हारे साथ नहीं सोता ?"

"नहीं, रुक्मिणी !"

"तुम सुखी नहीं हो क्या ?"

पुतली ने मुंह ढंक लिया हथेली से। चुपचाप आंसू बहाने लगी। रुक्मिणी ने मन-ही-मन सोचा, सभी मालिकों के घर की कहानी एक जैसी है। घरवाली मन को भाती नहीं। सिर्फ चन्द्रभान की स्त्री सुख से है। .

रुक्मिणी का दर्जा इन दासियों से कुछ ऊँचा है। उसने दासियों से कहा, "दोपहर मे बैठकर कथरी सिया करो।"

गृहस्थी का हालचक्का मजबूत हाथों से पकड़ लिया। धीरे-धीरे घर की हालत बदल गयी। पुतली की देह मे भी स्फूर्ति आ गयी थोड़ी-सी। बाल सँवार कर उसे सजाकर रखती है रुक्मिणी। नन्ही-सी बच्ची को दुलारती है। गणेश के मौजूद न होने पर वह फटाफट बाहर जाकर अन्न-भंडार का हाल-चाल ले आती है।

मिसिर के पास जाकर बोली, "रोज दासी आया करेगी। ठाकुर जी का चरणामृत दे देना, देवता ! दीदी को दूंगी।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं।"

गणेश ने भी घर के परिवेश को बदलते हुए देखा। भोजन की थाली मे कई-कई तरह के व्यंजन नजर आने लगे। स्त्री से कहा, "बड़ा एतराज कर रही थी तू। अब देखा न, मैंने अच्छा ही किया।"

"हाँ, अच्छा ही किया तुमने।"

इसके बाद स्त्री ने डरते-डरते कहा, " लड़की का नाम रखना है।"

गणेश ने खुश होते हुए कहा, "मिसिर पे कह दूंगा।" फिर बोला, "मिसिर ने कहा है कि इस बार तेरे लड़का होगा।"

"एक बार गैबीनाथ जाने दोगे ?"

"क्यों ?"

"वहाँ मनौती मानने से लड़का पैदा होता है।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं ? गाडी मे चली जाना। साथ में कौन जायेगा ?"

"तुम नहीं चलोगे ?"

"नहीं।"

"तो फिर यही लोग चली जायेंगी दासियाँ और रुक्मिणी।"

"ठीक है, ऐसा ही करना।"

बंद बैलगाड़ी में यात्रा। लेकिन घर की क़ैद से बाहर निकलने की ख़ुशी। मुक्ति की साँस। रास्ते में परदा हटाकर देखते हुए जाने का मज़ा, पूजा के बाद दूकान में तिलुवा और खाजा खाने का मज़ा...रुक्मिणी के लिए तो यह और भी ख़ुशी का दिन था। कमू के छोटे भाई से मुलाकात हो गयी। उसने कहा, "क्या जानती है तू? दादा कागज पर सही कर रुपया कर्ज ले रहा है। महाजन बनारस से लौटकर रुपया दे देगा।"

"कब, गिरधर कब?"

"तीन महीने बाद।"

पुतली ने कहा, "देख रुक्मिणी, गैबीनाथ कितने जाग्रत देवता हैं! पूजा के एक घंटे के भीतर ही हाथों-हाथ तुझे फल मिल गया।"

रुक्मिणी ने गहरी आत्मीयता से कहा, "तुम्हारा भी कल्याण होगा, दीदी! तुम्हारे लड़का पैदा होगा। मालिक तुम्हें प्यार करेगा। दुख के बाद क्या सुख नहीं आता? तुम्हारी जैसी सुन्दर पत्नी पर मालिक का दिल जरूर लौट आयेगा।"

पुतली ने अजीब सी हँसी हँसते हुए कहा, "लड़का होगा तब न?"

"लड़की भी तो कितनी खूबसूरत हुई है।"

"बाप ने नजर तक उठाकर नहीं देखा आज तक।"

लडकी के प्रति गणेश की अप्रसन्नता उस समय कुछ हद तक दूर हो गयी जब मिहिर ने बताया, "लडकी सुलक्षणा है। भाग्यशाली है। राशि की गणना में 'म' अक्षर से नाम आता है। तुम्हारे पिता का नाम भी मेदिनी था। इसका नाम महालक्ष्मी रखो।"

"इतना बड़ा नाम?"

"मोती कहकर पुकारना।"

"आप पुकारें। इधर मुश्किल खड़ी हो गयी है।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"अरे हिसाब का खाता खोलकर देखा तो पता चला कि पिता जी की बीमारी के समय से कुछ साल तक का हिसाब देखा ही नहीं। भिखारी,

चमन, फागूलाल, आदि गंजू लोगों का कर्ज बारह-चौदह साल तक काटा ही नही। उनके हिस्से की फ़सल देता गया। अब हिसाब करने पर पता चला कि उन्हें कुछ भी नही दे पाऊँगा आगे से।"

"ओह, यह बात है।"

"फिर भी अधर्म नही करूँगा। कुछ न्याय तो करना ही होगा। मगर वह थोड़ा झझट करेंगे। और उसके बाद मानेंगे ही।"

"झझट क्यों करेंगे ?"

"देवता, आप यह नही समझ सकेंगे। क्या समझाऊँ? पेट-भर खाना और देहाड़ी पर काम करेंगे ये लोग अब। इनकी जमीन भी चली जायेगी। उस समय मेरी अपनी जाति के लोग ही कान भरेंगे। मजदूरों को फुसलाएँगे।"

"हाँ, दुसाधों के चले जाने पर खेत-मजदूरों की कमी पैदा हो गयी है जरूर। सभी लोग यही कहते हैं। इनके जाने पर भी मुश्किल ही होगी।"

"गाँव-गाँव मे झगडा चल रहा है। देखें, क्या से क्या होता है! दरअसल, पहले का कानून अच्छा था। कभी प्रजा भागती नही थी। अब बस का रास्ता बन गया है। उस समय कहाँ थे ये सारे लोग? अब कोई बना रहा है हरिजन सघ, कोई गाधी मिशन। सब इन्हे उकसा रहे हैं। वाह रे! क्या वह इन्हे खाना देंगे? रोजी देंगे? कौन देगा इन्हे पेट-भर भात और सिक्के?"

"यही तो बात है। ये लोग समझते ही नहीं। सिर्फ़ एक हरोआ समझता है।"

कहते ही मिसिर समझ गया कि यह बात उसने अपने अधिकार से बाहर की कर दी है। सुनते ही गणेश का चेहरा पत्थर हो गया। बोला, 'हाँ हरोआ। लेकिन हरोआ का हिसाब अलग है देवता, आप नही जानते शायद। कुछ दिनों से वह आ क्यों नहीं रहा है? दो दिन से एकदम गायब क्यों है?"

"बुखार मे पड़ा है। गर्मी लग गयी है।"

हरोआ से लछिमा ने भी कहा, "यह कैसी बात हुई? बुखार उतरते ही तुरत काम पर जाना चाहते हो? वहाँ तुम किस शर्त पर काम कर रहे

हो ? अरे बीमार होने पर तो गाय-भैंस तक को छुट्टी मिलती है।"

हरोआ कभी लछिमा को 'तू' कहकर नहीं बोलता। हमेशा तुम कहता है। जब लछिमा मालिक मेदिनी सिंह की रखैल थी, तभी का अभ्यास है यह।

लछिमा गुस्से में घड़ा लेकर बाहर निकली। रास्ते में गणेश मिल गया। हैरान होकर लछिमा बोली, "छोटे मालिक, इतनी धूप में क्यों निकल पड़े ?"

"हरोआ की खबर लेने के लिए।"

"बहुत बीमार पड़ गया है। ओह, कितना बुखार चढ़ा था उसे ! आज ही बुखार उतरा है। मगर कुछ खाया नहीं उसने।"

"बदन में थोड़ी ताकत आते ही काम पर चला आये।"

"जरूर।"

फिर गणेश ने कहा, "और किस पर विश्वास करूँ ? दो दिन बीतने पर आढ़तिये के आदमी आयेंगे। मकई, सरसों, मिर्च वगैरा तोलकर लानी होगी। मेरी हालत क्या है, देखो। एक भी ऐसा आदमी मेरे पास नहीं, जिसे जिम्मेवारी सौंप दूं।"

"अकेले पड़ गये हो ?"

"तो तुम उसे भेज देना।"

गणेश ने आगे बात न की और अचानक पलटकर चल दिया। लछिमा को लगा कि शायद गणेश को हरोआ की बीमारी की बात पर पूरी तरह से यकीन नहीं हुआ है। सोचने से आश्चर्य भी लगता है। इतने साल तक उसने मुंह सीकर सिर्फ़ खुराकी पर ही काम किया है। इतने साल तक कभी सौ रुपया तक नहीं दिया उसे। ठगना जानता नहीं, कामचोर भी नहीं है। फिर गणेश ने कैसे सोचा कि वह मक्कारी में सोया हुआ है ?

घर लौटकर लछिमा बोली, "ताकत आने पर काम पर चले जाना।"

"कल ही चला जाऊंगा।"

"नहीं, कल नहीं। गणेश से मैंने कह दिया है। उसने भी 'हाँ' कर दी है।"

"लछिमा, इस बार कुछ झंझट जरूर खड़ा होगा।"

"कुछ नही होगा।"

"तुम नही समझ रही हो।"

"खूब समझ रही हूँ ।

दरअसल उस समय तक लछिमा नही समझी थी। वह हरोआ के लिए रोटी सेंकने बैठी। बोली, "यह लड़का मेरी गोद में बड़ा हुआ। लेकिन अब लगता है कि उसे पहचान नही पा रही हूँ।"

"बचपन में तो मेरी भी गोद मे काफी चढ चुका है।"

"धीरे-धीरे उस पर बाप का रग चढ रहा है। उसकी वजह से भगी लोग इतने दिनो से जहाँ बसे थे, उस जगह को छोड़कर चले गये। अब देखो, कौन-कौन जाता है !"

हरोआ सीधा आदमी है। निष्पाप हँसी हँसता हुआ बोला, "यह कैसी समझदारी है ! मालिक क्या अपनी खेती खुद करेगा? मैला खुद साफ करेगा?"

"भंगी टोले की ओर देखने से कैसा अद्भुत लगता है ! जैसे श्मशान हो," लछिमा सिर हिलाते हुए बोली, "वारिस होने पर यहाँ जगल खड़ा हो जायेगा।"

परित्यक्त भूमि पर बाढा गाँव में कोई भी घर नही बनाता है। दुसाधों के चले जाने पर उनकी परित्यक्त भूमि पर जगल खड़ा हो गया है। भगियो की वासभूमि भी जगल बनेगी।

गणेश भौंहें सिकोडकर भगियों की वासभूमि की ओर ही देख रहा था। देखते ही खून खौल उठता है। पल्लवी के चले जाने के अपमान का बदला भगी टोला जला देने पर भी नही चुका। और तभी उसकी नजर पड़ी रुक्मिणी पर। नाथू सिंह के घर से निकल रही थी। गंगा ने उसे पुकारा, लेकिन रुक्मिणी ने नही सुना और दौड़कर चली गयी। उसने गणेश को भी नही देखा। रुक्मिणी को देखने का गणेश का यह पहला मौका था। इतने दिनो से रुक्मिणी उसके घर पर काम कर रही है, लेकिन गणेश ने उसकी तरफ़ नजर उठाकर नही देखा था। आज देख लिया। खून पहले से ही खौल रहा था। कुछ और ज्यादा खौल उठा।

रात का खाना-पीना हो गया। धोकर हाथ पोछते हुए उसने स्त्री

की ओर ताका। बोला, "रुक्मिणी से कह दे, पान-मसाला दे जाये।"

"तनिक रुको।"

"मेरे कमरे में भिजवा दो।"

"नहीं!" बहू डर से लिहाज भी भूल जाती है।

"क्यों? क्या ऐसी बात पहली बार सुन रही है? तू नाथू की बेटी है न?"

"यह काम मत करो।"

"ज्यादा बात बढ़ायेगी तो तुझे यहाँ से निकलना पड़ेगा और वह यहाँ रहेगी।"

रुक्मिणी बरामदे में पानी रखने आ रही थी। क्या हो रहा है, यह समझ पाने से पहले ही गणेश ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"नहीं...नहीं...नहीं!" रुक्मिणी आर्त स्वर में रोते हुए चिल्ला पड़ी, "दीदी!"

गणेश ने उसे जोरदार झाँपड़ मारा।

तृप्ति, अतिशय तृप्ति। खून की हलचल धीमी पड़ने लगी। रुक्मिणी के 'नहीं-नहीं' शब्द रुदन में बदल गये। रुदन के बाद कराह में। उसके बाद सब कुछ शांत। सिसकियों की आवाज। गणेश ने बत्ती की लौ बढ़ा दी। रुक्मिणी की आँखें भय से चौड़ी हो गयी हैं। गणेश फिर उत्तेजित हो उठा। रुक्मिणी अब की बार रो भी न सकी। तृप्ति। नींद आ गयी। अचानक गणेश को अपनी एक समस्या का हल मिल गया। एक बुनियादी समस्या का। रुक्मिणी उसे उत्तेजित कर सकी। पुतली नहीं कर सकी। गणेश हँसने लगा। उसने रुक्मिणी को धक्का देते हुए कहा, "अब जा यहाँ से।" फिर उनींदे स्वर में बोला, "कल तुझे धोती-कपड़ा खरीद दूँगा। ये तो सब फट चुके हैं।"

रुक्मिणी उठी। बरामदे में ही बैठी रही वह। बूढ़ी दासी ने आकर कहा, "चल, खाना खा ले और सो जा। नखरे क्यों कर रही है? ऐसा तो होता ही रहता है।"

फिर भी रुक्मिणी बैठी रही। पुतली की दबे गले से रोने की आवाज सुनायी दे रही थी, 'ऊँ-ऊँ-ऊँ'। धीरे-धीरे वह उठी।

सवेरे दरवाजा खोला तो नाथूसिंह सामने था। रुक्मिणी को देखते ही समझ गया कि क्या बात है। उसने रुक्मिणी की प्रार्थना पर कोई ध्यान नही दिया। बोला, "ज्यादा नखरे करेगी तो कमू के साथ तेरी शादी तोड़ दूंगा।"

नाथू ने खुद ही रुक्मिणी को गणेश के घर पहुँचा दिया। घर लौटकर बोला, "जो चाहता था वही हुआ। अब गणेश मेरी बेटी को अपने यहाँ से नही भगाएगा। लड़की पैदा होने के बाद से ही मुझे डर लग रहा था। मेदिनी की बात याद है न !"

गणेश के हुक्म से रात का खाना-पीना खत्म करके रुक्मिणी उसके कमरे में ही आ जाती है। उसके मुँह पर नाचने वाली हँसी, उसके शब्द कही खो गये है। गणेश की बगल में लेटकर सारी रात जागते हुए ही कट जाती है। पुतली फिर से दुबली होने लगी है। रुक्मिणी पुतली की ओर देख भी नही पाती।

पुतली खुद ही कहती है, "तू क्या करती ? तू न होती तो कोई और होती। मेरे भाग्य मे जो था, वही हुआ।"

"दीदी, भाग जाऊँ ?"

"कहाँ जायेगी ?"

"कमू के पास ?"

"तुझे पकड़कर ले आयेगा।"

"फिर क्या करूँ ?"

"मैं खुद नही जानती, रुक्मिणी !"

दासियाँ बोली, "तेरे नखरे कम नहीं, रुक्मिणी ! मालिक के साथ ... और उधर मालकिन से मदद माँगेगी ?"

"मदद न माँगू ?"

"नही।"

"ठीक है, नही माँगूगी।"

"इस तरह भुतही-सी क्यों होती जा रही है दिन-ब-दिन ? तू नाथू और गंगा की औलाद है। तेरे जीवन मे यह क्या कोई नयी बात है ? ये लोग कच्चा चबाने वाले हैं। यहाँ क्यों चली आयी ?"

"रामरूप पीछे पड़ गया था।"

"अब क्यों डरती है फिर ? सोते मे चौंक क्यों पड़ती है बार-बार ? गिरधर ने कहा था, तीन महीने बाद कमू आयेगा । तीन महीने तो हो रहे है।"

"कौन ? कौन आयेगा ?"

रुक्मिणी कांपने लगी। हाथ मे दाल का बर्तन गिर गया। दासियाँ एक-दूसरे की ओर देखने लगी। बूढ़ी ने कहा, "यहाँ कौन देख रहा है कि क्या हुआ ! तू रुक्मिणी को ले जा । जा। मैं मालिक का खाना लगा देती हूँ।"

उस रात रुक्मिणी गणेश की बगल में निद्राहीन, अपलक अँधेरे में ताकती रही। तीन महीने। इतनी जल्दी तीन महीने पार हो गये। क्या वह किसी दुःस्वप्न की कैद में रही है ? समय का हिसाब नहीं लगाया। गैबीनाथ मे लौटते समय रास्ते मे गिरधारी मिला था। उसने कहा था, 'कमू कागज पर सही कर रुपया लायेगा। तीन महीने लगेंगे। महाजन बनारस गया है।' तीन महीने होने जा रहे हैं। कमू आ पहुँचेगा। तब रुक्मिणी क्या करेगी ? अचानक कमू अहीर अगर आ ही पहुँचे तो ! यह तो सिर्फ़ मालिक के साथ रहना नहीं है।

सवेरे छुट्टी लेकर रुक्मिणी गंगा के पास गयी। गंगा से कानाफूसी में कई बातें हुईं। बोली, "पेट मे बच्चा लेकर मैं कमू के पास न जा सकूँगी। तू दवाई ला दे।"

गंगा का मुँह सूख गया। बोली, "तू जा। मै दवाई लेकर आती हूँ। दवा तो जानती थी भगी वऊ। हाय राम ! यह क्या हो गया ?"

मंगालाल की स्त्री ने सब-कुछ सुनकर कहा, "पेट की लडकी को जानवर के घर भेजा ? कोई भेजता है ऐसे ?"

फिर उसने एक जडी दे दी। बोली, "गंगा, अगर असर होना होगा तो तीन दिन में हो जायेगा। नहीं तो नहीं होगा। क्या करें, पहले महीने ही आना चाहिए था।"

पिंजरे के पंछी की तरह कैद हो गयी थी रुक्मिणी। उसे आजकल बाहर ही नहीं निकलने दिया जाता था। दवा लेकर गंगा बाय का दर्द भूलकर इधर-

उधर दौड़ती-फिरती है। रुक्मिणी की खोज मे नाथू सिह के लिए उसकी जरूरत 18 वर्ष पहले रुक्मिणी के जन्म के बाद से ही ख़त्म हो चुकी है। जब गगा और एक बूढ़ी गाय रहती है—परित्यक्त, गोशाला के छप्पर तले। जिन गो-धन से नाथू अमीर बना है वे सभी हरियानवी गायें सीमेंट के फ़र्श वाली पक्की गोशाला में रहती हैं। अपने उसी छप्पर के नीचे गगा ने रुक्मिणी को बिठाया और सिल पर जड़ी पीस कर खिला दी। बोली, "कुछ देर यही लेटी रह।"

गगा आँगन धोने और घर मे झाड़ू-बुहारू करने के लिए चली गयी।

अचानक गोशाला बुहारने वाली मोरी आकर बोली, "ए गगा! रुक्मिणी वहाँ लेटी छटपटा रही है, जा देख तो। तू नही जानती कि वह आयी हुई है?"

"हे राम!"—गगा झाड़ू फेंककर दौडी। मोरी भी कौतूहलवश साथ हो ली। रुक्मिणी ने कहा, "माँ, देह में भयानक पीड़ा है। साँस लेने में भी तकलीफ हो रही है।"

मोरी ने रुक्मिणी के चेहरे पर पानी छिड़का, आँचल से हवा की। गगा कहने लगी, "ऐसा कैसे हुआ?"

लडकी की ओर देखकर उसने आँख से इशारा किया। रुक्मिणी ने उसका इशारा देख लिया और बडी तकलीफ से बोली, "कई दिनों से अच्छा नही लग रहा है।"

मोरी बरकंदाज की रखैल थी। वह इशारा तुरंत समझ गयी और पलक झपकते ही उनके पक्ष मे शामिल हो गयी। बोली, "अँगीठी की गरमी मे खाना पकाने से शरीर मे गर्मी छा गयी है। सिर धो देती हूँ। तू लेटी रह। गंगा, तू चली जा। तेरा काम तो ख़त्म हो गया। मैं इसके पास रहूँगी।"

"मौसी, उल्टी करूँगी।"

"कर ले। खड़ी हो जा। मैं तुझे पकड़े रहूँगी।"

उल्टी में कल रात की खायी रोटी, भाजी, साग और अचार निकल आया। मोरी बोली, "कहा था न मैंने। देह गरम हो गयी है, हजम नही हुआ। आहा, ऐसी अच्छी-अच्छी चीजें निकल आयी रे?"

उल्टी करके मुँह धोकर रुक्मिणी फिर सो गयी। गंगा ने नाथू को सारी बात बता दी। नाथू ने कहा, "बीमार हुई है, उल्टी कर रही है। जा कह आ कि ठीक हो जाने पर आयेगी।"

गंगा ने वहाँ पहुँचकर गणेश से यही कहा। गणेश ने कहा, "उल्टी होती तो क्या मैं इलाज नही कराता ? ठीक है, जाओ। नही, अन्दर जाने की जरूरत नही। मैंने सुन लिया है।"

गंगा हाथ जोडकर बोली, "जी, वह होश मे नही है। बेहोश-सी पड़ी है। लगता है, बुखार भी हो गया है।" फिर उसने पेंच लगाया और बोली, "देह में कुछ लाल-लाल दाग-से भी दीख रहे हैं। कही चेचक न निकल आयी हो। मेहरबानी हो तो उसे कुछ दिन अपने पास ही रख लूँ।"

"चेचक ?" भौहें सिकोडते हुए गणेश बोला, "हाँ, हाँ, अपने पास ही रखो। ख्वामख्वाह डर रही हो। एक-दो दिन मे ठीक हो जायेगी तब भेज देना। नौकरानी रखकर उसकी खोज-खबर लेने मै तो जाने से रहा। तुम्हीं दे जाना उसे।"

"जी मालिक !"

गंगा लँगडाते-लँगडाते लौटी। नाथू ने कहा, "बदहजमी से उल्टी हुई है। मगर बेहोश क्यो है ?"

नाथू की स्त्री भी उसे देखने आयी। बोली, "कोई ख़राब हवा लग गयी होगी, गंगा ! अच्छी तरह नहलाकर धुला कपडा पहना दे। मोरी पानी पढ़कर पिला देगी। वह जानती है ये सब चीज़ें।"

दरअसल रुक्मिणी सो रही थी। बहुत दिनो की अधूरी नीद। माँ के फटे बिछौने पर पूरी बेफ़िक्री के साथ सो रही थी वह। शाम को नीद टूटी। बोली, "माँ, सिर फटा जा रहा है। अजीब-सा महसूस हो रहा है।"

"थोड़ा सहन कर।"

"हाँ, माँ। अब मै नहाऊँगी।"

"इतनी शाम को ?"

"देह मैली लग रही है न ?"

कुएँ के चबूतरे पर बैठ कर रुक्मिणी नहाती है। माँ की धोती पहनती है। थोड़ा-सा गुड़ का शरबत पीती है। शरीर फिर से अस्थिर हो उठता है।

"माँ, माँ ! पास ही में रहो।"

"थोडा सहन कर।"

"कमू से मत कहना।"

"नही, बिटिया.!"

"उसी समय अगर उसके साथ चली जाती तो कैसा रहता !"

"यही से चली जाना।"

"तेरा रुपया।"

"नही लूंगी रुपया।"

"भाग जाऊँगी ?"

"हाँ रे। बहुत दूर।"

यत्रणा से रुक्मिणी छटपटा रही थी। बोली, "किसी भी मालिक का दिल अपनी घरवाली से नही बहलता। इसीलिए इतनी तकलीफ है...। बहुत जलन है।"

"ले, पानी पी ले।"

"नहीं, उल्टी हो जायेगी ?"

नीद-भरी आँखों से रुक्मिणी बोली, "तेरे पेट से मै पैदा हुई। मेरा भी कोई-न-कोई बाप था। गणेश को सब पता है। उसे समझाओ, कुंवारी के लड़के को कमीन कहा जाता है, कमीन ! कहता था, 'तेरे लड़का होने पर हम उसे गोद ले लेंगे।' लेकिन माँ, मै मालिक के किसी कमीन बेटे की माँ नही बनना चाहती। कमू ने कहा था...।"

"अब तू सो जा।"

गगा पाँव पसारे बैठी रही। बात से फूले दायें पैर की ओर देखती रही। मच्छर भगाने के लिए उसने कडे जला दिये थे। कडे राख हो गये है। मच्छर भिनभिनाने लगे हैं। रुक्मिणी की ओर देखकर उसकी व्यवहृत, जूठी, परित्यक्त, अँधेरे में डूबी और निर्वासित आत्मा की गहराई मे कोई चीज काँप उठी। कितनी ही बातें। आजादी नही थी। आजादी आयी। गगा जैसी औरतो को आज़ादी का पता ही न चला। उनके पुरुषों का जीवन मालिकों के हाथों मे है, और लड़कियाँ है मालिकों के लिए। घर-घर का एक ही इतिहास है। मालिकों की जमीनों पर काम करना, हर

साल कर्ज लेना, और ज़मीन से हाथ धो बैठने पर नगे भिखारी बनकर मालिक की ज़र-ख़रीद प्रजा बन जाना।

गंगा का पति भी इन्ही मे से एक था। भूमिहीन, सब तरह से हीन खेतिहर। उसने जिसके हाथ अपनी ज़मीन गँवायी, उसी मालिक का खेत-मजदूर बन गया। वैसे यह कानून भी इन्ही गाँवो के मालिकों का बनाया हुआ है। सब-कुछ खो बैठने पर, किसी दूसरी जगह जाने तक की आज़ादी नही इनको। गंगा को भी नही, उसके पति को भी नही। लेकिन दुसाधो ने नया काम कर दिखाया। रुक्मिणी की जवानी जितने दिनो तक रहेगी, मेहनत करने की क्षमता उसमे जितने दिनो तक रहेगी, उतने दिनों तक उसे दुलारा जायेगा। उसके बाद गगा की तरह उसे बूढ़ी गाय के साथ एक छप्पर के नीचे रहना पड़ेगा।

गंगा के बाद नाथू सिंह ने लखपतिया को पकड़ लिया था। अब साठ साल के बुड्ढे ने मोरी से कहा है, "अपनी नतनी को इधर भेज देना। मेरा काम करेगी।" मोरी ने उसी समय अपनी नतनी को जँवाई के यहाँ भेज दिया। एक बार रुक्मिणी के पेट का दुश्मन दफा हो जाये, गगा कमू से रुपया नही लेगी। लडकी बेचकर रुपया कमाने का विचार उसके दिमाग़ में क्यों आया? दवाई का असर हो सकता है। मगालाल की स्त्री की दवाई कभी नाकाम नहीं होती।

मोरी कालिख-पुती लालटेन लेकर आयी। बिना भूमिका बाँधे बोली, "दवाई दी थी क्या? पेट ठहरा है क्या?"

गगा ने सिर हिलाया।

मोरी ने सिर पीट लिया। फिर बोली, "इस बार आफत टल जाये तो मैं खुद उसे कमू के पास पहुँचा दूँगी। इनके अपने घरों मे चैन नही और इनके घरो का मैला ढोते-ढोते हम भी मरें। इस हरामी बरकदाज के लिए न जाने कितनी बार मैंने मंगालाल की बहू से दवाई लेकर खायी है।"

"असर होता था?"

"हुआ तो था।"

"दीदी, पैर पड़ती हूँ। किसी को बताना नही।"

"नही, किसी को नही बताऊँगी। यह दुख तो घर-घर में छाया है।

किससे कहूँ, बता ? बरकंदाज मेरे कंधे पर लदा रहा। आज मैं इनकी गोशाला साफ करके दो मुट्ठी सत्तू पर गुजारा करती हूँ। नाथू ने तुझे...। अब अपना हाल देख। कितने दिनों से रात में मुझे दिखायी नही देता। तू लँगड़ी हो गयी है।"

"रुक्मिणी की शादी हो जाये तो मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

"कहाँ ?"

"तोहरी में भीख माँगूँगी।"

"हे राम ! मैं भी जाऊँगी।"

"तेरे तो सभी जिन्दा हैं।"

"खाना कोई नही देता। और दे भी कहाँ से ?"

दोनों रुक्मिणी के अगल-बगल लेट जाती हैं और सो जाती हैं।

आशका से भरे तीन दिन बीत गये। कई बार रुक्मिणी को उल्टी और दस्त हुए, लेकिन जो वह चाहती थी, नही हुआ। गगा दुबारा भंगी टोले मे गयी। मगालाल की बहू ने सब-कुछ सुनकर सिर हिला दिया। गंगा सामने बैठी लगातार आँसू बहाती रही। कमू के साथ रुक्मिणी की शादी की बात भी उसने उसे बता दी। उसके बाद वह लौट आयी। माँ का चेहरा देखते ही रुक्मिणी सब-कुछ समझ गयी। फिर रुक्मिणी ने कुछ नही कहा। माँ घर के घर के अन्दर गयी तो वह भी साथ हो ली।

नाथू की स्त्री ने पूछा, "अच्छी हो गयी ?"

"हाँ मालकिन !"

"काम पर जायेगी न ?"

"कल जाऊँगी।"

गगा और मोरी दोनों एक साथ बोली, "क्या बात करती है !"

रुक्मिणी मुसकरायी। बोली, "माँ ! तेरे बदन मे काफी मैल जमा हो गया है। चल स्नान करा दूँ। चल मौसी तू भी, आज तालाब पर चल !"

तालाब के किनारे तीनों काफ़ी देर तक बदन रगड़ती रही। फिर उन्होने बाल धोये। उसके बाद नहायी।

रुक्मिणी बोली, "आज मैं ठीक हूँ, माँ ! खाना मैं पकाती हूँ। मौसी, तुम भी अपना खाना ले आओ। एक साथ खाते है।"

खाते समय, बड़े स्वाभाविक ढँग से रुक्मिणी बोली, "माँ ! कितने महीने से उसके यहाँ जा रही हूँ। महीने में पाँच रुपये देने को कहा था, आज तक एक पैसा भी नही दिया।"

"माँग लेना ?"

"तुम्ही माँग लेना, माँ !"

"क्यों ?"

"क्यो क्या ?"

"चाँदी के झुमका उतारकर दीदी के पास रखे थे, लेना भूल गयी।"

"माँग लेना।"

"तुम्ही ले लेना।"

"तू नही माँगेगी ?"

"नही माँ ! मौसी, मै कमू के पास जाती हूँ।"

"ठीक है, वही जा बेटी। सब-कुछ उससे कह दे। मारे-पीटे, जो भी कहे, अपनी गलती मान लेना। रुपया उसके पास होगा। दोनो यहाँ से चले जाना।"

मोरी बोली, "बस में चढ जाना, रामगढ़ होते हुए धनबाद।"

"वही करेंगे।"

गगा और मोरी काफी निश्चित हो जाती है। सारा दिन रुक्मिणी हलके मन से बातचीत करती रहती है। शाम को माँ के साथ मिलकर झाड़ू-सफाई करती है। हाथों-हाथ सारे काम कर डालती है। नाथू की घरवाली कहती है, "क्या बात है, आज गुड़िया माँ के आँचल से चिपकी हुई है ?"

रुक्मिणी थोड़ा मुसकरायी।

रुक्मिणी रात को भी माँ से लिपटकर सोयी। रुक्मिणी को स्वस्थ देखकर गगा को नीद आ गयी, गहरी नीद।

गंगा काफ़ी सवेरे उठी, लेकिन उसने रुक्मिणी को बिस्तर पर नही पाया। चली गयी, मुझे बिना जगाये ही चली गयी। गंगा बहुत हैरान थी। इतने सवेरे क्या वह कमू के पास चली गयी या गणेश के घर कपड़े लेने गयी है ? कमू के यहाँ जाते हुए तो उसे मोरी को भी बुलाना था।

कल ऐसा ही निश्चित किया गया था। वह मोरी के घर जाने के लिए निकलती है। मोरी, मोरी का लड़का, उसकी बहू, नाती, बिगुलाल, लखपतिया—इतने सारे लोग उसके घर की ओर क्यों आ रहे है ? गगा और आगे बढ जाती है । तभी मोरी की तीखी तेज चीख सुनायी पड़ती है। वह तुरन्त समझ जाती है कि उसका सर्वनाश हो गया है ।

गणेश ने भंगी टोले को जलाया। गणेश ने रुक्मिणी को बरबाद किया। सभी की नजर गणेश की ओर खीचती हुई भगी टोले में एक अधजले अमड़े के पेड़ की डाल से रुक्मिणी लटक रही थी। गंगा बेहोश हो जाती है। बिगुलाल का लड़का बैलगाड़ी पर से छान काटकर रुक्मिणी को उस पर से उतारता है। जिस साड़ी का फदा उसने गले मे लगाया था, उसी साड़ी से ही उसे ढँक देता है। लखपतिया गगा के चेहरे पर पानी छिड़कती है। गगा उठ बैठती है। रुक्मिणी से लिपटकर कहती है, "अब कमू से मैं क्या कहूँगी ?"

लोग इकट्ठा होने लगे, बहुत-से लोग। गगा रो-रोकर कह रही थी, "बहन जानकर भी नही माना। रामरूप की नजर थी इस पर।" वह जोरों से रोने लगी, "फिर इसे लडकी के घर भेज दिया। गणेश ने गर्भवती बनाकर ही छोड़ा इसे। भगी की बहू की दवाई भी काम नही आयी। तू तो कह रही थी, 'कमू के पास जायेगी।' यह क्या किया, रे रुक्मिणी ?"

बिगुलाल बोला, "गगा ! अब उठ। कुछ काम है।"

"काम ! क्या काम है ?"

"इसे तोहरी ले जा।"

"क्यो ?"

"थाने मे।"

"क्या होगा ? पुलिस काटने-पीटने के अलावा क्या करेगी ?"

बिगुलाल अपने लड़के और दूसरे अन्य मर्दों से कहता है, "जो होना था, वह तो हो गया। अब गगा जो कह रही है...।"

मोरी थूककर बोली, "सच्ची बात कह रही है।"

"हम भी इसे सच मानते हैं। लेकिन जब यह बातें मालिकों के कान तक पहुँचेंगी तो क्या होगा, जानती है ? रुक्मिणी को जलाकर हम तो

अपने-अपने घर लौट जायेंगे। वे गगा को इन बातों के कहने पर मारेंगे। हो सकता है, हमारे ऊपर भी जुलुम करें। कहेंगे, तुम लोगों ने उसकी बात सुनी ही क्यों?"

धनपतिया का आदमी सुखीराम जेल और पुलिस को जानता है। वह बोला, "थाने मे जा रहे हो तो क्या गणेश सिंह के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करानी है?"

"गगा लिखायेगी।"

"वह जो कहेगी, उसका सबूत क्या होगा?"

गगा बोली, "रुक्मिणी ने बतायी हैं सब बातें। क्या वो झूठ बोली है?"

"ना मौसी! लेकिन मालिक और पुलिस एक ही टोपी के होते है। फिर जिसे सब-कुछ मालूम था, वह तो चली गयी। मालिक ने कह दिया कि मैंने कुछ नही किया तो क्या करोगी? पहले इन सभी बातों पर विचार कर लो।"

बिगुलाल कुछ सोचता है। इसी साल कुछ महीने पहले ही बिगुलाल कर्ज के कारण नाथू सिंह के बही-खाते मे अपनी हिस्सेदारी खो चुका है। वह घाव अभी भी ताजा है। लखपतिया के मामले मे भी नाथू सिंह ने कोई दया नही दिखायी। रुक्मिणी नाथू की ही लड़की थी।

उसने कहा, "थाने मे जायें या न जायें, बाद में सोचा जायेगा।"

"जी नही। पहले तय कीजिये।"

"यह भी बात ठीक है कि पुलिस रिपोर्ट दर्ज नही करेगी।"

"दर्ज करने पर भी कुछ नही करेंगे।"

"तब तो इसे जला देना ही ठीक होगा।"

"हाँ जी।"

बिगुलाल खखार का कहने लगा, "रुक्मिणी ने गले में फदा लगाया था। कोई पूजा-ऊजा भी करनी होगी।"

"हाँ जी!"

"गगा हमारी बिरादरी की बहन है और हम सभी लोग पहले जर-खरीद प्रजा थे और अब हैं खेत-मजदूर।"

"यह भी ठीक।"

"लेकिन पैसा कहाँ है ? गंगा सच कहती है। मालिक या पुलिस न भी माने, हम सभी जानते हैं। जब तक हमारे घरों में माँ, औरतें, बहनें, बेटियाँ रहेंगी, तब तक हम इस बात को जानते रहेंगे। बस, अब चलो। उठाओ रुक्मिणी को। मोरी, धनपतिया, तुम लोग गगा को सहारा देकर धीरे-धीरे ले चलो। होशियारी से।"

रुक्मिणी को ढोकर सबसे पहले नाथू सिंह के घर लाया गया। नाथू सिंह तमतमाता चेहरा लिये आ खड़ा हुआ। बोला, "अफ़सोस है !"

बिगुलाल बोला, "मालिक, आपने ही उसे गणेश के घर भेजा था। वहाँ वह पिंजरे में बन्द रही। तीन दिन पहले घर लौटी थी, पेट में तीन महीने का बच्चा लिये। कमू के साथ शादी नहीं होगी। इसी बात के गम से उसे अपने से घिन लगने लगी थी। इसलिए गले में फंदा लगा लिया रुक्मिणी ने। अब क्या करें ? लोहरी ले जायें ? पुलिस चीर-फाड़ करेगी या जला दें ? हमारा कहना है कि जला देते हैं, क्योंकि मालिक चीर-फाड करने से मालूम हो जायेगा कि रुक्मिणी के पेट में बच्चा है। तब मालूम किया जाये कि उसके साथ किसने कुकर्म किया ?"

नाथू सिंह ने कहा, "बिगु, यह क्या चिल्लाकर बोलने की बात है ?"

"हमें क्या मालूम ? गंगा और रुक्मिणी आपकी हिफाजत में थीं। आपने उसे वहाँ भेजा था। वहाँ उसने चाँद-सूरज तो देखे नहीं, फिर गर्भवती कैसे हुई ? हम लोग तो हैरान हैं।"

"क्या होगा अब ? तुम लोग क्या चाहते हो ?"

"रुपया चाहिए, मालिक ! रुक्मिणी को जलायेंगे, क्रिया-करम करने से प्रायश्चित होगा। गगा अपनी सारी बिरादरी को भोज देगी। नहीं तो हम इसे यहीं छोड जाते हैं। आप ही सारा इंतजाम कीजिए। आपकी हिफाजत में ही थी यह लड़की।"

नाथू सिंह मन-ही-मन बिगुलाल को गाली देता है। फिर इस फैलती बदनामी का मुँह बद करने के लिए निकालता है एक सौ का नोट। कहता है, "सिधा ले जा।"

बिगुलाल नाथू सिंह की आँखों में गड़ा कर सोचता है, 'जमीन मत लो,

खेत-मजदूर मत बनाओ।' बिगुलाल यही कहकर तो रोया था। फिर वह थोड़ा मुसकराता है और कहता है, "छोटे आदमियों के मुरदे को लेकर और चिंता न करें मालिक ! आप आराम कीजिए।"

रुक्मिणी को लेकर वे लोग चन्द्रभान के मकान की ओर चल पड़ते हैं। नाथू सिंह जमीन पर बैठ जाता है और कहता है, "यह क्या हो गया ?"

उसकी औरत बोली, "तुम्हें क्या ? गणेश की मुसीबत है यह।"

"*मुसीबत मेरी हो या गणेश की या चन्द्रभान की—सभी का सर्वनाश* समझो। इस बात को लेकर वे रुपये इकट्ठा कर रहे हैं। इतना साहस ?"

औरत बोली, "अब सोचने से भी क्या होगा ?"

जीते जी तो नहीं, लेकिन मरने के बाद रुक्मिणी ने अपना असली परिचय दिया। राजपूत मालिक इस अप्रत्याशित घटना से घबराकर फटा-फट रुपये देने लगे। धीरे-धीरे दूर से एक विचित्र शव-यात्रा को देखकर दुसाध और भंगी भी दौड़े-दौड़े आते हैं। गणेश की हवेली के सामने शव को लिये पहुँचते है तो करीब दो-ढाई सौ लोग जमा हो जाते है।

बिगुलाल आवाज देता है, "मालिक ! मालिक !"

गणेश बाहर आता है। दुसाध, भंगी—सभी खामोश खूँखार नजरों से उसे देखर हे हैं।

"यह क्या ?"

बिगुलाल मुसकराया और ऊँची आवाज में बोला, "देख लीजिए, मालिक! लड़की नाथू सिंह की हिफाजत मे थी। उसने उसे आपकी हिफाजत मे भेज दिया था।" फिर भीड़ की ओर रुख करते हुए बोला, "कमू अहीर के साथ उसकी शादी होने वाली थी।" फिर रुककर गणेश की ओर मुड़ा और कहने लगा, "आपने काफी यत्न से रखा उसे। चाँद और सूरज तक ने उसका मुँह नहीं देखा। लेकिन मालिक, तीन दिन पहले मालूम हुआ कि वह तीन महीने की गर्भवती है।"

"क्या ?"

"गर्भवती, मालिक ! पेट में बच्चा ! नही समझे ? आपके घर के अदर की नौकरानी। उस घर मे आपके अलावा कोई पुरुष नहीं घुस सकता। लेकिन वह गर्भवती हुई। इसी बात से उसे अपने से घिन पैदा हो गयी थी।

आज तड़के उसने गले में फंदा डाल लिया। घर-घर घूमकर मालिकों से दाह-खर्च जुटाया है उसके लिए। यहीं रहती थी, इसलिए आपको भी एक बार उसके दर्शन कराने के लिए लाये हैं। भाइयो, अब बाजा बजाओ।"

तुरही और नगाड़ा बजने लगता है और दो सौ लोग एक साथ चिल्ला उठते हैं, "राम नाम सत्य है।"

गणेश भीतर जाकर दरवाजा बन्द कर लेता है। बिगुलाल वग़ैरा चले जाते हैं।

सात

रुक्मिणी की आत्महत्या और शव-दाह को इस प्रकार एक अर्थ मिलता है। इस घटना की एक निश्चित प्रतिक्रिया भी होती है। गजमोती, चन्द्रभान आदि सभी मालिक लोग मन-ही-मन असंतुष्ट हैं। रामरूप नाथू सिंह से कहता है, "सभी गणेश को ज़िम्मेदार ठहरा रहे हैं।"

"रहने दो यह बातें।"

"रुक्मिणी उसी के कारण मरी है, दुसाध-भंगी फिर से गाँव में घुसे और खेत-मजदूरों ने दल बनाकर रुक्मिणी के क्रिया-कर्म के लिए चंदा उगाहा है।"

नाथू सिंह की आँखों के सामने रुक्मिणी का मृत चेहरा लगातार बना रहता है। वह उसके प्रेत-भय से पीड़ित है। कहता है, "गंगा अगर रुपयों की माँग न रखती तो कमू के साथ उसकी शादी कभी की हो जाती। इतना बड़ा कांड भी न होता।"

गजमोती सिंह कहता है, "गणेश ने उस दूसरी लड़की के लालच में भंगी टोले को आग लगायी। उसके बाद भी नाथू सिंह ने अपनी लड़की को गणेश के पास क्यों भेजा?"

"गजमोती ने भी उसकी माँग की थी।"

"जो यह तो होता ही है, लेकिन आत्मघाती कौन होता है?"

"गंगा भी मुँह पर लात मारकर चली गयी।"

"आत्मघाती कौन होता है ?"

यह बात लछिमा गंगा से कह रही थी. "गगा, जो होना था सो हो गया। अब कुएँ में क्यों कूदती हो ? जानती हो, आत्मघाती कौन होता है ?"

"अब बरदास्त नही होता, लछिमा !"

दरअसल गंगा को आत्मघात की कोशिश करते हुए लछिमा ने ही देखा था। मोरी के पास से उठकर आयी थी गंगा। उसे सीने से लगाये रखा था लछिमा ने बहुत देर तक। दुख से बोली, "क्या से क्या हो गया ?"

"मैं क्या करूँ ?"

"मेरे घर चलो।"

"नही," गहरी साँस छोड़कर गगा बोली, "चलो, मोरी के यहाँ ही चलें। मुझे न पाकर चिंतित होगी।"

बिगुलाल, मोरी, लखपतिया—सभी लोग बत्ती उठाये गगा को पुकारते हुए इसी तरफ़ आ रहे थे। लछिमा के साथ गगा को देखकर मोरी बोली, "छोड़ दे इसे। तूने ही गणेश को पाला-पोसा है।"

लछिमा गगा को उनके पास तक ले आयी और बोली, "शोक से व्याकुल है। कुएँ में कूदने जा रही थी।"

"लछिमा ने बचाया," गगा बोली।

लछिमा बोली, "सुन मोरी, उस दिन रुक्मिणी की लाश उठाकर ले जाते समय बिगुलाल ने मेरे घर की ओर थूका था। ठीक ही किया था उसने। घिन लगती है मुझसे और मेरे घर से भी। लेकिन मोरी, मैंने जो कुछ भी किया, क्या अपनी मरजी से किया था ? तुम्ही लोग बताओ। रुक्मिणी जैसा हाल होता तो मुझे भी मरना पड़ता।"

बिगुलाल ने कहा, "इन सब बातो को अब कहने से क्या होगा, लछिमा ?"

"नही, कहने दो मुझे। गुलाल, मेरी नानी ने मुझे मेदिनी के पास गिरवी रख दिया था। मुझे उन लोगों ने क्या दिया है ? तुम लोग जमीन देखते हो, वह भी गुलाल से तय था। मोहरकरन को भूल गये, बिगुलाल ?

मैंने खुद तुम्हारी लड़की के साथ उसकी शादी की बात नहीं की थी क्या ? क्यों की थी ? गणेश को क्यों पाला-पोसा था मैंने ? मेरे चेहरे पर थूकते हो ? मुझे लात मारो। क्या तुम्हें नहीं पता कि मेरे पति पर उसने कैसा अधिकार जमा रखा है, उसे क्यों पैदायशी गुलाम बना रखा है ? लो मारो मुझे। गंगा, तू भी मार लात, पर मेरा यह भी कहना है कि उन्होंने जब नवजात शिशु को मुझ पर लाद दिया था तो मैंने उसे पाला-पोसा और अगर वह जानवर बनता है तो इसमें मेरी गलती कहाँ है ?"

बिगुलाल कहने लगा, "बस करो लछिमा ! रोओ मत। मोरी ने जो कुछ कहा, उसे भूल जाओ। गुस्से और दुख से जो इतनी बातें कही तूने, हमने क्या तुम लोगों को समाज में वापिस नहीं लिया है ? क्या करें हम भी, लछिमा ? एक-एक करके सब की जमीनें चली गयी, और अब हमारी जान पर मालिकों का कब्जा है। जब भी जरूरत होती है, अपने खेतों में काम कराते हैं। इसके लिए साल-भर पेट बाँधकर पड़े रहो। पैदायशी गुलाम कौन नहीं है, बोलो तो ?"

लछिमा उन लोगों को रुकने के लिए कहती है और पति की सहायता से घर के अन्दर से दो बोरी खींचकर ले आती है। कहती है, "यह ले जाओ बिगुलाल ! ये तो घर पर खाते नहीं हैं। हम दो जने हैं, इतनी ही फसल उठायी थी। हाथ जोड़ती हूँ, इसे घर ले जाना। कल बोरी वापस कर देना।"

"लौटायेंगे कैसे ?"

"छि:-छि:, बिगुलाल !"

मोरी बोली, "बोरी उठाकर घर ले चल अब।"

बिगुलाल जाते समय बोला, "साल में छह महीने खायेंगे, छह महीना क्या करेंगे ? एक और बाड़ा बन गया है जंगल के बाहर। हम लोग भी वहीं चले जायेंगे और क्या करेंगे ?"

"घर मत छोड़ना बिगुलाल, वरना वह उसे जला देगा।"

"परमिट बनवाकर लकड़ी बटोरेंगे छह महीने।"

"रौका दुसाध से पूछ लेना पहले।"

गंगा को साथ लेकर वे लोग चले जाते हैं। धीरे-धीरे लछिमा घर के

भीतर आकर हरोआ से कहती है, "गंगा को अपने यहाँ रखने के जुर्म में मोरी के घर वालो पर भी जुलुम हो सकता है।"

लछिमा की बात सही निकलती है। तभी नाथू सिंह के घर से नौकर आया और उसने कहा, "मोरी, तू गोशाला साफ करने क्यो नहीं आयी।"

"अब नहीं जाऊँगी, भरत !"

"क्यों ?"

"चल, मैं खुद बता आती हूँ।"

घर मे नहीं घुसती मोरी। बाहर ही उकड़ू बैठ जाती है—दस जनों की तरह, बेगार खटते खरीदी प्रजाओं की तरह। बरकदाज की रखैल होने के नाते अब जैसे इस मकान के भीतर गोशाला मे, झाड़ू-बाल्टी में उसका विशेषाधिकार नहीं रहा। जैसे अभी कुछ दिन पहले नाथू सिंह ने उससे नहीं कहा था, "कोई और जवान लड़की देख। लखपतिया सूखती जा रही है।"

नाथू सिंह कचहरी मे आकर बैठा और बोला, "यह क्या, मोरी ? यहाँ क्यों बैठी है ? जा, अन्दर जा।"

"ना मालिक !"

"इसका मतलब ?"

"अब और मेहनत नहीं होती," कहकर मोरी खड़ी हो जाती है। फिर बोली, "बीस साल की उम्र से इस घर में आयी थी। तुम्हारे बाप की बहुत सेवा की है मैंने। अब शरीर में दम नहीं है। अब अपने घर मे ही रहूँगी।"

"ओह ! समझा।"

"चलें, मालिक !"

"गंगा को भेज देना। तुम लोगों को खाना नहीं मिलता, लेकिन उसे क्यों सुखाते हो ? यहाँ वह पहले जैसे रह रही थी, अब भी वैसे ही रहे। सारा जीवन उसने यहीं बिताया है। कहना कि अब उसे कोई काम नहीं करना होगा। बस खायेगी-पियेगी और आराम से रहेगी।"

"कह दूँगी।"

मोरी चली जाती है। पहले जैसी नरम आवाज में न तो उसने नाथू सिंह

को बातचीत में एक बार भी मालिक कहा और न ही उसे प्रणाम ही किया। नाथू सिंह को पता चलता है कि इन नीच जातियों की तरह अकृतज्ञ और कोई नहीं हो सकता। उसी के बाप की रखैल थी मोरी। यदि उसका बाप उसे जमीन वगैरह देकर बसा नहीं गया तो इसमें नाथू सिंह का क्या दोष है? उसने अपने पिता की इज्जत का ख़याल रखकर ही मोरी को गोशाला साफ़ करने पर लगाया था। वह अकसर फटे कपड़ों में होती है। वैसे भी यह लोग कपड़े कुछ ज्यादा ही फाड़ते हैं। मोरी को तीन साल पहले ही कपड़े दिये थे। उसकी अपनी भूतपूर्व रखैल गंगा को ही देखो। मोरी जैसा ही चेहरा बनाये घूमती है। साल में कपड़ों की एक जोड़ी भी नहीं मिलती है, क्या? कमीने हैं कमीने! और लखपतिया, इसका बाप बिगुलाल कर्ज न चुका पाने के कारण मैंने उसकी जमीन हड़प ली है। किसी दिन वह भी कह देगी, 'और न आइयो, मालिक!'

नाथू सिंह रामरूप से अपने मन की बात कहता है, "अभी आगे और भी ख़तरा है। हमें एकजुट होना होगा।"

"क्यों?"

"मुझे तो लगता है कि जाड़े की कटाई तक शायद खेत-मजदूर ही न टिक पायें।"

"ऐसा क्यों? आप, गजमोती सिंह वगैरह औरत को, खासकर अछूत औरत को कुछ समझते ही नहीं हैं। लेकिन जी, यह उन्नीस सौ पैंसठ है। एक-न-एक दिन बाड़े में भी नीच जातियों के दिमाग बिगड़ेंगे। सभी जगह बिगड़ रहे हैं। इसका फैसला भी तो करना होगा।"

"गणेश को बुलायें?"

रामरूप अपनी बहन को अपनी जान से ज्यादा प्यार करता हो, ऐसी बात नहीं है, लेकिन वह अभी पूरी तरह 'मालिक' नहीं है। इसलिए पूरी तरह अमानुष नहीं बना है। कहता है, "हूं! गणेश देवता का अंश है। एक देवता के लिए मेरी बहन की ज़िन्दगी बरबाद हो गयी। भंगियों और दुसाधों को एकजुट होने का मौका मिल गया। रुक्मिणी के कारण हमारी भी बदनामी हुई। उस दूसरी लड़की के साथ बदमाशी करने के चक्कर में एस० डी० ओ० भी हम मालिकों पर आंख उठाने की हिम्मत कर सका।

उस लड़की का बाप जवाहरलाल के साथ खाना खाता है और उसे गणेश ने समझा कि रंडी है। फिर रुक्मिणी वाली बात को ही लो। हम उनके सम्बन्धी हैं। हमने उन्हें नौकरानी दी थी। उस पर कम जुल्म नहीं हुआ ? गणेश की वजह से ही हर घर में संडास तोड़ना पड़ा। अब हम किसी अफ़सर या मंत्री को अपने घरों में नहीं ला सकते। मैं, चन्द्रभान, गजमोती का लड़का समरसिंह—कोई भी गणेश की बात नहीं मानेंगे।"

अचानक रामरूप चिल्लाकर कहने लगा, "ठीक है, गणेशसिंह दामाद है। गजमोती के घर रुक्मिणी को भेजते तो वह वहां गर्भवती नहीं होती, क्योंकि गजमोती अस्सी साल का बूढ़ा है। बीमारी के कारण काफ़ी दिन से वह रात को काम नहीं कर सकता। आपने अपने लड़के को छोटा किया, उसे दबाया और अपने दामाद को बड़ा बनाया। घर की इज्जत धूल में मिला दी आपने, समझे ?"

"बस, बस, अब चुप भी करो।"

"अभी भी छोटा कर रहे हैं आप। मोरी गयी, गंगा गयी तो क्या हुआ ? इतनी मिन्नतें करके उन्हें बुलाने की क्या जरूरत है ? जो कुछ भी हुआ है, सब गणेश के कारण हुआ है। सबको जाने दीजिए। हम लोग चुप तो रहेंगे। और गणेश के कारण यदि सभी अछूत भाग गये, तो क्या आप और मैं अपने हाथों में हल पकड़ेंगे ?"

"जो ठीक समझ आये करो, मैं अब किसी बात में नहीं पड़ना चाहता।"

रामरूप और उसकी मां शायद किसी एक समझौते पर पहुँचते हैं। रामरूप की मां लड़के से बोली, "तुम्हारा बाप मोरी को क्यों ढूंढ रहा है, मालूम है ? धामनी, गगा, लखपतिया सभी आयीं और गयीं। अब साठ साल की उम्र में फिर जवान लड़की चाहिए।"

"नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। रुक्मिणी के मरने के बाद अब और अछूत लड़कियों को लेकर खींचा-तानी करने से कोई हंगामा खड़ा हो जायेगा।"

"मोरी अपने घर में न आने पाये।"

"तुम शांति से पूजा-पाठ में लगी रहो, मां ! सारा बंदोबस्त मेरे ऊपर

छोड़ दो। चिंता न करो।"

"रामू, अब तेरी बीवी को ले आते हैं।"

"कटाई हो जाने दो।"

"गंगा आ जाती तो अच्छा रहता। वह बाहर रही तो बात फँसेगी।"

"देखते हैं।"

गंगा सभी के सामने अपनी समझदारी जताती है। बिगुलाल से बोली, "उस मकान मे अब नही घुसूँगी। उम्र काट दी उस मकान में, लेकिन वहाँ से जो कुछ मिला है, तुम लोग जानते ही हो। दुख से नहीं डरती हूँ। दुख में तुम लोगो का साथ देती जरूर, लेकिन मेरे यहाँ रहने पर नाथू सिंह तुम लोगों पर जुलुम ढाएगा।"

"तो कहाँ, जाओगी?"

"कहाँ? तोहरी में।"

"वहाँ क्या करोगी?"

"क्या करूँगी? भीख माँगूँगी।"

मोरी बोली, "हम भी चलेंगे तुम्हारे साथ।"

बरकदाजसिंह और नाथू सिंह—बाप-बेटे दोनों की भूतपूर्व रखैलें, अपने-अपने मालिको को अपना जीवन, अपना यौवन, अपनी क्षमता, अपना सर्वस्व सौंप कर सभी अछूत-रखैलो की प्रतीक बनकर सड़क पर निकल आयी—चिथड़े पहने, बगल मे पोटली दबाये, हाथ में एल्यूमिनियम के बेडौल कटोरे लेकर। गंगा के हाथ में लाठी भी थी। उन्हें छोड़ने के लिए गाँव के लोग कुछ दूर तक आते हैं।

बिगुलाल बोला, "जगल के रास्ते जाना। छाँव मिलेगी।"

"वह रास्ता नही जानते हम।"

"राँका से कह देता हूँ।"

राँका दुसाध उन लोगों को जगल के रास्ते दूर तक छोड़ आता है।

आजादी—असीम मुक्ति का स्वाद मिला मोरी और गंगा को। रुक्मिणी उन्हें आजादी दिला गयी। राँका उनकी ओर देखता था और सिर हिलाता था। मोरी बोली, "किसी पेड़ के नीचे जा बैठेंगे। जो मिलेगा, खा लेंगे। नही मिला तो मर जायेंगे।"

"हाँ !"

रुक्मिणी की आत्महत्या का एक और भी अप्रत्याशित परिणाम निकलता है। गंगा और मोरी के चले जाने की घटना की चर्चा गाँव में हर स्तर पर होती है। गणेश की हवेली में पुतली के मन पर क्या गुज़री है, मालूम नहीं। लेकिन रात को मिसिर चौंककर उठता है। उसे ऐसा लगता है कि जैसे कोई रो रहा हो। किसी लड़की के रोने की आवाज़। शुरू में उसे प्रेत-भय सताने लगा। तभी उसे गणेश की गरज-तरज सुनायी दी, "रात को बाहर आकर रोती है? घर की लक्ष्मी भगायेगी क्या?"

"इसके बाद भी लक्ष्मी रहेगी क्या?"

"चुप रहो!"

थप्पड़ मारने की आवाज़। कातर आर्तनाद। मिसिर को फिर नींद नहीं आयी। शेष रात वह सोचता ही रहा। दो जून रोटी के लिए गरीब ब्राह्मण यहाँ पड़ा है। लछिमा चली गयी। रुक्मिणी मर गयी। उसे पहले भी ऐसा लगता था कि गणेश की बीवी मार खाती है। आज अपने कानों से ही सुन लिया सब-कुछ। पहले मेदिनी की हाँ में हाँ मिलाकर रहना पड़ता था। अब उसके लड़के के साथ भी यही स्थिति है। इस राजपूत-प्रधान गाँव में डरपोक और नम्र स्वभाव के कारण मिसिर को कभी कोई इज़्ज़त नहीं मिली। फिर वह इतना ज्ञानी भी नहीं। दरअसल था तो रसोइया ब्राह्मण ही। मेदिनी ने समझा था उसका इल्म। उसी ने इसको मास्टर रखा था। मेदिनी उसे 'देवता' कहता था, गणेश भी कहता है। लेकिन मिसिर भी एक ज़माने से खुराकी पर गुलामी ही कर रहा है। रुपए-पैसों का कोई हिसाब-किताब है ही नहीं उसके साथ।

इतने दिनों तक मिसिर ने इन सब बातों के बारे में कभी सोचा ही नहीं, लेकिन आज वह यह सब क्यों सोच रहा है? रुक्मिणी की मृत्यु के मूल में गणेश की बर्बरता ने उसका मन तोड़ दिया है। अब उसका मन भर गया है। गंगा और मोरी भिखारिन बनकर चली गयीं। मिसिर भी गैबीनाथ चला जायेगा या कहीं और। ब्राह्मण को भिक्षा माँगने में क्या लज्जा है? और वह भी बूढ़े ब्राह्मण को? दंगा-फिसाद, खून-खराबा, आग जनी से मिसिर का मन भर गया है।

सवेरे-सवेरे ही मिसिर बग़ल में पोटली दबाये सामने आ खड़ा हुआ। बोला, "गणेश ! मैं अब यहाँ नहीं रहूँगा। जा रहा हूँ।"

"आप भी जा रहे हैं ? क्यों, देवता ?"

"बूढ़ा हो गया हूँ। मन भी उदास रहता है।"

"और घर के देवी-देवताओं की पूजा कौन करेगा ?"

"सभी घरों मे पूजा करने जो आते हैं नहारा गाँव से, उन्हें कहने से वे कर दिया करेंगे।"

"क्या मुझसे कोई गलती हुई है ?"

"नहीं, नहीं।"

मिसिर चेहरे पर प्रसन्नता का भाव लाते हुए हँसता है। पहली बार उसने अपने-आपको ब्राह्मण महसूस किया। गणेश उन्हें प्रणाम करता है और उनके चरणों मे रुपया रखता है।

"नहीं गणेश, रुपया लेकर क्या करूँगा ? साल-भर पूजा-ऊजा के दौरान जो देते हो, उसी मे से दस-पन्द्रह रुपया मेरे पास हैं। मुझे तीर्थ-यात्रा पर जाना है। साथ में रुपया-पैसा रखा, तो कही कोई मार कर छीन न ले। बहू को बुलाओ। लड़की और बहू को आशीर्वाद दे जाऊँ।"

मिसिर सभी को आशीर्वाद देता है। उसके बाद वहाँ से निकल पड़ता है। जाते हुए उसे देखता है। हरोआ बोला, "यह क्या, देउता ?"

"जा रहा हूँ, हरोआ ! लछिमा कहाँ है ?"

"यहीं है।"

लछिमा आँगन मे पेड़ के नीचे बाँस से बनी मचान पर मिसिर को बैठाती है। मिसिर आँगन मे लगे फलो के पेड़, मिर्च, भिण्डी और बैंगन के पौधों को देखता है। गहरी साँस लेकर मिसिर बोलता है, "सुखी गृहस्थी। गणेश की गृहस्थी भी सुखी हो सकती थी, लेकिन गणेश अपने बाप से ज्यादा निष्ठुर है। जिसे भी हाथ लगाता है, बरबाद कर देता है। अब उस हवेली में सिर्फ़ बुरा-ही-बुरा होगा।"

लछिमा बोली, "तो जा रहे है, देउता ?"

"क्या करें, लछिमा ? गणेश की बहू रात को कमरे से बाहर बैठकर रुक्मिणी के लिए रो रही थी। शायद अकसर रोती है। गणेश ने उसे मारा।

आज जब वह मुझे प्रणाम कर रही थी, तो उसके दोनों हाथो पर मैंने नील देखे। सुना है कि वह सिर पर पानी भी नही डाल सकती। गणेश की मार से उसके सिर में घाव हो गये हैं। अब और बरदाश्त नही होता। कुछ कर नही पाता, इसलिए बुरा लगता है। उनके लिए पूजा-ऊजा भी बहुत की। लेकिन कुछ भी नही हो पाया।"

"देवता, जो सबकी बुराई करता है, क्या कभी उसका भला होता है? अच्छा ही कर रहें आप कि जा रहे है। कुछ पैसा-वैसा दिया?"

"दे रहा था, लिया नही।"

मिशिर थोडी देर और बैठता है। फिर कहता है, "चलें, लछिमा! तेरे लिए मुझे चिंता थी। खैर, अच्छा ही हुआ है।"

मिशिर के चले जाने पर लछिमा बोली, "देवता को तो जाना ही था। मैं जितने दिनों वहाँ रही, ईश्वर ही जानता है कि गणेश को कितना लाड़-प्यार मैंने दिया है। अभी भी मुझे चिंता रहती है। यदि राह चलते मिल जाये तो उसके चेहरे की ओर कैसे ताकूँगी?"

मिशिर के चले जाने से भी गणेश की मान-मर्यादा में कमी आती है। गजमोती सिंह के मकान में रामरूप, चन्द्रभान और गणेश की बैठक होती है। वहाँ सागर भी था। रामरूप कहता है, "हमारी ख़रीदी प्रजा मे बँटाई पर ज़मीन सिर्फ विशुलाल के पास ही रह गयी थी। औरत-मर्द दोनों मेहनत करते है। ससुर, दामाद, लड़का वगैरह मिलाकर तेरह लोग है। मोरी के दोनों लडको ने पिछले साल ज़मीन गँवा दी। इस बार उन लोगों का कहना है कि आप लोगों की खेती का काम साल में छह महीने करें। लेकिन बाक़ी छह महीने क्या करें?"

गजमोती बोला, "क्या करना चाहते हैं?"

"वे परमिट बनवाकर लकडी बटोरना चाहते है।"

"कितने लोग लकडियाँ बटोरेंगे? इतनी लकडी खरीदता कौन है?"

"क्यों? महारा, देवीपुर, महुगढ—इन गाँवों मे जंगल नही है। सभी लोग लकड़ी महारा के गोबिन्द लाला की टाल से ख़रीदते है। ये लोग वहाँ की हाट में बेचते है।"

"यह बात है!"

"क्या आपको मालूम नही है ? सुना है, आपने ही खरीदी प्रजा को ऐसा हुकुम दिया है।"

"दिया नही है। सोच रहा हूँ, दूंगा। लेकिन यदि यह लोग अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर चले गये तो खेती का काम कौन करेगा ?"

चन्द्रभान बोला, "मैं भी ऐसा ही हुकुम दे दूंगा । फारेस्ट का तहसीलदार रोज परमिट देगा, रोज लकड़ी चुनेंगे।"

रामरूप ने कहा, "मुझे तो हाँ कहनी ही पड़ेगी। जो कुछ भी हो, गंजु वगैरह कुछ लोग है और हैं बाक़ी ये लोग। वैसे भी यह बात ठीक है कि हम लोग खेती-बाडी नही कर सकते। गणेश, तुम क्या कहते हो ? या तुम्हारे लिए यह झमेला ही नही ?"

गणेश बोला, "झमेला ? बात समझ मे नही आयी, भैया ! बँटाई पर जो खेती करता है, या जो खरीदी प्रजा है वह अपनी जमीन जोतता है और बेगारी भी देता है। सभी जमीन गिरवी रखकर कर्ज लेते रहे हैं और लेते रहेंगे। कर्ज बढ़ जाने पर देखते हैं, बेगारी से या सारी फ़सल दे देने पर भी कर्ज नही चुकता तो जमीन मालिक की हो जाती थी। और अब भी होती है। जमीन गवाँ देने पर जब पास मे कुछ नही रहता तो वह जमीन-मालिको के खेतों पर मजदूर, जर-ख़रीद गुलाम बन जाता है। पहले भी ऐसा ही होता था। क्यो होता था ? क्यों वह गुलाम बना रहता है ? ऐसा न हो तो हमे खेती के काम के लिए बाहर से मजदूर बुलाने पड़ें। इसलिए हम लोग उनकी जमीन पर कब्जा नही छोडते। अगर ऐसा न होता तो हम उनकी जगह आदिवासी रखते या दूसरे गाँवों से अछूतों को बुलाते। इन जगहों पर पहले किसी समय मे आदिवासियों का कब्जा था। सबको भगाकर हमने उनकी जमीनों पर कब्जा लिया। इसके बावजूद हम लोगों ने भूमिहीन प्रजा पर अपना मालिकाना अधिकार नही छोड़ा। साल में छह महीने वे तकलीफ़ मे रहेंगे। वह तो पहले से रहते आये है। यह कोई नयी बात तो है नहीं। इस साल मैं क्यों उनके बारे मे सोचूँ ? देखो, इस प्रकार खेत-मजूर बने मेरी प्रजा है, गजू वगैरा चार घर और है। इस साल मैं बारह-चौदह घरों को उजाड़ने के लिए मजबूर हूं। मैं गाँव मे सबसे बुरा आदमी हूँ, इसलिए पिताजी की बीमारी के कई साल बाद तक उनसे कर्ज-

वर्ज़ नही वसूला। उन्हें उनके हिस्से का अनाज देता रहा। जब हिसाब करके देखा कि असल और ब्याज मिलाकर एक-एक जने पर दो सौ-ढाई सौ-तीन सौ रुपयों तक कर्ज चढ गया है। अब तुम्ही बताओ कि क्या करूँ? बारह-चौदह घरों की ज़मीन, कुल मिलाकर दस बीघा भी नही है। लेकिन ज़मीन ले लेने पर वे लोग मेरे खेत-मज़दूर बन जायेंगे। उन पर अपना अधिकार मैं नही छोड़ने वाला हूँ। लेकिन उन्हें परमिट लेकर लकड़ी चुनने का अधिकार भी नही दूँगा।"

गणेश की आत्मविश्वास से भरी बातों को सुनकर गजमोती सिंह और चन्द्रभान भी अपने स्वसिद्धान्तो से विचलित होने लगते हैं। लेकिन रामरूप कहता है, "मैं ऐसा नही करूँगा। तुमने जो किया है, वह ठीक है।"

"इस साल नयी बात क्या हुई है, जो तुम लोग उनके आगे हाथ जोड़-कर झुके जा रहे हो?"

"बस गणेश, बस," गजमोती सिंह बोला।

"क्यों, हुआ क्या है?"

गजमोती सिंह भी कभी रुक्मिणी के साथ संभोग करना चाहता था। अस्सी साल की उम्र मे भी उसका शरीर ख़ासा है। हर रोज वह अनार का रस और दूध मे मिसरी डालकर पीता है। वह कहने लगा, "भगी टोले में आने वाली उस लड़की के सिलसिले में भी तुमने एस० डी० ओ० को नाराज़ किया था। भगियों और दुसाधो को एकजुट होने का मौका मिला। फिर रुक्मिणी वाली घटना मे बिगुलाल वगैरा ने घूम-घूमकर हम लोगो को बहुत बदनाम किया।"

"ठीक है। घर में बदूकें होते हुए भी आप लोग उनसे डरेंगे, तो डरते रहिए। मैं डरने वाला नही हूँ। हम लोग चार घर हैं। अब तक एक साथ चलते थे। आज से अलग चलेंगे।"

गजमोती सिंह का हाथ ऊपर उठ जाता है। उसकी उँगलियों में चार अँगूठियाँ चमक उठती हैं। कहता है, "मेरा सवाल है रामरूप, कि गणेश और हम लोग अलग-अलग क्यों चलें? वह जो चाहता है, करे। हम लोग उन्हे हुक्म देने नही जायेंगे, क्योंकि वे हुक्म माँगने नही आयेंगे। आगे देखते हैं, वे क्या करते हैं?"

गणेश बोला, "यदि वे लकड़ी चुनने पर गये तो ?"

"उन्हें बुलाकर फैसला करेंगे। वरना जाने देंगे या डाँट देंगे।"

रामरूप ने कहा, "ज्यादा ज़ोर-दबाव डालने से सब भाग जायेंगे।"

"जायेंगे कहाँ ?"

"या तो भिखारी बन जायेंगे या फ़ारेस्ट की जमीन पर जा बसेंगे।"

"जमीन ताक़त और ज़ोर से रखी जाती है, रामरूप," घमंड के साथ घोषणा करते हुए बाहर निकल जाता है गणेश। इस समय उसकी शिराओं में अपने वंशजों का खून खौल रहा होता है।

अगले दिन गणेश अपनी प्रजा को बुलवाता है। खाता खोलकर उनका हिसाब दिखाता है। मेदिनी सिंह के जमाने में किस-किसने खाने के लिए पच्चीस या तीस या पच्चीस सेर गेहूँ लिया था, बताता है। किसी ने तीन रुपया कर्ज़ लिया था, और किसी ने लिया था बारह सेर मड़ुवा। किसी ने दस रुपया लिया था और उसके बाद चालीस साल से उसका ब्याज चुकाया था, बेगारी और अनाज के रूप में। लेकिन फिर भी ब्याज चुकता नहीं हुआ था, बढ़ता ही गया था और अब सूद और असल मिलाकर हिसाब फैला था दो सौ इक्यासी, ढाई सौ, तीन सौ आदि रुपयों में।"

प्रजा चुप रहती है।

"तुम्हारे, तुम्हारे बाप-दादाओं के अँगूठों के निशान-विशान सब लगे हैं यहाँ। जमीन गिरवी रखी है तुम्हारी, यह सब तुम लोगों को मालूम है न ?"

सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए भिखारी ने कहा, "जमीन मत लो मालिक, इस साल फसल अच्छी हुई है।"

इन सबको रुक्मिणी की शवयात्रा में देखा था गणेश ने। वही बात इस समय याद करके गुस्से में बोला, "हक़ की बात अकाल के समय होगी। पिताजी जब बीमार थे, उस समय क्या मैंने कर्ज़ या ब्याज काटा था ?"

"क्यों नहीं काटा ? तब काट लेते तो अब जमीन नहीं गँवानी पड़ती।"

भिखारी का लड़का दुखारा बोला, "जमीन के बग़ैर खायेंगे क्या ?"

"इतना सब हिसाब मैं नहीं कर सकता। मैंने जो कहना था, कह

दिया। या फिर मेरा रुपया वापस कर दो।"

"अच्छा मजाक कर रहे हो, मालिक !"

"जमीन मेरी है। कटाई के समय मालूम हो जायेगा।"

दुखारी बोला, "जो विचार-धरम हो, वही करो, मालिक !"

"दुसाधों से मिलकर गुटबन्दी मत करना।"

प्रजा चली जाती है।

घुटते रहे लोग, घुटता रहा बाढा गाँव। तभी एक दिन अचानक साइकिल पर सवार होकर अभय महतो पहुँचता है। वह मोरी और गंगा से सब-कुछ सुनकर आया है, लेकिन बताता नहीं है। बोला, "तुम लोगो को एक खुशखबरी देने आया हूँ। हरिजन संघ को अब सरकार भी मदद दे रही है। बी० डी० ओ० और एस० डी० ओ० भी मेरी बातें सुन रहे हैं।"

बिगुलाल की पत्नी बोली, "तुम क्या मंत्री हो गये हो ? हाथ मे घड़ी है। साइकिल पर आये हो ?"

"साइकिल एक दोस्त की है और घडी भी। मौसी, अगर हम मिनिस्टर बने तो तुम बनोगी डिप्टी मिनिस्टर।"

"धत् ! कैसी बात करते हो ?"

"जाने दो। काम की बात सुनो। सभी से बात करनी जरूरी है। चलो, उस पेड़ के नीचे बैठते है।"

जले हुए, परित्यक्त भंगी टोले के पास से गुजरते हुए अभय भौहें सिकोड़ कर उस तरफ़ देखता है। चलते-चलते भंगी टोले का जिक्र न करते हुए महतो कहता है, "मेरा घर पूर्णिया जिले में था। चार से नौ साल की उम्र के बीच हमारी टोली धाउड़ा तीन बार जलायी गयी थी। मालिक महाजन, कायस्थ, जमींदार थे। पिताओं ने दूसरी बार सरकार को अर्जी दी थी। तीसरी बार जमींदार के लोगों ने तीन पिताओं को मारकर आग में झोंक दिया था। उसके बाद माँ जैसे-तैसे करके टाउन में चली आयी। मैं सदन-आश्रम मे पढने लगा। यह सब लम्बी कहानी है।"

इन बातो से अभय उनके बहुत क़रीब आ जाता है। वे लोग ख़ुद ही रुक्मिणी, मोरी और गंगा के बारे मे बताने लगते हैं। मोरी का लड़का

बोला, "माँ हाथ मे कटोरा लिये भीख माँग रही है। पेड़ के नीचे बसेरा है उसका।"

अभय बोला, "भीख माँगती है, लेकिन सोती मेरे दफ्तर के बरामदे मे है। खूब मज़े मे सोती है। चिंता मत करो। आँखो पर चश्मा भी लग गया है। हम लोगों ने आँखो के डॉक्टर को बुलाकर कैम्प लगाया था। तभी उसका चश्मा भी बनवा दिया था। अब ठीक से देख पाती है।"

ताज्जुब की बात है! सुनकर सभी हैरान होते हैं। मोरी का पोता कहता है, "आपकी साइकिल पर जरा चढ़ लें।"

"मेरे सामने ही रहना मैदान मे। पंचर मत कर देना।"

"नही, सामने ही रहूँगा।"

अभय पेड़ के नीचे बैठकर उनसे उनकी तात्कालिक समस्याओं के बारे में जान लेता है।

वैसे वह सारी बातों को पहले से ही जानकर आया था। वह कहता है, "देखो, बड़ी साफ-सी बात है। मालिक जो ज़मीन ले रहा है, इसका फैसला मैं करूँ, यह क्षमता मेरी नहीं है। क्यों नहीं है? क्या कोई क़ानून नहीं है? क़ानून है। पच्चीस सेर अनाज का कर्ज चालीस साल तक बेगार और फ़सल के रूप में चुकता करने के बाद ढाई सौ रुपया नहीं बन सकता है। लेकिन कोर्ट-कचहरी के लिए पैसा और ताक़त हमारे पास नहीं है। हाकिम-अफसर लोग हमे कोई मदद नही देंगे। यह है सीधी-सी बात। अगर वे मदद देते तो कुछ बंदोबस्त हो सकता था। मैं तो उनसे कहते-कहते थक गया हूँ कि छुआछूत की समस्या और जमीन की समस्या एक ही है। इस का फैसला करो। लेकिन मैं छठी तक पढा हूँ। आनन्द महतो के लडके अभय महतो की कौन सुनने वाला है?"

"लेकिन वह अच्छी बात कौन-सी बता रहे थे आप?"

"मुझे पता था कि कटाई तक आपके पास कोई काम-काज नही रहेगा। इसलिए मैंने पहले मिनिस्टर से बातचीत की। वह तोहरी आया हुआ था। हरिजन मन्त्री। वह हम लोगों के काम मे थोड़ी-बहुत मदद भी करता है। जो भी हो, मैंने फारेस डिपाट से बात पक्की कर ली है। बाढ़ा-म्हारा फारेस मे चार साल बाद पेड़ कटने शुरू होंगे। मैंने कहा, बाढ़ा के लोगों

को लकडी चुनने का परमिट बनवा देना । फारेस डिपाट को इसमें कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन शर्त है कि कोई पेड नही काटेगा और जंगल में आग नही लगनी चाहिए। अब बोलो, तुम कितने लोग जाओगे ? महीने का परमिट है, रोज-रोज का नही।"

भिखारी बोला, "मालिक लोग नही जाने देंगे।"

अभय बोला, "देखो, मैं भी हरिजन हूँ। तिकडम जानता हूँ। मैं थानेदार, एस० डी० ओ०, बी० डी० ओ० सभी से बोल चुका हूँ। उन्हें बताया है कि बाढा के लगभग सभी हरिजन खेत-मजदूर हैं। मालिक उनको काम नहीं देंगे, रोजी का बंदोबस्त भी नहीं करने देंगे। बल्कि वे उन्हे इस काम पर जाने से भी रोकेंगे। नया एस० डी० ओ० खराब आदमी नही है। अभी मालिक-महाजनो का घी-चावल-खस्सी उसने खाना शुरू नही किया है। उसने कहा है कि ऐसा कैसे हो सकता है ? मालिको के कहने पर भी नहीं मानूंगा। आपका काम है अछूतों मे साहस जुटाना। भूखे लोगो मे साहस नही रहता। आप उन्हें समझाइये। खैर, जो भी हो मैंने तो आपको समझा ही दिया है।"

"महीने-भर का परमिट लेने में प्रतिदिन बीस पैसे की दर से कितने रुपये बनते हैं, मालुम है तुम्हें ? कहाँ से आयेगा इतना रुपया ? छह रुपये प्रति व्यक्ति !"

अभय विजयी की हँसी हँसता हुआ बोला, "वही तो बात है। हम लोग रुपयों से परमिट बनवा कर दे रहे हैं। हरिजन सघ के बैंक मे हजार रुपया जमा है। इस काम मे खर्च करेंगे वह रुपया। अब चलो, मीटिंग खतम। दुसाधों को भी कहते हुए चलते है।"

गाँव में कुछ भी नही रहता। मैदान मे बैठकर अभय से बातचीत, मोरी के पोते का साइकिल पर चढ़ना—सब-कुछ मालिकों की नजर मे आया। खाद का बंदोबस्त करने, पता नहीं क्यों, रामरूप और गणेश एक ही दिन तोहरी रवाना हो गये। खाद के साथ एस० डी० ओ० का कोई सबध नही, लेकिन फिर भी वे एस० डी० ओ० के पास ही जाते हैं। जो कहना था, गणेश ने ही कहा। एस० डी० ओ० भौंहे सिकोड़कर बोले, "ताज्जुब की बात है। आप लोगों की फसल उठाते समय ही तो वे काम

करेंगे। जब तक आपके खेतों पर काम नहीं करते, तब तक वे अपने आप मेहनत करके खाना जुटायेंगे। इसमें आप लोगों की मान-हानि कैसे हो रही है?"

"अभय महतो उनको भड़का रहा है।"

"नहीं। वह मुझे सारी बातें बताकर काम कर रहा है और यह भी जान लीजिए कि जमीन छीनकर मालिक-महाजन हर साल इतने लोगों को भूमिहीन मजदूर बना रहे है। इस कारण बहुत-सी जगहों पर गड़बड़ शुरू हो गयी है, गडबड़ के कारण मामला क़ानून-व्यवस्था का बन जाता है। तब हम लोग बीच मे आते हैं। गोली-बदूक चलती है। संबंध ख़राब हो जाते है। आप लोगों का इलाक़ा काफ़ी अनुन्नत है और आप लोगों का परम्परागत ज़ुल्म जारी है। इसलिए अभी तक गड़बड़ी हुई नहीं है, लेकिन हो सकती है।"

"आप अछूतों की मदद देंगे ?"

"सरकारी हुकुम ऐसा ही है। लेकिन अगर उन्होंने पहले हगामा किया तो बात दूसरी है। लेकिन उन्हे भूखे नही मरने दिया जायेगा। इसलिए यदि सरकारी जगल मे उन्हें लकडी चुनने दिया जाता है, तो इसमे शांति भग कैसे होती है ?" रुककर एस० डी० ओ० पानी पीते हैं। फिर कहते हैं, "अभय महतो पर आप लोग नाराज हैं। लेकिन उनका संघ गाधी मिशन के साथ मिलकर काम करता है और उसे मदद देने के निर्देश हमारे पास हैं। यदि वे सरकारी जंगल मे पेड नही काटते या आग नही लगाते तो उनका परमिट छीनने का हक किसी को नहीं है।"

गणेश बोला, "लेकिन इससे उनका साहस बढ़ जायेगा ?"

"आपका नाम ?"

"गणेश सिह।"

"रुकिये। आप ही ने पल्लवी शाह को लेकर हगामा किया था न ? रियली ? जानते हैं, वह कौन थी ? उसके पिता इस समय भारत के वित्त-मंत्री हैं। फिर भी आप आये है ? आप लोग चले जाइये।"

गणेश बोला, "जायेंगे जरूर, यहाँ रहने नहीं आये हैं। लेकिन जब फिर से चुनाव होगा तब हमारे जैसे गदे लोग ही रुपये देंगे और कांग्रेस

लेगी भी। ठीक है, आप इस इलाक़े के नहीं है। आदमी को नहीं पहचानते। मैं कहता हूँ, वे नीच-जाहिल लोग फ़ारेस्ट का कानून जरूर तोड़ेंगे और क़ानून-व्यवस्था का प्रश्न भी उठेगा। और वाढा मे पुलिस भी आयेगी।"

एस० डी० ओ० दाँत फाड़कर हँसा और मजाक मे बोला, "ठीक है। इसी तरह बाढ़ा गाँव मध्ययुग से निकलकर आधुनिक युग मे पहुँच जायेगा। मालिक अत्याचार करता रहेगा, प्रजा चुपचाप सहन करती रहेगी, यह सब आधुनिक भारत मे नही चल सकता है। सभी जगह सिर्फ़ विक्षोभ और अशांति है।"

"अच्छा तो चलते हैं। फिर मिलेंगे।"

गणेश और रामरूप गाँव लौट आते हैं, गणेश की बैलगाडी में। हरोआ गाड़ी हाँकता है। लेकिन हरोआ की आदमी मे गिनती गणेश ने कभी नही की थी।

गणेश बोला, "अभी चुप रहो।"

"छी-छी, किस तरह अपमान किया है उसने!"

"मत्र अपमान भूल जाओ।"

"क्यों, मतर पढोगे?"

"उन्हें जगल मे जाने दो, लकडी चुनने दो।"

"मैं तो हमेशा ही यही कहता था।"

"उसके बाद जंगल मे पेड़ कटेंगे, आग लगेगी। फारेस्ट का कानून तोड़ेंगे वे! तब फारेस्ट का काम चला जायेगा, वापस आकर पैर पकड़ेंगे। तब लात मारूँगा और दस से बीस का काम लूँगा। ऐसा न किया तो मेरा नाम भी गणेश सिंह नही।"

"वे मर जायेंगे। भाग जायेंगे।"

"जाने दो," गणेश गरजता है, "सबको भगा देंगे। नयी प्रजा लाकर बसायेंगे। हाकिम क्या करेगा? अदालत क्या कर लेगी? चुनाव मे रुपया नही लेना क्या? रुपया दूँगा उन्हे। हमारी मदद करेंगे तो हम भी मदद देंगे। लाखों का मालिक गणेश चाहिए या हरिजन अभय महतो? सबसे पहले उसी की लाश गिरायेंगे। कौन क्या कर लेगा? अछूत? भंगी टोला जलाया, उन्हें भगाया, रुक्मिणी का पेट कर दिया, वह मर गयी,

किसने क्या कर लिया ? रामरूप ! जमीन और मालिकाना बाप का नहीं, रौब का होता है।"

"तुम पागल हो गये हो।"

इसके बाद वे बाढ़ा पहुँचते हैं। चिन्तातुर डरा हरोआ गाड़ी से बैल खोलता है, उन्हें घास-पानी डालता है गौशाला के सामने। फिर घर लौटकर लछिमा को बुलाता है ।

दरवाजा बंद करके हरोआ लछिमा को सभी कुछ बताता है। सुनते हुए लछिमा का चेहरा पत्थर-सा सख़्त हो जाता है। लछिमा बोली, "तुम क्यों फिक्र करते हो ? जो कुछ सुना है, भूल जाओ।"

"तुम क्या करोगी ?"

"अँधेरा होने पर राँका दुसाध के पास जाऊँगी।"

"राँका क्या करेगा ?"

"कोई कुछ कर सकता है तो वे ही कर सकते हैं।"

"क्या कर सकते हैं, सुनें तो।"

"जब यह लोग लकड़ी चुनने जायें तो वे रात-दिन ध्यान रखेंगे कि जंगल में कोई आग न लगाने पाये। और जंगल के रास्ते जाकर अभय को भी सावधान कर देंगे वे।"

हरोआ कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला, "तुम राँका से कहो। मैं, कल ही गाड़ी के पहिये और हल की मरम्मत कराने तोहरी जा रहा हूँ। अभय से मैं कह दूँगा। यदि कहीं मेरा नाम मालिक के कानों तक पहुँच गया तो वह मुझे जान से ही मार डालेगा।"

"मारना इतना आसान नहीं है।"

"नहीं लछिमा, बहुत आसान है। तुम अकेली जाओगी या मैं भी चलूँ साथ में ? मैदान पार कर जंगल के किनारे होकर जाना।"

"अकेली ही जाऊँगी।"

लछिमा अकेली ही जाती है। राँका दुसाध उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। लछिमा उसे बाहर बुलाकर सारी बात बताती है। यह भी कहती है कि वह हरोआ का नाम न ले कहीं। हरोआ अभय को ख़बर कर आयेगा। एक बार फिर से राँका को सारी बात समझाकर वह चली;

आती है।

अगले दिन लछिमा विचित्र जिद करती है।

"तुम्हारे साथ मैं भी तोहरी चलूँगी। कभी गयी नहीं वहाँ। इतनी बड़ी जगह बन गयी है, कभी देखा नहीं। गणेश से कह देना। तुम तो गाड़ी लेकर ही जाओगे।"

"गणेश से कहें ?"

"नहीं कहोगे क्या ?"

"नहीं, लछिमा ! हम लोग फिर कभी पैदल ही वहाँ चलेंगे। यह देखकर तुम डर रही हो कि मैं अकेले जा रहा हूँ।"

"हाँ।"

"डर की क्या बात है ? मैं सावधानी से बातें करूँगा।"

हरोआ ने बहुत सावधानी से और डरते हुए बात की अभय से। धीरे-धीरे बोला, "सभी कुछ बता दिया है, महतो जी ! लेकिन मेरा नाम किसी को मालूम नहीं होना चाहिए। मालूम होते ही वे मेरा खून कर देंगे।"

गणेश से हरोआ डरता है, अभय समझता है। डरना स्वाभाविक भी है। लेकिन इसके महत्व को नहीं समझता। वह तोहरी में रहता है। गांधी मिशन के साथ मिलकर उसका संघ काम करता है। गांधी मिशन की चम्पावती देखमुख बापूजी की स्नेहपात्री कन्या है। चम्पावती मिशन की माता है। वे अभय को 'बेटा' कहती हैं। बाढा गाँव जहाँ कभी जमीन-मालिक और किसान, जमीन-मालिक और बँटाईदार, जमीन-मालिक और खेत-मजदूर के बीच ऐसी स्थिति ही पैदा नहीं हुई कि मालिक पुलिस से मिलकर गोली चलायें। ऐसी जगह अभय या हरोआ या खेत-मजदूरों की लाश किस तरह गिराएगा गणेश ?

वह बोला, "नहीं, तुम्हारा नाम कोई नहीं लेगा। एस० डी० ओ० खुद भी गणेश पर नाराज हैं।"

अभय की प्रशासन पर जितनी आस्था है, उतनी हरोआ की नहीं। वह सुपारी खाते हुए सही और बुद्धिसम्मत बोला, "महतो जी, आप कह रहे हैं कि डर की बात नहीं है। मैं कहता हूँ कि डर की बात है। अब आप ऐसा करें कि मेरी जान और अपनी जान बचाने का उपाय कीजिए। आप

हम मर गये तो मर ही गये। उसके बाद एस० डी० ओ० साहब गणेशसिंह को फांसी पर भी चढा दें तो हम लोग जिन्दा नही हो सकते।"

"नही, नही, कुछ भी नही होगा।"

हरोआ निश्चित होकर मोरी और गंगा के पास जाता है। उन्हें मुरमुरा और बासी जलेबी खिलाता है। गांव की ख़बर देता है। मोरी की आंखो पर निकल के फ्रेमवाला चश्मा देखकर कहता है, "अब तो तुम बाबू लोगो के घरकी-सी औरत लग रही हो।"

गगा बोली, "पैर के दर्द के लिए अस्पताल से सुई ले रही हूँ। बाप रे! कितना मवाद भर गया था।"

"तुम्ही लोग अच्छे हो।"

"वाहा जाने को दिल करता भी है और नही भी...।"

"नही, नही। क्या देखने जायेगी वहां ?"

इसके बाद हरोआ लुहार से पहिया और हल लेता है। लछिमा के लिए साबुत हल्दी और पापड़। दस पैसे के जुए मे जीता हुआ झुनझुना लेकर गांव लौटता है।

दूसरे ही दिन अभय एस० डी० ओ० से मिलता है। हरोआ के बारे में कुछ कहे बिना सारी बात बताता है। बार-बार कहता है, "गणेश बहुत ही खतरनाक आदमी है, प्रतिहिंसापरायण।"

उदाहरण के तौर पर भगी टोले को जलाने और रुक्मिणी की आत्महत्या की बात भी कहता है। एस० डी० ओ० साहब को चेताता है कि वे उससे सभल कर बात करें। गणेश पता कर सकता है कि किसने यह ख़बर उन तक पहुँचायी है। यह खबर देने वाला एक हरिजन है। गणेश से वह बहुत डरता है। पता लग गया तो गणेश उसे मार डालेगा।

सुनकर एस० डी० ओ० कुछ अप्रसन्न होता है। अपमानित महसूस करता है। अभय महतो को उसने इसलिए पास आने दिया है कि लडका काम अच्छा कर रहा है। इसीलिए उसे मदद देने का आश्वासन भी दिया है। लेकिन इसका यह मतलब नही है कि वह उनसे कहे कि यही कीजिए, यह न कीजिए।

एस० डी० ओ० अपने पद की मर्यादा के अनुरूप स्वर मे बोले, "यह

गणेश सिंह छोटा-मोटा हिटलर लगता है। उसके साथ कैसे बात करनी होगी, यह आप मुझ पर छोड़ दीजिए।"

"निश्चय ही।"

"खून करेंगे, लाश गिरा देंगे, ऐसे ही डरा रहा है।"

अभय हलके-हलके मुसकराता है। फिर कहता है, "वह जंगल में आग लगायेगा। उनके साथ दंगा-फिसाद भी करेगा। उन्हें उकसाकर उनके हाथों में लाठी भी पकड़ायेगा। उनको भी लगेगा कि गणेश के कारण उनका सरकारी जंगल में घुसना बंद हो रहा है। वे भी दुख और गुस्से से पागल होकर दंगा-फिसाद कर बैठेंगे। तब कानून-व्यवस्था भंग हो जायेगी और वाढ़ा में पुलिस घुसेगी।"

"क्या हम अकेले अछूतों को ही पकड़ेंगे? जो भी दोषी होगा, उसे पकड़ेंगे। आप क्या समझते हैं कि पुलिस ले जाकर मैं उन अछूतों को पीटूंगा? उस बर्बर गँवार राजपूत को छोड़ दूँगा?"

अभय चुप रहता है। फिर धीरे-धीरे कहता है, "गणेश जैसे अत्याचारी मालिक को सजा देकर वाढ़ा के भूमिहीन खेत-मजदूरों को न्याय दिला सकें तो मैं अभय महतो आपके पाँवों को पकड़कर प्रणाम कर जाऊँगा और सैकड़ो-लाखों अछूत, भूमिहीन किसानों के आशीर्वाद से आपका अच्छा ही होगा।"

एस० डी० ओ० ने कहा, "यह तो ठीक है, और मेरी ड्यूटी भी है यह, पर मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता कि किसने उससे क्या कहा और उसने क्या सुना। कोई घटना हो गयी तो दिखा देंगे कि न्याय के रास्ते पर कठोर बनकर कैसे काम किया जाता है।"

यह सुनकर अभय कुछ निश्चिंत होता है। कहता है, "फिर उन लोगों को परमिट दे देते हैं। आप क्या कहते हैं?"

"जरूर। परमिट देने आप जायेंगे या वे खुद लेने आयेंगे?"

"मैं ही जाऊँगा। मुझे कुछ हुआ तो आपको तुरन्त ख़बर मिल जायेगी, फिर आप बंदोबस्त कर सकते हैं।"

"इससे अच्छा है कि उन्हें परमिट लेने के लिए कह आइए। तहसीलदार से खुद परमिट ले लेंगे।"

"यह भी ठीक है ।"

अभय चला जाता है और उन्हें खबर कर आता है । वे लकड़ी चुनने का एक महीने का अपना-अपना परमिट ले जाते हैं और अपने को परम भाग्यशाली समझते हुए घर लौट आते हैं । अभय सब से उनका दाव वहीं रखवा लेता है । उनके पास लकड़ी बांधने के लिए रस्सी रह जाती है, बस ।

तहसीलदार ने कहा, "जानते हैं कि बीड़ी तो तुम लोग पियोगे ही। लेकिन बाहर जाकर पीना । लेकिन यह भी सुन लो कि फारेस्ट सरकार के के लिए कैसा है । सात लड़कियों के बाद जैसे लड़का पैदा होता है उसी तरह फारेस्ट सरकार की आँखों की पुतली होता है।"

राँका बोला, "हम लोग कब से लकडी बटोर रहे हैं, कभी एक डाली भी काटी है ? माह के जाड़े तक मे कभी पत्ते जलाये हैं ? तुम्हारा गार्ड तो आता-जाता रहता है। उससे पूछ लो ।"

"जानते हैं, भाई !"

अभय ने तहसीलदार के लडके को चम्पावती देशमुख की चिट्ठी की मदद से पटना अस्पताल मे भरती करा कर क्षय रोग से बचाया था । तहसीलदार के मन में अब तक वह अहसान ताज़ा है । तभी तो अभय रुपया देकर परमिट जारी करवा सका है ।

अभय राँका से बोला, "सब जानते हो । तुम लोग भी होशियार रहना । अब मैं इस तरफ और नहीं आऊँगा । कोई असुविधा हो तो तुम्ही चले आना ।"

"ठीक है ।"

अगले दिन ही राँका ने सब से कहा, "देखो, सूखी लकड़ियों को एक जगह इकट्ठा मत करना । कही सोचो कि आज गठ्ठर बनाकर रख लेते हैं, कल ले जायेंगे । ऐसा कभी मत करना ।"

"जैसा कहते हो, वैसा ही करेंगे ।"

"दुश्मनों की कमी नही है । जाने कौन कब आग लगा दे ! कहा यही जायेगा कि आग तुम लोगो ने लगायी है । इसी बहाने फारेस्ट का काम खत्म कर दिया जायेगा। इसलिए थोड़ी नजर भी रखनी पड़ेगी ।" जंगल

की ओर जाते हुए बोला, "लछिमा और हरोआ वहुत ही अच्छे लोग हैं। जमीन है, घर है। सब-कुछ रहने पर भी लोग अच्छे होते हैं, पहले यह नही पता था।"

बिगुलाल सांस छोड़कर बोला, "अभी भी विश्वास नहीं हो रहा है कि हमें वाकई परमिट मिल गया है। यह एक सरकारी कागज है। कटाई से पहले कुछ दिनो काम करने पर हम कुछ कमा सकेंगे?"

भिखारी बोला, "हाँ रौंका, हम इतने सारे लोग है। एक साथ लकडी चुनेंगे, तो ढेरो लकडी बटोर डालेंगे।"

"इधर पन्द्रह मील और उधर बीस मील तक जगल फैला है। तुम कितनी लकड़ी बटोरोगे, भिखारी?"

"हम यही काम करेंगे।"

वे लकड़ी चुनते है, बाँधते है। छोटी-बड़ी डालियो को खीच कर ले जाते है। रौंका अनुभवी उँगलियों से हलकी डालियाँ छाँटकर अलग करता है, "पहले देखना कि टाल मे कैसी लकड़ी है? उसमे जान है या नही? लो, अब बाँध कर सर पर उठाओ। चलो मेरे साथ।"

इस काम मे मर्द-औरत दोनो ही लग जाते है। सिर्फ़ बूढ़े बच्चो के साथ घर पर रहते है। टाल पर लकडी बेचकर वे आटा, नमक, खेसारी दाल ख़रीदकर घर लौटते हैं।

बिगुलाल कहता है, "आज का दिन कैसे बीता! कभी नही सोचा था कि जीवन मै कभी ऐसा दिन भी आयेगा। हमे तो यही पता था कि जब खेती का काम न हो तो दूसरे गाँव मे खेत-मजदूरी करो, भीख माँगो, बोझा उठाओ या सड़क पर पत्थर कूटो। बाढा के खेत-मजदूरों का जीना-मरना मालिकों के हाथ मे था। बाढ़ा के खेत-मजदूर या तो भूखों मरते थे या एक मुट्ठी बाजरा, मकई, सत्तू के लिए मालिक के यहाँ फुटकर काम करते थे। औरतें गोबर थापती थी।"

गणेश पेड़ के सहारे खडा होकर उनकी बातें सुनता है।

दूसरे दिन गणेश तोहरी जाता है। ज़ाहिर मे उसका उद्देश्य बैंक जाना था। वहाँ पर नवागढ के स्वरूपसिंह से उसकी मुलाक़ात होती है। बहुत दिनों बाद हुई है यह मुलाकात। स्वरूप उसे रोक लेता है। वह जंगल का

ठेकेदार है। उसका काम हजारी बाग में है। नवागढ़ में उसने दोमंजिला मकान बनवाया है। अपनी जीप से तोहरी आया है। स्वरूप बोला, "तुम्हारे और मेरे पिता एक ही काम करते थे। इतने दिनों बाद मिल रहे है, चलो चलें एक दिन मज़ा करें।"

गणेश को लगता है कि वह दोनों अलग-अलग दुनिया के लोग हैं। उसने पूछा, "क्यों, तुम्हारे पास भी ज़मीन-जायदाद है?"

"ज़मीन-जायदाद छोटा भाई सभालता है। सोच रहे हैं, सारी ज़मीन बँटाई पर ही दे दें। ठेकेदारी मे पैसा है। एक भाई को धनबाद में कोयले की खान की ठेकेदारी दिला दी है। दूसरे भाई की भी मुझे जरूरत थी। लेकिन पिताजी जब तक ज़िंदा है, नवागढ़ नही छोड़ेंगे। इसलिए यहाँ एक अच्छा मकान बनवा लिया है। आपसे झूठ नही बोलेंगे। राँची टाउन में भी मकान है, बीवी-बच्चे वही रहते है। यहाँ इस जगल मे मैं ऊब जाता हूँ। काम जगल में करते हैं, लेकिन घर लौटने पर बिजली चाहिए, पखा चाहिए, सिनेमा चाहिए। गाय-भैंस और अनाज ही काफ़ी नही।"

"मेरी जिन्दगी तो इन्ही सब मे है।"

"शादी कर ली है? लड़का-बच्चा?"

"एक लड़की है।"

"गाँव में तो स्कूल भी नही है।"

"स्कूल! मैं ही कौन-सा पढ़ा-लिखा हूँ जो लड़की पढ़ेगी?"

"भैया, अब बाप-दादाओं की चाल से काम नही चलेगा। राँची में देखो, लड़कियाँ फटाफट साइकिल पर आती-जाती है।"

गणेश हँसता है, "यकीन नही आता।"

"मेरी लड़की भी स्कूल जाती है। क्या करें, पिताजी नही मानते। बहू परदा नही करती, लड़की स्कूल जाती है।"

"भैया, इससे तो नाश होता है।"

"किसने कहा?" स्वरूप नये अर्जित व्यक्तित्व और आत्मविश्वास के साथ कहता है, "मेरी बीवी खूब पूजा-ऊजा करती है। घर मे लक्ष्मी-जनार्दन का मंदिर है उन्ही के प्रताप से तीन लड़के हुए। भैया, धर्म को ताक पर रख दूं तो ठेकेदारी में मुझे सात साल मे छह लाख रुपये का

फायदा हो सकता है। हाकिम, दरोगा, जगल-आफिस—सब मुट्ठी मे हैं।"

"तुम जमीन अपने पास रख सकते थे।"

"उस काम में मेरी रुचि नही है, भैया ! बचपन मे ही मेरी शादी हो गयी थी, लेकिन ससुर जी ने रांची टाउन मे ही मुझे अपने पास रखकर पढाया-लिखाया। उनका अपना लड़का नही है। अब भी उन्ही के कारण ठेकेदारी कर रहा हूँ।

स्वरूप की जीप नवरतनगढ के इलाके मे दाखिल होती है तो गणेश बडा ही हैरान होकर सोचता है कि इतने पास होते हुए भी यह इलाका इतना कैसे बदल गया है।

स्वरूप ने कहा, "तुम कोई खबर नही रखते। इस इलाक़े से राजा का लडका ही एम० पी० बना है। तभी तो नवरतनगढ़ मे सडक, अस्पताल, स्कूल—सभी कुछ बन गया है।"

ठेकेदारी के रुपये से स्वरूप जैसे लोगों के रंगों से पुते दुमजिले मकान है। गणेश केवल स्वरूप के पिता को ही पहचान पाता है। वे कहते है, "आओ बेटा, आओ।" उसके सिर को सूंघकर आशीर्वाद देते हैं। उनके बदन से गणेश को पसीने, मैल, श्लेष्मा और आयुर्वेदिक तेल की जानी-पहचानी गध आ रही थी। स्वरूप उसे दूसरी मजिल पर ले जाता है। ग्रामोफोन से गाना सुनवाता है। ट्राजिस्टर और रेडियो भी दिखाता है, फिर कहता है, "आराम करो। दारू चलेगी ?"

"मैं नही पीता।"

"फिर रहने दो।"

गोश्त का पुलाव और रबडी खाते हैं। स्वरूप गणेश की समस्या सुनना चाहता है, किन्तु उसकी बातों मे उसका मन नही लग पाता। गणेश को भी लगता है कि सारे जरूरी काम छोड़कर वह यहाँ समय बरबाद कर रहा है।

सुबह-सुबह ही वे दोनो तोहरी चले आते हैं। गणेश को जीप से वहीं उतारकर स्वरूप डाल्टन गज चला जाता है। गणेश को लगता है कि स्वरूप जैसे लोगों की हवा लगने से दूसरे आदमी भी बिगड़ जायेंगे। ज़मीन जैसी चीज छोड़कर ठेकेदारी ! उसे लगता है कि जैसे वह रंडी बन गया

है।

तोहरी मे उसे एस० डी० ओ० मिल जाते है। एस० डी० ओ० यह मौका छोडना नही चाहते। गणेश से कहते हैं, "जरा इधर तो आइये। आप से एक बात करनी है।"

"क्या बात है ? यहीं नहीं बता सकते?"

"नही, इधर आइये।"

एक तरफ़ खड़े होकर एस० डी० ओ० उससे कहते हैं, "सुना है, तुम अभय को जान से मारना चाहते हो। अछूतों को भी नही छोड़ोगे और मेरी ख़बर भी लोगे। देखिये, अगर आप जंगल में आग लगाकर उन्हें फँसाना चाहेंगे तो पुलिस आयेगी और मैं भी आऊँगा। मुझे पता चल गया है कि जो भी गड़बड़ होगी, वह आप ही करायेंगे। आपको छोड़ूँगा नहीं। चाहे आप मेरी परवाह न करें। मैं भी आपकी कमर मे रस्सी डालकर, पूरे बाढ़ा गाँव का चक्कर लगवाकर गाड़ी मे बिठाकर लाऊँगा।"

एस० डी० ओ० हाथ झटककर गणेश के बोलने के प्रयास को हवा में उड़ा देता है। गणेश के दिमाग मे तेज़ी से विस्फोट-सा होता है—हरोआ ! हरोआ !! हरोआ !!!

गणेश ख़ुद गाडी हाँकता हुआ तोहरी आया था। ख़ुद ही हाँककर वापस ले जाता है। 'हरोआ' भडार-घर में काम कर रहा था। भीषण गरज के साथ हरोआ कहता हुआ वह अपने ख़ास कमरे की तरफ़ दौड़ता है। बदूक निकालकर टोटा भरते हुए चिल्लाता है, "हरोआ, आज तुझे तेरे पूर्वजो के पास नरक मे भेजकर ही दम लूँगा।"

गणेश की पत्नी बिजली की गति से आँगन मे से लड़की को उठाकर भडार-घर मे चली जाती है। दरवाजा बंद कर हरोआ से कहती है, "तुम्हें गोली मारने आ रहा है मालिक। दरवाज़े के सामने बोरियाँ लगा डालो।"

हरोआ पहले तो पत्थर बन जाता है, उसके बाद दरवाज़े के सामने गेहूँ और धान की बोरियाँ डालने लगता है। बहू को मुंह पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा करता है। गणेश ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़े पर लात मारता है और गाली बकता है। हरोआ दूसरी बोरियो के सहारे

ऊपर चढ़कर छप्पर मे से फूस हटाता है।

गणेश चिल्लाता है, "मैं कुल्हाड़ी से दरवाज़ा काट डालूंगा।"

गणेश कुल्हाड़ी लाने जाता है। बहू लड़की को उठाये डर से कांपती हुई सफ़ेद पड़ जाती है। हरोआ छप्पर फाड़कर पीछे से बाहर कूद कर दौडने लगता है अपने घर की ओर। गणेश कुल्हाड़ी से दरवाज़ा काटकर अन्दर सिर डालकर देखता है। हरोआ नही है। ऊपर देखने पर टूटा छप्पर नज़र आता है। बीवी को देखकर कहता है, "पहले उसे मारूँगा, फिर तुझे।"

गणेश बदूक लेकर दौडता है। पुतली अपनी लड़की को लेकर पीहर भाग जाती है, उसके पीछे-पीछे नौकरानियाँ भी।

गणेश के पहुँचने से पहले ही हरोआ अपने घर पहुँच गया।

उसने कहा, "मालिक सब-कुछ जान चुका है। वह मुझे मारने के लिए बदूक लेकर निकल पड़ा है। यहाँ पहुँचने ही वाला है। जल्दी करो लछिमा, जगल मे भाग चलें।"

लछिमा ने उसे ज़ोर से अन्दर की ओर धकेल दिया। दरवाज़े के चौखटों पर दोनों हाथ टिकाकर खड़ी हो गयी और कहा, "वह आ पहुँचा है।"

गणेश ने पूछा, "कहाँ है वह कुत्ता? उसे आज कुत्ते की तरह गोली मारूँगा।"

"पहले मुझे मारो, फिर उसे मारना।"

"हट जाओ, लछिमा! मैं उसे...।"

"नही।"

"तुम जानती हो, वह कौन है? उस कुत्ते ने तुम्हें कभी बताया ही नही होगा कि किस गाँव मे वह बेगारी करता था। मालिक का खून करके यहाँ भाग आया और पिता जी ने उसे शरण दे दी। हाँ, पिता जी मुझे बोल गये हैं। मेरा उस पर यही अधिकार है।"

लछिमा चिल्ला उठी, "अब उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नही रहा। अंग्रेज़ों के समय में उसने कोई खून किया था। वही डर दिखाकर तीस साल तक उसे बिना वेतन, बिना मजदूरी के तुमने काम कराया है और अपना कितना पैसा बचा लिया है। क्या वह तुम्हारे यहाँ बेगारी पर

नहीं रहा ? इसी अधिकार के बल पर तुमने इतने सालों तक उसे डर दिखाकर अपने कब्जे में रखा ?"

"हट जाओ, लछिमा ! वरना तुम्हें भी मार डालूंगा ।"

"नहीं !" हरोआ पशुओं जैसी गुर्राहट लिये हुए एक अनजान स्वर में गरज उठा। लछिमा को हटाकर, धारदार दाब हाथ में लिये वह बाहर कूद पड़ा । तभी गणेश की बंदूक गरज उठी और साथ ही उसके गले से आर्तनाद फूट निकला। गणेश के कंधे पर दाब फेंककर मारी थी हरोआ ने। बंदूक उसके हाथ से छिटक कर दूर जा गिरी । हरोआ की जांघ में गोली लगी थी । वह नीचे बैठ गया । अब लछिमा ने दाब उठा ली । गणेश उसकी ओर देख रहा था। लछिमा बोली, "निकल जाओ यहाँ से ! अभी इसी समय !"

गणेश ने अपने कंधे पर हाथ लगाया—खून-ही-खून। बंदूक उठायी गणश ने और वहाँ से चल दिया ।

लछिमा ने हरोआ को धीरे से सहारा देकर खड़ा किया और चारपाई पर जा लिटाया। बोली, "मैं अभी आती हूँ। बिगुलाल को बुला लाऊँ ।"

अचानक उसका आँगन लोगों से भर गया। बिगुलाल की स्त्री, भिखारी की स्त्री, उसकी लड़की और अनेक बूढ़ी औरतों की भीड़ लग गयी। भिखारी की स्त्री मरदों को बुलाने चली गयी ।

बिगुलाल की स्त्री ने कहा, "लछिमा, चलो गाड़ी पर छाँव करें। हरोआ को तोहरी ले चलें ।"

लछिमा हरोआ का सिर गोद में लेकर बैठ गयी । गोली जाँघ में लगी है, पर हरोआ का चेहरा क्यों सफ़ेद पड़ता जा रहा है ?

हरोआ ने क्षीण, मगर एकदम साफ स्वर में कहा, "लछिमा, मुझे तोहरी मत ले जाओ ।"

"गोली को निकाल दिया जायेगा...। मौसी, जरा पंखे से हवा करो। सुराही से पानी ला दो ! तुम अच्छे हो जाओगे जी, मैं...मैं भला किसके सहारे रहूँगी ?"

"लछिमा, गोली मेरे पेडू में घुस गयी है ।"

"खून कैसे बद हो ? पट्टी कहाँ बाँधूं ?"

"लछिमा...!"

"क्या कहते हो, बोलो ?"

"मुझे लेकर फिकर मत करो अब।"

"नही, क्यों न करूँ ?"

आँखें मूंदकर, हरोआ ने रुक-रुककर कहा, "देह का पूरा खून नीचे उतर रहा है। तोहरी किसे ले जाओगी ? लछिमा, बात सिंहभूम जिले की है। मालिक का नाम था सूरज सिंह। हम थे बेगारी पर उसके यहाँ। उसने सेवक-पट्टा भी लिखा लिया था। बहुत जुलुम होता था। एक दिन हमने मार डाला उसे। फिर इधर भाग आये। मेदिनी सिंह ने पेट में उँगली डालकर यही बात निकाल ली थी। और मरने से पहले उसने गणेश को यह बात बता दी। यही अधिकार था मुझ पर इनका। तुम पूछती थी न कि तुम पर इनका क्या अधिकार है ?"

"सब झूठ है। उनकी बदमाशी है। बात इतनी पुरानी है। वह तुम्हें पकड़वा देगा, इसीसे तुम डरते थे न ?"

"हाँ लछिमा, इसी डर के मारे मरता था।"

"पहले क्यों नही बताया ? पहले ही हम सब-कुछ छोड़-छाड़ के भाग जाते। लडके-बच्चे तो थे नही, फिर हमें मोह किसका ?"

हरोआ के मुँह से फिर बात न निकली। सिर्फ खून निकलता रहा। आँगन में बहता रहा खून। जितना खून निकलता गया, हरोआ की देह भी जैसे उतनी ही सिकुडती गयी। दुसाध, बिगुलाल के घरवाले, भगी, जर-ख़रीद प्रजा—सभी आ खडे हुए। लछिमा बोली, "अब इसे तोहरी ले जाकर क्या होगा ? बचेगा नही। फिर इसी घर में ही क्यो न रहे ? इस घर को कितना प्यार करता था !"

भीड को ठेल कर आगे निकल आता है राँका दुसाध। बोलता है, "ऐसा क्यों कहते हो ?"

लछिमा आहिस्ता से घाव से कपडा हटा देती है—जाँघ के मास को पार कर पेड़ू तक सूराख हो गया था। लछिमा घाव को कपड़े से फिर ढँक देती है।

शाम के लगभग हरोआ मर जाता है। लछिमा उसे लिये बैठी रहती है। आँगन मे दीप जलता है। भोर होने पर लछिमा कहता है, "अब और नही रखूँगी इसे अपने पास।"

"कौन-कौन उठायेगा इसे ?"

अचानक सबको याद आता है कि हरोआ ने उनके लिए जान तो दी है। लेकिन उसकी जाति क्या है, यह तो किसी को भी मालूम नहीं।

लछिमा ने कहा, "तुम सब लोग मिलकर उठाओ। कमरे मे ले चलो। उसने कभी अपनी जाति तो बतायी नही, मैंने भी कभी नही पूछा।"

"क्या कमरे में ही रखोगी उसे ? लछिमा...!"

"नही, मैं पागल नही हुई हूँ। इस कमरे को वह बहुत प्यार करता था। जब मैं यहाँ रहती थी, तब वह यहाँ सोता था। गुलाल से कहकर और मेरी आज्ञा लेकर पेड लगाता था, कमरे की मरम्मत करता था। अब मैं यहाँ नही रह सकूंगी।" यह कहकर थोड़ा रुकी लछिमा। फिर शांत स्वर में बोली, "अब मैं इस बाढ़ा में ही नही रहूँगी। बहुत...बहुत हो चुका।"

"कहाँ जाओगी ?"

बिगुलाल ने कहा, "हमारी टोली में चलो।"

धनपतिया ने कहा, "मेरे घर चल।"

लछिमा ने सिर हिलाया। "नही, नही। तुम लोग समझते नही। बहन भाग आयी तो आज रामरूप भी गुस्से में है। मालिक-मालिक का गठबंधन कल फिर से होगा। वे मुझे भला रहने देंगे यहाँ ? मेरे कारण तुम्हारी टोली को ही जला डालेंगे। राँका के आदमी मेरे लिए एक झोपड़ी खड़ी कर देंगे। अभय महतो एक परमिट बनवा देगा।"

"और तेरी जमीन ?"

"नही मौसी, गणेश को पाला-पोसा था, उसी की बखशीश में मिली थी जमीन गुलाल को।" पेड़ के तने से टिककर जैसे लछिमा किसी और के बारे में कह रही है। उसी तरह आज पहली बार उसने अपने वंचित, अपमानित जीवन की कहानी सबके सामने सुनायी।

"गुलाल ने मुझे बंधक रखा। और अपने लिए हर महीने की तनख्वा

और जमीन का करार करवा लिया। मुझे पूछा तक नही। अब न गुलाल और न मेदिनी सिंह। सद्यजात बच्चे को सीने से लगाकर पाला-पोसा। इसी की बखशीश बाप जीवन-भर देता रहा। मोहरकरन की बात सोचो, मौसी ? और उसी के लड़के ने, कल, पालने-पोसने का कर्ज एक गोली से चुका दिया। फिर जमीन क्यों रखूं ? अब पूरा हिसाब खत्म।"

लछिमा बोली, "छप्पर तोड़ दो। बेडा काट डालो। आँगन के सभी पेड़ काट दो और घेर के बीच मे ही सब-कुछ ऊँचे तक सजाओ और उसे उस पर लिटा दो। मौसी, पहले तुम लोग नहा लो। लो, नये कपड़े पहनाओ, बिगुलाल !"

कल की काटी लड़की का बोझा सभी के घर पडा ही हुआ था। सभी लोग लकडियाँ उठा लाये। अनजाने गोत्र और अनजानी जाति का हरोआ, जिसका सारा जीवन गुलामी मे कटा, जो जन्मा ही दास था, राजा की तरह एक बहुत ऊँची चिता की सेज पर धू-धू करती आग मे जल गया।

लछिमा को घेर कर उसकी बाँह पकड़कर सभी लोग उसे जंगल के उस पार ले जाते है। इस समय लछिमा उन सभी को बेहद प्रिय हो गयी थी।

राँका के आदमियों ने ऊँची-सी जगह पर लछिमा के लिए झोंपड़ी खड़ी कर दी। लछिमा ने कहा, "राँका, यह पैसे ले लो। अगर गैबीनाथ मे मिसिर देवता मिलें तो उन्हें दे देना। सारी बात बता देना। वह हरोआ के नाम से पूजा-ऊजा कर देगा। वही किरिया हो जायेगी, बस।"

मिसिर सुनकर विह्वल हो उठा। धरती पर बैठ गया। थर-थर काँपने लगा। फिर बोला, "लछिमा से कहना कि मैं पूजा कर हरोआ की आत्मा की शांति करा दूंगा। रुपयों की जरूरत नही है।"

"रुपये न लेने पर उसे दुख होगा।"

मिसिर से पैसे ले लिये। बोला, "यह भी कोई बात हुई ? हरोआ ने क्या किया था, उसका रिकार्ड ही कहाँ था ? फिर उसे कौन पकड़ता ? हम लोग तो सोचते थे कि मेदिनी ने उससे सेवक का पट्टा लिखा कर खरीद लिया है। हरोआ को तो पता था कि सेवक का पट्टा नही है। फिर वह क्यों डरा ?"

"पुलिस पकड़ेगी उसी खून के अपराध में।"

"बस इसीलिए। इतने साल तक डर के मारे उनका दास बना रहा। हे परमेश्वर! यह कैसा अन्याय है! हाय रे लछिमा-हरोआ! यह सोचकर मन को कितनी शांति मिलती थी कि वे सुख-चैन से हैं।"

राँका ने बड़े आश्चर्य से मिसिर की ओर देखा। फिर कहा, "चलूं, देवता! अब तोहरी जाऊँगा।"

"लछिमा का ध्यान रखना, बेटा! मैं तो गरीब आदमी हूँ। कोई घर भी नहीं है मेरा। पेड़ के तले रहता हूँ। बीच-बीच में यात्रियों को पकड़ लाता हूँ। ठाकुर का प्रसाद मिल जाता है। घर होता तो उसे बुलाकर रहने को कहता। बेटी की तरह रहती।"

"मैं चलूं फिर!"

राँका तोहरी पहुँचता है। अभय महतो को सारी बातें बताता है। सुनकर अभय को लगता है कि जैसे उसके गाल पर किसी ने थप्पड़ लगाया हो। क्योंकि राँका पूछता है कि गणेश सिंह को किससे पता चला कि हरोआ ने ऐसा कहा है?

"राँका, तुम थोड़ी देर बैठो।"

"क्यों?"

"ज़रा देर बैठो तो सही।"

अभय सीधा गया एस० डी० ओ० के पास। कचहरी शुरू होने वाली थी। एस० डी० ओ० व्यस्त थे, बेहद व्यस्त। फिर भी अभय ने उन्हें सारी बात बतायी।

एस० डी० ओ० ने कहा, "मैंने उसे धमकाया था। बदज़ात ने दो और दो चार कर लिये। लेकिन इस घटना की कोई रिपोर्ट क्यों नहीं आयी? उन्होंने अब तक रिपोर्ट क्यों नहीं दर्ज करायी?"

"अब दर्ज कराने पर आप कोई व्यवस्था करा सकते हैं?"

"अरे, देखा जायेगा। गणेश को किस तरह से फँसा सकें तो...। ख़ैर यह बताओ कि ये सारी बातें आपको किसने बतायी?"

"राँका दुसाध ने।"

"वह यहीं मौजूद है?"

"हाँ। लेता आऊँ ?"

"बुला लाइये, जरा जल्दी।"

राँका एस० डी० ओ० के घर के बरामदे पर उकड़ू बैठ गया। सामने कचहरी है। लोग आ-जा रहे है। राँका ने क्रम से सारी घटना बता दी।

"उस समय तुम वहाँ मौजूद थे ?"

"घटना के वक्त नहो था। गणेश सिंह के चले जाने के तुरत बाद वहाँ पहुँचा था। हम सभी लोग पहुँचे थे।"

"क्या-क्या हुआ, बताओ तो ?"

राँका पूरी घटना बयान करता है। एस० डी० ओ० कहता है, "तुम बाहर जाकर बैठो।" फिर अभय से कहता है, "आप टिफ़िन टाइम मे आयें या शाम को।"

"शाम को ही आऊँगा।"

अभय अपने घर यानी सघ के दफ़्तर मे मिले एक कमरे मे स्टोव पर खाना बनाता है। राँका आज उसका अतिथि है। गाधी मिशन के कुएँ पर दोनों ने स्नान किया और होटल मे भात खाया। अभय ने कहा, "अब तुम मेरे साथ मत आओ। बातचीत करके मैं अकेले ही आऊँगा।"

राँका ने भात खाया। फिर एक पान ख़रीद कर खाया और बीड़ी सुलगायी। कुछ बातो मे वह अभय से ज्यादा समझदार है। अभय से कहने लगा, "हम दुसाधों की जमीन चन्दरभान सिंह और गजमोती सिंह ने छीन ली थी। टोले की जमीन मेदिनी सिंह की थी। जमीन क्या थी, दीमकों के टीलो की कतारें थी। हमने कितनी मेहनत से केरोसिन खरीद कर, गाँव-भर से सूखे पत्ते बटोर कर चार दिन तक आग जलायी। तब जाकर दीमकें मरी। मेदिनी सिंह ने जमीन का एकमुश्त बीस रुपया लिया था। बस। खैर, जब जमीन चली गयी तो हमे पता चला कि उसने गैरकानूनी ढंग से जमीन ली है। मेदिनी ने कहा, 'तुम लोग चले जाओ यहाँ से।' उस समय हम लोग थे और सिर्फ एक हाकिम था। तुम्हारा सघ भी नही था। हम लोगों ने कचहरी के पेशकार के आगे कई बार अर्जियाँ पेश की। हमने बहुत भाग-दौड़ की। कहा जाता, इतना रुपया लाओ, उतना

रुपया लाओ। हमारे जैसे आदमियों का करीब एक सौ रुपया चला गया।"

"काम हुआ ?"

"कुछ नहीं हुआ, मालिकों ने क्या कहा-सुना, बाद में पता चला। हमने जो कुछ कहा था, उस पर अदालत ने कहा कि वह जमीन के रिकार्ड खोज कर देखेगी कि हमारा हक बनता है या नहीं ? बनता है तो कितना बनता है ? हाकिम ने भी कहा, 'अदालत के सामने तो मालिक-प्रजा समान है।' मगर अदालत कानून के रास्ते पर चलती है।"

"उसके बाद ?"

"अभी तक रिकार्ड की खोज जारी है। कुछ नहीं होने वाला। जो बदोबस्ती जमीन दी जाती है, उसका रिकार्ड जानते हैं, कहाँ रहता है जो अदालत देखेगी ? पेशकार तो वही है। उसने तो उसी दिन साफ कह दिया था, 'अरे भाई, जरखरीद प्रजा को बेदखल करके ही मालिक जमीन लेता है। अदालत से उसका फैसला न हुआ है और न होगा। तुम लोगों के पीछे कोई विलासप्रसाद भी नहीं है।' "

"ओह, विलासप्रसाद !"

विलासप्रसाद इस शासन और समाज-व्यवस्था के ही अनअपेक्षित परिणाम थे। वे भागलपुर के सरकारी वकील हैं। बिहार के ब्रिटिश-विरोधी संघर्ष में उनके परिवार की तीन पीढ़ियों से तीन लोग फाँसी पर चढ़कर शहीद हुए थे। मालिक नारायण मिश्र द्वारा बेदखल किये गये इक्कीस किसानों का केस लेकर बड़ी हिम्मत से उन्होंने किसानों के पक्ष में मुकदमे का फैसला करवाया। इस केस को हाथ में लेने से पहले उन्होंने सरकारी वकील का पद त्याग दिया था। साधारण वकील की हैसियत से केस लड़ा था। नारायण मिश्र ने हाई कोर्ट में अपील की। पटना के रास्ते पर अज्ञात हत्यारों के हाथों विलासप्रसाद की हत्या हो गयी। उन इक्कीस किसानों को घर गया, गाँव छोड़कर भागने पर मजबूर कर दिया गया। अभय समझ गया कि पेशकार ने विलासप्रसाद का नाम लेकर राँका से मज़ाक किया है। वह समझ गया कि मामला काफी पेचीदा है।

राँका बोला, "इतनी बात तुम्हें क्यों बतायी ? क्योंकि तुम अच्छे आदमी हो। लेकिन तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं है। हमारी बातें

हाकिम से कहने से भी कोई लाभ नहीं। हाकिम क्या जवाब देंगे, मुझे मालूम है। पूछेंगे, 'सबूत कहाँ है? हरोआ कौन है?' वह मर गया है। 'लछिमा?' वह हरोआ की स्त्री है। हरोआ की गोली का घाव नहीं दिखाया जा सकेगा। गणेश सिंह अपने कंधे का घाव दिखायेगा और हरोआ के नाम पर हजारों दोष मढेगा।"

"देखेंगे।"

"गणेश के कंधे पर लगा घाव ही हमारे लिए लाभ है। वैसे होगा कुछ भी नहीं। हरोआ ने वार किया था। खड़े होकर मारता तो बायाँ हाथ कंधे से उतर जाता। अच्छा रहता। गोली खाकर भी उसने दराँत मारा। कितना जवान था! इतनी बड़ी देह थी। कंधे पर भैंस का बच्चा उठाकर चला आता था। हमें बचाने में उसने अपनी जान दे दी।"

राँका चला गया।

एस० डी० ओ० ने शाम को अभय से सारी बातें सुनी। राँका की तरह वह भी बोला, "सबूत कहाँ है? हरोआ मर गया है। गणेश सिंह अब अपना कंधे का घाव दिखायेगा। पचासों बात कहेगा।"

"तो फिर?"

"एक बात अच्छी हुई कि गणेश ने खुद आकर कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी। एक काम कीजिए। हरोआ की स्त्री से एक रिपोर्ट थाने में दर्ज करवा दें। मैं दारोगा से कह दूँगा। एकदम ग़ैरकानूनी काम कर रहा हूँ, मगर गणेश जैसे आदमी को थोड़ा पाठ पढाने के लिए। इस रिपोर्ट पर प्राथमिक जाँच-पड़ताल में जाकर उसकी बंदूक ज़ब्त कर ली जाये। उसके पास लाइसेंस तो होगा नहीं। यही ठीक रहेगा।"

अभय ने कहा, "एक बात है।"

"क्या?"

"देखिए, उस समय आपसे मैंने बार-बार कहा था कि गणेश से कुछ कहना हो तो इस तरह कहिए कि उसे शक न हो कि यह बात किसने आपको बतायी है। आपने शायद सही ढंग से बात की होगी, लेकिन उसने ठीक पकड़ लिया और उस आदमी को मार डाला। वह तो मर ही गया। उसे तो अब लौटाया नहीं जा सकेगा न?"

"सच बात है, एकदम सच।"

"ऐसी जगहों पर इसी तरह की समस्याएँ देखने में आती हैं। ऐसी जगहें बिहार में काफी हैं। मालिक-महाजन जमीन के मालिक हैं। यह बात सच है कि वे लोगों के घर जला डालते हैं, खून कर डालते हैं, लेकिन कानून से उन्हें कोई सजा नहीं मिलती। हरोआ की विधवा स्त्री से थाने में रिपोर्ट दर्ज करवा दूँ। दारोगा कैसा है?"

"वह भी एक ही बदमाश है।"

"मान लो, आपके डर से वह रिपोर्ट दर्ज कर लेता है। उसकी बंदूक भी जब्त हो जाती है। मगर गाँव में और भी तो बदूकें हैं।"

"सभी बिना लाइसेंस की हैं?"

"शायद। वैसे मुझे पता नहीं। गणेश के पास कितनी बन्दूकें हैं, इसका भी किसे पता है? बदूक जब्त करते ही उसे पता चल जायेगा कि किसकी रिपोर्ट पर ऐसा हुआ है। उस समय भी उसने धमकी दी थी। अपनी धमकी को अमल में कर दिखाया। फिर वैसा ही करेगा। जंगल में आग लगा देगा। जंगल से लकड़ी बटोर कर आठ आना-रुपया कमाने का उनका रास्ता बंद करके उन्हें अपने क़दमों तले गिराने की कोशिश करेगा। मुझे तो डर लगता है।"

"कैसा डर?"

"अगर ये लोग मार खाते-खाते पलटकर खड़े हो गये तो? तब क्या होगा? डेढ़ सौ लोग एक साथ बिफर सकते हैं। उधर मालिक भी बिफर सकते हैं। तब तो बदूकें चलेंगी। सोचने से डर लगता है।"

एम०डी० ओ० जोर से हँस पड़े। बोले, "अरे तब तो क़ानून-व्यवस्था टूट जायेगी और पुलिस के साथ मैं बीच में आ जाऊँगा। जिसने अन्याय किया है, उसे जरूर पकड़ूँगा।"

अभय सूखी हँसी हँसते हुए बोला, "हमने अभी तक यही देखा है कि कानून की व्यवस्था टूट जाने पर पुलिस गाँव में घुसती है तो पकड़े जाते हैं खेत-मजदूर। पुलिस मालिकों की हवेलियों पर पहरा देने लगती है।"

"नहीं, जरूरी नहीं कि हर जगह और हर समय ऐसा ही हो। जो हो, मैं लछिमा को नहीं लाऊँगा।"

एस० डी० ओ० जानता है कि ऐसा करने पर उसकी बदली हो जायेगी। पता नहीं क्यों, वह अभय की नजरों में साबित करना चाहता है, 'देखिए, मेरी कथनी और करनी में फ़र्क नहीं है।' वह ऐसा क्यों चाहता है, कहा नहीं जा सकता। एस० डी० ओ० ख़ुद हरिजनों या खेत-मजदूरों का पैरोकार नहीं है। मालिकों का विरोधी भी नहीं है। वह खेत-मजदूर या मालिक, किसी का भी समर्थक या विरोधी नहीं है। वह प्रशासन-सरकार-प्रधानमंत्री-संविधान-क़ानून में सुधार के द्वारा देश की उन्नति वगैरा में पूरी तरह विश्वास रखता है। इस तरह के क़ानून पास होने पर उसे बेहद ख़ुशी होती है। तोहरी जैसी जगह में वह सोच नहीं पाता कि किसे बताए कि भारत में गणतंत्र सफल हो रहा है।

गणेश पर उसका क्रोध कई कारणों से है। जिस व्यक्ति के लिए काला अक्षर भैंस बराबर है, जिसकी मानसिकता बर्बर और मध्ययुगीन है, वही गणेश इतना धनवान है और फिर भी वह भारत की उन्नति की दौड़ में रोड़े की तरह अटक रहा है। अगर गणेश पढ़ा-लिखा, ट्रैक्टर चलाने वाला, अँग्रेजी बोलने वाला, आधुनिक और उन्नत तरीक़े से खेती करने वाला खेत-मालिक होता तो शायद इस एस० डी० ओ० के दिल में उसके प्रति विद्वेष नहीं होता। एस० डी० ओ० को मालूम है कि जागरूक जमींदार अपने किसानों का शोषण और बेदखली बड़े ही जागरूक और आधुनिक तरीकों से करते हैं। उस सूरत में उसे अभय की खामोशी कोई अपराध नहीं लगती। वे लोग सभी कुछ कानून के घेरे में रहते हुए करते हैं। क़ानून ने ही जब मालिक-महाजनों के हाथों किसानों के शोषण और भूमि से उनकी बेदख़ली की पूरी व्यवस्था कर रखी है तो गणेश जैसे बर्बर लोग एस० डी० ओ० और थानों को ताक पर रखकर ख़ुद क्यों भगवान बनते हैं!

गणेश पर एस० डी० ओ० के क्रोध का एक और भी कारण है। गणेश का कहना है कि वह किसी एस० डी० ओ० को नहीं मानता। हालाँकि उसने खुल्लमखुल्ला ऐसा नहीं कहा है। बाढ़ा में कैम्प लगाया जाये तो अच्छा रहे। मगर वहाँ गणेश सिंह है। उसने भंगी टोले को उजाड़ दिया है। अब गाँव में किसी के घर में पाख़ाना नहीं है। अब पाख़ाने के लिए खेत-

मैदानों मे जाया जाता है। वह आदमी नही, जानवर है।

एस० डी० ओ० के दिमाग मे इसी तरह की बातें चक्कर काट रही हैं। हरोआ की दुखद मृत्यु के पीछे उसकी कोई नैतिक जिम्मेदारी बनती है, यह बात उसे अभय को देखकर ही याद आती है। वह बोला, "ठीक है।"

"क्या ?"

"आप जो कुछ जानते हैं, लिखकर मुझे दे दें। या लिखकर लेते आयें। केस दर्ज तो होना नही है। क्योंकि एक ओर वह दुष्ट है तो दूसरी ओर कमजोर विधवा। विधवा के पास केस लड़ने के लिए पैसा भी नहीं है। फिर वह उसे मार-वार भी सकता है।"

"मेरे लिखने से क्या होगा ?"

"आप मुझे इसकी जानकारी दें रहे हैं। इसी आधार पर मैं खुद जाऊँगा और उसकी बंदूक जब्त कर लूंगा। पूरी जाँच करूँगा। घर में नजरबन्दी के आदेश निकाल दूंगा। बाहर पुलिस बिठा दूंगा या मुचलका लिखवा लूंगा। केस होगा ही। अगर सरकार की तरफ़ से केस नही भी हो तो आप मे और उसमें ही हो जाये।"

"सरकार की तरफ़ से ही हो तो अच्छा रहे।"

"देखेंगे। शायद बदूक जब्त की जा सके। हाँ, यही अच्छा होगा। रिपोर्ट दुसाधों की नही, औरों की भी नही, विधवा की भी नही, बल्कि आप एक ऐसे आदमी हैं जो उनका भला चाहते है। आप न्याय चाहते है। बड़ा अजीब केस है। मगर जो हो, मैं लड़ जाऊंगा।"

"तो लिख लाऊँ ?"

"यहीं बैठकर लिख लें।"

"एक कापी रख लूं अपने पास ?"

"जरूर।"

"मैं हिन्दी मे लिखूंगा।"

"उसी मे लिखिए। राष्ट्रभाषा है। हिन्दी में ही ठीक है।"

रिपोर्ट लिखने के बाद अभय ने कहा, "मगर देखिएगा, उस विधवा और दुसाधों वगैरह पर जुल्म न होने पाये।"

"निश्चय ही ऐसा होगा। वचन देता हूँ।"

"कानून-व्यवस्था का मामला खड़ा होने पर न्याय होना चाहिए।"

"ज़रूर।"

अभय ने लौटकर सारी बातें चम्पावती को बतायी। बुढ़िया चम्पावती ने समझदारी से कहा, "बेटा, जनमत तैयार करो। रिपोर्ट की कापी मुझे दे दो, मैं अंग्रेज़ी मे अनुवाद करके किसी मंत्री-वंत्री या अख़बार वालो को भेज देती हूँ।"

"अच्छा माता जी!"

तोहरी का स्टेशनमास्टर आजकल रेलवे यूनियन में काम करने का अच्छा फल भोग रहा है। उसकी उम्र कम है। सोशलिस्ट पार्टी का हमदर्द है। वह अभय से बोला, "इस चरखा-मिशन और पाखंडी संघ से इस तरह के काम नही हो सकेंगे। किसी शक्तिशाली राजनीतिक पार्टी की मदद लेना जरूरी है। यूनियन की ज़रूरत है।"

"मास्टर साहब, ऐसे दीन-दुखियों के लिए न तो कोई पार्टी है, न कोई यूनियन। इनकी पीठ पर अगर कोई होता तो हमारे बिहार मे इतने किसान क्यों मरते, क्यों बेदख़ल होते?"

"क्या करें, एजूकेशन नहीं है न?"

"लिखाई-पढाई?"

"अरे, सरकारी स्कूलों में भी तो नही भेजते वे अपने लड़के-बच्चों को।"

"उनके मालिक उन्हें ऐसा नहीं करने देते। फिर लडके तो आठ साल की उम्र से ही गाय चराने लगते हैं, पढने कब जायें?"

विषय में प्रश्नकर्ता की रुचि कुछ ही क्षणो मे खत्म हो जाती है, शायद। रुचि थी ही नही। उसने कहा, "बाढ़ा गाँव मे अछूतों के बारे मे तो आप सोच ही रहे हैं। हमारे रेलवे कुलियों, लाइन की मरम्मत करने वाले कुलियो को भी देख आयें। उन्होने आपको निमन्त्रण दिया है। हमे तो बुलाते नही।"

"मैं अछूत हूँ ना।"

अभय हँसता है और चला जाता है। बाढा गाँव की घटनाएँ उसके दिल को दर्द मे डुबोए रखती हैं। स्टेशनमास्टर के काफ़ी हलके गले से

निकली बातें रात को खाट पर लेटे-लेटे याद आती हैं। रांका वगैरा के मामले मे उसे वाक़ई रुचि लेनी चाहिए। किसी राजनीतिक पार्टी का समर्थन उन्हे मिलना चाहिए। यूनियन की भी जरूरत है। मगर जिन राजनीतिक पार्टियो ने सर्वहारा को मुक्त करने की घोषणा की है, वे भी तो ज़ुल्म के शिकार और अपमानित किसानो, जाँति-पाँति की मार से मरे हरिजनों के बारे मे कोई रुचि नही लेती। साल-भर में कितने लोग सर्वहारा वर्ग में शामिल होते जा रहे हैं ? उन्हें लेकर कौन संगठन बनाएगा ? अभय तो साधारण आदमी है, उसमे इतनी क्षमता कहाँ ? भारत की जनता के लिए ही जब सब-कुछ है तो फिर क्या ये लोग भारत की जनता में शामिल नही हैं ? चुनाव के वक़्त रुपया देने वाले गणेश जैसे लोग सरकार के लिए बेहद काम के आदमी हैं। गणेश जैसे लोग राजनीतिक पार्टियों के लिए भी आवश्यक हैं। इसी वजह से रांका वगैरा को किसी की मदद नही मिलती।

एस० डी० ओ० की समझ दूसरे ही क़िस्म की है। वह बात करता हुआ कहता है, "क़ानून ने उन्हें जितना कुछ दिया, लेकिन वे उतना भी माँगना ही नही जानते। और आप कहेंगे कि कानून लागू ही नही किया जाता। अगर वे दबाव डालना जानते तो कानून लागू हो जाता। मैं इंडस्ट्रियल अफ़सर का बेटा हूँ, शौक से सरकारी क्षेत्र मे आया हूँ। इंडस्ट्रियल मजदूर अपनी माँगें मंजूर करवाने के लिए दबाव डालते है।"

"कुछ मिलता है उन्हें ?"

"कुछ मिल पाता है, कुछ नही। बाढा जैसे गाँवों में अभी मध्य युग ही चल रहा है। कानून और व्यवस्था को लेकर अगर कोई घटना हो भी जाये तो बाढा वर्तमान युग में पहुँचेगा। इससे समस्या हल भी नही होगी।"

अभय सोचता है, शायद बाढ़ा का भाग्य यही है। इतने दिनों तक एकतरफ़ा अत्याचार चलता रहा है और अत्याचारियो ने इसे ही शाश्वत मान लिया है। क्या करें ? पीठ पर कोई दल, कोई संगठन, कोई सरकार, कोई सहारा भी नही। अभय जो कुछ कर रहा है, वह भी सघ के जन्म-दाताओं के विचार से राजनीतिक कार्रवाई है। अभय जानता है कि वह

कितना अकेला, कितना अक्षम है। शायद बाढा का भाग्य भी यही है। मार खाते-खाते शायद एक दिन पलटकर वे प्रतिरोध भी करें। शायद मार-पीट भी करें। तब एस० डी० ओ० के शब्दों मे क़ानून-व्यवस्था टूट जायेगी। पुलिस आयेगी, रांका वगैरा को पकडेगी, गणेश जैसे लोगों को सुरक्षा प्रदान करेगी, भूमिहीन खेत-मजदूरों की तादाद बढेगी, बाढा बीसवी सदी में पहुँच जायेगा। वही मे जमा मे गिना जायेगा सिर्फ गणेश के कंधे का घाव।

अचानक अभय ने निर्णय ले लिया। इतना क्या सोचना? अगर उन्हे सिर्फ बेदख़ल ही किया जाता है तो अभय उनके साथ चलेगा। पूरे जी-जान से कोशिश करेगा कि उसकी जान-पहचान के लोग इस विषय मे रुचि लें। उनके साथ ज़िन्दा रहने की कोशिश करेगा। वही होंगे, अभय की यूनियन या पार्टी या संघ-मिशन का काम।

अगर वह गिरफ़्तार हो गया तो? कुछ भी हो, अभय केस लड़ेगा। अदालत मे गवाह के कठघरे मे डेढ़ सौ लोगों को ला खडा करेगा।

अभय को कुछ ही क्षणों मे नींद आ गयी। एस० डी० ओ० ने तो कह ही रखा है कि वह गणेश को सीख देगा। मुद्दई है अभय। वे लोग तो बीच में कही नही है।

एस० डी० ओ० की जीप गणेश के मकान के सामने जैसे ही आकर खड़ी हुई रामरूप और नाथू जल्दी से दौडे आये। हाकिम! एस० डी० ओ० ने निहायत ही नपे-तुले शब्दों में उन्हें डांटकर हटा दिया। नाथू और रामरूप जानबूझकर घर के भीतर नहीं गये।

पुतली ने कह दिया था, "मुझे मारो, काटो या जो जी चाहे करो, लेकिन मैं वहां वापस नही जाऊँगी। कदापि नहीं जाऊँगी। गयी तो वह जान से मार डालेगा। तुम दोनों ही मारो। चाहे मुझे या मेरी लड़की को।"

पुतली का कहना है, "गणेश इंसान नहीं है अब, पागल जानवर बन गया है।" नाथू, रामरूप, चन्द्रभान, सागर—सभी जमीन-मालिक इस बात को स्वीकार करते है। गणेश की ज़रख़रीद प्रजा का चले जाना, हरीआ की मौत, लछिमा का गाँव छोड़कर चले जाना ऐसे मुद्दे थे जिन पर वे इकट्ठे होकर बातचीत करना चाहते थे।

गणेश ने खुलेआम कहा है, "नौकरानी की औलादो, कुत्तो! इन कमीनो को तुम लोगों ने ही मुँह लगाकर सिर चढाया है। निकलो इस घर से, वरना सबको हरोआ बना दूँगा। मेरे पास बंदूक भी है, गोली भी।"

अपने कानों से ऐसी बातें सुनकर कौन जायेगा उसके पास? गणेश उन्मत्त घायल बाघ बन चुका है। उस दिन अपने बँधुआ किसान गोपाल को पकड़कर ले गया था। बाद मे गोपाल भी भाग गया। वह नाथू के घर मे कह गया कि "कंधा ठीक होने पर गणेश तुम्हें भी मारने आयेगा।"

फिर भी ससुर और साले की हैसियत से नाथू और रामरूप आगे आये थे। एस० डी० ओ० की डाँट सुनकर दोनों पीछे हट गये। उन्हें लौट जाने का मौका मिल गया। पुतली ने कहा, "ठीक है। उसे जेल मे रखने से ही इधर शान्ति होगी, अन्यथा वह मुझे मार डालेगा।"

नाथू ने कहा, "रामरूप, तू अपनी माँ और बहन को लेकर डाल्टन गंज चला जा। उन्हें ममहर मे छोड़ आ।"

"आप ही चले जायें। गणेश इस घर मे घुसा तो क्या मेरे पास बंदूक नहीं है?"

एस० डी० ओ० की चिल्लाचिल्ली पर गणेश बाहर निकल आया। उसके बाहर निकलते ही चार पुलिस वाले घर मे घुस गये और भीतर से उसकी बंदूक निकालकर ले आये। गणेश नगे बदन था। काले बालों से भरी पुष्ट देह। बगल से लिपटती हुई पट्टी बाएँ कंधे पर बँधी थी। गणेश ने शुरू मे तो बढे-चढे स्वर मे बात की। लाइसेंस दिखलाने की बात सुनकर हँसा। फिर बोला, "हाकिम साहब, मैं लाइसेंस फ़ीस नही देता, चुनाव मे रुपया देता हूँ। पूरे पचास हजार दे चुका हूँ। तीन चुनावों में मैंने कुल मिलाकर पचास हजार दिये हैं।"

"जिन्हे रुपया दिया है, उनमे ही बात कीजिए।"

"बंदूक क्यो जब्त कर रहे हैं?"

"लाइसेंस नहीं है, इसलिए।"

सहसा गणेश गरज उठा। बंदूक ही उसकी सगिनी है, दोस्त है, आसरा है। बोला, "उस हरामी अभय महतो की बात पर मेरी बंदूक जब्त कर रहे हैं? एक जरखरीद को मैंने मारा है, बस इसलिए?"

"जन्म से बंधुआ मजदूर जैसी कोई चीज क़ानून नहीं मानता। यह देखिए तलाशी का वारंट! इसी के बल पर घर की तलाशी ली है, बंदूक जब्त की है।"

"कानून? कानून हमारी ख़ातिर है। मैं जरख़रीद ग़ुलाम रखूंगा— क़ानून इसे माने या न माने।"

"चलता हूँ। किसी भी तरह की गड़बड़ी की ख़बर मिली," एस० डी० ओ० ने घुड़की दी, "तो उसी दिन से यहाँ कैम्प लगवा दूंगा। पूरी जांच करूंगा। अभय महतो के अभियोग की मैं ख़ुद जांच करूंगा।"

"नहीं, बंदूक के बिना मैं नहीं रह सकूंगा। बंदूक और गोली। अभी कई लाशें गिरानी बाकी हैं।"

एस० डी० ओ० ने दो पुलिस वालों को वहीं तैनात कर दिया। बोला, "घर से बाहर क़दम न रखें।"

जीप पर चढ़कर खुशी-भरे चेहरे से एस० डी० ओ० बोला, "मुझे आपने धमकी दी है। कल वारंट लाकर आपकी गिरफ़्तारी लूंगा। आज बंदूक ले जा रहा हूँ।"

फिर उसने पुलिस वालों से कहा, "रात के आठ बजे रिलीफ़ आयेगी।"

"नहीं हुजूर, सवेरे भेज दीजिएगा।"

"आदमी बदमाश है, सावधान रहना।"

"नहीं हुजूर, जितना बिफर रहा है, उतना करने की ताकत इसमें नहीं है। कंधे का जख़्म देखिए। बायाँ हाथ नीचे झूल रहा है।"

गणेश चीख़-चीखकर एस० डी० ओ० को माँ-बाप की गाली देता रहा। चरम-चरम अपमान है यह उसका। कहने लगा, "अभय महतो! उसे कहाँ से पता चला? हमारे लोगों ने ही तो बताया होगा।"

यह सुनकर एक पुलिस वाला बंदूक तानकर बोला, "बस, बस। भीतर चले जाइये और चुप होकर बैठिए।"

बंदूक का मुंह गणेश की ओर करते हुए सिपाही ने उसे धमकाया और अपने संगी से बोला, "लालटेन जला लेना अँधेरा होने पर।" बंदूक ताने हुए ही उसने घर के चारों तरफ़ का जायजा लिया।

गणेश ने घर मे घुसकर दरवाजा बन्द कर लिया। चारों ओर निस्तब्धता छायी थी। उसके मजदूर-किसानों ने गायों-भैंसों को खूंटों से खोलकर हांक दिया है। कधे के घाव ने सर्वनाश कर दिया है। गणेश बदूक नही चला सकता। फिर वह पास भी न रही। पुतली को मारना है, नाथू को, रामरूप को, अछूतों को—सभी को मारना है। फिर नयी प्रजा लाकर बसाऊँगा। एक बार क्यो, दस बार शादी करूँगा। लछिमा कैसे उनके साथ चली गयी अपनी जमीन छोड़कर? कमीने हैं, कमीने हैं ये सब! अचानक आग लगाने का ख़याल आते ही उठा। बदला लेने का रास्ता दिखायी पड गया।

केरोसिन, दियासलाई, बस।

रात होने पर।

रात हुई। घर-घर मे गणेश की ही चर्चा चल रही है। गजमोती सिंह बोला, "चद जवान लोग घर का छप्पर फाड़कर भीतर कूद जायें और उसे पकडकर बांध दें। उसे गरमी चढ़ गयी है। सिर मुड़ाकर खोपड़ी पर ख़ूब पानी डालकर वैद्य जी का तेल मलने से अच्छा हो जायेगा।"

उसके लड़के सागर सिंह ने मरदाने स्वर मे बाप से कहा, "अब उसके बारे मे सोचने की जरूरत नही। सभी को गाली दी है उसने। मैं नाथू या रामरूप नही हूँ। मैं नही सहन कर सकता। मैं राजपूत हूँ। उसे रास्ते पर लाकर ही छोड़ूँगा।"

चन्द्रभान बोला, "यह जो भी हुआ, उसने हमें दुश्मन बना दिया। उसका समय अभी ख़राब जा रहा है। वरना मिसिर क्यो चला जाता? कुछ भी हो, गणेश ने जैसी गाली हमें दी है, उसे माफ़ नहीं किया जा सकता।"

रामरूप ने अपने बाप से कहा, "आप जाइये। मैं यही रहूँगा और देख लूँगा कि कौन नौकरानी की औलाद है! गणेश ने साँप की पूँछ पर पैर रखा है। मैं उसे नही छोड़ूँगा। अब उसके पास बदूक ही कहाँ है? बहन की बात बीच में मत उठायें। विधवा होने पर पुतली ज्यादा सुखी रहेगी। माँ कहती है, 'हाल ही मे बच्चे को भी मारने जा रहा था।' पुतली की देह तो काले दागों, नोच-खसोट के दागो, लोहे की सीक से जले दागों से भरी

पड़ी है।"

नाथू गहरी साँस लेकर बोला, "सरकार सज़ा देगी। क्या वह किसी छोटी जाति का है? अपनी ही जाति का है, अपना जँवाई है। तुम्हारी तरह जमीन-मालिक है। उसके खून से हाथ काले मत करना। लड़का नहीं हुआ, इसी वजह से पुतली को...।"

"आपके यहाँ भी तो पहले लड़कियाँ ही हुई थी। उसके बाद मैं पैदा हुआ था और आख़िर में पुतली। पहले लड़का नहीं हुआ तो क्या आपने भी माँ को ऐसे ही मारा था?"

इस तरह गणेश के मामले को लेकर बाढा गाँव की मानसिकता मे आधुनिकता का प्रवेश हुआ। नाथू और गजमोती सिंह के लडको ने बाप की बात ठुकरा दी, पुतली ने अपने पति को छोड़ दिया, पुतली की माँ अपनी लड़की को उसके पति के यहाँ वापस भेजने को राजी नहीं हुई और उसने अपने पति और लड़के को धमकी दे डाली, "लड़की, नातिन और मैं एक साथ कुएँ में कूद पड़ेंगे।"

हताश होकर नाथू बोला, "गणेश, यह तूने क्या किया!"

उसे बार-बार लगता था कि गणेश का पकडा जाना सभी मालिकों की हार मानी जायेगी। जन्म से गुलाम की तो मालिक हत्या करते ही हैं, मगर पकड़े तो नही जाते। क्या होने जा रहा है? मालिकों का जीवन और अस्तित्व ही खतरे मे पड़ गया है। रामरूप तो अभी बच्चा है। वह समझता नहीं है। कुछ भी हो, गणेश उनका स्वजन है।

उधर राँका के साथ छह-सात आदमी जगल मे जाग-जागकर पहरा दे रहे है। उनके पास बंदूक नही है, पर गणेश के पास भी तो नही है। गणेश के रहते रात को पहरा छोड देना सभव नहीं। यह एक भीषण लड़ाई है—राँका जैसे लोगों के अधिकार की लड़ाई। गणेश तो उन्हें बर-बाद करेगा ही। लेकिन राँका वगैरा ऐसा नही होने देंगे। धुंधले चाँद की रोशनी मे जगल नैसर्गिक सुन्दरता मे डूबा है। राँका और उसके आदमी पूरी तरह से सचेत है। गणेश अभी जख़्मी पागल जानवर है। हिंसक और धूर्त।

ठीक जानवर की ही तरह, एक बड़े आदिम जन्तु की भाँति गणेश

अपने घर में से निकलता है। पुलिस वाले जान ही न सके कि गणेश कब चुपके से खिडकी से बाहर निकल गया। केरोसिन तेल का टिन, गूदड और दियासलाई लेकर। जगल में आग। जगल तो जलेगा ही इसके बाद।

जानवर की तरह ही वह आया। देह में असीम शक्ति है। इसीलिए सारा सामान एक ही हाथ से उठाकर लाया है। शिकारी की भाँति जानवर पर नजर पड़ते ही कोई बोल उठा, "रांका...वो...वो आ रहा है।"

"ह र र र र र र," चिल्लाते हुए वे दौड पड़े। गणेश इसके लिए तैयार नहीं था। उनकी उठी हुई लाठियों को देखकर उसे ऐसा लगा कि जैसे उन सब के हाथों में बदूकें हैं। गणेश ने टिन और गूदड़ जोर से फेंक मारा उनकी ओर। रांका ने कहा, "देखो, मिट्टी का तेल लाया है।"

अब उसे और माफ़ नहीं किया जा सकता। जमा हुआ क्रोध भयानक चीत्कार में बदल गया और वे तेज़ी से आगे बढ़े। गणेश दौडता रहा, वे भी दौडते रहे। जगल में कोने की तरफ भागा गणेश। अँधेरे में गायब हो गया। वे कहते ही रह गये, "कहाँ गया? कहाँ गया, भाग गया? जंगल में घुस गया? रतनी और रूपा! तुम सामने की तरफ जमे रहो। मैदान में से भागते देखो तो मार गिराना। हम जगल में घुसकर देखते हैं।"

वे जगल में घुस गये। गणेश जाने कौन-से अजीब सकेत पर, हाँफते हुए लछिमा के घर के सामने जा पहुँचा। दूर पर बनी नयी झोपडी के सामने। कुडी खोल दी गणेश ने।

लछिमा उठ बैठी। खड़ी हो गयी। उसे जल्दी नींद नहीं आती। सामने गणेश खडा है। उसके कपड़ो से केरोसिन की गंध आ रही है।

"छोटे मालिक!"

गणेश ने सिर हिलाया। बोला, "वे लोग पीछा कर रहे हैं।"

"केरोसिन की गध? टिन लाये थे क्या? आग लगायी है? जगल में आग लगा दी है?"

"नहीं, नहीं, नहीं।"

गणेश ने लछिमा के मुँह पर अपना हाथ रख दिया। उसके चेहरे से धूर्तता बरस रही थी। उसने कहा, "टिन फेंक कर भागा हूँ। वे लोग

जंगल में घुसे हैं। मुझे तलाश कर रहे हैं।"

"अब ?"

"तू मुझे थोड़ी दूर तक पहुँचा दे। घर चला जाऊँगा।"

"तुम्हें पहुँचा देने पर क्या ये लोग मुझे यहाँ रहने देंगे ?"

गणेश ने पहली बार लछिमा को 'तू' कहकर सम्बोधित किया था। बोला, "तू यहाँ क्यों रहेगी ? जहाँ पहले थी, वहीं रहेगी। चल मेरे साथ। पक्का मकान, अच्छा खाना। बहू को तो अब लाऊँगा नहीं। एक शादी और कर लूँगा ?"

एकटक देखती रही लछिमा उसकी ओर। उसके बाद बोली, "आओ, बैठो।"

टोहकर हरोआ की कटार उसने निकाल ली।

"वह क्या उठा लिया हाथ में ?"

"इसे हाथ में रखना जरूरी है। तभी मैं तुझे बचा सकूँगी।"

"हाँ, हाँ। अरे तेरे घर में रहने से, तुझे दिखा पाने से, उस हाकिम के मुँह पर भी तो जूती पड़ेगी न ?"

"फिर सब ठीक हो जायेगा ?"

"काहे नहीं ठीक होगा ?"

लछिमा के दिमाग में अचानक विस्फोट-सा हुआ। विस्फोट ने लछिमा को पक्का इरादा दिया। अचानक वह हिंस्र हो उठी। लछिमा ने कहा, "मेरे अलावा अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। आज मैं तुम्हें एक बार फिर बचाऊँगी। लेकिन गणेश सिंह, तुम्हारे कहने के मुताबिक नहीं। अपना काम मैं अपने तरीके से करूँगी।"

"तू क्या...?"

लछिमा ने उसकी ओर कटार साध कर कर्णभेदी चीत्कार से रात के आकाश को चीर दिया। "कहाँ हो ? दौड़ो ! गणेश सिंह जंगल में आग लगाने आया है। मेरे घर में छिपा है। कहाँ हो ? दौड़ो, गणेश सिंह मेरे घर में है। कहाँ हो ?"

जो सोये थे, वे भी जाग गये। जो जंगल में घुसे थे, उन्होंने भी जवाब में हाँक लगायी। धीरे-धीरे एक-दूसरे को पुकारने की आवाजें जहाँ-तहाँ

सुनायी पड़ने लगीं। कोलाहल मच गया। उसके बाद उनकी चीत्कार 'हर्रं रं रं रं रं रं' आकाश की ओर आग की लपटों की तरह गूंज उठी। शोर जंगल की आग की तरह फैल गया। हथियारबंद लोगों के गले की चीत्कारें ज्वार की तरह चारों ओर ऊपर उठीं और फिर किनारों में टकराने लगी। लछिमा दरवाजे से हट गयी और उनके बीच अदृश्य हो गयी।

सरसतिया

सरसतिया थी, दुसाध की लड़की, दुसाध घर की बहू। बाढा गाँव की बहू। बीच-बीच में दो-तीन साल के अंतर से शादी का लगन लगता है। कैसे लग जाता है—यह दुसाध, गजू और रैदास वगैरह ही जानते है।

लगन लगता है और लगा ही रहता है एक पक्ष तक, कभी-कभी एक महीने तक। तब सभी गाय चराने वाले लड़कों, बच्चो, छोटी-छोटी लड़कियों की शादी हो जाती है। हालांकि शादी और ससुराल जाकर घर करने का कोई सम्पर्क नही होता है। शादी के समय बाप कर्ज-वर्ज लेकर शादी कर देता है। उसके बाद लड़का-लड़की बडे होते हैं। पहले का कर्ज़ चुकता होने से पहले ही अगला कर्ज चढ़ जाता है।

लड़की को कुछ-न-कुछ देकर ही ससुराल भेजना पड़ता है। इस तरह कर्ज़ बढता ही रहता है। बाप उधार लेता है। लड़का चुकता करता रहता है, और कर्ज भी लेता जाता है। उसका लडका भी उसका कर्ज चुकता करता है और खुद भी कर्ज़ लेता है।

शादी के मौके पर कर्ज़ सिर्फ़ लड़की का बाप ही नही लेता। जिन लोगों को लड़की को रुपये देने होते हैं, वे भी कर्ज लेते है।

यह कर्ज़ और ब्याज का साम्राज्य बहुत ही बडा और पुराना है। बाढा गाँव के अछूत बालिगो की प्रति व्यक्ति आय एक सौ रुपया सालाना या इससे भी कम है। लेकिन इस गाँव मे ब्याज पर चढी रक़म की संख्या दस लाख रुपये से भी ज़्यादा है।

लेकिन हाँ, बाढ़ा गाँव मे उधार-कर्ज राजपूत-मालिक देते है, कोई लाला या साहूकार नही। अछूत उनकी प्रजा, खेत-मजदूर और बेगारी हैं। इन्हें कर्ज़ देकर, ज़मीन से उखाड़ने का भी हक उन्ही का है।

सरसतिया इसी गाँव की लड़की है। गजमोती सिंह के पास ज़मीन

गिरवी रखकर सरसतिया के बाप ने बाढा गाँव के उधारचंद के साथ उसकी शादी की थी। सरसतिया काफी छोटी थी। उधारचंद ने ही शादी का सारा खर्च दिया था। दामाद की उम्र ससुर के समान है। शादी का खर्च वगैरा मिलने के बावजूद सरसतिया के बाप ने कर्ज लिया था।

सरसतिया के बाप का माथा चकरा गया था। उधारचद की उम्र बहुत ज्यादा है। लडका-लडकी नाती-पोतों से घर भरा है। पचास साल है उम्र। सात साल की सरसतिया से शादी हो रही है उसकी।

सरसतिया के बाप ने बूढे से शादी क्यों की ?

इसका कारण—उधारचद दुसाधों में टाटा-बिडला की तरह है। न उसकी जमीन है और न ही वह कोई मालिक-महाजन है। बहुत बड़ा बकरियों का रेवड है उसका। वह भी बाढा गाँव में नहीं, नवरतनगढ में।

स्वतंत्रता से पहले ही नवरतनगढ़ के राजाओं की हालत सुधर गयी थी। गद्दी पर भुजा सिह बैठा। ग्रामीण राजा, लेकिन था काइयाँ बुद्धि। जमीन बेचता रहा और लीज पर देता रहा। उधारचंद ने राजा के वकील की मदद से काफ़ी जमीन लीज पर ले ली।

बकरियों के लिए बड़ा-सा बाड़ा बनाया उसने। सभी हँसे। गाय नही, भैंस नही, बकरियाँ। उधारचद ने सभी की बातें सुनीं। लडकों की मदद से जमीन को लकड़ी और डालियों से घेर दिया। तीन बीघा जमीन घेरना आसान नही है। एक बीघा जमीन पर अलग से घेरा बनाया। वहाँ अपना घर बनाया। सब काम उसने वकील से उधार लेकर किया।

उसके बाद वह कुछ बकरियाँ लाता है। बकरियों के काम में ज्यादा खर्च नहीं है। मुनाफा ही मुनाफ़ा है। भुजा सिह फ़िलहाल धनी जोतदार है। 'राजा' उसके नाम के साथ लगा रह गया है, लेकिन अब वह राजा नहीं है। भुजा और वकील को बकरी भेंट करते हुए, विकासशील मडी नवरतनगढ़ में उसने अपनी स्थिति मजबूत कर ली है।

बच्चा बकरी, बूढी बकरी, दूध वाली बकरी बेच-बेच कर उधारचद कर्ज उतार देता है। लगता है, उसने वकील पर जादू कर दिया है, क्योंकि उधारचद दुसाध ही एकमात्र व्यक्ति है, जिसका कर्ज इसी जन्म में उतर गया है।

इसलिए सभी उसे मानते हैं, भुजा और वकील को शुरू में संदेह था कि उधारचंद नवरतनगढ में कोई और इरादा लेकर आया है।

वह जानता है कि छोटी जाति के लोगों का फलना-फूलना ऊँची जाति वाले बरदाश्त नहीं करेंगे। वह नीच जाति का दुसाध है। धोबी से कपड़ा धुलाना उसके लिए अपराध है। घर में लालटेन जलाने का मतलब दौलत का घमंड दिखाना है। पाँव में जूता और सिर पर छाता लेकर चलना भी अपराध है। जमीन खरीदना घोर अपराध। इससे भी छोटे-छोटे अपराधों पर दुसाधों, गजू, रैदास और धोबियों के घर जलते है, लाशें गिरती हैं, जमीनें छीन ली जाती हैं।

इसलिए उधारचंद ऊँची जाति के लोगों को खुश रखता है। भुजा और वकील उसके बारे में जो सोचते है, सभी वैसा ही सोचते है।

उन्होंने कहा कि उधारचंद आदमी अच्छा है। अपने हाथ का धुला कपड़ा पहनता है। दुकान पर आता है तो दूर खड़ा रहता है। पैसा देकर कहता है, "कृपा होय हुजूर, थोडा सौदा दे दीजिये।"

ऊँची जाति के लोगों को आते देखकर रास्ते से हट जाता है। गरमी में नंगे पैर चलता है, सिर पर गमछा लपेट कर। जब ऊँची जाति के लोगों को सौदा बेचता है तो अच्छा माल बेचता है। बीच-बीच मे भुजा और वकील को भी भेंट चढा आता है।

पूरन सोलह साल का है। खून में चंचलता है। वह अपने बाप से पूछता है, "क्यों इतना डरते हो? चोरी नही की, डकैती नही डाली।"

उधारचंद लड़के की ओर पीली और करुणा-भरी आँखों से देखता है। दूसरे लड़के उसकी दीन-हीन-कायर भूमिका का महत्व समझते हैं।

उसने कहा, "पूरन, तेरा खून गरम है।"

"कहना क्या चाहते हो, पिताजी?"

"इसी तरह रहना होता है, बेटा!"

"क्यों?"

"नहीं तो वे लोग नाराज हो जायेंगे। नाराज होने पर वे घर जलाते हैं, जमीन से उखाड़ते है, गोली चलाते हैं। पुलिस आकर हम लोगों को ही पकड़ती है।"

को नींद हराम हो जाती है। सोचता है, शायद अच्छी जमीन मिल गयी है। बस तभी से तिकड़म में लग जाता है कि कैसे जमीन छीनी जाये।"

"ढाई में खेती की जमीन ले सकते थे?"

"बेटे, देखने से लगता है कि धरती बहुत बड़ी है। यह जंगल, यह मैदान, यह आबादी, लेकिन मालिक कहाँ नहीं हैं? यही काम अच्छा है। इस काम में मालिकों से कुछ लेना-देना नहीं होता और फिर पैसा भी है।"

"तीनों लड़कों को यहाँ से क्यों हटा दिया? पूरन को यहीं रहने देते?"

"वकील उससे नाराज है। तुम लोगों का भला इसी में है। बस चलने लगेगी तो वहाँ भी बाजार लगने लगेगा। फिर वहाँ घूमा करना। थोकदार लारी में माल खरीदकर ले जायेगा।"

पूरन बोला, "लारी लेकर थोकदार यहाँ भी तो आता था। उसे तुम बकरी क्यों नहीं बेचते थे?"

"सभी बात क्या समझानी जरूरी है? वहाँ बैठकर थोकदार को माल बेचने और नकद रुपया लेने से भुजासिंह नाराज हो जायेगा।"

"तब अकेले सब-कुछ करोगे?"

"रांका को ले आयेंगे।"

"उसे ही सब-कुछ दे दोगे?"

"नहीं बाबा, सब तुम्हीं लोगों का है।"

ऐसे ही बुद्धिमान व्यक्ति उधारचंद ने अपने से बहुत छोटी उम्र की लड़की सरसतिया से शादी की। इस पर उसके लड़के उस पर बिगड़ जाते हैं। पूरन तो बाप को मारने की सोचने लगता है। अंत में तीनों भाई बाप के पास आते हैं। कारण है, पूरन का ससुर।

पूरन का ससुर बोला, "अकड़ दिखाने को जा रहे हो। क्या है तुम्हारे पास कहने को? उधारचंद समाज का नामी व्यक्ति है। यह उसका गाँव नहीं, काम की जगह है।"

"वहाँ जाकर विवाह करोगे?"

"क्यों नहीं करेंगे?"

"क्यों करोगे ?

"पिताजी शादी क्यों कर रहे हैं ? यह कलंक क्या कम है ? राँका जवान लड़का है। हमारे मामा का ही लड़का है और अब हमारे ही साथ रहता है। उसकी शादी करना भी उनका कर्त्तव्य है।"

"हाँ, हाँ, ठीक है।"

"उसी के लिए तुम्हारे बाप ने नाई भेजा था।"

"वह तो भेजना ही था। कौन गया ?"

"गनौरी हज्जाम।"

"अच्छा आदमी है। बूढ़ा है, पर है तेज़।"

"वह तो है ही। देखिये, गनौरी हज्जाम को बड़े-बड़े मालिक-महाजन भी चाहते हैं। राजपूत मालिकों के घरों मे भी वही शादी-ब्याह की बात चलाता है। लेकिन उसके साथ हमारे पिताजी की भी अच्छी पटती है।"

"तुम से और कुछ कहने की जरूरत नहीं है, बेटा ! गनौरी की बात कह रहे हो न। वह बदमतलबी नहीं है।"

"बदमतलबी ? यह क्या होता है ?"

पूरन का ससुर हँसा और बोला, "यह नहीं समझे ? पूरन भगत तो छोटा है, तुम लोग भी नहीं समझे ?"

"आप ही बताइये।"

"बेटे, उधारचंद ने पैसा कमाया है। उसने ऐसा कारोबार किया, जो कभी किसी दुसाध के दिमाग में भी नहीं आया था। खुद काम किया और तुम्हें भी खड़ा कर दिया। बकरी पालने में पैसा खर्च नहीं होता। बकरी पाल रहे हो, दूध बेच रहे हो, खस्सी बेच रहे हो, बकरी बेच रहे हो। अच्छे तो तुम्हीं लोग हो। जमीन मे नखरा उठाना पड़ता है। हम लोग थूकते है, फिर चाटते हैं। यह सब तुम्हारे बाप की ही हिम्मत से है।"

"सच है।"

"बदमतलबी मे गनौरी हज्जाम लड़की का लालच देकर रुपया ऐंठ सकता था। बाप के मन मे लड़कों के लिए जहर घोल सकता था। इसे ही बदमतलबी कहते। लेकिन गनौरी हज्जाम जहाँ है, वहाँ बदमतलबी नहीं है।"

"पिताजी शादी क्यों कर रहे हैं इतनी छोटी लड़की से ?"

"देखो बच्चो, उधारचद जब शादी कर रहा है तो जरूर इसके पीछे कोई कारण है। तुम लोग एक बात नही जानते।"

"कौन-सी बात ?"

"बाड़ा से जाते समय उसने कहा था, 'यदि ऐसा कुछ कर पाया कि, जिससे लड़कों का पेट पाल सका, तभी लौटूँगे। वरना भीख माँगने के लिए कही और चला जाऊँगा।' समझे ? वही उधारचद है।"

"ऐसा कहा था उन्होंने ?"

"हाँ भई, हाँ। उसके साथ मेरी कौन-सी रिश्तेदारी है कि बातें बनाऊँ ? मैंने सोचा था कि यह यह सब बातें तुम दुख के कारण कह रहा था। लेकिन जो भी हो, उसने वही कर दिखाया।"

"पता नही, अब क्या हो गया है ?"

"यह उनसे ही पूछो। तुम्हारे पिता बिना कारण के कुछ नही करते।"

"रौंका की शादी के लिए भेजा था गनौरी हज्जाम को। बाद में सुन रहे हैं कि खुद शादी करेंगे।"

"फिर गनौरी के पास ही क्यों नही जाते ?"

"नही, पिताजी के पास ही जाते हैं।"

पिताजी के पास जाकर उनको आश्चर्यजनक किस्सा सुनने को मिला।

दो

तीनों लडको को एक साथ देखकर उधारचद थोडा मुसकराया। लडकों को लगा कि जैसे वे पिताजी को पहली बार देख रहे हों। उनके पास पैसा है, शरीर में भी ताकत है। मेहनती आदमी हैं। उधारचंद बोला, "तीनों एक साथ ? क्या बात है ?"

"पिताजी ! आप फिर शादी कर रहे हो ?"

"हाँ, बेटे !"

"क्यों, पिताजी ? एक माँ से तीन लडकियाँ हैं, दूसरी से तीन लड़के। इस उम्र में फिर क्यो शादी कर रहे हो ?"

उधारचद ने राँका को आटा, दाल, मिर्च ले आने के लिए दुकान पर भेज दिया।

राँका के जाने के बाद उधारचद बोला, "गनौरी हज्जाम को कारण मालूम है और गजमोती सिंह के घर मे लक्ष्मी दामोदर की पूजा करने वाले ब्राह्मण को भी पता है।"

"वह क्या जानता है ?"

उधारचद बोला, "लड़की के माथे पर जन्म से एक लाल दाग है। गनौरी ने देखा तो उसने कहा कि ऐसा दाग तो होता नही। गनौरी ने बहुत-सी लडकियों का लगन कराया है। इस के बारे में मालिकों क घर मे बडे-बड़े ज्योतिषी-पंडितो की बात सुनी है उसने। लडकी का बाप गजमोती सिंह की खरीदी-प्रजा है। गनौरी ने चुपके से पुजारी ब्राह्मण को बुलाया।"

राँका वापस आ गया तो उधारचंद ने उसमे एक घडा पानी भर लाने को कहा, "हमारी डोरी-बाल्टी लेता जा।"

राँका के चले जाने पर उधारचंद ने बीड़ी सुलगायी। जोर से कश खीचकर बोला, "ब्राह्मण ने छुआछूत से बचते हुए दूर से लडकी का हाथ देखा, खूब अच्छी तरह से। उसके बाद लडकी को वहाँ से जाने के लिए कहा। गनौरी से बोला, 'देखो, भगवान का कैसा पक्षपात है।' "

"क्यो ? क्या बात है ?"

राँका पानी लेकर आता है। उधारचद उससे कहता है, "राँका ! तुम चूल्हा जलाओ। लड़के लोग खाना खायेंगे। पहले दाल चढा दो। आटा भी सान लो।"

लडको को लेकर घर से बाहर आ जाता है। बाडे से बाहर निकल कर एक बडे-से पत्थर पर जा बैठता है। बोला, "ब्राह्मण ने कहा है कि भगवान ने स्वयं लक्ष्मी को दुसाध के घर मे भेजा है। इस लडकी को सिर्फ लडका होगा और लड़का भी कैसा—राम जैसा लड़का, बलराम जैसा लडका, लछमन जैसा लड़का। ऐसी माँ के लड़के भू-स्वामी होते हैं।"

"और क्या कहा ?"

"गनौरी ने हँसकर कहा, 'दुसाध की लड़की है, देवता! इसका लड़का भू-स्वामी कैसे बनेगा?' इस पर ब्राह्मण बोला कि 'पहले भी हुआ है और आगे भी होगा।'"

"इसका क्या अर्थ?"

"ब्राह्मण बडे घरों की बडी बातें जानता है। पहले के जमाने में राजाओं के नाई वगैरह इसी तरह भगवती गुणों वाली लडकी ढूँढते थे। जहाँ भी मिलती, वहीं से राजा ले आते थे उसे। लड़की हो या बीवी, उठा लाते थे। एक-दो लड़के हो जाने पर लौटा देते थे। अब कहाँ का राजा और कहाँ का जमींदार, और किसका लड़का!"

पूरन भगत धीरे-धीरे बोला, "पिताजी, यह सब तो होता है। हमारा क्या आता-जाता है इससे?"

"तब मैंने सोचा कि ऐसी लडकी की शादी रौंका से क्यों करें? लड़की के बाप को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था। भगवती लक्षणों वाली लडकी बरसो मे एक ही मिलती है। सोचा, जमीन हमारे पास रहती नहीं। रहती तो कितना अच्छा होता। मैंने गनौरी से कहा, 'तीनों लड़कों की शादी हो गयी है। बहुएँ हैं। शादी मैं करूँगा।'"

"तो यह बात है?"

"हाँ, यही बात।"

"आप पागल हो गये हो, पिताजी!"

पूरन भगत गहरी साँस छोड़कर बोला, "अकेले रहते हो। कुछ रुपया बना लिया है। गाँव-घर से दूर रहते हो। राजा-जमींदार के देश मे ये सब बातें हवा मे तैरती है। किसी गाँव मे ऐसी बात हमने तो सुनी नहीं?"

फिर कहने लगा, "कालिया दुसाध की लडकी सरसतिया भगवती लक्षणों वाली लड़की है, ऐसी बात कभी किसी ने सुनी है?"

"मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ?"

"कालिया को कितना रुपया दे रहे हो?"

"चालीस रुपया।"

"चालीस रुपया मिलने पर मैं अभी महादेव-लक्षणों वाला भरत दुसाध

बन सकता हूँ।"

पूरन बोला, "मेरे ससुर को कुछ दिया है?"

"पान के लिए दो रुपया।"

"इसीलिए वह तुम्हारे गुण गा रहा था।"

भगत बोला, "ठीक है। भगवती-लक्षणा लड़की है। उसकी शादी राँका से क्यों नही कराते?"

इस बात पर उधारचन्द गरम हो जाता है। उसका लड़कों के साथ काफ़ी झगड़ा हो जाता है। अंत मे कहता है, "निकल जाओ सभी!"

पूरन बोला, "जहर देकर तुम्हारी बकरियों को मार डालेंगे।"

"क्यों, मैं तुम लोगों का खाता हूँ या तुम्हारा दिया पहनता हूँ?"

"तुम्हारे कारण लोग हम पर हँसेंगे।"

"तो वहाँ से हटा देंगे तुम लोगों को।"

"जो इच्छा हो करो।"

तीनों लड़के चले जाते है। राँका दौड़ते हुए उनके पीछे आया और बोला, "चले क्यों जा रहे हो? मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

"नही, पिताजी हमे नहीं चाहते।"

"यह जगह बहुत खराब है।"

"तुम समझाओ जाकर।"

पूरन बोला, "तू भी चल।"

"कहाँ जायेंगे?"

"जहाँ हम लोग जा रहे हैं।"

गुस्से में लड़के तेज चलने लगते है। कुछ देर बाद पूरन बोला, "अँधेरे में कहाँ जायेंगे? चल, तोहरी चलें।"

"यहाँ कौन रिश्तेदार है?"

"चलो भी।"

पूरन प्रसाद महतो को जगाता है। प्रसाद उनकी बातों को सुनकर पहले खूब हँसता है। फिर कहता है, "लेकिन उधारचंद यह ठीक नही कर रहा है। यदि मैं उससे कहने गया तो वह उलटा पड जायेगा।"

पूरन बोला, "वह वकील हरामी है।"

"उसी के दामाद ने तुम लोगों की ज़मीन बदोबस्ती करा दी है।"

पूरन कुछ झिझक रहा था। बोला, "प्रसाद जी!"

"बोलो।"

"क्या वह उस जमीन को छीन सकता है?"

"क़ानूनी तौर पर नही। वैसे तुम लोग जानते हो कि किन हथकंडों से ज़मीन हथियायी जाती है।"

तीनों भाई एक-दूसरे को ओर देखने लगते हैं।

"पिताजी ने ऐसा क्यों किया? बकरियाँ पालकर पिताजी ने दो-चार पैसे जोड़े हैं, वरना दुसाध कब पेट-भर खाता है या अपनी जमीन की फसल घर में लाता है?"

"क्या कहा है पिताजी ने?"

"सरसतिया भगवती-लक्षणा लड़की है।"

"हट बेवकूफ! भगवती-लक्षणा लड़की?"

प्रसाद समझ नही पाता कि क्या कहा जाये! कुछ देर सोच-विचार कर बोला, "क्या कहूँ? तुम्हारे पिताजी बैठे हैं नवरतनगढ़ में। वहाँ अभी भी भुजा सिंह के घर की हवा बहती है। बहुत ही ख़राब हवा। अरे, मैंने कभी किसी भगवती-लक्षणा लड़की के बारे मे नही सुना।"

"किसी ने भी नही सुना।"

पूरन बोला, "अब क्या करें?"

"तुम कर ही क्या सकते हो? इस तरह की शादी ग़ैर-कानूनी होती है। ग़ैर कानूनी शादियाँ फिर भी हो रही हैं।"

"आप कुछ नही कर सकते?"

"मैं अगर नवरतनगढ़ गया तो भुजा सिंह मुझे मार डालेगा।"

"ऐसा नही हो सकता है!"

प्रसाद निर्मल हँसी हँसता हुआ बोला, "मार डालने पर भुजा सिंह को सज़ा हो सकती है। मैं वहाँ नही जा पाऊँगा, फिर भी एक बार उधारचद से मिलने की इच्छा है। अब बोलो, इस समय तुम लोग क्या खाओगे? मेरे विचार से, पूरन, सत्तू और गुड़ ख़रीद लाओ।"

सत्तू, गुड़ और पानी पीकर तीनों भाई सो गये।

सवेरे लौटते समय वे लोग सोच-विचार करते रहे। ज्यादा देर तक सोचते रहना उनका स्वभाव नहीं है। उन्हें लगता है कि उनका बाप उनका सब-कुछ छीन सकता है।

बकरियाँ पाल-पोस कर हालत सुधारने की, बात बार-बार लगता है, सम्भव नहीं, खून में है खेती करना।

भगत बोला, "बेच देते हैं सब-कुछ। चलो, नाडा लौट चलें।"

"फिर ?"

"मालिक की जमीन पर मजदूरी करेंगे।"

"अब काम नहीं देगा।"

"फिर क्या करें ?"

पूरन साँस छोड़कर बोला, "अभी जो कर रहे हैं वही करें। कोई गड़बड़ी की संभावना होने पर सोचेंगे।"

"यह काम क्या कर पायेंगे ?"

"पिताजी तो कर पाये।"

भगत बोला, "आखिर भागना ही पड़ेगा।"

जब तक प्रसाद नवरतनगढ़ जाने की सोच ही रहा था, तोहरी के बाज़ार में उधारचंद उसे मिल गया। एक सोलह साल के लड़के के साथ ख़रीदारी कर रहा था।

लड़कों की बात उधारचंद ने खुद ही चलायी। "प्रसाद जी, आपसे क्या कहें, लड़के बड़े नालायक निकले।"

"क्यों ? प्रसाद तो पसंद करता है।"

"हाय, हाय ! प्रसाद जी को कैसे मालूम ! लड़के किन-किन मामलों तक बाप से जवाब-तलब कर सकते हैं ?"

"बात क्या है ?"

गरीब के साथ प्रसाद जी का यह कैसा मजाक है ! सभी को मालूम है, उस दिन उधारचंद के लड़के झगड़ने आये थे। बाप का अपमान करके तोहरी में प्रसाद जी के पास रात बितायी।

"यह भी सभी को मालूम है।"

"इतनी रात वे लौटते कैसे ?"

"खैर। लेकिन अपमान क्यों किया ?"

प्रसाद यह सब कहना नही चाह रहा था। उधारचंद जैसे ज्ञानी होते हुए क्या वह यह काम अच्छा कर रहा है ?

"किस काम की बात कर रहे हो ?"

"भक्त के लडके की उम्र सात साल है। उधारचंद अपने पोते की उम्र की लड़की से क्यो शादी कर रहा है ?"

"करना क्या ग़ैर-कानूनी है ?"

"ग़ैर-कानूनी तो है ही। क्योंकि क़ानून मे लिखा है, लड़की की शादी चौदह साल की उम्र से पहले करना अपराध है। यह बात छोड़ देते है। गाँव-घर मे छोटी उम्र मे शादी होती है। लेकिन उम्र में इतने फ़र्क पर उस लडकी से शादी करना पर क्या उसके प्रति अन्याय न होगा ?"

"कैसा अन्याय ? उधारचद मर जाता है तो वह दूसरी शादी कर सकती है। जाने दो यह सब बातें। लेकिन लड़कों ने अपमान तो नहीं किया। वैसे उनके मन को चोट लगी है।"

"रहने दो। उधारचद बहुत बुरा आदमी है। बुरे बाप का मुँह भी देखने की जरूरत नही है। जो उनका जी चाहे करें।"

गुस्से से बड़बड़ करता हुआ उधारचद चला जाता है। प्रसाद सेवा संघ के दफ़तर मे लौट कर देखता है। शिड्यूल्ड कास्ट आफ़िसर के दफ़तर का उसका दोस्त वीरेन्द्र खटिया पर लेटा हुआ है। वीरेन्द्र बोला, "भइया, एक रिपार्ट देनी होगी। तुम्हारी मदद की जरूरत है।"

"मेरी मदद की ?"

"तुम घर मे ताला क्यो नही लगाते ?"

"क्या है घर मे, जो ताला लगायें !"

"चलो, पहले कुछ खाते हैं। पिछला डी० ए० मिला है।"

"चलो।"

दोनों खाना खाते हैं। रिपोर्ट भी तैयार होकर मिल गयी। प्रसाद बोला, "तुम्हें एक मजेदार कहानी सुनाता हूँ।"

"बाद में। अभी चलो, पान खाते हैं।"

पान खाने के बाद दोनों कमरे मे आकर बैठते हैं। प्रसाद चिल्लाकर

किसी से बोला, "अरे लछमन, घर मे मेहमान आये है। एक चारपाई दे जा। खटमल न हों उसमे।"

लछमन खटिया दे जाता है। बोला, "खटमल कहाँ रखे हैं? कल ही गरम पानी डाला है।"

वीरेन्द्र बोला, "चलो, अपनी कहानी सुनाओ अब।"

प्रसाद उसे उधारचद और उसके लडको वाली कहानी सुनाता है।

"यह कोई कहानी है?"

"उधारचंद क्या दुमाघ हो गया है?"

जवाब में वीरेन्द्र बोला, "सतोष, मेरे भाई, ने इस बार मुझे फँसा दिया है। वह खुद भी मरेगा, मुझे भी साथ मारेगा।"

"क्यों? क्या हुआ?"

"एक साल जेल मे रहने के बाद निकला है। सोचा था कि अब ठंडा हो गया होगा। इसी साल इकहत्तर मे बाहर आया है। यूनियन के लड़ाई-झगड़े के सिलसिले मे जेल गया था।"

"छात्र यूनियन की मार-धाड़ मे जेल गया था क्या?"

"नहीं। मंत्री के भतीजे को पीट दिया था। सहकारिता-मंत्री के भतीजे को। वह स्वास्थ्य-मंत्री की भांजी का पति है। साले का एक हाथ बेकार हो गया है। कॉलेज तो कब से बंद है।"

"फिर?"

"जेल से निकलते ही हीरो बन गया। मंत्री का भतीजा बदले की ताक में था। संतोष की लाश गिराने की सोच रहा था वह। मैंने उसे आगरा भेज दिया। मालूम है, उसने क्या किया?"

"क्या किया?"

"वह आगरा नही गया। हरिपुरा मे जमीन के लिए भूमिहीन किसानों और जमीन-मालिकों के बीच लडाई चल रही है। उसी लड़ाई में कूद पड़ा।"

"हाँ, हाँ, गिधानी मे लड़ाई चल रही है।"

"जी हाँ!"

"बहुत पुलिस लगी है वहाँ।"

"अब क्या किया जाये? मेरी नौकरी सरकारी है, जरूर चली जायेगी। ठीक है, जो रुपया मिलेगा उससे दुकान करेंगे। लेकिन वह जरूर जान से मार डाला जायेगा। उसकी शादी हो चुकी है। बहू अभी बच्ची है।"

"कुछ पता चला कि क्या कर रहा है?"

"नहीं। वैसे करने को कुछ भी कर सकता है। जेल में कामताप्रसाद के दल के लोगों के साथ था। उन्होंने ही उसे बहकाया है। मैंने समझाया कि बेशक तुम्हारी बात ठीक हो सकती है। जिसके पास जमीन नहीं है, छीन ली गयी है, उसे जमीन मिलनी चाहिए, चलिए मान लेते है। लेकिन उचित काम करने पर मार तो खानी पड़ती है।"

"चिंता की बात है।"

"जानते हो, आज यह बात मैंने क्यों कही?" अचानक वीरेन्द्र बोला, "संतोष, जो इस तरह की बातें करता है, क्या वह खुद उनका अर्थ समझता है? कहता है, 'मैं डरपोक हूँ।' पिताजी नहीं है। इसलिए हमेशा उसकी सुनता रहा हूँ। मानता हूँ कि वह बुद्धिमान है। ठीक है। उसने इंटर पास किया है, ननिहाल की दुकान पर आटा तोलते हुए। इस-उस को मक्खन लगाकर, हाथ-पाँव जोड़कर उसके लिए नौकरी जुटायी। इस नौकरी मे अब सात साल हो गये।"

"हाँ, मुझसे भी सभी का परिचय है।"

"याद है न?"

"मुझे भी एक पियन की नौकरी दे रहे थे।"

"हँसो नहीं प्रसाद, इस जमाने मे पियन भी कम नहीं होता। हमारा पियन हमें रुपया उधार देता है। सूद पर रुपया उधार देता है और जमीन ख़रीदता जाता है।"

थोड़ी देर रुककर फिर कहने लगा, "सुखी थे। माँ को भी तसल्ली थी। बहन-भाई की शादी की। कच्ची ईंटों का मकान था। फिर भी मकान बनाया राँची में। ताऊजी ने दया करके पिता जी के हिस्से की थोड़ी-सी जमीन दे दी। संतोष कॉलेज मे पढ रहा था। बेशक अपने वजीफ़े के रुपये से ही। मुझे लगता है कि मैंने उसके लिए काफी किया

है।"

"सो तो तुमने किया ही है।"

"लेकिन संतोष कहता है, 'मैं भीतर से नौकर बन गया हूँ। उसे भी नौकर बनाना चाहता हूँ। क्रांतिकारी यह सब नहीं करते।' "

"क्या वह यह सब बातें समझता है?"

"उसे यहाँ रखा तो यह लड़का उसे मार देगा। उस लड़के का एक हाथ नहीं है। पढ़ने-लिखने में काला अक्षर भैंस बराबर। कैसे पास हुआ, वही जाने। लेकिन अब उसकी बस और टैक्सी है। रेलवे में ठेकदारी का लाइसेंस है। उसके नीचे चार सौ आदमी काम करते हैं। कितनी मुश्किल से मैंने उसके भाई को आगरा भिजवाया था। उसी के ममिया ससुर के पास। लेकिन अब वहाँ न जाकर इधर बैठ गया है। मरेगा भी वहीं।"

"मरेगा ही, ऐसा क्यों सोचते हो?"

"पुलिस वहाँ संतोष के लिए नहीं गयी है। गयी है कामताप्रसाद के लिए। कामताप्रसाद मुसाहरी आंदोलन से भागा हुआ है। भागा हुआ तो है, लेकिन उधर लड़ाई भी चला रहा है।"

"लौटा पाओगे, लगता नहीं है।"

"नहीं। ख़ैर जाने दो। मैं कुछ कहना चाहता था आपसे।"

"कहो।"

"तुम जो कह रहे थे, क्या नाम है?"

"उधारचंद दुसाध।"

"भैया, वह हमारे वर्ग से निकल गया है।"

"कैसे?"

"वह अब दुसाध नहीं रहा। क्योंकि अब वह खेत-मजदूरी, मालिकों की बेगार, इन सबके बीच नहीं है। अपना देश छोड़कर इधर चला आया है। कारखाने या किसी कोयला खान में जाता तो उसे एक समाज मिलता। वहाँ कुली बनता। गाँव में मालिकों का जुल्म और वहाँ ठेकेदारी का जुल्म। लेकिन यहाँ वह अकेला है।"

"यह बात सही है।"

"नवरतनगढ़ में रुपया-पैसा, मालिकाना हक, सब राज-परिवार का

है, उच्च वर्णो का है। वह अकेला है। एक नया काम करके कुछ रुपया इकट्ठा कर लिया है उसने। पैसा थोडा ही है, पर उसके लिए बहुत है। उसकी मानसिकता बदल रही है।"

"हाँ ! गाँव मे रहता तो उसके साले का लडका, उसके परिवार का सदस्य होता। यहाँ वह उसका नौकर बन गया है।"

"नौकर ! हाँ, वही जो मैंने बताया। गाँव मे रहता तो सभी के साथ मिलकर रहता। सामाजिक ज़िम्मेदारी मे रहता। यहाँ वह जडहीन, अपने वर्ग से अलग, एक विचित्र स्थिति मे है।"

"फिर यह शादी का मामला ? भगवती-लक्षणा लडकी ?"

वीरेन्द्र साँस छोडकर बोला, "एक तो भारतवर्ष और फिर राजा-जमीदार। ऐसी जगह इतने अधे सस्कार और गदे विचार होते है कि घुटन-भरा वातावरण कभी साफ़ नही होता। सभी मे कुछ-न-कुछ सस्कार रहते है। इन इलाकों मे हालत और भी खराब है। यहाँ कोई काम सही नही। ऐसी बातो मे ही लोगो का मन फँसा रहता है।"

"वह तो अछूत है, दुसाध है।"

"यहाँ के राजा को शायद नरबलि मे विश्वास है। इसी कारण उसके सरक्षण मे पलने वाले का भगवती-लक्षणा में विश्वास। गाँव में रहता तो इन बातो की तरफ ध्यान न जाता। अपने काम मे लगा रहता। लेकिन यहाँ समय मिलता है और अलौकिक बातों पर विश्वास करने का रुझान ।५५ कमज़ोर दिमाग के आदमियों में होता ही है।"

"क्या किया जाये ? शिक्षा से यह सब दूर होगा ?"

"भैया, कौन-सी शिक्षा से ?"

"अ-आ-क-ख या एक-दो-तीन से।"

"भैया, तुम्हारी भारत सरकार प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर सकती है। सरकार इसे लेकर हो-हल्ला कर सकती है, लेकिन रोज़ा-ओझा, डायन-दैवशक्ति को न मानने की शिक्षा नहीं दे सकती। प्राथमिक शिक्षा ! सवर्ण हिन्दू मास्टर, अनुसूचित जातियो के बच्चो को स्कूल में घुसने नही देता। ऐसी है प्राथमिक शिक्षा !"

प्रसाद हँस पड़ता है।

"हँसते क्यों हो ?"

"संतोष ने तुम्हारी मानसिकता बदल दी है।"

"संतोष ने ? नहीं-नहीं ! धन्यवाद जनाब, नहीं। क्या मैं इस विभाग में काम नहीं करता ? सरकार की ऊटपटांग योजना की जय हो, जय हो कहते हुए और दो-चार आदमियों को लांघते हुए विकास की परिकल्पना में दो नम्बरी अधिकारी नहीं बना हूँ ? दौरे पर नहीं जाता हूँ ? अपनी आँखों से देखता नहीं हूँ क्या ? मैं ख़ुद अनुसूचित जाति में हूँ। और अनुसूचित जनजातियों और आदिवासियों के विकास के नाम पर कितना रुपया बरबाद होता है, क्या यह मैंने नहीं देखा है ?"

"तो फिर ?"

"जो भी कह रहा हूँ, अपनी आँखों से देखकर कह रहा हूँ। संतोष जैसी सुविधा तो मुझे नहीं मिली। मेरी मानसिकता पढ़ने से नहीं बनी है। शान्ति की जरूरत क्यों है, यह नहीं समझेंगे वे। मैंने जो देखा है, जो देख रहा हूँ, देखता रहता हूँ...।"

वीरेन्द्र इतने समय बाद पहली बार एक सिगरेट जलाता है। फिर डरपोक बेवकूफों जैसी हँसी हँसता हुआ बोलता है, "बहुत इच्छा थी कि दुबारा बी० ए० पास कर लूँ, एम० ए० पास कर लूँ। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ।"

"घर में खाने वाले कितने हैं ?"

"माँ, बीवी, लड़का, संतोष की बीवी। संतोष तो...।"

"अब सो जाओ।"

"हाँ। बहुत बातें कर लीं।"

प्रसाद बोला, "फ़ुरसत मिलते ही चले आना।"

"तुम्हें कभी और कुछ बनने की इच्छा नहीं होती ?"

"नहीं ! मैं तुमसे भी ज्यादा नजदीक रहकर जीवन का नग्न रूप देखता हूँ।"

अगले दिन वीरेन्द्र चला गया। प्रसाद को उधारचंद की समस्याएँ समझा गया। उधारचंद अकेला, अपने वर्ग से कटा व्यक्ति है।

आम तौर पर सभी दुसाध या गंजू या अनुरूप जातियों की मूल समस्याएँ

एक जैमी हैं। उधारचद तैरता हुआ, जड़ से उखड़ा तत्व है। साथे लगने पर सरसतिया और उधारचद की शादी हो जाती है। उधारचद के हाथ लड़की देने की खुशी मे सरसतिया का पागल बाप अपनी ज़मीन का टुकड़ा गजमोती के पास गिरवी रखकर कर्ज़ लेकर, खुशी से आत्मविभोर होकर, निस्व. होकर एक रंक बन जाता है।

तीन

शादी से सरसतिया जैसी औरतों की किस्मत नही बदलती, उसकी भी नही बदली। लड़की की शादी करके कालिया दुसाध दो-चार दिन खूब कूदता-फांदता रहा। बूढ़े से शादी की है, ठीक किया है। उधारचंद ने शादी का ख़र्चा दिया है। गौने का ख़र्चा भी उसी का है। बीवी बोली, "अब क्या करोगे ?"

"क्यो ?"

"खायेंगे क्या ? काम कहाँ है ?"

"मालिक है न ?" ठंडे स्वर मे बोला कालिया। जैसे कि मालिक के दरवाज़े पर धरना देने की ज़रूरत ही नही है उसे।

पत्नी गाल पर हाथ रखकर बोली, "हो धनुवा के बापू, तुम्हारा दिमाग फिर गया क्या ?"

"उधारचद ने छोटी लडकी के साथ शादी की है तो इससे तुम्हारा या मेरा क्या बिगडता है ? समय पर अपनी बीवी ले जायेगा। मालिक न हो तो हम खायेंगे क्या ? कितनी हैसियत है तुम्हारे उधारचंद की ? हमें भी पालेगा ?"

उसी समय तुरन्त कालिया की पत्नी मालिक के घर गयी। गजमोती सिंह की बीवी मर चुकी है। बूढा है, लेकिन एक नम्बर का हरामी है। वह अभी भी अपनी मुसलमान प्रेयसी के पास जाता है। प्रेयसी धर्मपरायण है। कहती है, "तुम कोई और देख लो। मै धर्म-कर्म मे लगने वाली हूँ।"

लेकिन गजमोती उसकी नही सुनता। उसके कंधे पर सवार है वह

सिंदबाद के बूढ़े की तरह।

गजमोती सिंह के परिवार की मालकिन उसके लड़के सागर सिंह की बीवी है। कालिया की बीवी ने जाकर उसी के पास धरना दिया। सागर की बीवी ने अप्रसन्नता के साथ एक खोंची मडुवा उसे दिया। बोली, "काम? क्या काम करेगी? घर का काम तुझ से नहीं होगा।"

"बाग-बगिया की झाड़ू-सफाई करूँगी।"

"उस काम के लिए आदमी है। बर्तन-वर्तन के लिए आदमी चाहिए। लेकिन जिसके हाथ का पानी चले, ऐसा कोई चाहिए।"

"मालिक से थोड़ा किरपा करने को कहिये।"

नथुनी बनवाने को लेकर सागर की बीवी का मिजाज पहले से ही ख़राब था। फटकार कर बोली, "मालिक को क्या कहूं? मैं इस मकान में दासी-बाँदी हूँ। कौन मेरी सुनेगा?"

कालिया की बीवी बोली, "यह कैसी बात है, माँ? तुम तो घर की लक्ष्मी हो। तुम्हारे आने से यह गिरस्थी खिल उठी है। बड़े घर की लड़की हो तुम। तुम्हें कौन दासी बना सकता है?"

सागर की बीवी एक खोंची मंडुवा और देती है। मडुवे की पोटली घर में लाकर वह बोली, "एक जून का बदोबस्त कर लायी हूँ।"

"देख रहा हूँ।"

अगले दिन कालिया नवरतनगढ गया। क्या कहूँगा, मन-ही-मन उसने सोच लिया था—इतनी छोटी उम्र की लड़की से तुम्हारी शादी क्यों करायी है? तुम्हारे पास बकरियाँ हैं। पैसा है। बुरे समय में खाने को कुछ मिल सकेगा, यही सोचकर यह शादी की थी। अब कुछ निकालो।

उधारचंद ने उसकी गर्मजोशी पर ठंडा पानी डाल दिया। कालिया ने तो बातों को अच्छी तरह से जमा कर पेश किया था। कहने लगा, "जमीन गिरवी रख दी, इस समय मजदूरी भी नहीं है। वैसे कटाई का समय आ रहा है। इस समय अभाव ज्यादा है। पेट भरने को भी कुछ नहीं है।"

सुनकर उधारचंद बौखला उठा, "शादी का खर्चा सारा मैंने दिया है। किस अकल से तुम जमीन गिरवी रखने गये थे? मैंने तो तुमसे नहीं

कहा था ?"

"अरे तुम्हारे जैसे मानी व्यक्ति का मान रखने के लिए ...।"

"जो भी तुमने किया है, अपनी अक्ल से किया है। अब मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"तुम तो नाराज हो रहे हो ?"

"मजदूरी का काम वैसे भी इस समय खेतों मे नही रहता है। पेट नही चलता है। देखो, मैंने तुम्हारी लड़की से शादी की। इस तरह का अभाव तुम्हारे घर में हर साल रहेगा। साल मे नौ महीने खाना नहीं जुटता तुम्हारे यहाँ। लडकी तो मेरे यहाँ बाद मे आयेगी। जब तक वह नहीं आती है तो क्या मुझे साल में नौ महीने इतने सारे लोगों के लिए खाना जुटाना होगा ? मैं क्या कोई मालिक-महाजन हूं ?"

कालिया एकदम पिचक गया। रांका के हाथों की बनी तोरी की सब्ज़ी और रोटी भरपेट खाकर भी मन ठीक नही हुआ। अगले दिन उसे ख़ाली हाथ विदा नही किया उधारचंद ने। कुछ मड़ुवा दिया और दो रुपये दिये। फिर बोला, "आगे से नही दे पाऊँगा।"

"सरसतिया भी बिना खाये रहेगी ?"

"दूसरी लड़कियों के मामले में गौना न होने तक क्या दामाद सुसराल वालो का खर्चा भरता है ? यह कौन-सा नया हिसाब लगाया है तुमने ?"

घर लौटकर कालिया ने मड़ुवा और एक रुपया पत्नी को सौंप दिया, फिर बोला, "एक रुपया मैं पास रख रहा हूँ। तूने ठीक कहा था। सरसतिया की शादी उस बुड्ढे से न करते तो अच्छा ही था।"

कालिया की बीवी सीधी समझ की औरत है। बोली "अब छोड़ो यह बातें। मालिक के पास जाओ। इतने दिनो तक खरीदी प्रजा रहे है। फसल काटेंगे, मजदूरी लेंगे। हमारा भी तो कोई हक है।"

सागर सिंह बोला, "मेरे पास क्यो आये हो ?"

"किसके पास जायें, मालिक ?"

"गये तो थे दामाद के पास ?"

"कुछ भी नही दिया उसने, मालिक !"

"इस बार शायद तुम्हें न ले पाऊँगा। हमारे यहाँ पहले से ही खेत-

मजदूर बहुत है ।"

"ऐसा क्यों, हुजूर ?"

"मालूम नहीं कि क्या हो रहा है दुमका-पूर्णिया में। पुलिस मार-मारकर सारे बदमाशों को गाँव से बाहर निकाल रही है। सब इधर-उधर छितरा गये है। दो-चार पैसे दो तो सारा धान काटकर उठा देंगे।"

"काम नहीं मिलेगा, मालिक ?"

"नहीं-नहीं, तुम लोग बहुत हरामी हो। कामचोर भी। चार आना रोज़, एक वक़्त नाश्ता, एक पाव सत्तू दूँ तो काम करोगे ?"

"मालिक, हर साल आठ आना देते हो और आधा सेर सत्तू। इस बार ऐसा क्यो ?"

"आधे ख़र्चे पर मजदूर मिल रहे है इस बार !"

यह बुरी ख़बर बाढा गाँव के खेत-मजदूरो मे फैल जाती है। तब उन्हे याद आती है अन्य दुसाध, गजू, भगियो की बात। गणेश सिंह के अत्याचार से बौखला गये थे। ज़मीन से उखड़कर वे पहले जगल के बाहर, फिर जगल के भीतर चले गये थे। गणेश को तो उन लोगों ने मार ही डाला था। यह लम्बी दास्तान है। उस समय इसी प्रसाद ने उन्हे काफ़ी मदद की थी।

कालिया बोला, "प्रसादजी से कहे।"

"क्या कहोगे ?"

"वह क्या कहेगा, हम जानते हैं।"

कालिया और दो लोग प्रसाद के पास जाते है। प्रसाद बोला, "तुम लोग एकजुट हो जाओ। कह दो 'जितने दिन वे नहीं आते, उतने दिन हम लोग काम करते है।' यदि तुम उनकी निर्धारित मजदूरी मान लेते हो...।"

"अब चार आने मे आजकल क्या मिलता है ?"

"जानता हूँ। और यह भी जानता हूँ कि सरकारी रेट तो दूर रहा, जो देते रहे है वह भी नहीं देगे। एक बार रेट घटने के बाद फिर नही बढ़ता।"

"फिर क्या करें ?"

कालिया का लड़का धनुआ बोला, "इसीलिए गाँव से सब लोग उपड़ रहे हैं। पहले हमे काम मिल जाता था, पर अब बाहर से खेत-मजदूर आ रहे है।"

"हाँ, आ तो रहे हैं।"

"उनके देश-गाँव मे धान कौन काट रहा है ?"

"क्या पता ?"

"तो अब क्या किया जाये ?"

"तुम लोग जाओ। मैं देखता हूँ। परसो आना।"

इस समय प्रसाद अकेला पड गया है। कांग्रेस सरकार का शासन है। 'भूमि-मज़ूर सहाय समिति' जैसी दो-एक स्थानीय सस्थाएँ इस वक़्त भूमिगत हो गयी हैं। इस वक्त जो भी खेत-मजदूरो के स्वार्थ देखेगा, पकड़ा जायेगा। क्या किया जाये ?

प्रसाद सडक के ठेकेदारों के पास जाता है। उनसे बहुत-सी बातें करता है। आख़िर मे एक बात पक्की हो जाती है।

प्रसाद कालिया वग़ैरा से कहता है, "ढाई के उस तरफ़ बस के लिए जो रास्ता बन रहा है, वहाँ मिट्टी काटने और पत्थर डालने का काम है। तमाम मर्द लोग वहाँ चले जाओ। एक रुपया रोज की मजदूरी है। खाने-पीने को कुछ नही। लगता है कि सोलह के क़रीब लोगो को काम मिल जायेगा।"

"हम तीस लोग है।"

"नाम बोलो।"

प्रसाद सबके नाम लिख लेता है। फिर कहता है, "इस दल मे एक औरत शामिल कर लो। और दूसरे दल मे भी एक औरत रख लेना। पहले दिन सोलह लोग जाओ, दूसरे दिन बाकी के सोलह।"

"औरतें ?"

"भई, इससे अधिक मुझसे नही होगा।"

गजमोती सिंह ख़ुश होता है। भूखे दुसाध लोग अंत में शायद ख़ुराकी पर ही धान काट देंगे। लेकिन जब उसे पता लगता है कि प्रसाद की कोशिश से वे सड़क बनाने के काम पर गये हैं तो वह बहुत नाराज होता

है।"

वह सागर सिंह से कहता है, "गणेश सिंह ज्यादा ही सख्ती करने गया था। खुद भी मरा और गाँव से मेहनत-मजदूरी करने वाले सारे लोगों को भी भगा गया! तुम्हारी बातों मे आकर मैंने उनसे खटपट की। अब झमेला खड़ा हो गया!"

"झमेला क्या है? आप मेरे ऊपर छोड़ दीजिए।"

"क्या करोगे तुम?"

"देखते हैं।"

समय पर सागर सिंह नाथू सिंह के पास जाता है। नाथू और चन्द्रभान बोले, "इतने परेशान होने की क्या बात है? नवरतनगढ के भुजा सिंह के वकील का दामाद अमीन है न और उसी का भाई कुली-मजदूर जुटाने वाला ठेकेदार है। वह भाई खेत-मजदूर ला रहा है।"

"रेट क्या है?"

"और कितना? वही आठ आना! चार आना उनका, चार आना ठेकेदार का। इस तरह वह उनसे काम करा रहा है। अत मे कोयला खानों मे पहुँचाकर चला जायेगा।"

"खैर। गाँव के दुसाधों को लेने से सालो का दिमाग चढ जाता है। देंगे क्यो नही? ठेकेदार को देंगे।"

इसी तरह सारी व्यवस्था हो जाती है। कालिया दुसाध और अन्य लोग सडक की मरम्मत के काम पर लग जाते है। सरसतिया जैसे छोटे लड़के-लड़कियाँ इतजार करते रहते हैं, धान कट जाने के बाद खेतों में गिरे हुए अनाज को इकट्ठा करने का।

धान की कटाई वगैरह खत्म होते-होते जाडा शुरू हो जाता है। जंगली बेर पकने लगे हैं। शरद में जो आँवले पके थे, वे पेड़ से नीचे गिरने लगे। सरसतिया दूसरी लड़कियों की तरह टोकरी और लाठी लेकर जगल जाती है, पके हुए बेर इकट्ठे करने। उसकी माँ और बड़ी औरतें तोहरी जाकर उन बेरो को बेच आती हैं।

एक दिन ज्यों ही वह अपने सिर से बेर की टोकरी और सूखी लकड़ियों का गट्ठर उतारती है तो देखती है कि एक अनजान लड़का

टोकरा लिये बैठा है।

"कौन है तू-? यहाँ क्यों बैठा है ?"

"मैं हूँ राँका दुसाध।"

"वह कौन है ?"

घनुआ की बीवी हँसती हुई बोली, "पगली ! इसी के साथ तेरी शादी होने को थी। पर किस्मत में बूढ़ा पति लिखा था। क्या किया जाये !"

"क्यों आया है ?"

"देख, तेरे पति ने क्या भेजा है !"

मडुवा, दो-एक घुईंया और मिर्च। घनुआ की बीवी बोली, "सरसतिया ! जरा दुकान चली जा। थोड़ा नमक ले आ।"

"पैसा ?"

"वह लोग आयेंगे तो दे देंगे।"

घनुआ की बीवी टोकरा खाली करके राँका को दे देती है।

फिर नमक की चाय बनाकर देती है। आजकल वे यह चीज खूब पी रहे हैं। लड़के, बच्चे भी। सवेरे ढेर सारी नमक की चाय पी लेने से भूख कम लगती है। नमक, चाय और एक मुट्ठी मकई का सत्तू उबाल दो तो गोद का बच्चा भी चाव से खा लेता है।

राँका गहरे कौतूहल के साथ सरसतिया को देखते हुए नमकीन चाय पीता रहा। यहाँ उसे काफी सहजता अनुभव हुई। उधारचद के यहाँ आजकल उसे नौकर जैसा व्यवहार मिलता है। उधारचद के लड़कों के साथ उसका सम्पर्क सहज था। जब बाप-लडकों का ही सम्पर्क खत्म हो गया तो राँका किस खेत की मूली है ! वह तो मामा का ही लडका है न ?

सरसतिया बेशुमार गरीबी मे भी काफ़ी सहज लगती है। हाँ, यही तो है दुसाध लड़कों की परिचित दुनिया। टूटे छप्पर के लिए बाँस के टेक, कोहड़े की बेल के साथ काली हँडिया और नगा, दुबला, पेट-निकला बच्चा घुटने के बल चलता हुआ। राँका समझता है कि वह इनसे अच्छी हालत मे रह रहा है। उसे पेट-भर खुराक मिलती है, शरीर पर कपडा भी है। टोकरा उठाकर चलते समय वह सरसतिया को बुलाता है, "ऐ सुनो ! सुनो तो !"

"क्या बात है?"

साथ-साथ चलते हुए राँका उसे एक रुपया देता है। बोला, "तेरे लिए दिया है।"

"किसने ?"

"तुम्हारे पति ने ?"

"तुम क्यों कह रहे हो ?"

"तुम मेरे फूफा की बीवी जो हो।"

"तुम्हारी कौन हूँ ?"

"बुआ।"

"वह कैसे ?"

राँका एक अमरूद भी सरसतिया को देता है। खुद खाने के लिए लाया था। इस लड़की को देखकर दया आती है।

"बेर कहाँ से लायी हो ?"

"जंगल से।"

"जाओ, अब घर जाओ।"

"तुम भी चले जाओ। और मडुवा लाना।"

"मैं क्या मालिक हूँ ? मालिक ने दिया तो लाऊँगा।"

सरसतिया दौड़कर रुपया घनुआ की बीवी को दे देती है। फिर आँगन में लकीरें खींचकर इक्का-दुक्का खेलने लगती है। सरसतिया की माँ घर लौटकर सब-कुछ सुनकर हैरान होती है।

फिर बोली, "कितना हरामखोर है बुड्ढा ! पिछली हाट में उसने तीन बकरियाँ बेची थीं। लड़कों के साथ भी अब उसका कोई सम्पर्क नहीं है। एक दुधेली बकरी पालने के लिए दे देता तो हमें कुछ राहत मिलती। उसका रुपया वही राँका खायेगा।"

सरसतिया अपने लाल बाल हिलाकर कहती है, "नहीं, नहीं।"

"जरूर खायेगा।"

"राँका बहुत अच्छा लड़का है।"

"कैसे रे ?"

"मुझे अमरूद दिया है न खाने को।"

राँका ने सरसतिया के बारे मे खूब जमकर बताया । उधारचद मन-ही-मन सोचता रहा । बोला, "क्या किया जाये ?"

"मैं क्या बोलूं ?"

"बेटा, कालिया ने जमीन गिरवी रख दी है ।"

"वह जमीन अब नही मिलने वाली...।"

"मेरे पास आया था तब तो वह।"

"हाँ, मैंने भी देखा था ।"

"मैं क्यों उन सबको खाने को दूं ? मेरे पास बीस-पच्चीस बकरियाँ ही तो है ।"

"जमीन खरीद सकते हो।"

"जमीन। जमीन के बारे मे किसने कहा ? मैं कहता हूँ कि सभी मेरे पास रुपयो के लिए आते है । लड़के भी आये थे।"

"वे तोहरी भी नही आते है अब।"

"तू भी तो पड़ा हुआ है...।"

"मुझे रुपया तो देते नही हो ?"

"रुपये का क्या करेगा ? तुझे खाने को मिलता है, कपड़ा-लत्ता मिलता है । फिर जब कालिया की लड़की आ जायेगी तो तेरी शादी करा देंगे। तुझे बकरी दे देंगे । कही बसा भी देंगे ।"

"मैं जाता हूँ ।"

"क्यो ?"

"शाम हो गयी है। बकरियो को गिनकर बाड़े में बन्द करना है।"

"बहुत तकलीफ उठायी है मैंने पहले । तेरे आने पर थोड़ा आराम मिला है । लेकिन आराम करने की बात पर याद आया, तू आजकल डाक बाबू के घर, थाना सिपाही के पास, वकील बाबू के घर घास बेचता है ?"

"हाँ ।"

"अयं ! कब से ?"

"बहुत दिनो से ।"

"मेरे काम मे हर्जा करके ?" मालिक-महाजनों जैसे स्वर में डाँटकर बोला उधारचद ।

रांका और दुसाधों की तरह डरा नहीं । बोला, "काम खत्म करने के बाद करता हूँ। काम से जी चुराता तो खस्सी बकरियां इतनी मोटी हो जाती ? इतने दामों पर कैसे बिकतीं ? कितनी मेहनत करता हूँ, जानते हो ?"

"अरे, वह तो जानते हैं ।"

"खाना देते हो, कपड़ा-लत्ता देते हो।"

"जरूर देते हैं।"

"कभी एक पैसा नही देते। इसलिए बकरी चराते हुए घास खोदता हूँ, और फिर बेच देता हूँ। पैसे से बीडी-दियासलाई-बालों के लिए तेल खरीदता हूँ।"

रांका का जवाब उधारचंद को बड़ा जबरदस्त लगा। उसने कहा, "कितने दिनों से घास बेच रहे हो ?"

"बहुत दिनों से।"

"कितना रुपया बना लिया है ?"

"पांच-सात रुपया।"

उसके जवाब में नाराज़गी थी। उधारचन्द बोला, "गुस्साता क्यों है ? अच्छा किया। ला, अब गमछा दे। दूध का रुपया काफी बकाया पड गया है।"

बकरी का दूध काफ़ी दामों मे बिकता है। बारह आना सेर।

उधारचंद डाक बाबू के घर जाता है। दूध के पैसे का हिसाब करते समय बोला, "आजकल सभी लड़के बड़ी जल्दी गुस्सा हो उठते हैं।"

"क्यों, क्या हुआ ?"

"वही रांका है ना अपना !"

"क्या किया उसने ? वह तो बहुत शांत लड़का है।"

उधारचद सारी बातें बताता है। सुनकर डाक बाबू बोले, "यह तो ठीक बात नही है, उधारचद !"

"कैसे ?"

डाक बाबू का अस्थायी डाकघर दूसरी जगह जा रहा है, गजटाउन में। इसलिए वह खुश है। कुछ साल पहले तक जो लोग राजा थे, चाहे वे

कितने ही छोटे राजा क्यों न थे, इतने अजीब जीव हो सकते हैं, डाक बाबू पहले नही समझ पाये थे।

भुजा सिंह के सिपाही उधार मे दाल-मसाला खरीदते हैं। उधार में ही पोस्टकार्ड-लिफ़ाफ़ा ख़रीदते हैं। दो साल में उन्होंने जेब से छप्पन रुपया भरे हैं। उनके सिपाही सब लगड़े जिवान थे—अत्यंत असभ्य और बर्बर। वे कभी पूजा करते हैं तो चंदा देना पड़ता है। उसकी बदली रोकने का प्रयास कर रहे थे वे, लेकिन अब तो डाकघर ही जा रहा है।

उधारचंद की बात उसने सुनी ही नहीं।

"क्यो मास्टर साहब, ठीक कहा है न मैंने ?"

"नही, नही, तुम उसे पैसे नही देते। लड़का भूत की तरह मेहनत करता है। अपनी मेहनत से घास खोदकर बेचता है। इस बात पर क्यों बिगडते हो ? यहाँ की हवा लग गयी है क्या ?"

"उसे अपने पास रखता हूँ, खिलाता-पिलाता हूँ।"

"अरे बाबा, बीडी पीने के लिए भी तो पैसा चाहिए।"

"चलो छोड़िये। अच्छा अब दूध का पैसा दीजिए।"

"यह लो।"

"आप यहाँ से जा रहे हैं, मास्टर साहब ?"

"डाकघर ही यहाँ से जा रहा है।"

"हाँ, हाँ। सुना तो है।"

"कुछ स्टेशनों के बाद लखीमपुर में।"

"मास्टर साहब, क्या वह इससे अच्छी जगह है ?"

"इन सब इलाको मे हमे तो कुछ जँचता नही। लड़के-लड़कियों की पढ़ाई की भी कोई सुविधा नही है।"

"आप लोगों को इन सब की जरूरत है।"

कुछ दिनो बाद वकील भी उधारचंद से बोला, "यह क्या बात है ? लड़का मेहनत करके घास लाता है, दो-चार पैसों में बेचता है तो इसमें तुम्हारा क्या नुकसान होता है ?"

"बात तो ठीक है, हुजूर !"

"फिर तुम्हें यह भी सोचना चाहिए कि तुम्हारी उम्र बढ़ रही है।

वह अगर भाग गया तो तुम्हारी बकरियों की कौन देखभाल करेगा? तुम्हारा अपना लड़का होता तो उसे भी कुछ पैसे देने पड़ते। फिर वह तो तुम्हारी जाति का ही है, तुम्हारा रिश्तेदार।"

"जी हुजूर!"

इस तरह वकील उधारचंद को जता देता है कि बकरियाँ रखकर दो-चार पैसा जोड़ लेने पर भी वह नवरतनगढ़ की आँखों में दुसाध ही है। यहाँ पर उसका अपना कोई नहीं है।

उम्र बढ़ रही है, यह बात उधारचंद को अच्छी नहीं लगी। उम्र कहाँ बढ़ रही है? वह अब भी काफ़ी तगड़ा और ताकतवर है। वह अभी यह बातें सोच ही रहा होता है कि वकील अचानक उससे एक सवाल पूछता है।

"सुना है, तुमने किसी सुलक्षणा लड़की से शादी की है?"

"हाँ हुजूर! ऐसा ही है। आपसे किसने कहा?"

"किसी से सुना था।"

"चलूँ, हुजूर!"

"भाग्यवती लक्षणों वाली लड़की है?"

"नाई तो यही कहता था।"

"अरे! तुमने अच्छा किया!" बहुत ही ख़राब तरीके से हँसा वकील। फिर बोला, "वैसी लड़की राजाओं को भी नहीं मिलती है। दुसाध को मिल गयी!"

"यह तो किस्मत की बात है, हुजूर!"

"ठीक है, ठीक है। खा-पीकर ताकत बढ़ाओ। लड़के-बच्चे पैदा होने चाहिए। क्या पता, लड़का किसी दिन मंत्री बन जाये। नहीं तो दरोगा या विधान सभा का सदस्य कुछ तो बनेगा ही।"

"आप लोगों के आशीर्वाद से।"

उधारचंद चला जाता है। वकील सोचता है कि भुजा सिंह को यह खबर जरूर देनी चाहिए। भुजा सिंह और वह एक ही उम्र के हैं।

इस समय भुजा सिंह की उम्र चालीस है। राहु की नजर रहते-रहते भुजा सिंह अपनी पहली पत्नी से तीन लड़कियाँ पैदा कर चुका है। वैसे अब

वह राजा नही है, लेकिन मिज़ाज राजा का है । धनी भू-स्वामी है । इसके अतिरिक्त जगल का बड़ा ठेकेदार भी है ।

. वकील उसे क़ानून से बचकर चलने का परामर्श देता है और उसके लिए लड़कियाँ जुटाता है ।

इस दुसाध को यहाँ बसाना बुरा नहीं रहा । भुजा सिंह पर से जब राहु का प्रभाव हटेगा, उस समय वैसी ही कोई लड़की मिल गयी तो भुजा सिंह को साले के लड़के को गोद नही लेना पड़ेगा और वह वकील की मुट्ठी में ही बंद रहेगा ।

कौन है यह भुजा सिंह ? एक गँवार राजपूत ही तो है । पेड़ों के काटने के काम की निगरानी वकील ही करता है। भुजा सिंह ने अपनी तरफ़ से दस्तख़त वगैरा करने का अधिकार भी दिया है ।

वकील मन-ही-मन तय करता है कि समय आने पर भुजा सिंह को यह सब बताना होगा ।

घर लौट कर उधारचंद राँका से बोला, "इधर आना जरा ।"

"क्या कहना है ?"

"कालिया की लड़की भगवती-लक्षणा है, यह बात वकील को कैसे पता लगी ?"

"मुझे क्या मालूम ?"

"बताओ, उसे इसका पता कैसे लगा ?"

"तोहरी हाट में कालिया की बीवी आती है।"

"तो क्या उसने कहा है ?"

"बाढा से भी तो कई लोग आते है ।"

"उसी ने कहा होगा । औरतो की जुबान पर रोक नही होती । तूने तो नही कहा ?"

"क्या पागल हो गये हो ? वकील जी से आज तक मैंने कभी बात तक नही की ।"

"चलो, ठीक है । लेकिन आगे से किसी को मत बताना ।"

कुछ दिनों बाद राँका फिर थोड़ा-सा मंडुआ लेकर बाढ़ा गया । सर-सतिया उसे जगल में ले जाकर पेड़ हिलाने को कहती है । बेर बटोरकर

"पैसा जब आने लगेगा तो बहुत अच्छा लगेगा ।"

"तू अचानक कैसे आ गया ?"

"तुम लोगों को देखने ।" रोका सांस छोड़ता है । "तुम्हारे पिता का कारोबार है । तरह-तरह की बातें करने वाले बहुत-से लोग हैं । मैं क्या करूँ ? आजकल बहुत चिड़चिड़ा करता रहता है । मुझ पर शक भी करता है । अब वहाँ अच्छा नहीं लगता ।"

"तुझे जरूर कुछ देगा ।"

"कुछ भी नही देगा ।"

"जाने की सोच रहा है क्या ?"

"कहाँ जायें ? यदि जायें तो उस बूढ़े का क्या होगा ? कौन उसे देखेगा, बोलो ? पता नही तुम लोगों को क्या हुआ है ?"

"हम लोग कर ही क्या सकते हैं ?"

"मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि बीवी आते ही वह मुझे भगा देगा ।"

"ऐसा कहा है क्या पिताजी ने ?"

"कह रहा था कि बकरियाँ पालने को दूँगा, शादी करूँगा । लेकिन वह यह सब करेगा नहीं । दुकानों पर और इधर-उधर कहा है कि भगा देगा ।"

"तब तुम हमारे पास आ जाना । हम लोग तुम्हारी शादी करायेंगे । हम लोग जो खाते हैं, वही तुम भी खाना । नहीं खायेंगे तो तुम भी भूखे रहना ।"

"परिवार के बिना क्या काम चलता है ?"

"तेरी शादी तो हो जाती । पर हमारे बाप के सिर पर जो शादी का भूत चढ़ गया ।"

"भगवती-लक्षणा लड़की ही नही है वह...।"

"क्यों ?"

"मुझे मंडवा देकर भेजता है । कालिया और उसके घर वाले सड़क का काम करते हैं और कालिया की लड़की जंगल में बेर चुनती है ।"

"पिताजी ने क्या देखा है उसमें ?"

"जो लड़की इतनी अच्छी और भाग्यवती है, उसके पति के घर में

भागते हुए दुसाध, गंजू और धोबियो की पीठ पर बहुत गोली चलाती है और पता नही कैसे उस गोली से दिल में छेद हो जाता है। राँका चलता रहा।

उधारचद उसे देखकर डाँटना भूल गया और बोला," जल्दी आ इधर। बहुत खतरा है।"

"क्या हुआ है ?"

"भूमि मजदूर सहायता समिति के कार्यकर्ता जुगल करन आदि को ढूँढने आयी है पुलिस। यहाँ रहेगी कुछ दिन।"

"रहेगी ?"

"हाँ।"

"तब तो सिपाही लोग बकरी-खस्सी उठा ले जायेंगे।"

"क्या होगा, राँका ? ग्यारह बकरी, तेरह खस्सी, दो बूढ़े बकरे, सात ग्याभिन बकरियाँ, चार दुधारू हैं। बच्चे हैं आठ। यह साले कच्चे चबा जायेंगे। सब को खा जायेंगे। क्या करें अब ?"

राँका तुरंत कुछ निश्चय ले लेता है। बोला, "मुझे कुछ दिनों का चिवड़ा-सत्तू-गुड़ गमछे मे बाँध कर दे दो। ग्याभिन बकरियों और खस्सियों को लेकर मैं जगल मे भाग जाता हूँ।"

"और बाकी का क्या करें ?"

"दुधारू बकरियो, बच्चो और बकरों को यही रखो।"

"पूछने पर क्या कहूँगा ?"

"कह देना, राँका लखीमपुर हाट में बेचने गया है।"

"वे अगर इन्ही को ले गये तो ?

"ले जाने दो।"

"जगल मे क्या बच पाओगे ? वे लोग तो जगल में ही ढूँढेंगे। जुगल करन एक पुलिस वाले को मार कर भाग गया है।"

"देखा जायेगा। सरसो कहाँ है ?"

"सरसों का क्या होगा ?"

"तुम भी क्या बकरा बन गये हो ? लाओ, जल्दी दो। कान मे सरसो डाल देने से बकरियाँ मे-मे नही करती, यह भी नही मालूम ? लाओ, दो

रुपया दो।"

"क्या करोगे रुपयों का ?"

राँका बिगड़ उठता है। बोला, "ज्यादा दिन जगल मे रहना पड़े तो क्या खरीदकर नही खाऊँगा कुछ ? जो कुछ तुम्हारे पास है उसे छुपा दो।"

बकरियों को लेकर राँका चला जाता है। जंगल, यहाँ का जगल ख़तरे से खाली नही है। यह जंगल का इलाका सरकार का है। पहले नवरतन-गढ के ज़मीदार का था। राँका नवरतनगढ के निकट नही रहेगा। बाढ़ा की ओर चला जायेगा। जगल अभी घना नहीं है। हलका है। आगे घना होता गया है। जंगली काँटो से भरा दुर्गम जगल का रास्ता। लेकिन राँका रास्ते को जानता है। बाढ़ा-नाढ़ा-ढाई तक आने-जाने के लिए वे लोग जगल का रास्ता ही इस्तेमाल करते है। थोड़ा सुस्ता ले ? नही, अभी भी ख़तरा है।

राँका ख़तरे से दूर जाना चाहता है। एक और राँका दुसाध के पास। बाढ़ा के पास में जो जगल है, उसमें कुछ दुसाधो-भगियो की झोपड़ियाँ है। कुछ साल पहले इन्ही लोगो ने गणेशसिंह के खिलाफ़ आवाज उठायी थी।

नाढा मे ही राँका ने यह सब-कुछ सुना था। गणेश को उन लोगो ने मार डाला था। लेकिन इतने सारे लोग उस घटना मे शामिल थे कि सिर्फ़ उनमे से कुछ लोगों को दो-तीन साल की सजा हुई थी। वे जगल से लकड़ी चुनकर बेचते हैं। आजकल पुलिस ने उन्हे काफ़ी परेशान कर रखा है। अगल-बगल कोई भी बलवा-झगडा हो तो पुलिस वहाँ पहुँचती है। गणेश को पालने वाली लछिमा भी वही रहती है। वह भी जेल से लौटी है। उन लोगों की अनुमति से राँका उनके जगल मे रह जायेगा।

सरसतिया वगैरह को पता भी नही चलेगा। गणेशसिंह के मारे जाने के बाद वे भूलकर भी उस जंगल मे नही जाते। बाढा या नाढ़ा के दुसाध भी वहाँ नही जाते। राँका एक बार वहाँ गया था। माँ-बाप के मरने पर वह सीधा उधारचंद के पास नही आया था। तब वह इधर का रास्ता नहीं जानता था। नाढ़ा आते समय वह भूलकर वहाँ चला गया। वही दो दिन ठहरा था। उन लोगों ने तो उसे वही रह जाने के लिए कहा था।

धीरे-धीरे शाम हुई। जगल और भी अँधेरा लगता है। इस जंगल में बाघ नही है। लेकिन बकरियों के साथ वह कहाँ रहे? भेड़िया, सियार, लकड़बग्घा जैसे जानवरों का खतरा तो है ही। इसके अलावा जगल मे कुछ भालू जैसे हरामी जानवरों का भी खतरा है। जाड़े के अन्तिम दिनों मे वे बेर खाने के लिए निकलते है।

तभी अचानक राँका, राँका दुसाध के सामने पड़ जाता है—बड़ा राँका। छोटा राँका उसे पहचानता है, लेकिन बड़ा राँका उसे नही जानता।

"कौन ? कौन है तू ?"

"राँका दुसाध। बाढ़ा का राँका दुसाध !"

"क्या कहा ?"

"तुम्हें जब उसने पहचान लिया तो उसे मेरे सामने लाओ।" एक अपरिचित बाबू आदमी बोला। राँका ने देखा कि उसके हाथ मे बन्दूक है।

राँका सारी बात बताता है। बड़ा राँका पूछता है, "सच बोल रहे हो ? वरना तेरी बकरी-बकरा सब गया समझो और साथ में तेरी भी छुट्टी।"

"एकदम सही कह रहा हूँ।"

"जुगल जी, आप ही पूछिये।"

राँका बहुत ही व्याकुल होकर बोला, "आप ही जुगल करन हैं ?"

"हाँ भाई ! तुम अगर चाहो तो पुलिस को खबर करके मुझे पकडवा सकते हो। पुलिस तुम्हे रुपये देगी।"

"नही, नही।" राँका बहुत डर जाता है। बोला, "राँका दुसाधों को परेशान करने के लिए जब यही पुलिस आती है तो बाढ़ा-नाढ़ा मे हमें खेत से पकड़कर पीटती है। पुलिस से मैं बहुत डरता हूँ।"

"रुपया तो मिलेगा ?"

राँका अपनी दुखी, पर सरल आँखों को ऊपर उठाकर बोला, "लेकिन वह तो धरम नही होता है जी। पुलिस तो आपको मार डालेगी। है न ? तोहरी हाट मे मैंने कुछ दिन पहले ऐसा ही सुना था।"

बडा राँका बोला, "उधारचद भी एक ही जानवर है। अपने लड़के की शादी ठीक करने की बात थी। खुद ही शादी कर बैठा।"

"अपने लड़के के लिए नही, मेरे लिए शादी तय कर रहा था।"

"तेरा कौन होता है वह?"

"फूफा।"

राँका को दुख हुआ। दो दिन के पुराने परिचय के बल पर बड़े राँका के पास आया था। बड़ा राँका शायद उसे भूल गया है। बड़े राँका से उसने यही बात कही।

वडा राँका बोला, "बकरियाँ बचाने के लिए तू जंगल मे क्यों घुमा है? आजकल इधर बाघ आया हुआ है। तुझे अगर बाघ खा गया तो?"

"पुलिस ले जायेगी दुसाध की सम्पत्ति।"

"वह जब मालिक-महाजन बनता है तो उसे सजा भुगतने दो। तू बकरी-बकरी बेचकर यहाँ से भाग जा।"

राँका बोला, "यह तो धरम का काम नहीं है। बूढा आदमी! उसने मुझ पर विश्वास किया है। फिर रोटी-पानी भी तो देता है।"

वडा राँका बोला, "देखिये जुगलजी, ऐसी अकल है हम लोगों की, हम दुसाध लोगों की। इसीलिए आपका काम सफल नही हो रहा है।"

युगल निर्मल हँसी हँसता है। बोला, "भैया! एक साथ जेल में रहे हैं। परिणामस्वरूप तुम्हारी समझदारी इस तरह की बनी है। इस बेचारे को क्या समझ? तुम समझे हो, अब इसे समझाओ। लेकिन अभी इसकी बकरियों का तो इन्तज़ाम करो। चलो, अब सोया जाये।"

"आग जलायी नही जा सकती है?"

"नहीं।"

"तब खाना-वाना नही बनेगा। आटे की लिट्टी बनाने का समय ही नहीं मिला। आटा ले आये है। ख़ैर, उसे जाने दो। रात का क्या होगा?"

"हम लोग तीन हैं—तुम, मैं और यह छोटा राँका। पारी-पारी से जगना होगा। और क्या? जंगल मे इधर की तरफ़ पानी कहाँ है? कल उधर की तरफ चलेंगे।"

"हम लोगों की टोली पर पुलिस की नजर है।"

"नहीं, नही, जगल मे ही रहेंगे।"

"कल ले चलूंगा। वहाँ पुलिस कभी पहुँची ही नही है और पहुँचेगी

भी नही ।"

रांका ने शरमाते हुए कहा, "मेरे पास चिवड़ा-सत्तू-गुड़ है। सभी खा सकते है।" युगल उसकी पीठ थपथपाता है।

एक गड्ढे मे सूखे पत्तों के बिस्तर पर, बकरियों के शरीर की गर्मी से घिरा रांका आराम से सो गया। भोर मे उसे बड़े रांका ने जगाया। युगल और उसके साथी ने बदन के कुरते उतारकर बन्दूक को उसमें लपेट लिया। बकरियो को गिनकर वे लोग वहां से चल पडे।

बडा रांका उन्हे सचमुच काफी घने जंगल में ले गया। बोला, "यह जो पहाड़ देख रहे हैं जुगलजी, यही है वह तोपाई बुरू। कोलों की बस्ती थी। कोल इन गुफाओं मे रहकर लड़ाई चलाते थे। बहुत पहले की बात है। अँग्रेज लोग ने सारी बस्ती को ही तोड़ दिया था। तब यह जंगल बन गया। हम भी किसी एक गुफा मे रह जायेंगे।"

"यही ठीक रहेगा। फ़ारेस्ट विभाग के लोग तो नही आते इधर?"

"यहाँ पेड़ छोटे-छोटे है और नकसलियों के डर से फ़ारेस्ट के लोग अब जगल के अन्दर नही आते।"

"पानी है कही?"

"यही की एक गुफा से कुरडा नदी निकली है।"

"कुछ दिन यही रह सकेंगे।"

"कितने दिन?"

"कहा नही जा सकता? आदोलन छोड़कर ज्यादा दिन इधर नही रह सकते।"

"मैं क्या करूँ?"

"तुम बाढा मे रहो। पुलिस की ख़बर मुझ तक पहुँचाते रहना। यहाँ रहने से तो काम चलेगा नहीं। अन्य साथियों से भी सम्पर्क करना होगा।"

"मैं ज्यादा नही आ-जा सकता।"

"नही! तुम मत आना। जेल मे हम लोग एक साथ थे। यह बात पुलिस को मालूम है। लेकिन तुम पहले छूट गये थे।"

"आप बाद मे जेल तोडकर भागे।"

"हां।"

"आप भी क्या वही हैं, जिन्हे नक्सली कहा जाता है ?"

"मैं हरिजन आदोलन में था, राँका ! तब भी मेरा खयाल यही था कि हरिजनों और खेत मजदूरों की समस्या एक ही है। खेत मज़दूरो के आदोलन मे कानूनी तरीके से खूब लड़ा हूँ। मार खाते-खाते अन्त मे बन्दूक लेनी पड़ी। जानता था कि नक्सली आदोलन में जाने पर हथियार उठाना पड़ेगा। कई रास्तों पर चल चुका हूँ।"

"आप हमेशा से नक्सली नही थे ?"

"अब तो सरकार की निगाह मे सभी नक्सली है। कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, जिन्होंने कभी भी किसानों के लिए आदोलन किया है आज उन्हें नक्सली ही कहा जाता है। तुम लोगों ने जो बलवा किया था, उसके आधार पर सरकार तुम्हे भी नक्सली कहेगी।"

"बड़े ताज्जुब की बात है।"

"दियासलाई, मोमबत्ती और मिट्टी की दो-एक हँडिया भेज देना।"

"जरूर। लेकिन लेकर कौन आयेगा ?"

राँका बोला, "मैं आऊँगा।"

बडा राँका डाँटकर बोला, "हाँ समझ लिया मैंने, लेकिन अब चल।"

टोले की ओर आते समय रास्ते में बडे राँका ने कहा, "तू किसी भी कारण बाढा गाँव नही जायेगा।"

"अच्छा।"

"वही के लोग जगल में आते है।"

"उनके सामने नही पड़ूँगा।"

"तू रहेगा लछिमा के जिम्मे।"

"जैसा कहोगे।"

"लछिमा जुगल जी को सभी चीजें पहुँचायेगी।"

"मैं पहुँचा दूँगा।"

"नही। औरतो पर वे शक नही करते। वैसे मेरा खयाल है कि जंगल के इतने भीतर तक कोई घुसेगा नही और तू इधर आने-जाने के लिए पश्चिम का रास्ता पकड़ना। उधर से कोई आता-जाता नही।"

"कितने दिन रहूँगा ?"

"तुझे ही पता है।"

"पुलिस की खबर कौन लायेगा?"

"हमारी औरतें।"

"वे नवरतनगढ़ से भी खबरें ला सकती हैं।"

"लायेंगी।"

"पुलिस हमे हमेशा परेशान करती रहती है। इसलिए पुलिस की गतिविधियों की खबर लाने में हमारी औरतें खूब चुस्त हो गयी है। लछिमा की उम्र पचास साल है। गठा हुआ शरीर। सभी बाल विचित्र तरीके से सफेद, चेहरा शात गभीर। देखने से लगता है कि वह दुसाधिन नही है।"

बडे राँका ने उसे बाहर बुलाया। बहुत धीरे-धीरे उससे बातें की। लछिमा शात होकर सुनती रही। फिर बोली, "आटे की लिट्टी बनाऊँ?"

"ठीक है, बनाओ।"

"तुम मारे जाओगे, राँका!"

"नही-नही, डरो नही।"

"इस लडके को क्यों फँसा रहे हो?"

"यह तो खुद ही आकर फँसा है।"

"राँका दुसाध! तुम से क्या कहूँ? इससे पहले इस आदमी के बारे मे तुमने कभी नही बताया। यह जुगल करन कौन है?"

"बैठो लछिमा! उसका नाम न बोलो। उसके नाम पर ही इनाम है।"

"समझ गयी। अब अपने घर चले जाओ। उसके बाद तोहरी जाकर प्रसाद महतो को पकडो। नये परमिट बनाने का समय आ गया है। इस लडके को किस नाम से पुकारें? छोटा राँका। आज से यही है तेरा घर। आज आराम करो। कल अपनी झोंपड़ी खडी कर लेना।"

बड़ा राँका बोला, "दिन मे बकरियो को खुली छोड देना। रात को सभी के घर एक-दो बकरियाँ रख देंगे। मुसीबत खत्म।"

"यही ठीक रहेगा। चल छोटे राँका, पानी ले आयें।"

राँका दोनों रुपये लछिमा को दे देता है।

"रुपये किसलिए?"

"मैं खाना जो खाऊँगा।"

बड़ा राँका हँसकर बोला, "जेल में काम करके लछिमा को मजूरी मिली है। हम बहुत-से लोग थे। अभी हम लोग धनी हैं।"

"हाँ-हाँ, जेल ससुराल है न ! बहुत रुपया दिया है उन्होंने।"

इसके बाद लछिमा नहाकर नदी से पानी ले आयी। फिर उसने गमछे मे लिट्टियाँ, नीबू का अचार, मिर्च, नमक बाँध लिया। मटके मे पानी भरकर सिर पर रखा और राँका से बोली, "मैं पोटली उठाती हूँ। तू लालटेन और लाठी लेकर आगे-आगे चल।"

रात मे यह जंगल और भी अपरिचित और डरावना लगता है। लेकिन लछिमा निडर चलती रही। राँका ने पूछा, "कोई डर तो नही ? बड़ा जानवर मैंने कभी नहीं देखा। शिकारियो ने जगल के सारे बड़े जानवर खत्म कर दिये हैं।"

"रास्ता तो नही भूलोगी ?"

"राँका दुसाध ने मुझे इस जगल में खूब घुमाया है। वह रही गुफा। तोपाबुरू। मुझे याद है।"

"तुम इस जगल में आती रहती हो ?"

"हाँ, गुफा मे एक नाला भी है। वहीं से कुरडा नदी निकली है। नदी का पानी बहुत साफ और ठडा है।"

"डर नहीं लगता ?"

"काहे का डर है ! चला चल।"

"ठीक रास्ते पर हैं ?"

"बुद्धू कही का ! तोपाबुरू सामने है। आँखें खोलकर देख।"

"अँय ! पहुँच गये ?"

"और नही तो क्या ? आगे बढ़, देख उन्हें।"

युगल उनकी आवाज़ सुनकर खुद आगे आ गया।

लछिमा बोली, "गुफा मे नही थे। पेड़ के नीचे क्यों ?"

"बहुत चमगादड हैं। फिर गुफा गदी भी है और गीली भी।"

"पेड के नीचे इतनी ठडक मे ?"

"क्या किया जाये !"

"आग भी नही जला सकते ?"

"नही। रात को जाड़े की ठडक सह लेंगे। दिन में धूप से बदन सेंक लेंगे।"

"कल कुछेक बोरियाँ ले आयेंगे। यह खाना लो।"

लछिमा लिट्टी, अचार, मिर्च, नमक निकालकर देती है। पानी का घडा भी उतारकर रखती है। बोली, "कल मोमबत्ती और दियासलाई ले आयेंगे। अब चल, राँका! और हाँ, आपके पास टार्च-बत्ती है?"

"थी। अब नही है।"

"सभी एक साथ मत सो जाना! कभी-कभी भालू आ जाता है।"

लछिमा राँका का हाथ पकड़कर तेज़ी से चल देती है। युगल उनकी ओर देखते हुए अपने साथियों से कहता है, "ऐसा इससे पहले भी हुआ है। इस बार भी हो रहा है!"

"क्या हो रहा है, जुगल?"

"न इनसे कोई जान, न कोई पहचान। फिर हमारी मदद कर रहे हैं। पुलिस को पता लगा तो इन पर अत्याचार होगा। फिर भी यह लोग मदद करते है। खुद को खाना नही मिलता है, लेकिन हम लोगों को खाना पहुँचाते हैं। ऐसा क्यो करते हो, पूछने पर कहते हैं कि क्यो न करें? तुम लोग हमारे लिए इतने कष्ट जो सहन कर रहे हो।"

"इन लोगो की बात ही कुछ अलग है।"

"कैसे?"

"इतनी रात गये यह औरत केवल एक बच्चे के साथ इधर चली आयी।"

"वह मामूली औरत नही है। उसके बारे में जेल में खूब सुना है।"

घर लौटकर लछिमा और राँका ने देखा कि बड़ा राँका बैठा है।

लछिमा बोली, "राँका दुसाध, कल मैं तोहरी जाऊँगी।"

"क्यो? फिर से पकडे जाने की इच्छा है क्या?"

"हाँ। जेल मे इतने मजे मे जो थे।"

अगले दिन लछिमा बोली, "तोहरी जा रही हूँ।"

बड़ा राँका बोला, "क्यो? कल तो बात हो गयी थी।"

"जाऊँ। प्रसाद जी से परमिट के बारे मे कहूँ।"

"मैं चला जाता हूँ। मैं दरोगा जी के पैर पकड़कर बैठ जाऊँगा। उसे नरम करूँगा। फिर प्रसाद जी के पास जाऊँगा।"

"नहीं। तुम्हारा पूरा परिवार है। मेरा कोई नहीं।"

"यह क्या बात हुई ? हम लोग नहीं हैं तुम्हारे ?"

"जाओ, जाओ, अब काम करो। जरा इसे ऊपर तो उठाओ।"

राँका चौकी उठाता है। चौकी के पाये के नीचे की जमीन खोदकर लछिमा पीतल के दो भारी कंगन निकालती है।

"यह क्या है, लछिमा ?"

"वजन देख रहे हो ?"

"हाँ, भात राँधने की हँडिया बन सकती है इनकी।"

"सो तो है। भात के लिए पीतल की हँडिया, लेकिन भात की व्यवस्था नहीं है, राँका दुसाध ! उसका क्या होगा, बोल ?"

"अभी क्यों बेचने जा रही हो ?"

"टार्चबत्ती, दियासलाई, मोमबत्ती और आटा-दाल लाना है।"

"आटा-दाल-नमक-मिर्च हम लोग देंगे।"

"ताकि सब को पता चल जाये। बात फैले और पुलिस आ जाये।"

"अपना सब-कुछ बेच दोगी किसी-न-किसी के लिए, अपने काम नहीं लाओगी। क्या बुढ़िया नहीं होगी तुम ?"

"तब भीख माँगूँगी।"

लछिमा तोहरी चली गयी। यह सब बातें राँका के सामने ही हुई थीं। लछिमा की बातों से राँका को झटका-सा लगा। वह घास बेचकर दो-चार पैसे लाता है। उन्हें छिपाकर रखता है। उधारचंद एक भी रुपया उस पर खर्च नहीं करता। युगल करन जैसे लोग कोई बड़ा काम करने के लिए घर-द्वार छोड़कर जंगलों में भटक रहे हैं। लछिमा उन्हें नहीं जानती, फिर भी उनके लिए अपने कंगन बेचने गयी है। ऐसा भी होता है।

लछिमा शाम से पहले ही लौट आयी। राँका से पूछा, "पानी कौन लाया ? खाना किसने पकाया ?"

"वह सब मैंने किया है। तुम तो थककर लौटी हो।"

"लिट्टी लगायें ?"

"बड़े राँका ने आटा दिया है। बना रहे हैं।"

"अच्छा। नवरतनगढ में पुलिस बहुत है। उधारचंद के दो बकरों और मेमनों को पुलिस उठाकर ले गयी। लगता है, सात-आठ दिन उनका गुजारा चल जायेगा। पुलिस लखीमपुर तक जा रही है।"

"मैं क्या करूँ ?"

"कुछ दिन यहीं रह।"

आज लछिमा लालटेन लेकर आगे-आगे चलती है। युगल को टार्च-बत्ती, मोमबत्ती दियासलाई और तीन बोरियाँ देती है और कहती है, "नवरतनगढ़ से लखीमपुर तक पुलिस की चौकियाँ लगी हैं। जंगल में कुत्ते लाकर तुम्हें ढूंढेंगे।"

"तो क्या किया जाये अब ?"

"एक काम करो। शिकारी कुत्ते भी पानी के स्रोत में गंध नहीं महसूस कर सकते। जिस गुफा से नदी निकली है, पानी में से होते हुए उसी गुफा में चले जाओ।"

"ठीक। बहुत ठीक कहा है तुमने।"

"कल दिन में देख लेना उस जगह को।"

"पुलिस लखीमपुर की ओर चली गयी तो हम भी यहाँ से चले जायेंगे।"

"कहाँ ?"

"और यहाँ कितने दिन रहें ?"

"पुलिस को पूरी तरह से हट जाने दो पहले।"

लछिमा चली जाती है। लगातार बरसों छिप कर रहते-रहते और भागते-भागते व्यक्ति का भीतरी मन हो उठता है संदिग्ध और वह सतर्क हो जाता है। कभी-कभी उसका मन मस्तिष्क को ख़तरे के संकेत देता रहता है।

युगल अचानक बोला, "उधर ही चलें, भैया !"

"कहाँ ?"

"वहीं, नदी वाली गुफा में।"

टार्च जलाकर सावधानी से वे आगे बढ़े। युगलकरन सबसे आगे था। वह पहले पानी मे उतरता है।

"सावधान ! बालू पर पैर का निशान न पड़े।"

पानी कम गहरा था। पैर जमाकर आगे बढाते हुए वे एक साथ ही गुफा के अन्दर घुसते है, झुककर। फिर और आगे बढते हैं। अचानक पानी गहरा, और गहरा होने लगता है। अन्दर कही से तेजी से पानी निकल रहा है। नदी का उद्गम-स्थल। अगल-बगल फिसलनदार पत्थर।

युगल बोला, "बोरी बिछाकर बैठ जाओ। जरा रुकना पड़ेगा।"

वह बाहर निकल गया और कुछ लकड़ियाँ ले आया। लकडियों के ऊपर बोरियाँ बिछा दी और उन पर बैठ गया। बन्दूक भी सभाल ली। फिर बोला, "कुत्ता शायद न भौंके। लेकिन भौंक भी सकता है।"

तीन घंटे बाद कुत्ते का भौंकना, सीटी की आवाज आदि सुनायी देती है। भोर होने पर कुछ आवाज नजदीक आने लगती है। तभी लछिमा और एक लडकी की आवाज सुनायी देती है।

बडा राँका बडी होशियारी से बातें करता है, "यहाँ तो हम लोग हर रोज आते हैं, लकडी चुनते है।"

"क्या कह रहे है, समझ गये न ?"

"देखिये, देखिये, कुत्ता उधर जा रहा है।"

लछिमा चिल्लायी, "क्यों नही जायेगा उधर ? साहब अपने कुत्ते को इधर बुलाओ। मुझे क्यों सूँघता है यह ? देख राँका, कल हम लोग ही तो वहाँ बैठे थे और यही तो हमने खाना खाया था बोरी बिछाकर। कुत्ता ठीक समझ गया।"

कुत्ते शायद और ज्यादा मदद नही कर पा रहे हैं। तभी एक अफसर चीखा, "उन गुफाओं मे देखो ?"

"गुफाएँ चमगादड़ों से भरी हैं। वहाँ कोई नही है।"

"तुम लोगों को मैंने जो कुछ करने को कहा है, अच्छी तरह समझ गये हो न ?"

बड़ा राँका बोला, "हाँ हुजूर !"

"पकड़ा देने पर इनाम। उनकी मदद करने पर...।"

"नही हुजूर ! खूब सबक सीख लिया है। फिर यह जंगल हमारी जान है। यहाँ कोई बदमाश आकर छिपे...।"

अफ़सर आपस में बात करते है। "कोई फ़ायदा नही ? वह साला ज़रूर अपने अड्डे की ओर जायेगा।"

एक ने राँका से कहा, "देखो, तुम उसके साथ जेल में थे।"

"किसके साथ ?"

"युगलकरन के।"

"हुजूर, वे लोग बाबू कैदी थे। हम लोग डकैती, दंगा-हंगामा में पकड़े गये थे। फिर दुसाध नीच जाति ठहरी। उनसे हमारी बात कहाँ से हो पाती ?"

"समझे ! तुम ज़रा तोहरी थाने से सम्पर्क बनाये रखना।"

"रोज आ जायेंगे, हुजूर ! अगर आप कहेगे तो रोज आ जाया करेंगे।"

"हम जा रहे हैं। जो कुछ तुम से कहा है, याद रखना।"

"ज़रूर।"

"अपनी टोली के सभी लोगों को बता देना।"

"हुजूर, एक खस्सी दे दें खाने के लिए !"

"नही, अभी नही। और यह भी बता दें कि पुलिस आती-जाती रहेगी। किसी को रिश्वत मत देना।"

"ना हुजूर !"

पुलिस और राँका वहाँ से चले जाते हैं। राँका बोला, "ओफ कितने पत्ते गिरे हैं ! वैसे जमीन काफी साफ है।"

"उस बुरू के पीछे भी तो जगल है।"

"हाँ हुजूर, चलेंगे।"

"चलो।"

"लेकिन बुरू छोड़कर दूसरी ओर से घुसना होगा।"

"बुरू के उस ओर भी गुफा है क्या ?"

"नही।"

"उस तरफ़ नही जायेंगे। उत्तर की ओर जाना चाहते हैं।"

"बस के रास्ते की तरफ ?"

"उधर बस का रास्ता है ?"

"हाँ हुजूर। कच्ची सड़क है। प्राइवेट बस चलती है।"

"किधर जाती है ?"

"राँची, रामगढ, धनबाद।"

"राँची ? युगलकरन का घर भी राँची ज़िले में है। चलो, उधर से ही चलो। तुम हमारे साथ चलो जीप मे।"

"चलिये हुजूर !"

वे लोग चले जाते हैं। चलते-चलते पुलिस अफ़सर पूछता है, "आज बारिश होगी क्या ?"

रात को बारिश हुई थी। छोटे राँका ने लछिमा से पूछा, "वे लोग चले गये है क्या ?"

"कहाँ जायेंगे ?"

"खाना नही खायेंगे ?"

"चुप रह। एक-आध दिन न खाने से आदमी मरता नही है।"

अगले दिन राँका लौटा। लछिमा से कहा, "कोई पकडा गया है, तार से खबर आयी है। वे लोग राँची गये है।"

"इन लोगों का क्या होगा ?"

"अभी हम लोग कुछ नही कर सकते। प्रसादजी से कहेगे।"

"ठंड से मर जायेंगे।"

"तो क्या करें ?"

कामताप्रसाद, संतोष और किसी अनजान गाँव के दो कार्यकर्ता पुलिस मुठभेड़ मे मारे जाते हैं। इस तरह इधर से पुलिस का ध्यान हट जाता है। पुरानी दोस्ती की ख़ातिर या किसी अन्य कारण से प्रसाद महतो युगल और उसके साथियों को गांधी मिशन की एम्बुलेंस गाड़ी मे कम्बल बाँटने के काम के दौरान गुफा मे से कहो और पहुँचा आता है।

बोला, "बेटा, इसके बाद अगर पकड़े गये तो मैं फँस जाऊँगा और दूसरे लोग भी।"

छोटा राँका बहुत पहले ही उधारचंद के पास लौट गया था।

जाते हुए उससे लछिमा ने कहा था, "बीवी आ जाने के बाद यही

लौट आना। यही बस जाओ तो बड़ा रौंका तेरी शादी करा देगा।"

रौंका लौट गया। मन का एक हिस्सा वह वहीं छोड़ गया। लछिमा ने उससे कहा, "बीच-बीच में खबर लेने आऊँगी।"

पाँच

उधारचंद के पास रौंका का जीवन कटता है, बिना किसी वैचित्र्य के। बीच-बीच में वह सरसतिया के लिए मंड़ुवा ले जाता है। इस काम में उसे राहत मिलती है। तीन साल गुजरते ही उधारचंद फिर उबल पड़ा।

"सुन रहा है रौंका, मेरे लड़कों के कारनामे?"

"क्या हुआ?"

"उन लोगों ने मेरी नाक कटा दी है।"

"हुआ क्या है?"

"बकरी-खस्सी बेचकर तीनों चले गये है।"

"कहाँ चले गये?"

"वह कांग्रेसी लड़का कुलियों की ठेकेदारी कर रहा है।"

"कहाँ-कहाँ कुली देगा।"

"धनबाद, झरिया की कोयला खदानों में।"

"वहाँ चले गये?"

"हाँ। मैं उनका कौन होता हूँ? प्रसाद महतो उनके अपने हैं, इसलिए उन्हें ही बताकर गये हैं। अब मैं क्या करूँ?"

"क्यों, तुम क्या करोगे?"

"वकील बाबू से विनती करके और उनके दामाद से कहकर उनके लिए जमीन का बन्दोबस्त किया था। अब वे लोग कहेंगे, दुसाधों की भलाई नहीं करनी चाहिए।"

"जमीन का क्या हुआ?"

"वही तो हरामीपना है।"

"क्या हरामीपना है?"

"वह जमीन एक पंजाबी अपनी बन्दोबस्ती में ले रहा था। बस चल रही हैं ढाई तक। अब वहाँ अच्छा बस-अड्डा बन गया है। भगत ने कह दिया कि जमीन लेनी हो तो मेरे बाप के पास जाओ।"

"तब दे दो जमीन। कहाँ है वह आदमी ?"

"तोहरी में उसके बड़े भाई का होटल है।"

"मैं बुलाकर लाता हूँ।"

"हाँ, बुला लाओ। प्रसाद से भी पूछते आना।"

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"एक बार वकील के पास हो आऊँ।"

तोहरी में राँका से वह पजाबी ठीक से बात नहीं करता। बोला, "कौन है उधारचंद दुसाध ?"

"उसके लड़के वहाँ रहते थे।"

"क्या कहता है वह ?"

"उसकी जमीन को बन्दोबस्ती में लेने की बात थी।"

"उस ज़मीन का मालिक तो अमीन है। वही जमीन बन्दोबस्ती में देगा। उसे तीन सौ रुपया देकर मैंने जमीन ली है। कौन जाये खस्सी बेचने वाले दुसाध के पास ?"

राँका को लगा कि यह खबर उधारचद को दी तो उसे भारी धक्का लगेगा। वह सीधा प्रसाद महतो के पास गया। प्रसाद उस समय दो बूढ़ी औरतों को कुछ समझाने की कोशिश कर रहा था। अब छोटी-मोटी बीमारी का इलाज भी करता है। कह रहा था कि बुढ़िया को अस्पताल जाना पड़ेगा।

"अस्पताल में आँख काटकर रख लेंगे।"

"अरे, पहले जाँच तो करा ले।"

"तुम्ही दवाई दे दो न।"

"बुढ़िया, मेरा कहा नहीं मानेगी तो मैं डाक्टर से कह दूँगा कि आँख काट देने के लिए। मैंने लिख दिया। आँखों की जाँच करके दवाई दे देगा।"

"ठीक है। दाँतों की दवाई दे दो।"

प्रसाद दवाई दे देता है। फिर बोला, "तुम लोग बड़े शैतान हो।"

उनके जाने के बाद प्रसाद राँका को लेकर अन्दर जाता है। पूछता है, "क्या ख़बर है ?"

"प्रसादजी, जुगल करन का क्या हुआ ?"

"जिन्दा है।"

"क्या कर रहे हैं ?"

"जो काम पहले करते थे वही कर रहे हैं। तुम किसलिए आये हो, बताओ ?"

राँका सारी बात बता देता है। प्रसाद गहरी साँस लेकर बोला, "वे क्या करेंगे ? बस के रास्ते में पड़ता है बाड़ा। गुंडे लोग आते-जाते लारी और जीप रोककर बकरी-खस्सी उठा ले जाते हैं।"

"हमें तो कुछ भी नहीं मालूम।"

"सब जगह दुकानें बनने लगी हैं। बीच में दुसाध लोग जगह घेरे बैठे हैं ! बहुत अत्याचार हो रहा है। रुपया दो या जगह खाली करो। इस पंजाबी के साथ उनकी दोस्ती है।"

"फिर ?"

"भरत को एक दिन उन्होंने खूब पीटा। अस्पताल ले जाना पड़ा। जब वह अस्पताल में पड़ा था, तो पूरन की बीवी को उठा ले गये।"

"उठा ले गये ?"

प्रसाद कड़वी हँसी हँसता हुआ बोलता है, "हरिजन अछूतों की औरतों पर उनका अधिकार तो हमेशा से रहा है।"

"पूरन की बीवी का क्या हुआ ?"

"फिर नहीं लौटी," प्रसाद कुछ रुककर कहता है, "एक आदमी इस घटना को लेकर आन्दोलन कर रहा था—हरिजन महिलाओं पर अत्याचार रोकने के लिए।"

"क्या वह सफल हुआ था, प्रसाद जी ?"

"हाँ राँका, अब तुम जाओ।"

लौटकर राँका उधारचंद को सब-कुछ बताता है। उधारचंद गंभीर ही रहता है। बाद में कहता है, "क्या करें ?"

"किसका क्या करें ?"

"वकील बाबू ने कहा है कि जैसे ही लड़कों ने उस जमीन को छोड़ा, वैसे ही उस पर से तुम्हारी बंदोबस्ती खत्म हो गयी।"

"यही कहेंगे, मैं जानता था।"

"लेकिन मैं तो जानता हूँ कि मैंने दस साल के लिए बंदोबस्ती करायी थी। अभी भी चार साल पाँच महीने बाकी है।"

"यही बात कही थी।"

"कही थी। कहने लगा—अगर ऐसा समझते हो तो अदालत जा सकते हो।"

"क्या अदालत मे जाओगे ?"

"पागल हुआ हूँ क्या कि अदालत जाऊँगा ? अदालत गया तो मेरे कंधे पर सिर रहेगा क्या ? कहाँ से सबूत दूँगा कि मैं सच कह रहा हूँ ?"

"पहले यह बताओ कि यहाँ क्यों आये ?"

"यह क्यों पूछ रहा है ?"

"गाँव मे जब थे तो मालिक जुल्म करता था।"

"इसीलिए तो गाँव छोड़ा था।"

"उस समय भी हम लोग अदालत नही जा सकते थे। तब अदालत में जाने के लिए पैसा ही नही था। अदालत मे जाने पर मालिक गाँव में नही रहने देता। अदालत से गरीब दुसाध को कभी भी न्याय नहीं मिल सकता।"

"यहाँ आकर भी यही कहना पड रहा है !"

"हाँ, कहना तो यही पड़ रहा है।"

"प्रसाद जी ने कहा—उनके गुस्से का मुख्य कारण यह है कि सड़क अच्छी बन गयी है। उसके साथ-साथ दुकानें बन रही हैं। तो दुसाध के पास क्यों इतनी जमीन रहे ?"

"यह तो तूने अभी कहा।"

"वकील बाबू भी इसी तरह सोच सकते हैं।"

"क्या कहा ?"

"दुसाध क्यों इतनी जमीन लेकर फैला रहेगा, कारोबार करेगा।"

"नही, नही, नहीं, ऐसा न कहो।"

राँका बोला, "यहाँ हमारा कोई भी नहीं है। गाँव में कितने भी कष्ट क्यों न हों, अपने समाज के लोग तो हैं।"

उधारचंद बोला, "अब वहाँ कैसे जा सकते हैं ?"

"सब-कुछ बेचकर जा सकते हो।"

उधारचंद दयनीय चेहरा बनाकर बोला, "रुपया कहाँ है ?"

"तुम्हारे पास रुपया नहीं है ?"

"नहीं रे ! सिपाही लोगों ने उधार ले-लेकर मेरे पास कुछ भी नहीं छोड़ा। अब न तो वे ब्याज देते हैं न मूल।"

"देस-गाँव में इसी उधार के कारण हमारी सारी तकलीफें थीं और तुम भी इधर उधार देने पर लग गये।"

"सोचा था कि...।"

"मैंने तुम्हारा एक भी पैसा इधर से उधर नहीं किया। तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया, अपने लड़कों पर भी विश्वास नहीं किया। जिन पर तुमने विश्वास किया, वही तुमको...। जाने दो, अब छोड़ो। तुम जहन्नुम में जाओ। मुझे लालटेन दो। दुकान से तेल भरवा लाऊँ।"

इस तरह इस प्रसंग का अंत होता है। अब की बार जब महुवा लेकर राँका बाड़ा जाता है तो सरसतिया को देखकर चौंक उठता है। "अचानक, कितनी बड़ी हो गयी हो, सरसतिया ! चेहरे पर रौनक आ गयी है।"

सरसतिया पूछती है, "इतने दिन तक कहाँ थे ?"

"तुम्हारी नौकरी कर रहा था।"

"मेरी ? तुम क्या नौकर हो ?"

"और क्या ?"

"मैं क्या जानूँ ? मुझे वह रिश्ता तो याद ही नहीं रहता।"

"हाथ में लाल धागा क्यों बाँध रखा है ?"

माँ ने कहा, "हाथ खाली नहीं रहना चाहिए।"

"अब की बार चूड़ियाँ ला दूँगा।"

"बैठो, सत्तू है, गुड़ है, खाओ।"

सत्तू-गुड़ देकर सरसतिया कहती है, "मेरा मन तुम्हारे लिए उदास होता है, कितने दिनों से नहीं आये थे।"

"मालिक भेजेगा तभी तो आऊँगा ।"

"होली पर क्यों नही आये ?"

"मेरे लिए होली का त्यौहार कैसा है ?"

"क्या तुमने कभी सनीमा देखा है ?"

"नही, कभी नही देखा ।"

"मैं देखूँगी अबकी बार, गौरमेंट के आदमी गाड़ी लेकर आयेंगे, दिखायेंगे ।"

"यह तो अच्छी बात है ।"

"अच्छी बात पर याद आया । जानते हो, पूरन की बीवी यहाँ है !"

"कहाँ है ?"

सरसतिया उँगली से दुसाधो के टोले की तरफ़ इशारा करती है। कहती है, "वहाँ पाँच दिन पहले उसे धान के खेत मे फेंक गये थे।"

"वहाँ किसके पास आयी ?"

"नाथनी उसका चाचा है न ?"

"सरसतिया, मैं उसे थोड़ा देख आऊँ ।"

"नही, अभी तो वह बहुत बीमार है ।"

"मुझे वापस जाना होगा । अच्छा, अब चलता हूँ ।"

"फिर कब आओगे ?"

अचानक राँका को कुछ याद हो आता है । हँसता हुआ कहता है, "अब की बार शायद तुम्हें लेने ही आऊँ ।"

"कहाँ ?"

"नवरतनगढ ।"

"ओह !"

"तुम्हें पहुँचा कर मेरी छुट्टी ।"

"कहाँ जाओगे ?"

"वही, उनकी टोली में ।"

"वहाँ मत जाना, राँका ! नवरतनगढ़ में मुझे छोड़कर वहाँ मत जाना ।"

राँका सरसतिया की तरफ विस्मित होकर देखता है । फिर कहता है,

किया, फिर भी तुम्हारे लिए वह अच्छा आदमी है और बहू लाने का दिन उसी से पुछवा रहे हो ?"

"अपने देस-गाँव में हमें इन बातों का कहाँ पता होता है ?"

"इसमें पता होना और न होने की क्या बात है ?"

उधारचंद कहता है, "तेरा नाराज होना भी जायज है। जवान लड़का है तू। तेरा भी मन चाहता होगा गिरस्थी जमाने का। मैंने तुझे...।"

"ठीक है, तुमने मुझे पाला-पोसा। मैंने भी तो तुम्हारे लिए मेहनत की। जब तुम सब-कुछ संभाल लोगे तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

"वही तो कह रहा हूँ, कि मैं तुम्हारा भी इतजाम कर दूँगा।"

"रहने दो, अब और इतजाम नही करना होगा। मुझे टिकने की जगह मिल गयी है। वहाँ अपने लोग भी है। मैं अपना इतजाम खुद करूँगा। तुमने जिसका इतजाम भी किया है, देखा है कि उनकी क्या हालत हुई है !"

उधारचद वकील बाबू के पास जाकर कहता है, "पाँव लागी, हुजूर ! शुभ दिन बताइये। अब बीवी लाऊँगा।"

"क्या उम्र हो गयी है उसकी ?"

"सोलह साल।"

"पहले नही लाया ?"

"नही हुजूर ! परेशानी मे था।"

"बीवी तो भगवती-लक्षणा लड़की है न ?"

"हाँ हुजूर ! मेरे पास कुछ भी तो कहने लायक नही। लड़के भी लायक नही निकले। शायद इसका लड़का लायक निकले। हुजूर, भगवती-लक्षणा लड़की अच्छे सगुन वाली होती है !"

"हाँ-हाँ, वह तो होती है।"

"लड़का होगा ही और होगा भी बहुत धनी।"

"कल आना। पतरा देखकर बताऊँगा।"

वकील का दिमाग पुराने और टेढे-मेढे रास्तों पर दौड लेने लगता है। म जॉ सिंह पटना गये हैं। वापस आने में दस दिन लग जायेंगे। भुजा सिंह

को औरों की कुँवारी बीवियाँ बहुत पसन्द हैं। भुजा सिंह को भगवती-लक्षणा लडकी की भी बहुत जरूरत है। उसके गर्भ से सतान भी चाहता है वह।

उधारचद दुसाध है। लड़का होने की बात उससे तय की जा सकती है। उसके एवज में कुछ जमीन दे दी जायेगी। आगे देखा जायेगा।

सगुनी बहू और सगुनी लडका वकील को भी तो चाहिए। भुजा को भी जरूरत है दोनों की और वकील को भी।

दूसरे दिन वकील उधारचद से कहता है, "देखो, बहू तुम चार दिन बाद ला सकते हो। लेकिन पतरे मे लिखा है कि भगवती-लक्षणा लड़की के लिए दूसरा *नियम है।*"

"क्या नियम है, हुजूर ?"

"वह साधारण लडकी नही। पतरे में लिखा है कि दस दिन बाद यानी 18 तारीख से पहले उसके साथ कोई सम्पर्क नहीं करना चाहिए।"

"ऐसा लिखा है ?"

"खुद पढकर देख लो। या किसी और विश्वासी आदमी से पढवा लो। मैं क्या तुमसे झूठ कहूँगा ?"

"छिः-छि हुजूर ! मैं ऐसा सोच भी नही सकता।"

"देखो न, क्या लिखा है।"

"आप ही कहिये, हुजूर !"

"पतरे मे लिखा है कि पहली बार रिश्ता कायम करते समय बहुत हिसाब से चलना पड़ेगा। नहीं तो पता है, *क्या होगा ?*"

"क्या होगा ?"

"हिजड़ा पैदा होगा। बहू बाँझ हो जायेगी।"

"नही हजूर ! आप जैसा कहते है, मान लेता हूँ। सालों पहले शादी की थी मैंने और चौदह साल की हो गयी तब भी नही लाया उसे। फिर अब क्या करूँ ?"

"क्या करोगे, बहू लाने का इंतजाम करो।"

"हाँ हुजूर, वही करता हूँ।"

उधारचद के जाने के तुरन्त बाद ही भुजा सिंह का वैद्य गोविन्द झा

आता है। यह वैद्य और किसी बीमारी का इलाज नहीं करते। नवरतनगढ़ के पहले के राजा और वर्तमान मालिक भुजा सिंह की यौन-तृप्ति करने के रास्ते में आने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए ताक़त के नुस्ख़ों का जुगाड़ करते हैं। भुजा सिंह उनको बहुत मानता है। आते ही वैद्य कहता है, "क्या हो रहा है?"

"क्यों? कुछ भी नहीं।"

"और कितने दिन तक इस दुसाध को पालोगे?"

"क्यों, क्या हुआ?"

"दुसाध वाली जगह मुझे मिले जाये तो आयुर्वेदिक औषधियों की एजेंसी ले लूं।"

"दुकान है तो आपके पास।"

"दुकान तो है, लेकिन गोदाम नहीं है।"

"झा जी, तो समझिये कि वह जगह आपको हो गयी। मेरे ऊपर विश्वास रखिये।"

"कैसे विश्वास करूँ?"

"मुझ पर विश्वास किया था तो आपको सरकारी ठेका मिला था या नहीं? सीमेंट सप्लाई का ठेका भी दिलाया था आपको। उन्हीं से आपने छपरा में अपना मकान बनवाया है।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

"आदिवासियों को भगाकर जो जमीन हथियायी थी, वह भी आपको दी कि नहीं?"

"हाँ, मिली।"

"यह जगह भी आपको मिलेगी।"

"मिलेगी? काफ़ी अच्छी जगह है।"

"देखिये झा जी, एक सरकारी ठेका और मिलने वाला है।"

"कहिए, कहिए, ऐसी बातें सुनना भी अच्छा लगता है।"

इस तरह उधारचंद का भाग्य निर्धारित होता है। उधारचंद वहाँ से लौटते समय एक सिपाही के पास जाता है अपने पैसों के लिए।

रांका तोहरी जाता है। गोश्त की दुकान पर मोल-भाव करके चारों

जानवरों को बेचता है। रुपया लेकर प्रसाद के पास आता है। इतने रुपये लेकर अकेले लौटते समय वह थोड़ा झिझकता है। जाकर देखता है कि लछिमा वहाँ बैठी है। प्रसाद गभीर चेहरा लिये चारपाई पर बैठा है। लछिमा कहती है, "आ रे रांका! पूरन की बीवी को अस्पताल में दाखिल करवाया है।"

"काफी बीमार है?"

"बहुत ज्यादा।"

प्रसाद कहता है, "उसका केस दर्ज करना होगा।"

लछिमा कहती है, "छोड़ो ये बातें।"

"ऐसा और कितने दिन चलेगा?"

"हमारी औरतो की इज्जत की कोई कीमत नही है।"

"केस दर्ज करेगा कौन?"

"ऐसा केस अदालत मे टिकेगा नही। मेरे बाल यही सब देखते-देखते सफ़ेद हो गये है। मुजरिम के मौजूद होने पर भी नही टिकता। इस मामले मे तो बदमाश भाग गये है।"

"देखा नही, वे बदमाश बार-बार आते रहते है।"

"आने दो तुम। पहले लड़की को बचने तो दो।"

रांका पूछता है, "क्या बचेगी नही?"

"तुझसे क्या कहूँ, बता!"

"केस दर्ज न किया तो...।"

"मैं अगर मर्द होती, तो दो-तीन आदमियों के साथ ताक मे रहती और मौका पाते ही...।"

"यही करना होगा आखिरकार। कानून उनका अपराध कभी देखता ही नहीं।"

"अब चुप हो जा।"

"क्यो? चुप क्यो हो जाऊँ?"

"प्रसाद महतो, तुम्हे क्या समझाऊँ? इतने बेचैन होकर चिल्लाते रहे तो सभी को पता चल जायेगा कि तुम केस दर्ज करने जा रहे हो।"

"पता लग जाने दो।"

"तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

"नही, मेरा कुछ नही बिगड़ेगा।"

"तोहरी अस्पताल में पहरा तो रहता नहीं। अगर कोई अन्दर आकर लड़की को उठा ले जाये और मार डाले तो ? ऐसा हुआ नही है क्या ?"

प्रसाद चुप हो जाता है। फिर कहता है, "ठीक कह रही हो।"

"लछिमा ठीक ही कहती है।"

प्रसाद हँस देता है, लछिमा भी हँसती है। हँसती है तो अभी भी बहुत सुन्दर दिखती है लछिमा। लछिमा कहती है, "क्या खबर है, राँका ?"

"मालिक बीवी लायेंगे।"

"तेरा क्या हाल है ?"

"मालिक के बकरा-बकरी बेचाकर आ रहा हूँ।"

"फिर तो काफी रुपया होगा तुम्हारे पास।"

"इतना रुपया लेकर अकेले जाना ठीक रहेगा क्या ?"

"प्रसाद साथ में जायेगा।"

"क्यों ? मैं क्यों ?"

"तुम क्यों नही ?"

"कोई अच्छा काम हो तो साथ जा सकता हूँ। एक बुड्ढा, उस पर बदमाश ! एक बच्ची के साथ शादी की। जिस बहू को अस्पताल में भर्ती करवाया है, यह उधारचद उसका ससुर लगता है न ? मैं नही जाऊँगा।"

"यह कैसी बात है ? तुम उसके लिए नही, तो छोटे राँका के लिए जाओगे। यह लडका मारा जायेगा किसी चोर-डाकू के हाथ।"

"रुपया क्यों ले जा रहा है ?"

"बदोवस्त कर रहा है।"

"इसी राँका के साथ सरसतिया की शादी होने की बात थी।"

"सरसतिया कौन है ?"

"जिससे उधारचद ने शादी की है।"

"तुम राँका का ब्याह करवा दो।"

"जरूर करवा दूँगी।"

"उसे अपनी टोली मे नहीं ले जाओगी ?"

"तुम्हें भी ले जाऊँगी।"

"अब उठो दीदी, राँका का कोई बन्दोवस्त करूँ।"

"डाक्टर से कहना प्रसाद, कि लड़की को जल्दी अच्छा कर दे।"

"कहूँगा। अब उठो।"

प्रसाद सडक पर आता है तो सामने से एक परिचित की बस जा रही दीखती है। ड्राइवर की बगल में राँका को बिठाकर कहता है, "बाद मे समय मिले तो इधर आना।"

उन रुपयो से उधारचद साड़ी, ब्लाऊज, गिलट के गहने, सिंदूर आदि खरीदता है। अपने लिए धोती, चादर, कुर्ता और जूता खरीदता है। किराये पर बैलगाडी लेकर बीवी को लाने के लिए रवाना होता है।

राँका को बहुत सारा काम करने को कह जाता है। हलवाई की दूकान से मिठाई लानी होगी। बकरियों की देखभाल करनी होगी। मंडुवा पिसाकर रखना होगा, और भी ढेरों काम।

राँका को लगता है कि जैसे कोई काम ही नही है। उधारचंद सरसतिया को लाने गया है, इसलिए उसके लिए जैसे अब कोई काम ही नही रहा।

छह

उधारचद बैलगाडी के साथ पहुँचता है तो बाढ़ा गाँव में हल्ला मच जाता है। बाढ़ा-नाढा जैसे गाँवों मे सरसतिया जैसियों के गौने कि लिए कभी बैलगाड़ी नही आती।

किराये की गाड़ी है, कल ही वापस करनी होगी। गौना आज ही हो तो अच्छा। उधारचद आकर जल्दी मचाता है। यहाँ पहुँचते ही उधारचंद भाँप जाता है कि एक दिन क्यों, वह अगर एक महीने भी रुके तो कालिया दुसाध खुश ही होगा, क्योंकि वही उनके खाने-पीने की व्यवस्था करेगा।

इसलिए वह जल्दी मचाता है। "चलो, जल्दी करो।"

धनुवा की पत्नी की उम्र चाहे कितनी हो, पर रिश्ते मे उधारचद की बड़ी सलहज लगती है। सामने आकर तीखी आवाज मे कहती है, "चलो-चलो कहने से ही सब-कुछ नही हो जायेगा। लड़की को नहलायेंगे, नये कपड़े पहनायेंगे। तुम लोगो को खाना खिलायेंगे। इतने दिनो तक तो भूले रहे, आज अचानक याद आ गये हम। माँ के घर से क्या लडकियाँ आसानी से जाना चाहती हैं?"

"अपनी ननद से कहना अभी गिलट के गहने दिये है। बाद मे पीतल के दूँगा और फिर चाँदी के बनवा दूँगा।"

"और चाँदी के बाद ?"

तभी कालिया घर मे आता है। अब तक वह दूकान पर था। आते ही चिल्लाता है, "और चाँदी के बदले सोना सरसतिया के भाग मे है ही। उधारचद दुसाध, तुम्हारा यह कैसा हरामीपना है ?"

"क्या कह रहे हो, कालिया ?"

"तुमने हरामीपना किया है।"

उधारचंद वकील बाबूओ की बेशर्मी और ठगी को मान लेता है। सिपाही लोग उससे कर्ज लेकर न देते हैं सूद, न असल, पर दुसाधों से उसका अब कोई सम्बन्ध नही। इसलिए वह कालिया के मुँह से हरामीपने की बात सुनकर आगबबूला हो जाता है।

"देखो कालिया, मैंने तुम्हारी लड़की से शादी की है, इसका मतलब यह नही कि मैं तुम्हारे बराबर का आदमी हूँ। तुम एकदम भिखारी आदमी हो। व्यापारी दामाद मिला है तुम्हे। इज्जत से बात करो।"

धनुवा बाप को डाँटकर चुप कराता है और कहता है, "दिमाग ठंडा रखो और चुप होकर बैठो।"

फिर वह उधारचद से कहता है, "आपने भी कोई छोटी-मोटी गाली नही दी।" फिर हँसकर कहता है, "पर गाली को गाली समझूँ तो गाली है, नहीं तो कुछ भी नही है।"

"क्या मतलब ?"

"जिसके पास कुछ नही होता, वह क्या भिखारी होता है ? इस तरह

तो सभी दुसाध भिखारी हैं। छोड़िये, जाने दीजिये !"

धनुवा को बात में कहीं कुछ-खटक है, पर वह समझ नहीं पाता। उसे लगता है कि वह बूढ़ा हो गया है। कहता है, "तुम्हारे बापू ने मुझे हरामी कहा।"

"यह शब्द अच्छा नहीं है, पर बापू को भी गलत नहीं कह सकते। बेचारा गरीब दुसाध है। व्यापारी जैसे शब्दों के उतार-चढ़ाव का उन्हें ज्ञान नहीं है। तिस पर लड़की के बाप हैं, दिल में चोट पहुँची है। आज ही नाई से मुलाकात हुई थी, उसी से पता चला।"

"क्या पता चला ?"

"आपका गला क्यों सूख रहा है ?"

धनुवा का रुका हुआ गुस्सा अब फूट पड़ता है, "बापू को तो मैं गलत कहता हूँ। माँ तब भी राजी नहीं थी, मैं भी राजी नहीं था, लेकिन बापू *अपने दोस्त के साथ शादी करना चाहते थे। थू !"*

"जो कहना चाहते हो, साफ-साफ कहो।"

"राँका के साथ शादी होती तो।"

"उसके पास है ही क्या ? मेरा नौकर है।"

"आप नये किस्म के दुसाध हैं। साले का लड़का नौकर कैसे बन गया ? राँका के पास कुछ नहीं है। किस दुसाध के पास जमीन-जायदाद है ? लेकिन वह जवान है। दोनों मिलकर मेहनत-मजदूरी कर सकते थे। भूखे भी रह सकते थे। वैसे हम लोगों के यहाँ तुम्हारे जैसा नहीं चलता। हमारे यहाँ बेटों को व्यापारी बाप के होते हुए अँधेरी रातों को चूहे की तरह छुप-छुप कर नहीं भागना पड़ता और बेटे की बहू को सड़क से उठाकर जगल टोली के दुसाधों को नहीं बचाना पड़ता और *लछिमा को अस्पताल* नहीं पहुँचाना पड़ता।"

"बस, बस, और नहीं सुनना चाहता।"

"सुनना तो पड़ेगा ही। आप उस समय भी व्यापारी थे। आपके पास पैसा था और हम लोग वैसे ही थे जैसे कि आप नवरतनगढ़ आने से पहले थे। सरसतिया का ब्याह राँका के साथ होता तो ठीक रहता। लेकिन रुपये का लालच देकर आपने कालिया को राजी कर लिया, मेरी बहन से शादी कर

लो। ऐसा क्यों ? इसी शादी को लेकर अपने लड़कों से भी रिश्ता तोड़ डाला।"

"यह सब मेरे समझने की बातें हैं, तुम्हारे समझने की नहीं।"

"आज नाई से पता चला कि सरसतिया जैसी भगवती-लक्षणा लड़की लाखों बरसों में एक बार जन्म लेती है। ऐसी लड़की का लड़का बड़ा भाग्यवान होता है। उसके पास गाय, रुपया, जमीन—सब-कुछ होता है। यही सोचकर आपने शादी की है सरसतिया से। मेरे बापू को आपने इस बारे में कुछ भी नहीं बताया, इसी कारण बापू ने हरामी कहा है।"

"नाई ने बतला दिया, साले ने कह दिया !"

घनुआ अब आपसे तुम पर उतर आता है और कहता है, "उधार-चंद, अब आगे क्या कहोगे तुम ?"

"क्या कहूँगा ?"

"वह लक्षण-वक्षण वाली बात हम नहीं जानते। मैं कहता हूँ, कि इसी समय तुम यहाँ से चले जाओ। अपनी बहन की मैं फिर से शादी करा दूँगा किसी जवान के साथ। बापू ने सोचा था, लड़की को ब्याह कर रुपया मिलेगा। उसी में मन लगा है उनका।"

"ऐसा मत कहो, घनुआ ! तुम्हारी बहन के लिए मैं बहुत आस लगाये बैठा हूँ। कालिया किधर गया ?"

"अब कालिया को क्यों खोज रहे हो, भाई ?" कालिया कहता है, "तुम्हारे संग ही तो बात करनी है।"

"क्या बात करनी है ?"

"अरे कोई बात तो होगी।"

इसके बाद भी बातें होती हैं। कालिया को उधारचंद दस रुपये देता है। एक रुपया और दो बकरी देने का वायदा करता है। तब सरसतिया की विदाई करवाता है।

घनुआ की बीवी पूछती है, "क्या सोच रही है, सरसतिया ?"

"बहूजी, मैं किस तरह उसके घर में रहूँगी ?"

घनुआ कहता है, "मन न लगे तो यहीं चली आना।"

"वह बुड्ढा तो रांका को भी निकाल रहा है।"

"पाजी है एक नम्बर का, साला बुड्ढा !"

धनुआ कहता है, "मैं उस नाई की ठुकाई करूँगा ।"

वहू कहती है, "तुम्हारे बाप ने ही तो शादी कर दी थी ।"

सरसतिया कहती है, "सोचा था रुपया-पैसा मिलेगा, खाने-पीने को मिलेगा ।"

धनुआ कहता है, "रांका से खबर भिजवाना ।"

धनुआ, उसकी माँ और धनुआ की बहू का दिल भारी हो जाता है। रांका उन सबको पसन्द था ।

विदा के समय सरसतिया अपने-आपको बेसहारा महसूस करती है। जानी-पहचानी दुनिया छोडकर जाने का दुख ! दुसाध लडकियाँ मेहनत करके खाती है, उनको काफ़ी आज़ादी मिलती है। लडाई-झगड़ा, उद्दाम-आवेग, राग-अनुराग में वे पीहर और ससुराल दोनों जगह पर काफी आज़ाद रहती हैं। लेकिन ऐसा लग रहा है कि जैसे यह बुड्ढा उसे ख़रीद-कर ले जा रहा हो !

लेकिन रांका से मुलाकात की आशा, उसके साथ अपनी शादी की बात की याद उसके मन मे जमी बैठी है ।

तोहरी मे ही उधारचद उसे तिलवा खरीदकर देता है। सरसतिया तिलवा आंचल में बांध लेती है। थोड़ी देर बाद उधारचद कहता है, "नवरनतगढ़ आ गया है, मुंह ढँककर बैठो। नहीं तो लोग बातें बनायेंगे ।"

सरसतिया मुंह बिचकाती है। गुस्मे से कहती है, "बातें बनायेंगे तो बनाने दो ।"

"यहाँ का तो चाल-चलन ही दूसरा है ।"

अचानक उधारचद सिकुड़कर केंचुआ बन जाता है और कहता है, "नीचे उतरो, वकील बाबू आ रहे हैं । प्रणाम करो उन्हें ।"

अभ्यासहीन घूंघट को सभालते हुए सरसतिया एक जोड़ा नागरा को ही प्रणाम कर लेती है ।

"अरे देखें, चेहरा तो देखें ।"

उधारचद घूंघट हटाता है। वकील बाबू बाज जैसी नजरों से निहारता है। वह रहा लाल मस्सा। चेहरा बुरा नहीं। काली है। काले तो ये लोग

होते ही हैं। इकहरा बदन, गठा हुआ शरीर। भुजा सिंह खुश हो जायेगा।

"यह लो!" छुआ बचाते हुए दूर से ही दो रुपये का नोट फेंकता है वकील। "जो तुमसे कहा है, याद रखना, उधारचंद!"

"हाँ हुजूर!"

वकील चला जाता है। उधारचंद कहता है, "तेरे भाई को कुछ नहीं पता। कितने भाग की बात है कि वकील बाबू ने खुद आकर तुझे देखा है और नकद दो रुपये भी दिये हैं।"

"कौन है यह आदमी?"

"अरे चुप-चुप! धीरे बोल। वह राजा का वकील है। इज्जतदार आदमी है।"

"लेकिन यह आदमी है खराब।"

"क्या कह रही है तू?"

"हाँ, हाँ, उसकी नजर बदतमीजों वाली है।"

"गाँव में रहकर जैसे तुझे सब-कुछ का पता हो गया है।"

"कौन जानना चाहता है यह शहरी चलन! मेरे लिए मेरा गाँव ही अच्छा है।"

"चल, अब घर चल।"

राँका लालटेन लिये खड़ा था। सरसतिया को देखकर उसके दिल का एक कोना जलकर राख हो जाता है। सरसतिया उसकी तरफ़ देखकर हँसती है और प्रत्याशा-भरी निगाह से देखती है और कहती है, "राँका!"

"आ गये?"

उधारचंद कहता है, "चल, अन्दर चल।"

सरसतिया कहती है, "हाय अम्मा, एक कमरा और इसमें भी इतना सारा सामान क्यों भर रखा है?"

उधारचंद कहता है, "सब ठीक कर देंगे। पहले मैं गाड़ी वापस कर आऊँ।"

राँका कहता है, "मैं वापस कर आऊँ?"

"नहीं, मैं ही जाऊँगा। सिपाही आदमी नाराज हो जायेगा। मिठाई तो लेगा नहीं। क्या दूँ उसे?"

"मुझे क्या पता ?"

"मैं हो आता हूं । तू इतने अँगीठी जला ले ।"

उधारचद के चले जाने पर राँका कहता है, "ठहरो जरा। मैं पहले लकडी ले जाऊँ। बस जाऊँगा और आऊँगा ।"

वाकई बहुत समय नही लगाता है वह। आकर देखता है कि सरसतिया ने उसकी पहचानी हुई पुरानी साडी पहन रखी है। नयी साड़ी को खोलकर रख दिया है। कहती है, "अँगीठी मैं जलाती हूँ ।"

"नही, गुस्सा करेगा ।"

"छोड़ो, उस बुड्ढे को ।"

"यह कैसी बात है ?"

"भैया ने कहा है दिल न लगे तो चली आना।"

"ठीक नही कहा है ।"

"और भी बहुत कुछ कहा है । बाद मे बताऊँगी । क्या बनाना है ?"

"क्या पता ? वही कहता है, जो कुछ भी पकाना हो ।"

उधारचद आकर कहता है, "आज दाल-चावल बनेंगे ।"

सरसतिया कहती है, "राँका, मैं बना लूंगी ।"

उधारचंद से वह बात नही करती। दोनों को खाना परोसती है। खाने के बाद उधारचद सरसतिया को निश्चित और राँका को परम विस्मय में डालकर ख़ुद राँका के साथ सोने चल देता है। सरसतिया से कहता है, "डर लगे तो बत्ती जला लेना ।"

राँका समझ नही पाता कि यह उसने कैसा इतजाम किया है। उधारचद सारी बातें राँका को अच्छी तरह समझाता है ।

"वकील बाबू ने तुम्हारे साथ मजाक किया है।"

"तू क्या समझेगा इन बातो को !"

"तुम्ही समझना । लेकिन मैं अब यहाँ से जाऊँगा ।"

"और दो-चार दिन रह जा ।"

"क्यो ? और दो-चार दिन क्यों ?"

"मैं कुछ इतजाम कर लूं ।"

"किसका ?"

"बकरियाँ चराने का।"

"तुम चराना।"

"मैं ? मुझसे होगा क्या ?"

"मैं तो भूल ही गया था कि आप उधारचंद बाबू हैं।"

"मजाक कर रहा है ?"

"सरसतिया चरायेगी।"

"नही, नही। वह घर मे रहेगी।"

"भूजा सिंह का मकान खरीद लो। नौकर रख लो।"

"क्या बक रहा है तू ?"

"जो भी करना हो, जल्दी करो। मुझे यहाँ रहना अच्छा नही लग रहा है।"

"प्रसाद महतो तुझे बहका रहा है।"

"तुम्हे इससे क्या मतलब ?"

"वह आदमी अच्छा नही है।"

"उन जैसे आदमियो को तुम कभी नही समझोगे।"

"मैं तेरी भलाई के लिए ही कह रहा हूँ।"

"अरे तुम क्या कहोगे ! तुम्हारा पैसा है और मेरी मेहनत लगी है। बाहर कहते फिरते हो कि मैं तुम्हारा नौकर हूँ। घर मे कहते हो कि मैं तुम्हारा अपना आदमी हूँ। लेकिन एक पैसा तक मुझे नहीं देते हो।"

"दूँगा, दूँगा। कहा तो है, दूँगा।"

"मुझसे और कब तक अपना काम चलाते रहोगे ? मुझे तुम्हारा पैसा नही चाहिए, छुट्टी चाहिए।"

"राँका, पैसे को इतनी छोटी चीज न समझ।"

"अपने पैसे को तुम नही भोग सके। तुम्हारे लड़कों को भी नहीं मिला। सिपाही लोग लूट रहे हैं तुम्हारा पैसा।"

"ऐसा मत कह। दुख होता है।"

"तुम दुखी होओ, मैं तो सोता हूँ।"

राँका सो जाता है। उधारचद सोचता है कि कही से एक छोकरा खोजना ही होगा। वह ख़ुद तोहरी जायेगा। वहाँ के बाजार मे तरह-

तरह के लोग आते हैं। अपनी जाति का कोई छोकरा मिल सकता है। उसकी इतनी बड़ी उम्र हो गयी है लेकिन अभी भी जिन्दगी का सुहाना समय नही आया। सरसतिया के लड़का होगा। फिर वह बड़ा होगा और उस लडके की बदौलत उसे मिलेगा पैसा, इज्जत, सम्पत्ति। क्या वह यह सब-कुछ देखने के लिए जिन्दा रहेगा ? मान कहो, इज्जत कहो, ज़मीन हो तो यह सब मिलता है। भरत, भगत और पूरन तीनों में से कोई भी नहीं समझा इस बात को। वही रहते हुए काम करते वे तीनों तो इलाके में जमीन ले सकते थे।

राँका चला जायेगा—यह सोचकर उधारचद को काफी तकलीफ़ होती है। उससे जितना हो सका उसने उसे उतना प्यार और विश्वास दिया। लेकिन भगत, भरत और पूरन को उससे इतना प्यार या विश्वास नही मिला था।

राँका उसे उधारचद बाबू कहता है मजाक मे। अब वह चला जायेगा। सारा दिन उधारचद तरह-तरह की तिकड़मों मे व्यस्त रहता है। सभी को मान-इज्जत देता है। नवरतनगढ़ का नामी व्यक्ति होने की, उसके मन मे बड़ी इच्छा है। लेकिन राँका उसका मज़ाक उड़ाता है। राँका ही सबसे नजदीकी इसान है उसका। उसके जानवरों को लेकर जंगल मे चला गया था। अपनी जान की परवाह तक नही की थी उसने। जानवर बेचता है, पर कभी एक भी पैसा इधर-उधर नही करता।

राँका गहरी नीद मे सो रहा है। वह चला जायेगा। कितनी ही बातें उसके दिमाग मे आ-जा रही है। सरसतिया के लड़का होगा, उसे जवान होने मे बीस साल लगेंगे। उधारचद होगा उस समय अस्सी साल का। उस लडके से अगर दौलत-मान-इज्जत मिलती भी है तो वह उसे कैसे भोग पायेगा ?

फिर भी सुबह होते ही वह तोहरी चला जायेगा। सुबह होगी चौदह तारीख़। चार दिन बाद अट्ठारह तारीख। सुबह का और कोई काम वह भूल रहा है। हाँ, हाँ, सुबह की दैनिक दिनचर्या। जंगल पास में ही है। यह भी एक सुविधा है। कँटीले तार की बाड को लोगों ने कब का उखाड़ फेंका है। सुबह सरसतिया को वह जगह दिखा देनी होगी।

उधारचद सो जाता है।

उम्र ज्यादा है, नींद जरा देर से खुलती है। उठकर सरसतिया के कमरे मे जाकर देखता है कि वह नही है।

सरसतिया बाड़ के पास खड़ी है। उधारचद उसे बुलाता है, "वहाँ क्यो खड़ी हो? इधर आओ।"

सरसतिया वहीं खड़ी रहती है।

कहता है, "इधर आ।"

कमरे मे आती है और जमीन पर बैठ जाती है।

उधारचद कहता है, "तुझे सब-कुछ सिखाना पड़ेगा!"

"क्या?"

"यहाँ का रीति-रिवाज।"

"मैं नही रहूँगी यहाँ।"

"फिर कहाँ रहेगी?"

सरसतिया जैसे दीवार से बात कर रही हो। कहती है, "यह शहर! बड़ा अच्छा शहर है तुम्हारा। जैसे पिंजरे मे चिड़िया बन्द हो। यहाँ खड़ी मत हो, वहाँ बैठो मत। क्या करूँ, क्या न करूँ—जरा पता तो चले?"

"सुन सरसतिया, मेरी बात सुन!"

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।"

"कल आयी है, आज चली जायेगी?"

"फिर क्या करूँ?"

"तुझे गर्मी चढ़ी है, जवानी की गर्मी। तेरी गर्मी मैं उतार सकता हूँ। मेरा नाम है उधारचद।"

"ओह! बड़ा इज्जतदार आदमी है!"

"अरे तेरे यहाँ रहने पर मुझे कितना लाभ होगा!"

"मैं इतनी रोक-टोक में नहीं रह सकती।"

"पता है, तेरे लिए मैंने कितना खर्चा किया है? तुझसे शादी करने के लिए अपने लड़कों को भी पराया बना दिया।"

"मुझे इससे क्या लेना-देना?"

"तेरा लड़का होगा तो मेरा भाग पलटेगा ।"

"बुड्ढे का शौक तो देखो !"

"बुड्ढा हूँ या जवान, तीन दिन बाद पता चलेगा ।"

इतने में रौंका बकरियों को लेकर वापस आता है । उधारचंद पूछता है, "इतनी जल्दी वापस आ गया ?"

"जगल मे लकडबग्घा घूम रहा है ।"

"अरे सर्वनाश ! बकरियाँ गिनकर लाया है न ?"

"नही, लकडबग्घे को दो-चार खिलाकर आ रहा हूँ ।"

"चलो छोड़ो, बकरियों को बाडे में डाल हाथ-मुँह धो ले। कुछ मिठाई खा ले । हम लोगों को भी दे। मैं तोहरी जाऊँगा ।"

"क्यो ? नौकर खोजने ?"

"कुछ सब्जी भी तो लानी होगी। नाश्ता कर ले, खाना पकाना होगा। बहुत काम है ।"

"राजा के सिपाही आ रहे हैं ।"

"क्यो ?"

"बकरा माँग रहे है पकाने के लिए ।"

"तुझ से कहा है क्या ?"

"तुम्हारे वकील बाबू ने कहा है ।"

"ये लोग मुझे कारोबार नही करने देंगे ?"

"बकरियों को लेकर फिर जंगल में चला जाऊँ ?"

"वहाँ लकड़बग्घा है न ?"

भुजा सिह ने इस समय आठ-दस पुराने सिपाही रखे हुए हैं। हजार बीघा जमीन, लकडी की ठेकेदारी, आदिवासी प्रजा, लकडी काटने वाले मजदूर—सभी कुछ संभालने के लिए सिपाहियों की जरूरत होती है। यह सभी है बन्दूकबाज । इनके अलावा हैं लठैत और भाले वाले। सभी अपने-अपने काम में निपुण हैं।

रामअवतार सिपाही घर के बाहर लाठी पटककर कहता है, "ऐ उधारचंद दुसाध कहाँ है ?"

"यहीं हूँ। अभी आया ।"

"एक बकरा ले आओ !"

"उस दिन तो दिया था एक ।"

"वह हज़म हो गया।"

"अच्छा, देता हूँ ।"

एक मोटे-ताजे काले बकरे को सिपाही रामअवतार ले जाता है। उधारचंद गहरी साँस लेकर कहता है, "सरसतिया को भी यहाँ अच्छा नहीं लग रहा है । अपने गाँव ही चला जाऊँगा, सारा कारोबार लेकर। वहाँ इतना जुल्म नहीं है।"

राँका कहता है, "नहीं, तुम गाँव में नहीं रह सकते । तुम यहीं रहोगे, इनका जुल्म सहोगे । फिर गाँव में क्या जमींदार-मालिक नहीं है ?"

"इन बातों से क्या फायदा ? आओ मिठाई खाते हैं । बाजार भी जाना है।"

"भात-रोटी या घाटो बनाऊँ ?"

"आज घाटो ही बना ।"

"फिर सब्जी की क्या जरूरत है ।"

"अच्छा है," कहकर उधारचंद बाहर जाता है।

सरसतिया कहती है, "मैं नहाऊँगी कहाँ ? पानी कहाँ है ?"

"तुम्हारे नहाने के लिए पानी ला दूँगा । दूसरे लोग भी कुएँ से पानी भरते हैं । हमारी जाति का यहाँ कोई नहीं है । दोपहर या शाम से पहले पानी मिलना मुश्किल होता है। पंचायती कुआँ है ।"

"अँगीठी जलाऊँ ?"

"मैं सुलगाता हूँ ।"

"एक तो, राँका ! औरत बैठी रहेगी और आदमी खाना पकायेगा ! ऐसा भी कहीं होता है ?"

"अपने घर में कभी खाना पकाया है ?"

"माँ, बहू और मैं मिलकर बनाते थे खाना । जब जिसे मौका मिलता था वही करता था । अभी जो पकेगा, वही रात को भी खाओगे और कल सुबह भी, यह कैसी बात है ?"

"दो जून चूल्हा जलेगा क्या ?"

"जगल की लकड़ी और रांका की मेहनत।"

"रहने दे अब।"

कुछ देर बाद सरसतिया कहती है, "दाल और पाटो बस। कोई काम नहीं है तुम्हारे लिए अब?"

"बाड बनाने की सोच रहा था।"

"चूल्हे का काम निपटाने दो, फिर दोनों मिलकर बाड बनायेंगे।"

"वह कह रहा था कि सरसतिया को यहाँ अच्छा नही लग रहा?"

"हाँ, मुझे वह जरा भी पसद नही।"

"ऐसा मत कहो, उसे दुख होगा।"

"तो मै क्या करूँ?"

"वह बहुत आस लगाये बैठा है।"

"मैं क्या करूँ, रांका? साठ साल की उम्र है उसकी और मेरी सोलह। जब वह अस्सी का होगा तब भी मुझ मे ताकत रहेगी। क्या करूँगी तब मैं?"

"मैं क्या कहूँ?"

"तुम कुछ नही कह सकते?"

"तो बेईमानी करूँ, सरसतिया?"

"लो, अब सोच मे मत पडो। दाल-मसाला कहाँ है? मिर्च है?"

इसी तरह सरसतिया नवरतनगढ़ मे दो दिन बिताती है। तभी अचानक रहस्मय हो उठती है नवरतनगढ की हवा।

भुजा सिंह पटना से वापस आता है। वकील तुरत भुजा सिंह के घर दौड़ता है। एक अच्छी-खासी खबर है। लेडी डॉक्टर को उठवाकर कोठरी मे बद रखकर बाद मे खून करके, सदूक मे लाश रखकर हावडा जाने वाली ट्रेन के डिब्बे मे चढा देने वाली ख़बर से भी अच्छी ख़बर।

भुजा सिंह पत्थर जैसी लाल-लाल आँखों को खोले रखकर सब सुनता है और कहता है, "क्या? भगवती-लक्षणा लड़की? कहाँ है?"

"एक दुसाध के घर मे।"

"आँ! ऐसा कैसे हो सकता है? दुसाध को बुलाओ।"

"हुजूर, सुनिये तो!"

वकील धीरे-धीरे सब-कुछ बताता है। सुनकर भुजासिंह कहता है, "फिर तो समझो हो गया धर्मनाश, सत्यानास! उस दुसाध ने क्या अपनी बीवी को अभी तक अछूता छोड़ा होगा? छोटी जात में संयम कहाँ? आज ब्याह कर लाया है, कल ही हम के चूज़ों की तरह पैं-पैं कर रहे होंगे कमरे में बच्चे। कैसे इतने बच्चे पैदा कर डालते हैं यह लोग, भगवान जाने!"

"वह इन्तज़ाम भी कर रखा है। ज़रा सुनिये तो।"

सब-कुछ सुनकर भुजा सिंह कहता है, "भगवती-लक्षणा लड़की बता रहे हो न? तुमने ख़ुद उसे देखा है या केवल सुनकर ही कह रहे हो?"

"मैंने ख़ुद उसका चेहरा देखा है। बाकी आप देख लेना।"

"फिर क्या है, मंगवाओ उसे।"

"रात होने दीजिये।"

"आने पर फिर जाने मत देना। जिसे भी छोड़ देता हूँ, वही बात फैलाती है। जाने मत देना अब की बार।"

"नहीं हुजूर, लड़का होने तक तो यहीं रहेगी।"

"देखो, दुसाधिनों का काला रंग, बदन से आती सरसों के तेल की महक, मुझे बहुत अच्छी लगती है। कितना गठा हुआ बदन होता है उनका! हमारे घर की लड़कियाँ तो...। थू!"

"यह तो ठीक कह रहे हैं आप।"

"उसका मरद?"

"उसे भी उठवा दूँगा, हुजूर! नीच जाति समझ कर अभी तक दया करता रहा, लेकिन अब लग रहा है कि मैंने ठीक नहीं किया।"

"बिलकुल ठीक। मैं ठहरा राज्यसभा का सदस्य, शायद मंत्री बन जाऊँ। मेरे नाक के नीचे ही दुसाध का मकान ही ठीक नहीं। दूसरे सदस्यों के सामने सिर झुक जाता है शरम के मारे।"

"उसे उठवा दूँ क्या?"

"अगर कोई गड़बड़ मचायी तो?"

"आपके सिपाही, इतना बड़ा जंगल, जंगल में लकड़बग्घा, सोचते क्यों हैं आप?"

"ठीक है।"

सब-कुछ ठीक इसी तरह होता है।

उधारचंद दुसाध को कुछ भी पता नहीं चलता। 18 तारीख को वह कहता है, "आज रात को मेरा बिस्तर उस कमरे में लगा देना।"

सरसतिया पूछती है, "क्यों?"

"तुझसे ब्याह करके भी क्या राँका के साथ सोऊँगा? लड़का क्या आसमान से टपकेगा? तू कुछ भी नहीं समझती।"

सरसतिया को कोई जवाब नहीं सूझता। वह राँका की तरफ़ नजर नहीं उठा पाती। केवल सोचती रहती है। बापू ने उसे बेच दिया है। इससे अच्छा था कि वह मर जाती।

राँका भी कुछ नहीं कह पाता। यह तो होना ही था।

राँका ने बेईमानी नहीं करनी चाही। राँका चला जायेगा। राँका का अर्थ है रिक्त, निस्व, सर्वहारा। राँका को सरसतिया की जरूरत थी और सरसतिया को जरूरत थी राँका की। क्या किया जाये? जिन्दगी का हिसाब ही टेढ़ा है।

राँका जल्दी खाना खाकर सोने चला जाता है।

सरसतिया जमीन पर बैठी रहती है, लालटेन की रोशनी को ताकती हुई। उधारचंद उसकी तरफ़ देखता है। बीडी फूंकता जाता है बार-बार। जवानी। उधारचंद ने खरीदी है यह जवानी। हवा बोझिल हो जाती है। तभी उसे सुनायी देती है, रामअवतार सिपाही की आवाज, "उधारचंद दुसाध, दरवाजा खोल! साला बकरी पालता है, लेकिन बना रखा है पीलखाना। दरवाजा खोल साले!"

मतवाली भयानक आवाज। अनेक सिपाही एक साथ चिल्लाते हैं, "खोल साले, नहीं तो तोडते है दरवाजा।"

सरसतिया छिटककर खडी हो जाती है। दौड़कर राँका के कमरे मे चली जाती है। राँका भी उठ बैठता है। दोनों पीछे हटते हैं अँधेरे में।

सिपाही लोग अन्दर घुस आते हैं। उधारचंद को पकड़ लेते हैं। रामअवतार चिल्लाता है, "निकाल अपनी बीवी को! हुजूर उसे चाहते हैं। कहाँ है तेरी बीवी?"

"मेरी बीवी ?"

"हाँ-हाँ, तेरी सगुनी बीवी। भुजा सिंह को चाहिए। उससे अब तेरा लड़का नहीं होगा। भुजा सिंह का लड़का होगा। वकील बाबू ने हम लोगों को भेजा है।"

"वकील बाबू ने ?"

वकील बाबू पीछे से चिल्लाते हैं, "क्या हुआ ?"

उधारचद रो पड़ता है, "वकील बाबू !"

"अरे निकाल दुसाधिन को ! कहाँ गयी वह ?"

रांका सरसतिया का हाथ पकड धीरे-धीरे-पीछे खिसकता है। खिसकते-खिसकते बाड़ा कूद कर दोनों बाहर निकल जाते है और दौड़ने लगते हैं। जगल में दौड़ते-दौडते उन्हें गोली की आवाज सुनायी देती है, फिर कहीं से जोश-भरी आवाजें।

दोनों ज़मीन पर लेट जाते हैं। रांका कहता है, "मैं देखकर आता हूँ।"

"नहीं।"

"तू आगे बढ। मैं अभी लौट आऊँगा।"

"नहीं, वे इधर निकल आये तो ?"

"पेड़ पर चढ़कर देखता हूँ।"

रांका पेड़ पर चढ़ता है। काफी देर बाद नीचे उतरता है।

"क्या देखा ?"

"आग लगा दी है घर में।"

"आग ?" सरसतिया रो पडती है। मुँह में आँचल ठूँस लेती है।

रांका कहता है, "भागना पड़ेगा।"

"मार डाला ! आग लगा दी !"

"भागना होगा सरसतिया, वे अब इधर आयेंगे।"

रांका जंगल के अन्दर चला जाता है। सरसतिया का हाथ पकड़कर बढता जाता है। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगते हैं। उधारचद का यह नियति उसने भी नहीं चाही थी।

दूसरे दिन शाम तक वे लछिमा की टोली में पहुँच जाते हैं। पूरे गाँव

में यह खबर आग की तरह फैल जाती है। लछिमा और दूसरे लोगों को दोपहर को ही यह खबर मिल गयी थी लेकिन पूरी घटना का उन्हें अब तक पता नहीं लगा था।

इस घटना को लेकर ज्यादा शोरगुल भी नहीं हुआ। प्रसाद महतो ने बहुत पूछा, लेकिन नवरतनगढ में किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। वकील बाबू झुंझलाये हुए थे। कहने लगे, "जो कुछ हुआ है, पुलिस को बता दिया है मैंने। फिर से आपको नहीं बता सकता।"

"हुआ क्या था ?"

"मुझे क्या पता ? आग-आग की आवाज सुनकर सभी उठ गये थे। देखा कि उधारचंद का घर जल रहा है। अगले दिन न वह दिखा, न उसकी बीवी और न ही उनका नौकर। बकरे-बकरियाँ भी नहीं दिखे। किसे पता कि क्या हुआ ?"

"किसी ने उन्हें नहीं देखा ?"

"किसी ने नहीं। तीन-तीन इंसान एकदम अदृश्य हो गये।"

"उसकी घर की जगह का क्या हो रहा है ?"

"राजवैद्य अपना गोदाम बना रहे हैं वहाँ।"

"पूजा क्यों हो रही है ?"

"उस जमीन पर दुसाध रहते थे। जमीन अपवित्र हो गयी है। जमीन को पवित्र करना होगा। यह सब आप लोगों को क्या पता ?"

प्रसाद को लछिमा से पता चलता है। कुछ दिन निकल जाने के बाद कालिया दुसाध जंगल वालों की टोली में पहुँचकर कहता है, "जो होना था सो हुआ, सरसतिया ! अब घर चलें।"

सरसतिया ने कहा, "मैं नहीं जाऊँगी।"

"यहाँ क्या करेगी ?"

"ये लोग जो करते हैं, वही करूँगी।"

लछिमा ने कहा, "तुम जाओ। मैं उसे समझा-बुझा कर भेज दूँगी। चल सरसतिया, लकड़ी बटोरने।"

धीरे-धीरे सात महीने निकल जाते हैं। एक दिन बड़ा राँका बाढा गाँव की दुसाध टोली में आता है। पूरन की बीवी वाली घटना, उधारचंद

की मृत्यु आदि दुखद घटनाओं के बावजूद रौंका के चेहरे पर कुछ रौनक-सी आ गयी है।

बड़ा रौंका जो कुछ कहता है, सभी मान लेते हैं। छोटे रौंका और सरसतिया का ब्याह होगा। "ऐसा ही होना चाहिए," सभी ने कहा। अब पता चला है कि सरसतिया सुलक्षिणी है। क्या पता झूठ है या सच, लेकिन हो तो अच्छा ही है।

रौंका ने सरसतिया से कहा, "ऐसा-वैसा लड़का नहीं चाहिए। तुम्हारी कोख से पैदा होने वाला लड़का भुजा सिंह जैसे आवारा, दुश्चरित्र, लम्पट, बदमाश, खूनी को नहीं मिलना चाहिए था। बेशक हमारे पास कुछ नहीं है। हम लोगों को तो चाहिए ताकतवर-तेज-तर्रार लड़का। है न?"

सरसतिया कहती है, "हाँ, तुम्हारी तरह।"

• •

महाश्वेता देवी

बँगला की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी का जन्म 1926 में ढाका में हुआ था। पिता श्री मनीश घटक सुप्रसिद्ध लेखक थे। प्रारम्भिक पढ़ाई शान्तिनिकेतन में हुई। कलकत्ता यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी-साहित्य मे एम० ए० तक की शिक्षा पायी। अब कलकत्ता में अंग्रेजी का अध्यापन करती हैं। महाश्वेता जी वर्षों बिहार और बंगाल के घने क़बाइली इलाकों मे रही हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं मे इन क्षेत्रों के अनुभव को अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ उभारा है।

ग़ैर-व्यावसायिक पत्रों में छपने के बावजूद उनके पाठकों की संख्या बहुत बड़ी है। 1979 में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।